–प्रकाशक–
नाथूराम प्रेमी,
मंत्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला
हीराबाग, बम्बई ४

सितम्बर १९५२

–मुद्रक–
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी
निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

स्वागत

जैनशिलालेखसंग्रहका प्रथम भाग आजसे चौबीस वर्ष पूर्व सन् १९२८ ईस्वीमें प्रकाशित हुआ था। उसके प्राथमिक वक्तव्यमें मैंने यह आशा प्रकट की थी कि यदि पाठकोंने चाहा, और भविष्य अनुकूल रहा तो अन्य शिलालेखोंका दूसरा संग्रह शीघ्र ही पाठकोंको भेट किया जायगा। पाठकोने चाहा तो खूब, और माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रंथमालाके परम उत्साही मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणा भी रही, किन्तु मैं अपनी अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियोंके कारण इस कार्यको हाथमें न ले सका। तथापि चित्तमें इस कार्यकी आवश्यकता निरन्तर खटकती रही। अपने साहित्यिक सहयोगी डॉ० आदिनाथजी उपाध्येसे भी इस सम्बन्धमें अनेक बार परामर्श किया किन्तु शिलालेखोंका संग्रह करने करानेकी कोई सुविधा न निकल सकी। अतएव, जब कोई दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय प्रेमीजीने मुझसे पूछा कि क्या पं० विजयमूर्तिजी एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) शास्त्राचार्यद्वारा शिलालेखसंग्रहका कार्य प्रारम्भ कराया जावे, तब मैंने सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। आनन्दकी बात है कि उक्त योजनानुसार जैनशिलालेखसंग्रहका यह द्वितीय भाग छपकर तैयार हो गया और अब पाठकोंके हाथोंमें पहुँच रहा है।

यह बतलानेकी तो अब आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन शिलालेखोंका इतिहास-निर्माणके कार्यमें कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबसे जैन शिलालेखोंका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ, तबसे गत चौबीस वर्षोंमें जैनधर्म और साहित्यके इतिहाससम्बन्धी लेखोंमें एक विशेष प्रौढता और प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होने लगी। यद्यपि वे शिलालेख उससे पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे, किन्तु वह सामग्री अँग्रेजीमें, पुरातत्त्वविभागके बहुमूल्य और बहुधा अप्राप्य प्रकाशनोंमें निहित होनेके कारण साधारण लेखकों तथा पाठकोंको सुलभ नहीं थी। इसीलिये समस्त प्रकाशित शिलालेखोंका सुलभ संग्रह नितान्त आवश्यक है।

जैनशिलालेखसंग्रह प्रथम भागमें पाँच सौ शिलालेख प्रकाशित किये गये थे। वे सब लेख श्रवणबेल्गुल और उसके आसपासके कुछ स्थानोंके ही थे।

अब प्रस्तुत संग्रहमें गेरीनोद्वारा संकलित जैन प्राचीन लेखोंकी सूची (Repertoire D'epigraphie Jaina by A. Guerinot) के क्रमानुसार लेख उपस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है। नामोंको मोटे टाइपमें छापने तथा लेखोंका सारांश हिन्दीमें दे देनेकी शैली प्रथम भागके अनुसार यहाँ भी अपनाई गई है। किन्तु खेद है कि प्रत्येक लेखके भीतर पद्योंकी संख्याका क्रमसे अंकन नहीं किया गया, जिससे उनके उल्लेख करनेमें कुछ असुविधा हो सकती है।

इन शिलालेखोंका इतिहासकी दृष्टिसे मूल्य आँकना आवश्यक है। किन्तु अब यह कार्य उचित रीतिसे तभी निष्पन्न किया जा सकता है जब शेष शिलालेखोंके संग्रह भी इसी शैलीसे प्रकाशित हो जावें। अतएव, संग्राहक और प्रकाशकका इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशनके लिये अभिनन्दन करते हुए मैं आशा करता हूँ कि वे अपने इस कार्यको गतिशील बनाये रखेंगे और विना अधिक विलम्बके संग्रहका कार्य पूरा करके लेखकों और पाठकोंकी दीर्घकालीन पिपासाकी पूर्णतः तृप्ति करनेका अनुपम यश प्राप्त करेंगे।

नागपुर महाविद्यालय
नागपुर, ६-३-१९५२

हीरालाल जैन

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा)—प्राकृत ।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग

[लगभग २४२ ईसवी पूर्व]

[१] धमवढिया च बाढं वढिसति [।] एताये मे अठाये धंमसावनानि सावापितानि धमानुसाथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे पुलि]सापि बहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसंति पि पवियलिसंतिपि [।] लजूका पि बहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे आनपिता[:] हेवं च हेव च पलियोवदाथ

[२] जन धमयुतं [।] देवान पिये पियदसि हेव आहा[.] एतमेव मे अनुवेखमाने धमयमानि कटानि[,] धममहामाता कटा[,] धम-[सावने] कटे [।] देवान पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:] मगेसु पि मे निगोहानि लोपापितानि[:] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं[,] अवावडिक्या लोपापिता[;] अढकोसिक्यानि पि मे उदुपानानि

[३] खानापितानि[;] निंसिधिया च कालापिता[;] आपानानि मे बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसान [।] ल[हुके चु] एस पटीभोगे नाम [।] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

---

१. ए कनिंघम, Corpus inscriptionum indicarum, Vol. I, Inscriptions of Asoka, p 115, t

हि ममया च सुखयिते[1] लोके [।] इम चु धंमानुपटीपतीअनुपटी-पजंतुति[,] एतदथा मे

[४] एस कटे [।] देवानं पिये पियदसि हेव आहा[:] धंममहा-मातापि मे ते बहुविधेसु अठेसु अनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतान चेव गिहियानं च [;] सव[पासं]डेसु पि च वियापटा से [।] संघठसि पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति[;] हेमेव बाभनेसु आजीविकेसु पि मे कटे

[५] इमे वियापटा होहंतिति [।] निगंठेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंति[;] नानापासंडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति [।] पटिविसठ पटीविसठ तेसु तेसु ते ते महामाता [।] धममहामाता चु मे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च अनेसु पासंडेसु [।] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:]

[६] एते च अंने च बहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम चेव देविनं च[;] सवसि च मे आलोधनसि ते बहुविधेन आ[का]लेन तानि तानि तुठायतनानि पटी [पादयंति] हिद चेव दिसासु च [।] दालकान पि च मे कटे अनान च देविकुमालानं इमे दानविसगेसु वियापटा होहंति ति

[७] धंमपदानठाये धंमानुपटिपतिये [।] एस हि धंमापदाने धंमपटीपति च या इय दया दाने सचे सोचवे मदवे साधवे च लोकस हेवं वढिसतिति [।] देवान पिये [पियद] सि लाजा हेवं आहा[:] यानि हि कानि चि ममिया साधवानि कटानि तं लोके अनूपटीपंने तं च अनुविधियंति[;] तेन वढिता च

1. सुखीयते Indian Antiquary, Vol. XIII, p. 310, t.

[८] वढिसंति च मातापितुसु सुसुसाया गुलुसु सुसुसाया वयोमहालकानं अनुपटीपतिया बाभनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभटकेसु संपटीपतिया [।] देवानंपिये [पि]यदसि लाजा हेवं आहा[:] मुनिसानं चु या इय धंमवढि वढिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन च निझतिया च

[९] तत च लहु से धमनियमे[,] निझतिया व भुये[।] धमनियमे च खो एस ये मे इयं कटे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि[,] अंनानि पि चु बहु [कानि] धंमनियमानि यानि मे कटानि[।] निझतिया व चु भुये मुनिसानं धमवढि वढिता अविहिंसाये भुतानं

[१०] अनालंभाये पानानं[।] से एताये अथाये इयं कटे[,] पुतापपोतिके चंदमसुलियिके होतु ति[,] तथा च अनुपटीपजंतु ति[।] हेव हि अनुपटीपजत हिदतपालते आलधे होति[।] **सतविसतिवसाभिसितेन मे इयं धंमलिबि लिखापापिताति[।]** एत देवानंपिये आहा[:] इय

[११] धमलिबि अत अथि सिलाथंभानि वा सिलाफलकानि वा तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया ।

[यह धर्मशासन-लेख अशोकके द्वारा महास्तम्भोंपर लिखाये गये लेखोंमेंसे अन्तिम है । इसको कोई-कोई आठवां धर्मशासन-लेख (Edict) मानते हैं, तो कोई मात्र सातवें धर्मशासन-लेखका ही अन्तिम भाग मानते हैं ।

इसमें बताया है कि सम्राट् अशोकने अपने राज्याभिषेकसे २७ वें वर्षमें यह धर्मशासन-लेख लिखाया था । इसमें उसने अपने द्वारा नियोजित धर्ममहामात्योंका उल्लेख किया है । ये धर्ममहामात्य 'संघ' (बौद्धसंघ), आजीवक, ब्राह्मण और निर्ग्रन्थोंकी देखरेख रखनेके लिये

नियुक्त किये गये थे। यहां 'निर्ग्रन्थ' शब्दसे जैनोंका तात्पर्य है। इसपरसे मालूम पड़ता है कि उस समयके अनेक अग्रेसर धर्मोंमें जैनधर्म भी एक था।]

२

हाथीगुफाका शिलालेख[1]—प्राकृत।

जैन-सम्राट् खारवेलका इतिहास।

[मौर्यकाल १६५ वाँ वर्ष]

[१] नमो अरहंतान [।] नमो सवसिधानं [।] ऐरेन महाराजेन **महामेघवाहनेन** चेतराजवस-वधनेन पसथसुभलखनेन चतुरंतल थुन-गुनोपहितेन कलिंगाधिपतिना सिरि खारवेलेन।

[२] पन्दरसवसानि सिरि-कडार-सरीर-वता कीडिता कुमारकीडिका [।] ततो लेखरूपगणना-ववहार-विधिविसारदेन सवविजावदातेन नववसानि योवरज पसासित [।] संपुण-चतुवीसति-वसो तदानि वधमानसेसयोवे(=व) नाभिविजयो ततिये

(३) कलिंगराजवंसे पुरिसयुगे **महारजाभिसेचन** पापुनाति [।] अभिसितमतो च पधमे वसे वात-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसन पटिसंखारयति [।] कलिंनगरि [ि] ख-बीरं इसि-तालं तडाग-पाडियो च बन्धापयति [।] सवुयान-पतिसंठपन च

[४] कारयति [।] पनतीसाहि सतसहसेहि पकतियो च रंजयति [।] दुतिये च वसे अचितयिता सातकणिं पछिमदिसं हय-गज-नर-रध-बहुलं दड पथापयति [।] कण्हवेनां गताय च सेनाय वितापति[2] **मुसिकनगरं** [।] ततिये पुन वसे

---

१ जैनहितैषी, भाग १५, अङ्क ५, मार्च १९२१, पृष्ठ १३९-१४५ से उद्धृत। २ वितापितं इति वा।

[५] गंधव-वेदबुधो दत-नत-गीत-वादितसंदसनाहिं उसव-सम ज कारापनाहि च कीडापयति नगरिं [।] तथा चवुथे वसे वि । अहत-पुव कालिंगपुवराजनिवेसितं.........वितध-मकूटे . च निखित-छत-

[६] भिंगारे हित-रतन-सापतेये **सव-रठिक भोजके** पादे वंदापयति [।] पंचमे च दानी वसे **नंदराज** ति-वससत-ओघाटितं तनसुलियवाटा पनाडिं नगरं पवेस[य]ति [।] सो [पि च वसे] छडम 'भिसितो च राजसुय [?] सन्दसयंतो सवकर-वण •

[७] अनुगह--अनेकानि सतसहसानि विसजति पोरं जानपदं[।] संतमं च वसं पसासतो वजिरघरवि **धुसि** ति घरिनी समतुक-पद-पुंनासकुमार[।]............[।] अठमे च वसे महतिसेनाय मह[तभित्ति] गोरधगिरिं

[८] घातापयिता **राजगहं** उपपीडापयति[।] एतिना च कंम पदान-पनादेन संवितसेन-वाहिनी विपमुंचितु मधुरां अपयातो येव नरिदो [नाम]............[मो?] यछति [विछ] ....पलवभरे

[९] कल्परुखे हय-गज-रथ-सह-यंते सव-घरावास-परिवसने स अगिणठिये[।] सवगहनं च कारयितु बम्हणानं जाति-पंतिं परिहारं ददाति[।] अरहत...........व.............न..........गिय

[१०]....[क] [ि] मानेहि रा[ज] संनिवासं महाविजयं पासादं कारापयति अठतिसाय सत-सहसेहि[।] दसमे च वसे भद्दधीत' मिसमयो भरधवस-पथानं महिजयन....ति कारापयति................[निरितय] उया तान च मणि-रतना[नि] उपलंभंते ।

[११]·········मडे च पुव-राजनिवेसित—पीथुडग-द[ल]भ-नंगले नेकासयति जनपदभावन च तेरस-वस-सत-केतुभद-तित[1] मरदेह-संघातं[।] वारसमे च वसे··············सेहि वितासयति उतरापथराजानो

[१२]···········मगधानं च विपुल भयं जनेतो हथिसु गंगाय पाययति[।] मागध च राजान **वहसतिमितं**[1] पादे वदापति[।] **नंदराज-**नीतं च **कालिंग-जिन-संनिवेसं**·············गहरतनान पडिहारेहि **अंगमागध**-वसु च नेयाति [।]

[१३]·············त जठर-लिखिल-बरानि सिहिरानि नीवेसयति सत-विसिकनं परिहारेन[।] अभुतमछरिय च हथि-नावन परीपुरं उ [प-]देणह हयहथी-रतना-[मा]निक **पंडराजा** एदानि अनेकानि मुत-मणिरतनानि अहरापयति इध सत-[स] [।]

[१४]·······सिनो वसीकरोति [।] तेरसमे च वसे सुपवत-विज-यिचके कुमारीपवते अरहिते य[।] प-खिम-व्यसंताहि काय्यनिसीदीयाय यापनावकेहि राजभितिनि चिनवतानि वोसासितानि [।] पूजानि कत-उ-वासा **खारवेल-सिरिना** जीवदेव-सिरि-कल्प राखिता [।]

[१५]·············[ता] सु कतं समण-सुविहितानं (नुं ?) च सातदिसानं (नु ?) जातानं तपसइसिनं सघायनं (नुं ?) [;] अरहतनिसीदिया समीपे पभारे वराकर-समुथापिताहि अनेक-योजना-हिताहि·········सिलाहि सिंहपथ-रानिये[2] धुसिय निसयानि

[१६]·········पटालिको चतरे च वेडूरियगभे थंभे पतिठापयति [,] पानतरिया सतसहसेहि [।] मुरिय-कालं वोछिंनं (नें ?) च चोयठि-

---

१ वहसतिमित्रं इति । २ रानिसं वा इति हरनन्दनपाण्डेया. ।

अगस-निकंतरिय उपादायति [।] खेमराजा स वढराजा स भिखुराजा
धमराजा पसंतो सुनंतो अनुभवंतो कलाणानि

[१७]………गुण-विसेस-कुसलो सवपासंडपूजको सव-देवायत-नसंकारकारको [अ]पति-हत-चकि-वाहिनि-बलो चकधुर-गुतचको पवत-चको राजसि-वस-कुल-विनिस्रितो महा-विजयो राजा खारवेल-सिरि

अनुवाद—[१] अर्हतोंको नमस्कार। सर्व सिद्धोंको नमस्कार। ऐल-महाराज महामेघवाहन, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षणसम्पन्न, अखिल-देशस्तम्भ; कलिङ्गाधिपति श्री खारवेलने

[२] पन्द्रह वर्षतक श्रीसम्पन्न और कडार (गन्दुमी) रंगवाले शरीरसे कुमार-क्रीड़ाएँ कीं। बादमें लेख, रूपगणना, व्यवहार-विधिमें उत्तम योग्यता प्राप्त करके और समस्त विद्याओंमें प्रवीण होकर उसने नौ वर्षोंतक युवराजकी भाँति शासन किया।

जब वह पूरा चौबीस वर्षका हो चुका तब उसने, जिसका शेष यौवन विजयोंसे उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हुआ,—तृतीय

[३] कलिंगराजवंशमें, एक पुरुषयुगके लिये महाराज्याभिषेक पाया। अपने अभिषेकके पहले ही वर्षमें उसने वातविहत (तूफानके बिगाड़े हुए) गोपुर (फाटक), प्राकार (चहारदीवारी) और भवनोंका जीर्णोद्धार कराया; कलिङ्ग नगरीके फव्वारेके कुण्ड, इषितल्ल (?) और तड़ागोंके बाँधोंको बँधवाया; समस्त उद्यानोंका प्रतिसंस्थापन कराया और पैंतीस लक्ष प्रजाको सन्तुष्ट किया।

[४] दूसरे वर्षमें, सातकर्णिकी चिन्ता न करके उसने पश्चिम देशको बहुत-से हाथी, घोड़ों, मनुष्यों और रथोंकी एक बडी सेना भेजी। कृष्ण-वेण नदीपर सेना पहुँचते ही, उसने उसके द्वारा मूषिक नगरको सन्त्रापित किया। तीसरे वर्षमें फिर

[५] उस गन्धर्व-वेदमें निपुणमतिने दंप, नृत्य, गीत, वाद्य, सन्दर्शन, उत्सव और समाजके द्वारा नगरीका मनोरञ्जन किया।

और चौथे वर्षमें, विद्याधर-निवासोंको, जो पहले कभी नष्ट नहीं हुए थे और जो कलिङ्गके पूर्व राजाओंके निर्माण किये हुए थे······उनके मुकुटोंको व्यर्थ करके और उनके लोहेके टोपोंके दो खण्ड करके और उनके छत्र,

[६] और भृंगारों (सुवर्णकलशों) को नष्ट करके तथा गिराकर, और उनके समस्त बहुमूल्य पदार्थों तथा रत्नोंका हरण करके, उसने समस्त राष्ट्रिकों और भोजकोंसे अपने चरणोंकी वन्दना कराई।

इसके बाद पाँचवें वर्षमें उसने तनसुलिय मार्गसे नगरीमें उस प्रणाली (नहर) का प्रवेश किया जिसको नन्दराजने तीन सौ वर्ष पहले खुदवाया था।

छठे वर्षमें उसने राजसूय-यज्ञ करके सब करोंको क्षमा कर दिया,

[७] पौर और जानपद (संस्थाओं) पर अनेक शतसहस्र अनुग्रह वितरण किये।

सातवें वर्ष राज्य करते हुए, वज्र घरानेकी घृष्टि (प्राकृत=घिसि) नाम्नी गृहिणीने मातृक पदको पूर्ण करके सुकुमार [१]···(।)

आठवें वर्षमें उसने (खारवेलने) बड़ी दीवारवाले गोरथगिरिपर एक बड़ी सेनाके द्वारा

[८] आक्रमण करके राजगृहको घेर लिया। पराक्रमके कार्योंके इस समाचारके कारण नरेन्द्र [नाम]···अपनी घिरी हुई सेनाको छुड़ानेके लिये मथुराको चला गया।

(नवें वर्षमें) उसने दिये······पल्लवयुक्त

[९] कल्पवृक्ष, सारथीसहित हय-गज-रथ और सबको अग्निवेदिकासहित गृह, आवास और परिवसन। सब दानको ग्रहण कराये जानेके लिये उसने ब्राह्मणोंकी जातिपंक्ति (जातीय संस्थाओं) को भूमि प्रदान की। अर्हत्······व······न······ गिया (?)

---

१ राजधानीकी संस्थाको 'पौर' और ग्रामोंकी संस्थाको 'जानपद' कहते थे। वर्तमान समयमें हम इन्हें 'म्युनिसिपल' और 'डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड'के नामसे पुकार सकते हैं।

[१०] [क] [ि] मानैः (?) उसने महाविजय-प्रासाद नामक राजस-निवास, अड़तीस सहस्रकी लागतका बनवाया।

दसवें वर्षमें उसने पवित्र विधानोंद्वारा युद्धकी तैयारी करके देश जीतनेकी इच्छासे, भारतवर्ष (उत्तरी भारत) को प्रस्थान किया।··· क्लेश (?) से रहित·········उसने आक्रमण किये गये लोगोके मणि और रत्नोंको पाया।

[११] (ग्यारहवें वर्षमें) पूर्व राजाओके बनवाये हुए मण्डपमें, जिसके पहिये और जिसकी लकड़ी मोटी, ऊंची और विशाल थी, जनपदसे प्रतिष्ठित तेरहवें वर्ष पूर्वमें विद्यमान केतुभद्रकी तिक्त (नीम) काष्ठकी अमर मूर्तिको उसने उत्सवसे निकाला।

बारहवें वर्षमें·········उसने उत्तरापथ (उत्तरी पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश) के राजाओमें त्रास उत्पन्न किया।

[१२] ·········और मगधके निवासियोंमें विपुल भय उत्पन्न करते हुए उसने अपने हाथियोंको गंगा पार कराया और मगधके राजा बृहस्पतिमित्रसे अपने चरणोंकी वन्दना कराई ···········(वह) कलिंग-जिनकी मूर्तिको जिसे नन्दराज ले गया था, घर लौटा लाया और अंग और मगधकी अमूल्य वस्तुओंको भी ले आया।

[१३] उसने·········जठरोल्लिखित (जिनके भीतर लेख खुदे हैं) उत्तम शिखर, सौ कारीगरोंको भूमि प्रदान करके, बनवाये और यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि वह पाण्डवराजसे हस्ति नावोंमें भरा कर श्रेष्ठ हय, हस्ति, माणिक और बहुतसे मुक्ता और रत्न नजरानेमें लाया।

[१४] उसने·········वशमें किया।

फिर तेरहवें वर्षमें व्रत पूरा होनेपर (खारवेलने) उन याप-ज्ञापकोंको जो पूज्य कुमारी पर्वतपर, जहाँ जिनका चक्र पूर्णरूपसे स्थापित है, समाधियोंपर याप और क्षेमकी क्रियाओंमें प्रवृत्त थे; राजभृतियोंको वितरण किया। पूजा और अन्य उपासक कृत्योंके क्रमको श्रीजीवदेवकी भाँति खारवेलने प्रचलित रखा।

[१५] सुविहित श्रमणोंके निमित्त शास्त्र-नेत्रके धारकों, ज्ञानियों और तपोबलसे पूर्ण ऋषियोंके लिये (उसके द्वारा) एक संघायन (एकत्र होनेका भवन) बनाया गया। अर्हत्की समाधि (निषद्या) के निकट, पहाड़की ढालपर, बहुत योजनोंसे लाये हुए, और सुन्दर खानोंसे निकाले हुए पत्थरोंसे, अपनी सिंहप्रस्थी रानी 'धृष्टी' के निमित्त विश्रामागार—

[१६] और उसने पाटालिकाओंमें रत्न-जटित खम्भोंको पचहत्तर लाख पणों (मुद्राओं) के व्ययसे प्रतिष्ठापित किया। वह (इस समय) मुरिय कालके १६४ वें वर्षको पूर्ण करता है।

वह क्षेमराज, वर्द्धराज, भिक्षुराज और धर्मराज है और कल्याणको देखता रहा है, सुनता रहा है और अनुभव करता रहा है।

[१७] गुणविशेष-कुशल, सर्व मतोंकी पूजा (सन्मान) करनेवाला, सर्व देवालयोंका संस्कार करानेवाला, जिसके रथ और जिसकी सेनाको कभी कोई रोक न सका, जिसका चक्र (सेना) चक्रधुर (सेना-पति) के द्वारा सुरक्षित रहता है, जिसका चक्र प्रवृत्त है और जो राजर्षिवंस-कुलमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा महाविजयी राजा श्रीखारवेल है।

इस शिलालेखकी प्रसिद्ध घटनाओंका तिथिपत्र—

बी. सी. (ईसाके पूर्व)

,, १४६० (लगभग)	...	केतुभद्र
,, ...४६० (लगभग)	...	कलिंगमें नन्दशासन
,, [२३०	...	अशोककी मृत्यु]
,, [२२० (लगभग)	...	कलिंगके तृतीय-राजवंशका स्थापन]
,, १९७ ...	...	खारवेलका जन्म
,, [१८८ ...	...	मौर्यवंशका अन्त और पुष्यमित्रका राज्य प्राप्त करना]
,, १८२ ...	...	खारवेलका युवराज होना
,, [१८० (लगभग	...	सातकर्णि प्रथमका राज्य-प्रारम्भ]

,, १७३	...	... खारवेलका राज्याभिषेक
,, १७२	...	... मूषिक-नगरपर आक्रमण
,, १६९	...	... राष्ट्रिकों और भोजकोंका पराजय
,, १६७	...	... राजसूय-यज्ञ
,, १६५	...	... मगधपर प्रथम बार आक्रमण
,, १६१	...	... उत्तरापथ और मगधपर आक्रमण, पाण्ड्यराजसे अदेय (नजराने) की प्राप्ति
,, १६०	...	... शिलालेखकी तिथि

३

वैकुण्ठ (स्वर्गपुरी) गुफा उदयगिरि—प्राकृत।

[लगभग १६५ मौर्यकाल]

अरहन्तपसादनं कलिंग····य····नानं लेनकाडतं रजिनोलस···· हेथिसहसं पनोतसय····कलिंग····वेलस अगमहि पिडकाई

[इस शिलालेखमें अर्हन्तोंकी कृपाको प्राप्त गुहानिर्माण (Excavation) बताया गया है। इस लेखका शेषभाग इतना टूटा हुआ है कि वह पढ़नेमें नहीं आसकता। वैकुण्ठ गुफा, जिसके नामसे यह शिलालेख प्रसिद्ध है, राजा ललाकके द्वारा अर्हन्तो और कलिंगके श्रमणोंके लाभ या उपयोगके लिये बनाई गई थी।]

[JASB, VI, p. 1074]

४

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका] लेकिन करीब १५० ई० पूर्वका [बूल्हर]-

१ पितकड in JASB, vol VI, p. 1074.

समनस माहरखितास आंतेवासिस वछीपुत्रस सावकास उतर-दासक[ा] स पासादोतोरनं [॥]

अनुवाद—माहरखित (माघरक्षित) के शिष्य, वछी (वात्सी माता) के पुत्र उतरदासक (उत्तरदासक) श्रावकका (दान) यह मन्दिरका तोरन(ण) है।

[EI, II, n° XIV, n° 1.]

५

मथुरा—प्राकृत।

[महाक्षत्रप शोडाशके ४२ वें (?) वर्षका]

१. नम अरहतो वर्धमानस।

२. स्व[ा]मिस महक्षत्रपस शोडासस सवत्सरे ४० (?) २ हेमंतमासे २ दिवसे ९ हरितिपुत्रस पालस भयाये समसाविकाये[1]

३. कोछिये अमोहिनिये सहा पुत्रेहि पालघोपेन पोठघोपेन घनघोपेन आयवती प्रतिथापिता प्राय–[भ]–

४. आर्यवती अरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो। स्वामी महाक्षत्रप शोडासके ४२ (?) वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके नौवें दिन, हरिति (हरिती या हारिती माता) के पुत्र पालकी स्त्री, तथा श्रमणोंकी श्राविका, कोछि (कौत्सी) अमोहिनि (अमोहिनी) के द्वारा अपने पुत्रों पालघोष, पोठघोष, (प्रोष्ठघोष) और धनघोषके साथ आयवती (आर्यवती) की स्थापना की गई थी।

[EI, II, n° XIV, n° 2]

६

पभोसा (अलाहाबादके पास)—संस्कृत।

[द्वितीय या प्रथम ईसवी पूर्व (फ्यूरर)]

---

1 पढ़ो 'समनसाविकाये'।

१. राज्ञो गोपालीपुत्रस
२. बहसतिमित्रस
३. मातुलेन गोपालीयं[1]
४. वैहिदरीपुत्रेन [आसा]
५. आसाढसेनेन लेनं
६. कारितं [उदाकस][2] दस—
७. मे सवछरे कस्शपीयानं अरहं—
८. [ता] न ` — ी — ि — — — ी [॥]

अनुवाद—गोपालीके पुत्र राजा बहसतिमित्र (बृहस्पतिमित्र) के मामा, तथा गोपाली वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आसा-ढसेनने कस्शपीय अरहतोंके……दसवें वर्षमें एक गुफाका निर्माण कराया।

[EI, II, p 242] /

७

पभोसा (प्रभात)—प्राकृत।

[द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई. पू.]

१. अधियछात्रा राज्ञो शोनकायनपुत्रस्य वगपालस्य
२. पुत्रस्य राञो तेवणीपुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण
३. वैहिदरीपुत्रेण आषाढसेनेन कारितं [॥]

अनुवाद—अधिछत्राके राजा शोनकायन (शौनकायन) के पुत्र राजा वंगपालके पुत्र (और) तेवणी (अर्थात् त्रैवर्ण-राजकन्या) के पुत्र राजा भागवतके पुत्र (तथा) वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आषाढसेनने बनवाई।

[नोट—शुङ्गकालके अक्षरोंसे मिलने-जुलनेके कारण दोनों शिलालेखोंका काल विश्वासके साथ द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई० पूर्व निश्चित किया

---

१ सम्भवतः 'गोपालिया'। २ सभी अक्षर सशयापन्न हैं।

जा सकता है। खास ऐतिहासिक चीज जो यहां अङ्कित करनेकी है वह अधिछत्राके प्राचीन राजाओंकी वंशावलि है। अधिछत्रा किसी समय प्रतापी उत्तर पाञ्चालके राजाओंकी राजधानी थी। वंशावली इस प्रकार हैः—
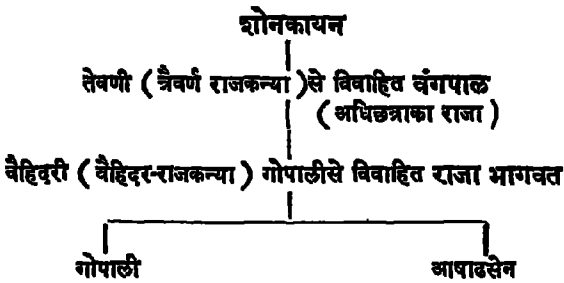
बेहसतिमित्र कहांका राजा था और उसके पिताका नाम क्या था, यह नहीं बताया गया है। लेकिन, ए० फ्यूरर की सम्मतिमें हम उसे कौशाम्बीका राजा मान सकते हैं, क्योंकि वह (कौशाम्बी) प्रभास (पभोसा) के निकट है तथा बहुत-से उसके (बहसतिमित्रके) सिक्के कौशाम्बीमें मिले हैं।

[EI, II, n° XIX, n° 2 (p. 243.)]

८

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

१. नमो आरहतो वधमानस दण्डाये गणिका—

२. ये लेणशोभिकाये धितु शमणसाविकाये

३. नादाये गणिकाये वासये आरहता देविकुला

४. आयगसभा प्रपा शीलापटा पतिष्ठापितं निगमा—

५. ना अरहतायतने स [ह]ा मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण

६. सविन च परिजनेन अरहतपुजाये।

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो। श्रमणोंकी उपासिका (श्राविका) गणिका लादा, गणिका वन्दाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापरियोंके अर्हत्‌मन्दिरमें अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़केके साथ और अपने सारे परिजनोंके साथ मिलकर एक वेदी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पाषाणासन बनवाये।

[I. A., XXXIII, p. 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयशक-

२. कालवाळस

३. [भार्यये] कोशिकिये शिमित्राये[1] अयागपटो प्रि [प्रतिष्ठापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो। गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कौशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया। गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था।

[EI, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]

२. गोतीपुत्रस ईद्रपा[ल]····

---

1 इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F Fleet)।

अनुवाद—गोती (गौप्ती माता) के पुत्र इन्द्रपाल (इन्द्रपाल) के··· ····· अर्हन्तोंकी पूजाके लिये·············प्रतिमा······

[El, II, n° XIV, n° 9.]

११

गिरनार:—संस्कृत।

[विक्रमसंवत् ५८]

हुमदके पवित्र स्थानके आङ्गनमें वृक्षके नीचे एक चौकोर चबूतरा है। उसके किनारेपर निम्नलिखित लिखा हुआ है:—

सं० ५८ वर्षे चैत्र वदी २

सोमे धारागछे

प० नेमिचन्दशिष्य

पंचाणचंदमूर्ति

अनुवाद—संवत ५८ के वर्षमें, सोमवार, चैत्र वदी २ को, धारागछमें नेमिचन्द्रके शिष्य पंचाणचंदकी मूर्ति।

[ASI, XVI, p. 357, n° 20]

१२

मथुरा—प्राकृत।

(विना कालनिर्देशका)

१. भदंतजयसेनस्य आंतेवासिनीये

२. धामघोषाये दानो पासादो [॥]

अनुवाद—भदन्त जयसेनकी शिष्या धमघोषा (धर्मघोषा) के दानस्वरूप यह मन्दिर है।"

[El, II, n° XIV, n° 4]

१३

मथुरा—प्राकृत।

भगवा नेमेसो भग-- -

अनुवाद—"भगवान नेमेस (नैगमेष), भगवान···

[El, II, n° XIV, n° 6]

१४

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. मा अर्हतानं[1] श्रमणश्राविका[ये]

२.....लहस्तिनीये तोरणं प्रति [ष्ठापि][2]

३. सह माता पितिहि सह

सश्रू—शशुरेण

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार । अपने माता पिता और सास-ससुरके साथ साधुओंकी एक शिष्या···लहस्तिनी (वलहस्तिनी), के हुक्मसे एक तोरण खड़ा किया गया ।

[ऐसा मालूम पड़ता है कि उस समय माता-पिता और सास-ससुरके साथ कोई धार्मिक कार्य करनेसे, उनको भी पुण्यप्राप्तिमें साझीदार समझा जाता था ।]

[EI, I, XLIII, n° 17]

१५

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. अ. नमो अरहंतानं फगुयशस

२. अ. ननकस भयाये शिवयशा—

३. अ. ——ि——ा——ा—काये

१. व. आयागपटो कारितो

२. व. अरहतपुजाये [॥]

---

१ 'नमो अरहंतानं' पढ़ना चाहिये । २ 'प्रतिष्ठापितं' पढ़ो । सभवतः पहली और दूसरी पंक्तिके अन्तमें और अधिक अक्षर टूटे हुए मालूम पड़ते हैं ।

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार! फगुयश (फल्गुयशस्) नर्तककी पत्नी शिवयशा (शिवयशस्) के द्वारा अर्हन्तोकी पूजाके लिये एक आयागपट बनवाया गया।

[El, II, n° XIV, n° 5]

१६

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहतो महाविरस। माथुरक-लवाडस[सा]-भयाये-त्र''''ताये [आयागपटो] [॥]

अनुवाद—महावीर अर्हत्को नमस्कार। मथुरानिवासी-लवाड (?) की पत्नी—ि ताके [दानस्वरूप] यह आयागपट है।

[El, II, n° XIV, n° 8]

१७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्कबाल ?] वर्ष ४

अ. सिद्ध स ४ ग्रि १ दि २० वारणातो गणातो अर्य्येहाट्ट-
किyaतो कुलतो वजणगरित [ो शा] --

ब. पुश्यमित्रस्य शिशिनि सथिसहाये शिशिनि सिहमित्रस्य
सढचरि ---

स. दाति सहा ग्रहचेटेन ग्रहदासेन --

अनुवाद—सिद्धि हो। चतुर्थ वर्षके ग्रीष्म ऋतुके १ ले महीनेके २० वें दिन, वारणगण, अर्य हाट्टकिय (आर्य हाट्टकीय) कुल, वजणगरी (वज्र-नगरी) शाखाके --- पुष्यमित्रकी शिष्या, साथिसिहा (षष्ठिसिंहा) की शिष्या, सिहमित्र (सिंहमित्र) की सढचरी (श्राद्धचरी)''''।

[El, II, n° XIV, n° 11]

१८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्ककाल ?] वर्ष ५

' स्य व ५ गृ ४ दि ५ कोट्टिया ······· ·······

त [ो] शाखात [ो] वाचकस्य अर्य्य ···

अनुवाद—···के ५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ············कोट्टिय (गण)··· ··शाखाके वाचक अर्य्य···(आर्य)···

[EI, II, n° XIV, n° 12]

१९

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं० ५]

अ. १.····[1] दे [व] पुत्रस्य क[नि]ष्कस्य सं ५ हे १ दि १ एतस्य पूर्व्वे [1] य कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिका [तो]

२. [कु]लातो [उ]चेनागरितो शाखातो सेथि–ह–स्य ि– ि– ि– सेनस्य सहचरिखुडाये दे [व]—

ब. १. पालस्य धि [त] ··· · ·

२. वधमानस्य प्रति[मा] ॥

अनुवाद—देवपुत्र कनिष्कके ५ वें वर्षकी हेमन्त ऋतुके १ ले महीनेके १ ले दिन, कोट्टियगण, ब्रह्मदासिका कुल और उच्चनागरी शाखाकी खुदा (क्षुद्रा) ने वर्धमानकी प्रतिमा समर्पित की। यह क्षुद्रा श्रेष्ठी ····सेनकी पत्नी और देव ···· पालकी पुत्री थी।

[EI, I, XLIII, n° 1]

---

१ 'सिद्धं' की पूर्ति करो।

२०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[?] वर्ष ५

अ. १. सिद्ध[म्] स ५ हे १ दि १० २ अस्य[ां] पूर्व्व[ा]ये कोट्टि[यातो]।

२. [ग] णातो ब्रह्मदासिकातो उच[ो] ना (क) रितो [शाखातो]

ब. १. श्र[ी] गृहातो स[—मोगातो·························।

२.············स निड(?)

स. १.·······ि वोधिलामे ए वासुदेवा पुत्रि························

२.····सर्व-सत्[त्वा] न[म्] ह[ि]त-सुख[ा]ये।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ५, हेमन्तका पहिला महिना, १२ वाँ दिन। इस दिन कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक (कुल), उचेनाकरी (उच्चा-नागरी) शाखा, (श्रीगृह) सम्भोग············के·············(प्रार्थना पर)·········सब जीवोंके हित और सुखके लिये·········।

[IA, XXXIII, p. 36–37, n° 5]

२१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[?] वर्ष ५

·········तो पतिव······ब्रह्मजाति····स ५ हे ४ दि २० अस्य पूर्व्वायें कु महिलनस्य शिष्य अर्य्यगरिकतो

[यह शिलालेख अर्य्य गरिकके किसी दानका उल्लेख करता है। गरिक महिलनके शिष्य थे। यह दान सं० ५ के वर्षमें, शीतऋतुके चौथे महीनेके २० वें दिन किया गया।]

[A Cunningham, Reports III, p. 31 n° 3]

२२

मथुरा—प्राकृत।

[विना काललिर्देशका]

अ. १. सिद्ध को[ट्टि] यतो गणतो उचेन—
२. गरितो शखतो ब्रम्हा(ह्मा)दासिअतो
३. कुलतो शिरिग्रिहतो संभोकतो
४. अय्य जेष्टहस्तिस्य शिष्यो अ [र्य्यमि] [हि] लो]

ब. १. तस्य शिष्य [ो] अर्य्यक्षेर
२. [को] वाचको तस्य निर्वत—
३. न वर [ण] हस्ति [स्य]

स. १. [च] देवियच धित जय—
२. देवस्य वधु मोषिनिये
३. वधु कुठस्य कसुथस्य

द. १. धम्रप [ति] ह स्थिरए
२. दन शवदोभद्रिक
३. सर्व्रसत्वन हितसुखये

[EI, II, n° XIV, n° 37]

अनुवाद—कोट्टिय गण, उच्चेनगरी (उच्चनागरी) शाखा, (और) ब्रह्मदासिअ (ब्रह्मदासिक) कुल, शिरिग्रह संभोगके अय्य जेष्टहस्ति (ज्येष्ठहस्तिन्) के शिष्य अर्य्य मिहिल (आर्य मिहिर) थे; उनके शिष्य वाचक अर्य्य क्षेरक (आर्य क्षैरक ?) थे; उनके कहनेसे वरणहस्ती और देवी, दोनोंकी पुत्री, जयदेवकी बहू तथा मोषिनीकी बहू, कुठ कसुथकी धर्मपत्नी स्थिराके दानसे, सर्व जीवोंके कल्याण और सुखके लिये, सर्वतोभद्रिका प्रतिमा दी गई।

२३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

अ. १. सिद्धम् ॥ कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिकात[ो] कुलातो

२. उ[च्चे]नागरितो शाखातो—रिनातो सं[भ]ो[गातो] अ [र्य्ये]-

ब. १. जेष्टहस्ति[स्य] शि[ष्यो] अर्य्यमहलो अर्य्यजेष्ट[हस्तिस] [शिशो] अर्य्य[गा]ढक [ो] [त] स्य शिशिनि [अर्य्य-]

२. शामये निर्वतना। उ[स]...प्रतिमा वर्मये धीतु [गुल्हा] ये जयदासस्य कुटुबिनिये दानं

अनुवाद—सफलता प्राप्त हो। अर्य्य (आर्य) ज्येष्ठहस्तिके शिष्य अर्य्य महल थे। वे कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखा और... रिन संभोगके थे। ज्येष्ठहस्तिके एक और शिष्य आर्य गाढक थे। उनकी शिष्या शामाके कहनेसे गुल्हाने, जो कि वर्माकी पुत्री और जयदासकी पत्नी थी, एक ऋषभदेवकी प्रतिमा समर्पित की।

[EI, I, XLIII, n° 14]

२४

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं० ७]

१. [सिद्धम् ॥] महाराजस्य राजातिरास्य देवपुत्रस्य षाहि-क्रणिष्कस्य सं० ७ हे १ दि १० ५ एतस्य पूर्व्वाया अर्य्यो-देहिकियातो

२. गणातो अर्य्यनागभुतिकियातो कुलातो गणिस्य अर्य्यबुद्ध-शिरिस्य शिष्यो वाचको अर्य्यस[न्धि]कस्य भगिनि अर्य्यजया अर्य्यगोष्ठ....

अनुवाद—सफलता हो। महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र, शाहि कनिष्कके ७ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके पहले महीनेके १५ वें दिन (अमावस्या) (Lunar day) अर्य्योदेहिकीय (आर्य उद्देहिकीय) गण और अर्य्य-नागभुतिकिय (आर्य नागभूतिकीय) कुलके गणी अर्य्य बुद्धिशिरि (आर्य बुद्धश्री)के शिष्य वाचक अर्य्य (सन्धि) ककी भगिनी अर्य्य जया (आर्य जया) अर्य्य गोष्ठ······

[EI, 1, XLIII, n° 19]

२८

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष ९···]

१. सिद्धं महाराजस्य कनिष्कस्य संवत्सरे नवमे·· ·· ···· ·· ·····
मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्य पूर्व्वाये कोट्टियातो गणातो

२.······ धन····टिस···· ·· न बुद·· ··· भ जिमित············
त्रिकद

[यह महत्त्वपूर्ण लेख नववें संवत्, पहले महीने (ऋतुका नाम लुप्त है) पाँचवें दिनका है। यह महाराज कनिष्कके राज्यकाल (ईस्वी पूर्व ४८) का है।]

[A Cunningham, Reports, III, p 31, n° 4]

२९

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्कका १५ वाँ वर्ष]

अ. १.·········[1] स १० ५ गृ ३ दि १ अस्या पूर्व्व [1] य

ब. १.········हिकातो[2] कुलातो अर्य्यजयभूति ···

स. १. स्य शिशीनिनं अर्य्यसङ्गमिकये शिशीनि····[3]

द. १. अर्य्यवसुलये [निर्वर्त्त] नं

---

१ 'सिद्धं' की पूर्ति करो। २ 'मेहिकातो' पढ़ो। ३ 'शिशीनिनं' पढ़ो।

अ. २.·······लस्य धी [तु]·· ·[ ]······ धु[1] वेणि

ब. २.····श्रेष्ठि [स्य] धर्मपत्निये भट्टि[से]नस्य

स. २. [मातु] कुमरमितयो[2] दनं भगवतो [प्र]····

द. २. मा सव्वतोभद्रिका [॥]

अनुवाद—[सफलता हो।] १५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके पहले दिन, भगवानकी एक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाको कुमरमिता (कुमार-मित्रा) ने [मेहिक] कुलके अर्य्यजयभूतिकी शिष्या अर्य्यं सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य्यं वसुलाके आदेशसे समर्पित की। कुमारमित्रा···लकी पुत्री,···की बहू (वधू), श्रेष्ठी वेणीकी धर्मपत्नी और भट्टिसेनकी माँ थी।

[EI, 1, n° XLIII, No 2]

२७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क?] वर्ष १८

अ. स १० ८ गृ ४ दि ३ [अस्या पु]–[य] ···· [या] तो गण [तो] ··

ब. संभोगातो वच्छलियातो कुलातो गणि· ····

द. १. ···वासि जयस्य–तु मासिगिये [?] दानं सव्वेत[ो]भ–[द्र]·· ·····

२. – [सर्वस] वा [नं] सुखाय भवतु।

अनुवाद—वर्ष १८ ग्रीष्मऋतुका ४ था महीना, तीसरे दिनके अवसर पर, [कोट्टि] य गण,···संभोग, वच्छलिय (वात्सलीय) कुलके गणि······के आदेशसे जयकी (माता) मासिगिका दान एक सर्वतोभद्र [प्रतिमा] के रूपमें किया गया।

[EI, II, n° XIV, n° 13]

---

१ 'वधु' पढ़ो। २ इसे 'कुमारमितये' पढ़ना चाहिये।

२८

मथुरा—प्राकृत-भग्न।

[हुविष्क ?] वर्ष १८

अ.····ष १० [८] व २ दि. १० १

व. धितु मि [तशि] रिये भगवती अरिष्टणेमिस्य [देवर्त] ?

अनुवाद—वर्ष १८, वर्षाऋतुका २ रा महीना, ११ वां दिन, इस दिन · की पुत्री मितशिरि (? मित्रश्री) के दानके रूपमें भगवान अरिष्टणेमि (अरिष्टनेमि) की···[की प्रतिष्ठा)······

[EI, II, XIV, n° 14]

२९

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं. १९]

अ. १. सिद्धम्। सं १० ९ व ४ दि १० अस्या पु····

२. र्व्वाय वाचकस्य अर्य्यबल····

३. दिनस्य शिष्यो [वाच] को अर्यमा····

४. वदिनः तस्य [नि] र्व्वर्त्त [न]।

व. १. [कोट्टियातो गणातो ठानियातो

२. [कुलातो श्रीगृहातो संभोगातो]

३. [अर्यवेरिशाखातो सु] चि····

स. [ल] स्य धर्म्मपत्निये ले···

द. दानं भगवतो स [न्ति]·········[प्र] तिमा

अ. ५. नाश··········तनं

ब. ४.····। [न] मो अरहतानं सर्व्वलोकुत्त [मानं]

अनुवाद—सिद्धि हो। १९ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चौथे महीनेमें, वाचक अर्य्य बलदिन (बलदत्त) के शिष्य वाचक अर्य्य मातृदिनके आदेशसे भगवान शान्तिनाथकी प्रतिमा ले· ···की तरफसे अर्पित की गई। यह अर्पण करनेवाली स्त्री सुचिल (शुचिल) की धर्मपत्नी थी और वह कोट्टिय गण, ठानीय कुल, श्रीगृह सम्भोग तथा अर्य्य वेरि (आर्य-वज्र) शाखाकी थी। सर्व लोकोंमें उत्तम ऐसे अर्हंतोंको नमस्कार हो।

[El, I, n° XLIII, n° 3]

३०

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष २०]

अ १. सिद्ध स [२०] गृमा—दि १० ५ कोट्टियातो गणतो [ठ] णियातो कुलतो बेरितो शखतो शिरिकातो

ब १. [संभो]गातो वाचकस्य अर्य्यसघसिहस्य निर्व्वर्त्तना दाति-लस्य·······मति—

२. लस्य कुठुविणिये जयवालस्य देवदासस्य नागदिनस्य च नागदिनय च मातु

स. १. श्राविकाये दि—

२. [ना] ये दानं ॥

३. वर्द्धमानप्र—

४. तिम।

अनुवाद—सिद्धि हो। २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके १५ वें दिन, कोट्टियगण, ठानीय कुल, वेरि (वज्री) शाखा और शिरिक सम्भोगके वाचक अर्य्य सघसिह (आर्य सङ्घसिंह) के आदेशसे श्राविका दीना (दिन्ना) की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [अर्पित की गई]। यह

दिन्ना दातिल [की पुत्री], मातिलकी पत्नी और जयपाल, देवदास, नागदिन (नागदत्त) तथा नागदिना (नागदत्ता) की माँ थी।

[EI, I, n° XLIV, n° 28]

३१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क सं० २०]

अ. १. [सिद्ध स २० गृ ३] दि [१०] ७ [एत]स्य पुर्व्वाय कोट्टिय[ा] तो गणातो ब्रह्मदासियातो कुलातो उच्चे [नागरितो शा] खातो [श्री] गृह [ा] तो सभोगातो [बृहंतव]ाचक च गणिन च ज [-मित्र] स्य....[1]

२. अर्य्य [ओ] घस्य शिष्यगणिस्य [अ] र्य्यपालस्य श्र [द्धच] रो [वाच]कस्य अर्य्य[दत्त]स्य शिष्यो वाचको अर्य्य-सीहा [त] स्य निव्वर्त्तणा [खो] द्दमि [च]स्य मानिकरस्य [गी]-जयभ[ट्टि] धीतु दास्य—

ब. १. [लो] हवाणियस्स वाधर ''वधू [ह] ग्गु [देव]स्य धर्म्मपत्निये मित्राये [दानं]···· [सर्व्व] स [त्वानं] हि [तसु] खाये काक [तेय]······क्ष–

२.—वाज ·······ि···· ो ·· ···· ···रज··· ··· ···· ।

अनुवाद—सिद्धि हो। हुविष्कके २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके तीसरे महीनेके १७ वें दिन, वाचक अर्य्य सीह (सिंह)—जो वाचक दत्तके शिष्य थे, और जो कोट्टियगण, ब्रह्मदासीय कुल, उच्चनागरी शाखा तथा श्रीगृह

---

१ 'शिष्य' पढ़ो।

संभोगके थे—की आज्ञासे सब सत्वोंके सुख और कल्याणके लिये, मित्रा-की तरफसे ''समर्पित की गई । यह मित्रा हग्गु देव (फल्गुदेव) की धर्मपत्नी, लोहेका व्यापार करनेवाले वाघरकी बहू खोट्टमित्रके मानि-कर'''जयभट्टिकी पुत्री'''''''''। अर्य्यदत्त गणी अर्य्यपालके श्राद्धचर थे। अर्य्यपाल अर्य्य ओघके शिष्य थे और अर्य्य ओघ महावाचक गणी जय-मित्रके शिष्य थे।

[El, 1, n° XLIII, n° 4]

३२

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका है, पूर्ववर्ती शिलालेखसे ही मिलता-जुलता होनेसे इसका भी समय हुविष्क स. २० है]

वाचकस्य दत्तशिष्यस्य सीहस्य नि''''''''

[El, 1, p 383, n° 60]

३३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क सं. २२]

१. सिद्ध सव २०''''२ ग्रि १ दि स्य पुर्व्वायं वाचकस्य अर्य्य-मात्रिदिनस्य णि''''[1]

२. सर्त्तवाहिनिये धर्म्मसोमाये दानं ॥ नमो अरहंतान

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। [हुविष्कके] २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके पहले महीनेके ''दिन, वाचक अर्य्य-मात्रिदिन (आर्य-मातृदत्त) के आदेशसे यह धर्म्मसोमाका दान है । धर्मसोमा एक सार्थवाहकी स्त्री थी। अर्हन्तोंको नमस्कार हो।

[El, 1, n° XLIV, n° 29]

---

१ 'निर्वर्तना' ।

३४

मथुरा—प्राकृत।
[हुविष्क सं. २२]

[सि] द्ध सं २० (?) [२] ग्रि २ दि ७ वर्धमानस्य प्रतिमा वारणातो गणातो पेतिवामि[क]...

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके दूसरे महीनेके ७ वें दिन, वारणा गण, पेतिवामिक [कुल] की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [प्रतिष्ठापित की गई]।

[El, 1, n° XLIII, n° 20]

३५

मथुरा—प्राकृत।
[हुविष्क वर्ष २५]

अ. १. सवत्सरे पचविंशे हेमतम [से] त्रितिये दिवसे वीशे अस्मि क्षुणे

व. १. कोट्टियतो गणतो ब्र[ह्म]दासिकतो कुलतो उचेनागरितो शाखातो अयबलत्रतस्य शिषो सधि

२. स्य शिषिनि ग्रहां ----ि.... – वतन [ना] दिअ [रि] त जभ[क] स्य वधु जयभट्टस्य कुटूबिनीय रयगिनिये [वु]धुय [॥]

अनुवाद—२५ वें वर्षकी शीतऋतुके तीसरे महीनेके १२ वें दिनके समय रयगिनिने जो नान्दिगिरि (?) के जभककी बहू थी, एक वुधुय[1] ग्रहां --की आज्ञासे समर्पित की। रयगिनि जयभट्टकी पत्नी थी। ग्रहां -- सधिकी शिष्या थी। सधि अर्य्य बलत्रत (बलत्रात) के शिष्य थे। यह बलत्रात कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल (और) उच्चनागरी शाखाके थे।

[El, 1, XLIII, n° 5]

---

१ यह एक प्रकारकी या तो प्रतिमा है या कोई दान है।

३६

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका, संभवतः हुविष्कके २५ वें वर्षका]

१. उचेनगरितो शखतो अर्य्यबलत्रतस्य शिसिणि अर्य्यब्रह्म——

२. अर्य्यबलत्रतस्य शिष्यो अर्य्यसन्धिस्य परिग्रहे नवहस्तिस्य धिता ग्रहसेनस्य वधु ···· ···

३. गिवसेनस्य देवसेनस्य शिवदेवस्य च भ्रात्रिन मातु जायये प्रतीमा प्र· · ····

४. [मा] नस्य सर्व्वसत्वान हितसुखय ॥

अनुवाद—अर्य्य ब्रह्म (आर्य ब्रह्म) [और] अर्य्य बलत्रत (आर्य बलत्रात) के शिष्य अर्य्य सन्धि (आर्य सन्धि) के ग्रहणके लिये उचेनगरि (उच्चनागरी) शाखाके अर्य्य बलत्रत (आर्य बलत्रात) की शिष्या, जयाने सब जीवोंके कल्याण और सुखके लिये वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की। यह जया नवहस्तीकी पुत्री, ग्रहसेनकी बहू तथा शिवसेन, देवसेन और शिवदेव इन तीन भाइयोंकी माँ थी।

[EI, 11, nº XIV, nº 34]

३७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष २९]

अ. महाराज···· ···ष्कस सं. २० ९ हे २ दि ३० अम क्षुणे भगवतो वर्धमानस प्रति [मा] प्रतिष्ठापिता ग्रहह[थ]स्य धितर सुखिताये बोधिनदि [ये]

ब. कुटुंबिनिये वारणे गणे पुश्यमित्रीये कुले गणिस अर्य [दत्तस शिष्यस्य] गह [प्र] कि [व] स निर्वर्त [ना] अर[हं] तपुजाये ।

अनुवाद—महाराज · ष्क के २९ वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके तीसवें दिन, एक विवाहिता बोधिनदि (बोधिनन्दि ?) की आज्ञासे भगवान वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की गई । बोधिनदि अहहथि (अहहस्ती) की प्यारी लडकी थी। यह प्रतिष्ठा अहमकिव (?) की प्रेरणासे हुई । यह अहमकिव आर्य दत्तके जो चारण गण और पुश्यमित्रीय (पुष्यमित्रीय) कुलके थे, शिष्य थे।

[EI, I, n° XLIII, n° 6]

३८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[संभवतः हुविष्क वर्ष २९]

अ. १. एकुनती [श] ब. १. अ [र] [ह] तो सं. १.....

२. वा— — २. [ह] रवल २ प्रतिस— —

द. १. स्य म-र- स्य देव [पु] त्रस्य [हु] क्षस्य

२. [वा] सि [क] नगदतस्य शिषो मि [ग क] े स— —

[इस खण्ड-लेखका ठीक ठीक अनुवाद नहीं दिया जा सकता । इतना निश्चित है कि द १. २. पंक्तियाँ हमें महाराज देवपुत्र हुक्ष (हुष्क या हुविष्क) और एक भिक्षु नगदत्त (नागदत्त) का नाम बताती है। यह भी हो सकता है कि यह लेख द. १ से शुरू हुआ हो, क्योंकि उस पंक्तिमें 'स्य', 'सिद्ध' का स्थानीय मालूम पड़ता है, तथा उसमें राजाका भी नाम है। इसकी धारा अ. १ हो सकती है । २९ वा वर्ष हुविष्कके राज्यमें आयेगा।

[EI, II, n° XIV, n° 26]

३९

मथुरा—संस्कृत—भग्न।

[काल लुप्त-संभवतः हुविष्कका २९ वां वर्ष]

·...... [व] पुत्रस्य हुविष्कस्य स ....[1]

---

[1] 'देवपुत्रस्य' और 'सवत्सरे' पढो।

अनुवाद—··· देवपुत्र हुविष्कके ······ वर्षमें ···

[El 11, n° XIV n° 25]

४०

मथुरा—प्राकृत।

[वर्ष ३१ हुविष्ककाल]

अ-स ३० १ व १ दि १० अस्म क्षुणे

ब. १.·· ·यातो गणतो [अ]र्य्य वेरितो शाखतो [ठा] णियातो कुलातो वह [तो]। कुटुम्बिणिये [ग्र] ह

२. ···· [अर्य]-दासस्य निवर्तना बुद्धिस्य धितु देविलस्य शिरिये दाणं।

[ऊपरके शिलालेखका ठीक क्रम, जी. बूल्हरकी सम्मतिमें, इस तरह है:—]

[कोट्टि]यातो गण [तो] अर्य्यवेरितो शाखतो [ठा]णियातो कुलातो वह [तो] (?) [गणिस्य] अर्य [गो] दासस्य निवर्तना बुद्धिस्य धितु देविलस्य कुटुम्बिणिये ग्रहशिरिये दाण॥

अनुवाद—३१ वें वर्षकी वर्षाऋतुके पहले महीनेके १० वें दिन, बुद्धिकी पुत्री (तथा) देविलकी पत्नी गृहशिरि (गृहश्री)ने, कोट्टिय गण, अर्य्य वेरि (आर्य वज्री) शाखा, ठाणिय (स्थानीय) कुलके [गणी] आर्य गोदासके आदेशसे दान किया।

[El, II, n° XIV, n° 15]

४१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क काल] वर्ष ३२

अ. १. सिद्धम्। सत्र [त्स] रे ३० २ हेमन्तमासे ४ दिवसे २ वारणातो गणा····यातो [कु] ० ?[1]

२. ·······································

ब. १. —णि अर्यनन्दिकस्य निर्व्वर्त्तना जितामित्रय[रितु] नन्दिस्य धीतु बुद्धिस्य कुटुम्बिनिये प्रा—[2]

तारिकस्य—नी ि — प्य मातु गन्धिकस्य अरहन्तप्रतिमा सर्व्वतोभद्रिका।

अनुवाद—सिद्धि हो। ३२ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके दूसरे दिन, रितुनन्दि (ऋतुनन्दि) की पुत्री, बुद्धिकी पत्नी तथा गंधिककी माँ ···जितामित्राने, वारण गण···य कुल ··अर्य-नन्दिक (आर्यनन्दिक) के आदेशसे एक अर्हन्तकी सर्वतोभद्रिका प्रतिमाकी प्रतिष्ठापना की।

[EI, II, n° XIV, n° 16]

४२

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ३५]

अ. १. [सिद्ध]। सं ३० [५] व ३ दि १० अस्य [ा] पूर्व्वाया कोट्टियातो गणतो [स्थानि] या [तो] कु—

ब. १. वइरातो श [ा] ख [ा]तो शिरिकातो स[भो]कातो अर्य्य-चलदिनस्य शिशिनि कुमरमि[त]

---

१ सम्भवत 'गणातो हट्टियातो' पढ़ो। २ सम्भवत 'प्रातारिकस्य' पढ़ना चाहिये।

२. तस्य पुत्रो कुम[ा]रभटि गधिको तस ···न प्रतिमा वर्धमानस्य सशितमखित [वो] वित

स. १. अ [र्ये]

२. कुमार-

३. मित्रा-

४. ये-

द. १. र्व्वे

२ [त] न [ं|]

सारांश—आर्य बलदिन (बलदत्त) की शिष्या कुमरमित्रा (कुमारमित्रा) थी। वह कोट्टिय गण, स्थानीय कुल, वइरा शाखा (तथा) शिरिक संभोक (संभोग) की थी। उसका पुत्र कुमारभटि गन्धिक (तेल, इत्रका व्यापार करनेवाला) था। उसने तीक्ष्ण, उज्ज्वल, प्रबुद्ध कुमारमित्राके आदेशसे वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की।

[EI, 1, n° XLIII, n° 7]

४३

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क संवत् ३९—हस्तिस्तम्भ]

१. महाराजस्य देवपुत्रस्य हुविष्कस्य सं० ३९

२. हे ३ दि० ११ एतय पुर्व्वये नन्दि विशाल

३. प्रतिष्ठपितो सिवदास श्रेष्ठिपुत्रेण श्रेष्ठिना

४. अर्य्येन रुद्रदासेन अरहतन पुजाये

अनुवाद—देवपुत्र महाराज हुविष्कके राज्यमें, सं० ३९ की शीतऋतुके तीसरे महीनेके ११ वें दिन, यह विशाल नन्दी शिवदास श्रेष्ठीके पुत्र आर्य श्रेष्ठी रुद्रदासने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये बनवाया (१८ ई० पूर्व)।

[A Cunningham, Reports, III, p 32-33, n° 9]

४४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ४०]

अ. १.—४०—हे—दि १०

ब. १. ए [त] स्य पू [र्व्वा] य त्ररणतो ग [ण]-

स. १. तो आर्य्य हटिकियतो कुलतो

ढ. १. वजनगरित[ो] श [ा] ख [ा] त [ो] शि [रि] यत [ो]

अ. २.— — [ग] तो [द] तिस्य शिशिनिये

ब. २. महन [न्दि] स्य सढचरिये

स २. बल [वर्म] ये [नन्द] ये च शिशिनिये

द. २. अ [कक] ये [निर्व्वर्त्तना]······

अ. ३.—[स्य] धीतु ग्रमि [क] जयदेवस्य वधूये

ब. ३.···मिको जयनागस्य धर्म्मपत्निये सिहदता [ये]

स. ३.···[लथभ] ो[1] दनं =····

अनुवाद—[सिद्धि हो।] ४० वें [वर्षमें] शीत ऋतुके······महीनेके दसवें दिन, सिहदता (सिंहदत्ता) ने एक पाषाण-स्तम्भकी स्थापना की। यह सिंहदत्ता ग्रामिक जयनागकी धर्मपत्नी, जयदेव ग्रामिक (गाँवका मुखिया) की बहू (तथा)······की पुत्री थी। इस पाषाणस्तम्भकी स्थापना वारण गण, आर्य-हाटीकीय कुल, वज्रनागरी शाखा तथा शिरिय संभोगकी अकका (?) के आदेशसे हुई थी। यह अकका नन्दा और बलवर्माकी शिष्या, महनन्दि (महानन्दि) की श्राद्धचरी तथा दति (दत्ती) की शिष्या थी।

[El, I, n° XLIII, n° 1]

---

1 पढ़ो 'शिलाथंभो'।

४५

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४४]

अ. सू—नमशर [स] तममहरजस्य हुविक्षस्य सव [त्स] रे ४० ४ हनगृ [स्य] मस ३ दिविस २ ए [त]—

ब. [स्या] पूर्वय [ा] ··· गणे अर्यचेटिये कुले हरीतमालकढिय [श] ाख ········ाचक [स्य] हगिनदिअ शिसो ग ··· नागसेणस्य नि ····

अनुवाद—स्वस्ति। नमः। प्रतापी (?) महाराज हुविष्कके ४४ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके द्वितीय दिवस, [वारण] गण, अर्य्यचेटिय (आर्य-चेटिक) कुल, हरीतमालकढि (हरीतमालगढ़ी) शाखाके वाचक हगिनंदि (भगनन्दि ?) के शिष्य आर्य्य नागसेनके आदेशसे—

[EI, 1, n° XLIII, n° 9]

४६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४५]

१. सिद्धम् सं ४० ५ व [३] दि १० [७] एतस्य पूर्व्व[ा]य- ·········· ये बुद्धिस्य वधुये धर्म्मवृद्धिस्य—

अनुवाद—सिद्धि हो। ४५ वें वर्षकी वर्षाऋतुके तीसरे (?) (महीने) के १७ वें दिन, धर्म्मवृद्धिकी····· बुद्धिकी बहूने··············· ·····

[EI, 1, n° XLIII, n° 10]

४७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ४७]

१. स ४० ७ गृ २ दि २० एतस्य पुर्वय वरणे गणे पेतिवमि- के कुले वाचकस्य ओहनदिस्य शिसस्य सेनस्य निवतना सवकस्य

२. पुपस्य वधुये गिह···[कुटिंत्रिनि]···[पुष] दिन [स्य]
[मातु] ···· ये

अनुवाद—४७ वें वर्ष की ग्रीष्मऋतुके २ रे महीनेके १० वें दिन, वरण (वारण) गण, पेतिवमिक (प्रैतिवर्मिक) कुलके वाचक और ओह-नदि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनकी प्रार्थनापर पुष (पुष्य) श्रावककी बहू, गिहकी गृहिणी, पुषदिन (पुष्पदत्त) की माँ,······ की तरफसे [यह समर्पित किया गया]।

[EI, 1, n° XLIV, n° 30]

४८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त, संभवतः वर्ष ४७]

१. सिद्धम् । महाराजस्य राजातिराजस्य · ·········

२. ओहनन्दिस्य शिष्येण से · न·········[१]

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज······ओहनन्दि (ओघ-नन्दि) के शिष्य सेनने·········

[EI, II, n XIV, n° 27]

४९

मथुरा—संस्कृत।

[हुविष्क वर्ष ४७]

दान देविलस्य दधिकर्णदेविकुलकस्य स ४० ७ ग्रृ० ४ दिवसे २९

अनुवाद—४७ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके चौथे महीनेके २९ वें दिन, दधिकर्ण मन्दिर (या चैत्यालय) के पुजारी (या माली) देविलका दान।

[IA, XXXIII, p 102–103, n° 13]

---

१ 'सेनेन' पढ़ो।

५०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क वर्ष ४८]

१. महाराजस्य हुविष्कस्य स ४० ८ हे ४ दि ५

२. वमदासिये कुल [`] उ [च] ो नागरिय शाखाया धर····

अनुवाद—महाराज हुविष्कके राज्यमें, ४८ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखाके धर ······

[IA, XXXIII, p 103, n° 14]

५१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्ककाल वर्ष ५०]

१. पण ५० हेमतमासे प····

२. आर्य्यचेरस्य

३. ये ग्रुधदिनस्य

४. धित

५. पूपवुधिस्य····

[इस खण्ड-शिलालेखका पूरा अनुवाद संभव नहीं है। काल ५० वाँ वर्ष और शीतऋतुका पहला या पाँचवां महीना है।]

[EI, II, n° XIV, n° 17]

५२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्कका ५० वां वर्ष]

१. — —, ५० (?) हे २ दि १ अस्य पुर्व्वय वरणतो गणतो अय्यभिस्त कुलतो [स] —

२. खतो शिरिग्रहतो समोगतो वहवो वचक च गणिनो च समदि [अ]····

३.·····वस्य दिनरस्य शिशिनि अय्य जिनदसि पणति-धरितय शिशिनि अ·······

४. घकरवपणतिहरमसोपवसिनि बुबुस्य धित रज्यवसुस्यधर्म...[1]

५. [द] विलस्य मतु विष्णु[भ]वस्य पिढमहिक विजय-शिरिये दन वध.........[2]

६. ·············

अनुवाद—५० वां वर्ष, शीतऋतुका दूसरा महीना, पहला दिन, इस दिन, वरण (वारण) गण, अय्यभिस्त (?) कुल, सं [कासिया] शाखा, शिरिग्रह (श्रीगृह) संभोगके महावाचक तथा गणि समदि···व दिनर की शिष्या अय्य-जिनदसि (आर्य जिनदासी) की आज्ञाको माननेवाली... अय्य घकरव (?) की आज्ञाको धारण करनेवाली विजयशिरि [विजयश्रीने] दानमें वध [मान] अर्थात् वर्धमान की प्रतिमा······। यह विजयश्री बुबुकी पुत्री, रज्यवसु (राज्यवसु) की धर्मपत्नी, देविलकी माँ (और) विष्णुभवकी नानी थी और इसने एक महीनेका उपवास किया था।

[EI, II, n° XIV, n° 36]

५३

रामनगर—प्राकृत।

[काल ? वर्ष ५०]

वर्ष	राजा	स्थान	कहाँ	विशेषता
५०	—	रामनगर (अहिच्छत्र)	A S N-W-P-O, Annual report 1891-1892, p 3	दूसरा महीना, शीतऋतु, पहला दिन; ब्राह्मी लिपि

[JRAS, 1903, p 7-14, n° 40]

१ 'धर्मपत्नी' पढ़ो। २ 'वधमान प्रतिमा' या शायद 'प्रतिमा'।

५४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ५२]

१. सिद्ध संवत्सर द्वापना ५० २ हेमन्त [मा] स प्रथ—दिवस पंचवीश २० ५ अस्म क्षुणे क[ो]ट्टिया तो गणात[ो]

२. वेरातो शखतो स्थानिकियातो कुलात[ो] श्रीगृहतो संभोगातो वाचकस्यार्य्यघस्तुहस्तिस्य

३. शिष्यो गणिस्यार्य्यमंगुहस्तिस्य षढचरो वाचको अर्य्यदिवितस्य निर्व्वर्तना शूरस्य श्रम-

४. णकपुत्रस्य गोट्टिकस्य लोहिकाकारकस्य दान सर्व्वसत्वानं हितसुखायास्तु।

अनुवाद—सिद्धि हो। ५२ वें वर्षके शीतऋतुके पहले महीनेके २५ वें दिन, कोट्टिय गण, वेरा (वज्रा) शाखा, स्थानिकिय कुल (तथा) श्रीगृह संभोगके वाचक आर्य्य घस्तुहस्तिके शिष्य और गणी आर्य मङ्गुहस्तिके श्राद्धचर ऐसे वाचक अर्य्यदिवितके आदेशसे श्रमणकके पुत्र, शूर लुहार गोट्टिकने दान दिया।

[EI, II, n° XIV, n° 18]

५५

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ५४]

१.—धम्। सव ५० ४ हेमतमासे चतुर्थे ४ दिवसे १० अ—

२. स्य पुर्व्वाया कोट्टियातो [ग] णातो स्थानि [य]ातो कुलातो

३. वैरातो शाखातो श्रीगृह [ा] तो संभोगातो वाचकस्यार्य्य-

४. [ह] स्तहस्तिस्य शिष्यो गणिस्य अर्य्यमाघहस्तिस्य श्रद्धचरो वाचकस्य अ-

५. र्य्यदेवस्य निर्व्वर्त्तने गोवस्य सीहपुत्रस्य लोहिककारुकस्य दानं

६. सर्व्वसत्वाना हितसुखा एकसरस्वती प्रतीष्ठाविता अवतले रङ्गान[र्त्तन] े

७. मे [॥]

अनुवाद—सिद्धि हो। ५४ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके (शुक्ल-पक्षके) १० वें दिन, वाचक आर्यदेवकी प्रेरणासे सीहके पुत्र गोव लुहारके दानरूपमें एक सरस्वतीकी (प्रतिमा) प्रतिष्ठापित की गई। आर्य्य देव कोट्टियगण, स्थानिय कुल, वैरा शाखा तथा श्रीगृहसंभोगके वाचक आर्य्य हस्तहस्तिके शिष्य गणि आर्य्य माघहस्तिके श्राद्धचर थे। अवतलमें मेरा रङ्गशालीय नृत्य (?)।

[EI, I, n° XLIII, n° 21]

५६

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ६०]

अ. सिद्धम्। म[हा]रा[ज]स्य र[ाजा]तिराजस्य देवपुत्रस्य हुवष्कस्य सं ४० (६०?) हेमन्तमासे ४ दि० १० एतस्या पूर्व्वाया कोड्डिये गणे स्थानिकीये कुले अय्य[वेरि]याण शाखाया वाच-कस्यार्य्यवृद्धहस्ति[स्य]

ब. शिष्यस्य गणिस्य आर्य्यख[र्ण्ण]स्य पुय्यम[न]······[स्य] ···[व]तकस्य [क]—सकस्य कुटुम्बिनीये दत्ताये—नधर्म्मो[1] महा-भोगताय प्रीयताम्भगवानृपभश्री ।

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज, देवपुत्र हुविष्कके ६० वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके १० वें दिन, कोट्टियगण, स्थानिकीय कुल (तथा) अर्य्य वेरियों (आर्य-वज्रके अनुयायियों) की शाखाके वाचक आर्य वृद्धहस्तिके शिष्य, गणि आर्य्य खर्ण्णके आदेशसे ··वतके निवासी

---

१ 'दानधर्मों' पढ़ो।

पसककी पत्नी दत्ताने महाभोगता (महासुख)के लिये यह दानधर्म किया। भगवान् ऋषभदेव प्रसन्न होवें।

[EI, I, n° XLIII, n° 8]

५७

मथुरा—प्राकृत।

[हु० संवत् ६२]

वाचकस्य अर्य-ककसघस्तस्य शिष्या आतपिको ग्रहबलस्य निर्वर्तन··· ···

अनुवाद—वाचक आर्य ककसघस्त (कर्कशघर्षित)के शिष्य आतपिक ग्रहबलके आदेशसे।

इस शिलालेखसे मालूम पड़ता है कि किसी मुनिके आदेशसे जैन श्राविका वैहिकाने एक प्रतिमाका दान किया।

[IA, XXXIII, p. 105-106, n° 19]

५८

मथुरा—प्राकृत।

[हु० वर्ष ६२]

१. सिद्ध। स ६० २ व २ दि ५ एतस्य पुवय वाचकस्य आयकर्कुहस्थ [स]

२. वारणगणियस शिषो ग्रहबलो आतपिको तस निवर्तना।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ६२, वर्षाऋतुका २ रा महीना, दिन ५, इस दिन, वारणगणके वाचक आय-कर्कुहस्थ (आर्य कर्कशघर्षित) के शिष्य आतपिक ग्रहबल थे। उनकी प्रेरणासे·········

[EI, II, n° XIV, n° 19]

५९

मथुरा—प्राकृत।

[ ] वर्ष ७९

अ. १. सं. ७० ९–वँ ४ दि २० एतस्यां पुर्व्वायं कोट्टिये गणे वइराया शाखायां···· ···

२. को अयवृधहस्ति अरहतो णन्दि '[आ] वर्तस प्रतिम निर्वर्तयति।

ब.·········भार्य्यये श्राविकाये [दिनाये] दानं प्रतिमा वोद्वे थुपे देवनिर्मिते प्र····· ···[1]

अनुवाद—वर्ष ७९, वर्षाऋतुका चौथा महीना, २० वां दिन, इस दिन, कोट्टियगण (तथा) वइरा (वज्रा) शाखा के वाचक अय-वृधहस्ति (आर्य वृद्धहस्ति) ने दीना [दत्ता] श्राविकाको, जो··· · की भार्या थी, एक अर्हत् णन्दिआवर्त्त (नन्द्यावर्त्त)[2] की प्रतिमाके निर्माणके लिए कहा। दीनाकी यह प्रतिमा देवनिर्मित वोद्व स्तूपपर प्रतिष्ठित हुई।

[El, II, n° XIV, n° 20]

६०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क वर्ष ८०]

१. [सिध] महरजस्य सं ८० हुण व १ दि १२ एतस पूर्व्वाया········

२. धितु संघनधि [स्य] वधुये बलस्य········

अनुवाद—[स्वस्ति।] महाराज वासुदेवके ८० वें वर्षमें, वर्षाऋतुके १ ले महीनेके १२ वें दिन,·········की पुत्री, सघनधि (?) की बहू, बलकी ····· ········(अपूर्ण).

[El, n° XLIII, n° 24]

६१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[ ] वर्ष ८१

१. स ८० १ व १ दि ६ एतस्य पुवाय [अ] यिकाजीवाये अंते-

२. वासिकिनिये दताये निवतना। [ग्र) हशिरिये····

---

1 'प्रतिष्ठापिता'। 2 नन्द्यावर्त्त जिसका चिह्न है ऐसे १८ वें तीर्थङ्कर अर्हनाथ भगवान्‌की प्रतिमा।

अनुवाद—वर्ष ८१, वर्षाऋतुका १ ला महीना, ६ ठा दिन, इस दिन, अयिका-जीवा (आर्यिकाजीवा) की शिष्या दत्ताकी प्रार्थनापर ग्रहशिरि (ग्रहश्री) ··· ।

[EI, II, n° XIV, n° 21]

६२

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव] वर्ष ८३

१. सिद्ध महाराजस्य वासुदेवस्य सं ८० ३ गृ २ दि १० ६ एतस्य पूर्व्वये सेनस्य

२. [धि] तु दत्तस्य वधुये ब्य····च····स्य गन्धिकस्य कुटुम्बिनिये जिनदासिय प्रतिमा ध [र्मद]ान

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज वासुदेवके राज्यमे ८३ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १६ वें दिन, सेनकी पुत्री, दत्तकी बहू, गन्धिक (तेल, इत्र बेचनेवाले) ब्य–च···की पत्नी जिनदासीके पवित्रदानमें एक प्रतिमा ··· ··· ।

[IA, XXXIII, p 107, n° 21]

६३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ८६]

१. सं ८० ६ हे १ दि १० २ दसस्य धितु प्रियस्य कुटुविनिये

२. ···· [क] तो कुलतो अयस [ङ्ग] मि [क] य शिशिनिय अयवसुल [ये] नि [व] तने [॥]

अनुवाद—८६ वें वर्षकी शीतऋतुके पहले महीनेके १२वें दिन, दस (दास) की पुत्री, पृथ (प्रिय) की पत्नी ······ का दान अर्पित किया गया। यह दान [मेहि] क कुलकी अर्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य्य वसुलाके कहनेसे हुआ।

[EI, 1, n° XLIII, n° 12]

६४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ८७]

[सं ८० ७ ?] गृ १ दि [२० ?] अ [स्मि] क्षुणे उच्चेनागर-
स्यार्य्यकुमारनन्दिशिष्यस्य मित्रस्य..........

अनुवाद—८७ (?) वें वर्षमें ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके २० (?) वें दिन, उच्चनागरके, कुमारनन्दीके शिष्य, मित्रके.....

[EI, I, n° XLIII, n° 13]

६५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वासुदेव] वर्ष ८७

१. सिद्ध। महाराजस्य राजातिराजस्य शाहिइ=वासुदेवस्य

२. सं ८० ७ हे २ दि ३० एतस्या पुर्वाया........

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज राजातिराज शाहि वासुदेवके ८७ वें वर्षकी शीतऋतुके २ रे महीनेके तीसवें दिन, ..."

[IA, XXXIII, p 108, n° 22]

६६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[सं० ९०]

१. सव [९० ≀] .... ढुवनिए दिनस्य वधूय

२. को ... तो ग [णा] तो प—व [ह]—[क] तो कुलातो
मझमातो शाखा [तो]....सनिकय भतिवलाए मिनि

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें खास कामकी चीज मझमा शाखा और प-वह-क कुलका उल्लेख है। प-वहक कुल जैन परम्पराका प्रश्नवाहनक या पण्हवाहणय कुल है। वर्ष (सं) ९० है]

[EI, II, n° XIV, n° 22]

६७

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वर्ष ९३]

अ. नमो अर्हतो महाविरस्य सं० ९० ३ [व] ....

ब. १. शिष्यास्य ग [णि] स्य [न] न्दिये [नि] र्वर्त्तना देवस्य हैरण्यकस्य धितु ....

२. .... ि- [भ] - वतो वर्द्धमानप्रतिमा प्रति .... पुजा [ये] [॥]

अनुवाद—अर्हत् महाविर (महावीर) को नमस्कार हो। वर्ष ९३, वर्षाऋतुका ... (महीना), ... के शिष्य गणी नन्दीके आदेशसे [अर्हत् की] पूजाके लिये, हैरण्यक (सुनार) देवकी पुत्री...ने भगवान् वर्द्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई।

[EI, II, n° XIV, n° 23]

६८

मथुरा—प्राकृत।

[वर्ष ९५]

१. [सि] सद्ध सं. ९० ५ [ग्] ग्रि २ दि १० ८ कोट्टि [य] तो गणातो ठानियातो कुलातो वइर [ा तो शा] खातो अर्य्य अरहं....

२. शिशिनि धाम [था] ये निर्वर्तन [ा] ग्रहदतस्य धि [तु] धनहथि ......

अनुवाद—सिद्धि हो। ९५ वें (?) वर्षके ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १८ वें दिन, धामथाके आदेशसे ग्रहदत्तकी पुत्री, धनहथि (धनहस्ती) की पत्नी ... का [दान किया गया]। धामथा कोट्टियगण, ठानिय कुल, वइरा शाखाके अर्य्य अरह [दिन्न] की शिष्या थी।

[EI, 1, n° XLIII, n° 22]

६९

मथुरा—प्राकृत।

[वासुदेव सं० ९८]

१. सिद्ध [म्] ॥ नमो अरहतो महावीरस्य दे·········रस्य । राज वासुदेवस्य संवत्सरे ९० ८ वर्ष-मासे ४ दिवसे १०१ एतस्या

२. पुर्वये अर्य्य-देहिकियातो ग [णातो] परिधा [ा] सिकातो कुलातो पेतपुत्रिकातो शाखातो गणिस्य अर्य्य-देवदत्तस्य न

३. र्य्य—क्षेमस्य

४. प्रकगिरिण

५. किहदिये प्रज

६. ···तस्य प्रवरकस्य धितु वरुणस्य गन्धिकस्य वधूये मित्रस····
······ ···दत्त गा [?]

७. ये····भगवतो महा [वीर] स्य ।

अनुवाद—सिद्धि हो। महावीर अर्हत्को नमस्कार हो। ·· राजा वासुदेवके ९८ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चतुर्थ महीनेके ११ वें दिन, अर्य्य देहिक्रिय (देहिकीय) गण, परिधासिक कुल, प्रेतपुत्रिका (पैतापुत्रिका ?) शाखाके गणि आर्य देवदत्तके · [आदेशसे] प्रवरककी पुत्री, गन्धिक वरुणकी बहू, मित्रस ··· ·· , आर्य-क्षेमाका ··· ··· [दान] ··· ··· भगवान् महावीरको नमस्कार हो।

[IA, XXXIII, p 108-109, n° 23]

७०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[सं.] वर्ष ९८

स. ९० ८ हे १ दि ५ अस्म क्षुणे को [ा]ट्टियात[ा] गणातो उचनग·········[1]

---

१ 'उचनगरितो शाखातो'।

अनुवाद—वर्ष ९८ की शीतऋतुके १ ले महीनेके ५ वें दिन, कोट्टिय गण, उच्चनगरी (उच्चानागरी) [शाखा] ·········

[El, II, n° XIV, n° 24]

७१

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो अरहतान सिहकस वानिकस पुत्रेण कोशिकिपुत्रेण

२. सिहनादिकेन आयागपटो प्रतिथापितो आरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार हो। वानिक सिहक (सिंहक) के पुत्र तथा किसी कोशिकी (कौशिकी माँ) के पुत्र सिहनादिक (सिंहनन्दिक ?) के द्वारा एक आयागपटकी प्रतिष्ठा अर्हन्तोंकी पूजाके लिये की गई।

[El, II, n° XIV, n° 30]

७२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहंताना शिवघो [षक]स भरि [या]····ना····ना····

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार। शिवघोषककी भार्या······ ·····

[El, II, n° XIV, n° 31]

७३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

पं. १. नमो अरहंतानं [मल]····णस धितु भद्रयशस वधुये भद्रनदिस भयाये

.२. अ [चला]ये आ[या]गपटो प्रतिथापितो अरहतपुजाये।

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार। मल—णकी बेटी, भद्रयश (भद्रयशस) की बहू, तथा भद्रनदि (भद्रनन्दिन्) की पत्नी अचलाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये एक आयागपट्ट स्थापित किया।

[EI, II, n° XIV, n° 32]

७४

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त]

—शे एत [स्यां] पूर्व्वाया कोट्टियातो गणातो........

अनुवाद—उक्त समय पर, कोट्टियगणके.........

[EI, I, n° XLIII, n° 15]

७५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त]

पं. १........अरहतान वधमानस्य [क]लस्य धितु सिनविषुस्य भ [गि] न [ा] य

२..................[श] [ति] स्य [नव] र्तनं [॥]

अनुवाद—शतिके आदेशसे सिनविषु (विष्णुषेण)की बहिन, कलकी पुत्रीका दान यह अर्हत् वर्धमानकी प्रतिमा है।

[EI, I, n° XLIII, n° 16]

७६

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

वारणातो गणातो आर्यकनियसिकातो कुलातो ओद्............

अनुवाद—वारण गण, पूजनीय कनियसिक कुल, ओद...(शाखा) के

[EI, I, n° XLIII, n° 23]

७७

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त]

······ र्षमासे[1] १ दीवसे ३० अस्मि क्षु ··

अनुवाद—······ ···वर्षाऋतुके पहले महीनेके ३० वें दिन, उस अवसर (या, उत्सव) पर······

[El, 1, n° XLIII, n° 25]

७८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

दासस्य पुत्रो चीरि तस्य दत्तिः [॥]

अनुवाद—दासके पुत्र चीरिका दान।

[El, 1, n° XLIII, n° 26]

७९

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

प. १. [प्रतिमा] वधमान [स्य] प्रतियापिता

२. ठानियातो—ल········· ·त आर्यग]·········

अनुवाद—ठानिय (स्थानीय) शाखाके ········वधमान (वर्धमान)-की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई।···

[El,I, n° XLIII, n° 27]

---

1 पढ़ो 'वर्षमासे' और 'क्षुणे'।

८०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

प. १. [सि] द्ध नमो अरहताण····द्धनं वारणे गणे अयहाट्टि [ये][1]

२. कुले वजनागरिया शाखाया अर्यशिरिकिये संभो········[2]

अनुवाद—सिद्धि हो। अर्हन्तोको नमस्कार। [सिद्धोंको नमस्कार]। वारण गण, अय हाट्टिय (आर्य हालीय)कुल, वजनागरि (वज्रनागरी) शाखा, अर्य-शिरिकिय संभोगके ·····

[EI, I, XLIV, n° 34]

८१

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [ते]—रुसनंदिकस पुत्रेन नंदिघोषेन [ते] वणिकेन अ···· त····अले········

२. णानं मंदिरे [आ] यागपटा प्रतिथापित [ा]··········..

अनुवाद—ते-रुस (?)-नंदिकके पुत्र, तेवणिक (त्रैवर्णिक) नंदिघोषके द्वारा आयागपट ······के मन्दिरमें स्थापित की गई।

[EI, I, XLIV, n° 35]

८२

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. ··· भगवतो उसभस वारणे गणे नाडिके कुले ···· ···· खा [यं] ····

---

१ पढ़ो 'नमो सिद्धान'। २ सभवत. 'होळिये'। ३ पढ़ो 'सभोगे'।

व. ढुकस वायकस सिसिनिए सादिताए नि ····

अनुवाद—भगवान् वृषभ (उसभ) को नमस्कार हो। वारण गण, नाडिक कुल तथा········ ···के वाचक · ···ढुककी शिष्या सादिताके आदेशसे············

[El, II, n° XIV, n° 28]

८३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

स्थ [ा]निकिये कुले गनिस्य उग्गहिनिय शिषो वाचको घोषको आर्हतो पर्श्वस्य प्रतिमा····

अनुवाद—"स्थानिकिय (कीय) कुलके गणि (गणिन्) उग्गहिनिके शिष्य वाचक घोषकने एक अर्हत् पार्श्वकी प्रतिमा···

[El, II, n° XIV, n° 29]

८४

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

अ. वर्धमानपटिमा वजरनद्यस्य धिता वाधिशिव··

१.–ि – स्य– कुटीविनि दिनाये दाति वडिम [शि] ये····

२.·····················

अनुवाद–"वजरनद्य (वज्रनन्दिन्) की पुत्री, वाधिशिव (वृद्धिशिव ?) की बहू, ि ··· की पत्नी दिना (दत्ता) के दानके रूपसें एक वर्धमानकी प्रतिमा ··· ··· वडिमशिके······

[El, II, n° XIV, n° 33]

८५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

अ. तिये निर्वर्तना

ब. १. तो शखतो शिरिकतो संभोकतो अर्य्य

३. .... लनस्य मतु हर्रि [स्त]........

२. ि—धराये निवतना शिवद [त]

[EI, II, n° XIV, n° 35]

[नोट—'निर्वर्तना' और 'निवतना' इन दो शब्दोंके एक ही शिलालेखमें आ जानेसे एक ही शिलालेखके दो खण्ड मालूम पड़ते है और वे सम्बद्ध अर्थ-को व्यक्त नहीं करते हैं।]

८६

मथुरा—प्राकृत।

(विना कालनिर्देशका)

१.......................ये मोगलिपुतस पुफकस भयाये

२. असाये पसादो

अनुवाद—किसी मोगली (या मौद्गलीविशेष) के पुत्र, पुफक (पुष्पक) की पत्नी, असा (अश्वा ?) का दान।

[IA, XXXIII, p. 151, n° 28.]

८७

राजगिरि—संस्कृत।

[ ]

T. Bloch के आर्कीओलोजिकल सर्वे, बङ्गाल सर्किल, वार्षिक रिपोर्ट १९०२, पृ० १६, विश्लेषणमें इस शिलालेखका उल्लेख है। मूलका पता नहीं है।

[AS, Bengal circle, Annual report 1902, p. 16. a.]

८८

मथुरा—संस्कृत—भग्न।

[सं० २९९]

१. नमस्-सर्वसिद्धाना अरहन्ताना । महाराजस्य राजातिराजस्य संवच्छरशते द [ु] [तिये नव (?) -नवत्यधिके ॥]

२. २०० ९० ९ (?) हेमन्तमासे २ दिवसे १ आरहातो महावीरस्य प्रातिमा

३. ...स्य ओखारिकाये धितु उझतिकाये च ओखाये श्राविका भगिनिय [े]..........

४. ....शरिकस्य शिवदिनास्य च एतैः आराहातायनाने स्थापित [ा]..........

५. ....देवकुलं च ।

अनुवाद-सब सिद्धों और अर्हन्तोंको नमस्कार हो। महाराज और राजातिराजके (९९ से अधिक) दूसरी शताब्दिमें, २९९ (?), शीतऋतुके दूसरे महीनेके पहले दिन—भगवान महावीरकी प्रतिमा अर्हन्मन्दिरमें ...... के द्वारा तथा .. ..की पुत्री,...ओखरिकाकी...उज्झतिका द्वारा, ...श्राविका भगिनी ओखाके द्वारा, तथा शिरिक और शिवदिन्ना इनके द्वारा स्थापित की गई.. साथमें एक जिनमन्दिर भी।

[G. Buhler, J R A S, 1896, p. 578–581]

८९

मथुरा—संस्कृत—भग्न

[गुप्तकाल? वर्ष ५७]

संवत्सरे सप्तपञ्चाश ५० ७ हेमन्धत्रिती....[1]

—से [दि] वसे त्रयोदशे अ-पुर्व्वाया....

---

१ 'हेमन्त' और 'तृतीय' या 'तृतीये' पढ़ो।

अनुवाद--५७ वें वर्ष, शीतऋतुकी तीसरे महीनेके १३ वें दिन, ड्डसदिन.........

[EI, II, n° XIV, n° 38]

९०

नोणमङ्गल—संस्कृत

गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ३७० ई० का

[नोणमंगलमें ताम्र-पट्टिकाओंपर]

[१ ब] स्वस्ति नमस् सर्वज्ञाय ॥ जितं भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्-जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जव्रज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारिगण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोङ्गुणिवर्म-धर्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनय-विहित-वृत्तस्य

[२ अ] सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्कवि-काञ्चन-निकषोपल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्यजनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः श्रीमन्माधववर्म-धर्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुणयुक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशसः समद-द्विर-दतुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मण' श्रीमद् हरिवर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्या

[२ ब] तस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रेण पितुरन्वागत-गुण-युक्तेन त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहराजः(ज)पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेन व्यायामो-द्वृत्त-पीन-कठिनभुजद्वयेन स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्रीत-राज्येन क्षुत्-

क्षामोष्ठ-पिर्सिताशनप्रीतिकर-निसित-धारासिना श्रीमता **माधववर्म्म-महाधिराजेन** आत्मनःश्रेयसे प्रवर्द्धमानविपुलैश्वर्य्ये त्रयोदशे सवत्सरे फाल्गुने मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्या श्रीमद्-वीर-देव-शासनाम्बरावभासन-सहस्रकरस्य आचार्य्यवीर-देवस्य

[३ अ] निज-कृतान्तपर-राद्धान्त-प्रवीणस्य उपदेशनात् **मुदुकोत्तूर**-विपये **पेब्बोलल्**-ग्रामे अर्हदायतनाय मूलसंघानुष्ठिताय महा-तटाकस्य अधस्तात् द्वादश-खण्डुकावापमात्र-क्षेत्र च तोट्ट-क्षेत्र च पट्ठु-क्षेत्रं च **कुमारपुर**-ग्रामश्च एतत्सर्वं स-सर्व्व-परिहार-क्रमेणाद्भिर्द्दत्तः योऽस्य लोभात् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीता[ ] श्लोका[:]

स्व-दत्ता पर-दत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्ठि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते ॥

(अन्य हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें गंगकुलके राजाओंकी परम्परा—कोङ्गणिवर्मा, माधववर्मा, हरिवर्मा, विष्णुगोप और माधववर्मा—देकर यह बताया है कि अन्तिम राजाने अपने राज्यके १३ वें वर्षमें, फाल्गुनसुदी पचमीको, आचार्य वीरदेवकी सम्मतिसे, मुदुकोत्तूर-देशके पेब्बोंवल् गांवमें मूलसंघद्वारा प्रतिष्ठापित जिनालयमें (उक्त) भूमि और कुमारपुर गांव दानमें दिये।]

[EC, X, Malur tl., n° 73.]

९१

उदयगिरि (सांची के निकट)-संस्कृत ।

[गुप्तकाल १०६= ई. सं० ४२६]

Corrected transcript of the facsimile.

[१] नमः सिद्धेभ्यः[॥]

श्रीसंयुतानां गुणतोयधीनाम्
गुप्तान्वयानां नृपसत्तमानाम् [।]

[२] राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने
षड्भिर्य्युते वर्षशतेऽथ मासे [।।] १.
सुकार्त्तिके बहुलदिनेऽथ पञ्चमे

[३] गुहामुखे स्फुटविकटोत्कटामिमा [।]
जितद्विषो जिनवरपार्श्वसंज्ञिकाम्
जिनाकृतीं शमदमवान

[४] चीकरत् [।।] २. आचार्य-भद्रान्वयभूषणस्य
शिष्यो ह्यसावार्य्यकुलोद्गतस्य [।]
आचार्य-गोश

[५]र्म्म मुनेस्सुतस्तु पद्मावत [स्या]श्वपतेर्भटस्य [।।] ३.
परैरजेयस्य रिपुघ्नमानिनस्
स सङ्घ

[६] लस्येत्यभिविश्रुतो भुवि [।] स्वसंज्ञया शंकरनामशब्दितो
विधानयुक्तं यतिमार्ग्गमास्थितः [।।] ४.
स उत्तराणां सदृशे गुरूणां
उदग्दिशादेशवरे प्रसूतः [।]

[८] क्षयाय कर्म्मारिगणस्य धीमान्
यदत्र पुण्यं तदपाससर्ज [।।] ५.

[इस शिलालेखमें शम-दमवाले किसी व्यक्तिकेद्वारा पार्श्वनाथ जिनेन्द्रकी प्रतिमाकी कार्तिक वदी पंचमीके दिन स्थापनाकी बात है। यह प्रतिमा किसी गुफाके द्वारपर खडी की गई थी। इस प्रतिमाकी स्थापना करने वाला या उसको खडा करनेवाला आचार्य गोशर्माका शिष्य था। ये गोशर्मा आचार्य भद्रके वंशमें हुए थे, इनकी परम्परा आर्यकुलकी थी और अश्वपति योद्धाके लड़के थे। ये अश्वपति सङ्कल (या सिंहल) के नामसे प्रसिद्ध थे और इन्होंने जिनदीक्षा लेनेके बाद अपना नाम शंकर रक्खा था।]

[इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ११, पृ० ३१०]

९२

मथुरा—संस्कृत।

[गुप्तकाल, वर्ष ११३]

१. सिद्धम् । परमभट्टारकमाहाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तस्य विजयराज्यसं [१०० १०] ३ क.........न्तमा....[दि]–स २० अस्या ५ [पूर्व्वाया] कोट्टिया गणा-

२. द्विद्याधरी [तो] शाखातो दतिलाचार्य्यप्रज्ञपिताये शामाढ्याये भट्टिभवस्य धीतु ग्रहमित्रपालि [त] प्रा [ता] रिकस्य कुटुम्बिनीये प्रतिमा प्रतिष्ठापिता।

अनुवाद–सिद्धि हो। परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तके विजयराज्यके ११३ वें वर्षमें, [शीतऋतु महीने] कार्त्तिकके २० वें दिन, कोट्टियगण (तथा) विद्याधरी शाखाके दतिलाचार्य (दत्तिलाचार्य) की आज्ञासे शामाढ्य (श्यामाढ्य) ने एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई। श्यामाढ्य भट्टिभवकी बेटी (और) ग्रहमित्रपालित प्रातारिक (घाटी या नाविक) की पत्नी थी।

[EI, II, n° XIV, n° 39]

१३

कहायूँ—संस्कृत

[गुप्तकाल १४१ वाँ वर्ष=४६१ ई. स.]

सिद्धम् ।

[१] यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरःपातवातावधूता
[२] गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्व्वोत्तमर्द्धेः
[३] राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपतेः स्कन्दगुप्तस्य शान्ते
[४] वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरकशततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने ॥ १ ॥
[५] ख्यातेऽस्मिन् ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैस्साधुसंसर्गपूते
[६] पुत्रो यस्सोमिलस्य प्रचुरगुणनिधेर्भट्टिसोमो महात्मा
[७] तत्सूनूरुद्रसोम[ः] प्रथुलमतियशा व्याघ्र इत्यन्यसंज्ञो
[८] मद्रस्तस्यात्मजोऽभूद् द्विजगुरुयतिषु प्रायशः प्रीतिमान् यः ॥
[९] पुण्यस्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो
[१०] श्रेयोऽर्थं भूतभूत्यै पथि नियमवतामर्हतामादिकर्तॄन्
[११] पञ्चेन्द्रान्स्थापयित्वा धरणिधरमयान् सन्निखातस्ततोऽयम्
[१२] शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमः कीर्त्तिकर्त्ता ॥ २ ॥

[इस शिलालेखमें, जो कि गुप्तकालके १४१ वें वर्षका है, बताया गया है कि किसी भद्र नामके व्यक्तिने, जिसकी कि वंशावली यहां उसके प्रपितामह सोमिल तक गिनाई है, अर्हन्तों (तीर्थकरों)में मुख्य समझे जाने वाले, अर्थात् आदिनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्व, और महावीर, इन पांचोंकी प्रतिमाओंकी स्थापना करके इस स्तम्भको खड़ा किया। लेखकी ११ वीं पंक्तिके 'पञ्चेन्द्रान्' से इन्हीं पांच तीर्थंकरोंसे मतलब है।]

[इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द १०, पृ० १२५–१२६]

९४

नोणमंगल—संस्कृत तथा कन्नड़।

[गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ४२५ (?) ई० का]

[नोणमंगल (लक्कूर परगना) में, ध्वस्त जैन बस्तिके ताम्रपत्रो पर¹]

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गतघन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज् जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जव-ज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारि-गण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनस-गोत्रस्य श्रीमत्कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनयविहित-वृत्तस्य सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्-कवि-काञ्चन-निकषो

[२ अ] पल-भूतस्य विशेष्यतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्य-जनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः श्रीमन्माधववर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुण-युक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशसः समद-द्विरद-तुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मणः धनुरभियोगस-म्पद्-विशेपस्य श्रीमद्-हरिवर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वा

[२ ब] गत-गुण-युक्तस्य त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रजः-पवि-त्रीकृतोत्तमाङ्गस्य व्यायामोद्वृत्त-पीन-कठिन-भुज-द्वयस्य स्वभुजवल-परा-

---

१ ये ताम्रपत्र जमीनमें मिले हैं।

क्रम-क्रयक्रीत-राज्यस्य चिर-प्रनष्ट-देव-भोग-ब्रह्मदेय-नैक-सहस्र-विसर्गा-ग्रयण-कारिणः क्षुत्-क्षामोष्ट-पिसिताशन-प्रीतिकर-निशित-धारासेः कलि-युग-बलावमग्न-धर्म्मोद्धरण-नित्य-सन्नद्धस्य श्रीमतो **माधववर्म्म**-धर्म्म-महा-धिराजस्य पुत्रेण जननी-देवताङ्क-पर्य्यङ्क-तले-समधिगत-राज्य-विभव-विलासेन निज-प्रभावांशु-चक्रवालाखण्डित-शत्रु-नृपति-मण्डलेनाखण्ड

[२ अ] ल-विडम्बि-शौर्य्य-वीर्य्य-यशो-धाम-भूतेन गज-धुरि-हय-पृष्ठे कार्म्मुके चाद्वितीयेन ललना-नयन-भ्रमरावली-नित्यकृतानुयात्रेण प्रजा-परिपालन-कृत-परिकर-बन्धेन किं बहुना इदङ्कलि-युधिष्ठिरेण-श्रीमता **कोङ्गुणिवर्म्म**-धर्म्म-महाधिराजेन आत्मनः श्रेयसे प्रवर्द्धमान-विपुलैश्वर्य्यें प्रथमसंवत्सरे फाल्गुन-मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्यां सो(खो)पाध्यायस्य परमार्हतस्य **विजयकीर्तेः** सकलदिङ्मण्डलव्यापिकीर्त्तेरुपदेशतः **चन्द्रनन्द्याचार्य्य**-प्रमुखेन मूल-संघेनानुष्ठिताय **उरनूरार्हतायत**

[२ब] **नाय कोरिकुन्द**-विषये **वेन्नेल्करनि**ग्रामः **पेरूरेवानि-अडि गलर्हदायतनाय** शुल्क-बहिश्कर्षापणेषु पादश्च देव-भोगक्रमेणाद्भिर्दत्तः योऽस्य लोभाद् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीताः श्लोका.

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते
भूमि-दानात् परं दान न भूत न भविष्यति ।
तस्यैव

[४ अ] हरणात् पापं न भूतं न भविष्यति ॥

(दो इमेशाके श्लोक)महाराज-मुखाज्ञाप्त्या मारिषेण त्वष्टकारेण लिखितेय ताम्र-पट्टिका

[EC, X, Mālur tl., n° 72.]

अनुवाद—कोङ्गणिवर्म्म धर्म्म-महाधिराज जाह्नवी (या गंग)-कुलके निर्मल आकाशमें चमकनेवाले सूर्य थे; वे काण्वायनसगोत्रके थे।

इनके पुत्र माधववर्मधर्ममहाधिराज थे, जो एक 'दत्तकसूत्र-वृत्ति' के प्रणेता थे।

इनके पुत्र हरिवर्मा-महाधिराज थे।

इनके पुत्र विष्णुगोप-महाधिराज थे।

इनके पुत्र माधववर्म-धर्म महाधिराज थे, जो कलियुगकी कीचड़में फंसे हुए धर्मरूपी बैलको निकालनेमें हमेशा सन्नद्ध रहते थे।

इनके पुत्र कोङ्गणिवर्म-धर्म्म-महाधिराजने जो कि कलियुगी युधिष्ठिर कहलाते थे, अपने कल्याणकेलिये, अपने बढ़ते हुए राज्यके प्रथम वर्षकी फाल्गुन सुदी पञ्चमीको, अपने उपाध्याय परमार्हत (भक्तजैन) विजयकीर्तिकी सम्मतिसे, मूलसंघके चन्द्रनन्दि इत्यादिके द्वारा प्रतिष्ठापित उरनूर के जैन मन्दिरको कोरिकुन्द-देशमेंका वेन्नेल्करनि गाँव दिया था, और पेरूर एवानि-अडिगल्के जिनमन्दिरमें बाहरकी चुङ्गीके कार्षापण[1] (या धन) का चतुर्थ भाग दिया था।

इमेशाके शापात्मक (imprecatory) श्लोक। महाराज अपने मुँहसे जैसा बोलते जाते थे, मारिषेण त्वष्टकार वैसा ही इन ताम्र-पट्टिकाओं-पर खोदता जाता था।

---

१. ८० रत्तीके तौलके ताम्बेके सिक्के, जो प्राचीनतम देशी मुद्राके थे। (डा० बूल्हरकी Grundriss, मे रैपसनका 'Indian Coins' नामका लेख देखो।)

९५

मर्करा—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ३८८=४६६ ई.]

अविनीत कोङ्गणिका मर्करा-पत्र

(मर्कराके खजानेमेंसे प्राप्त ताम्रपत्रोंके ऊपर)

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मा(द्म)नाभेन श्रीमद्‌जाह्नवीय[कु]लामलव्योमावभासनभास्कर' स्वखड्गैकप्रहारखण्डित-महाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारणो(रुणा)रिगणविदारणोपलब्धव्र(व्र)-णविभूपणविभूषित काण्वायनसगोत्रस्य(?) श्रीमान् कोङ्गणिमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविने(न)यविहितवृत्त. सम्या(म्य)क्प्र-जापालना(न)मात्राधिगतराज्यात्प्र(प्र)योजन विद्वत्कविकाञ्चननिक-षोपलभूतो नीतिशास्त्रस्यवक्तृप्रयोक्तृकुशलस्य(?) दत्तकसूत्रवृत्तिः(त्तेः) प्रणेता(ता) श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितृपैतामहा(ह)गुणयुक्तो व(ऽ)नेकचातुर्दन्तयुद्ध(द्धा)वाप्तिचतुरुदधिसलिलास्वादितयश श्रीमद् हरि-वर्म्ममहाधिराज ॥ तत्पुत्र ॥ द्विजगुरुदेवता:(ता)पूजनपरो नारायण-चरणानुद्ध(ध्या)त श्रीमद्विष्णुगोपम

(२ अ) हाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ त्रियम्भ(त्र्यम्ब)कचरणाम्भोरुहरा-जा (रज:)पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग स्वभुजबलपराक्रमक्रियाकृतराज्य कलियुगबल-पङ्कावसन्नवृषोद्धरणनित्यसन्नद्ध श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ श्रीमद्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिन कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रिया(य) भागिनेयो विद्याविनय(या)तिस(श)यपरिपूरितान्तरात्म(त्मा) निरवग्रहप्रधा-(य)नसौर्य्य विद्वत्सु प्रथमगण्य श्रीमान् कोङ्गणिमहाधिराज अविनीतना-मधेय दत्तस्य देसिग-गण कोण्डकुन्दान्वयगुणचन्द्रभटारशिष्यस्य अभ-

णन्दि(अभयनन्दि)भटार तस्य शिष्यस्य शीलभद्रभटारशिष्यस्य जयणन्दिभटारशिष्यस्य गुणणन्दिभटारशिष्यस्य चन्दणंदिभटारगें अष्टा-असीति-उत्तरस्य त्रयो-स(श)तस्य संवत्सरस्य माघमासं सोमवारं स्वातिनक्षत्र सुद्ध पञ्चमी अकालवर्ष-पृथुवीवल्लभमन्त्री तळवननगर श्रीविजयजिनालयक्के पूनाडुच्छ(च्छट्)सहस्रएडेनाडुसप्तरिमध्ये वदणेगुप्पेनाम अविनीतमहाधिराजेन दत्तेन पडिये आरॊळ्मूरू।

(२ व) रोळ् पन्निर्कण्डुगङ्गेन्दुअम्बलिमण्णुं तलवनपुरदोळ् तळवित्तियमन् पोगरिगेल्लेयोळ् पन्निक्कण्डुग पिरिकेरॆयोळ्म् राजमानमनुमोदन पन्निर्कण्डुग मनोहर दत्त वदणेगुप्पेग्रामस्य सीमान्तर पूर्व्वस्या दिसि केञ्जिगेमोरॆडिए गजसेलेये करिवल्लिय कोट्टगरवदणेगुप्पेयत्रिसन्धिय सत्ति-कोरॆडु आग्नेयदिनन्ते वन्दुकागणि-तटाक पुन दक्षिणस्या दिसि वडुण्णुहिये वल्कणिवृक्षमे पुन पश्चिम-मुखदे सन्द वडुमूल्किपन्तिये पुन वदणेगुप्पेय-कोट्टगरमुत्तगिय-त्रिसन्धिय कोळे चण्डिगाले पुन नैरत्यदे सन्दु कयक-वृक्षमे पुन पश्चिमस्या दिसि पेल्डुल्दिल्-वृक्षमे सान्तॆरॆतिय वट-वृक्षमे पुन नोरॆवल्लमे उत्तरा-मुखदे सन्द वडुमूल्कि-पन्तिये जम्बूपडिय-तटाकमे पुन वायव्यदे गळेचिञ्च-वृक्षमे पुन वदणेगुप्पेय-मुत्तगिय-कोळेयनूरदासनूर-त्रिसन्धियनेगिल-गुम्बे निडुवेळुङ्ग पुन गजसेलेयग्राम उत्तरदिसि कायामोरॆडिए इल्लिदु केम्ब रेये पुन पूर्व्व-मुखदे सन्द वडुमूल्कि-प।

(३ अ)न्तिये पुन कडपल्लिगाल वट-वृक्षमे पुन ईसानदे वदणेगुप्पेय-दासनूर-पोल्मद-त्रिसन्धिय तटाकमे कोडिगट्टि चिञ्च-वृक्षमे केन्तरॆम्बिन दिणेइ पूर्व्वदे कूडित्त सीमान्तरं॥ तस्य साक्षिणा गङ्गराज

---

१ °जनाणन्दि°, इं ए०, १, पृ० ३६३।

कुलसकलास्थयिक-पुरुप पेर्म्मक्कवाण मर्ळगरेय सेन्दिक गञ्जेनाड निर्ग्गुण्ड मणियुगुरेय नन्वाल सिम्बालादय भूलया देश-साक्षि तगडूर कुळुगो वरुगणिगनूर तगडरु आलोडते नन्दकरुं उम्मत्तूर बेळुरुमाळ-गेयरुं वद्योगुप्पेय ज्ञसन्द वेळुरु पेर्गिंगवियरु ॥

स्वदत्तपरदत्ता वा यो हरेथ(त) वसुन्धरी(रा) पष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमि[:] [॥]

वसुर्भि[र्] वसुधा भुक्ता(क्ता)राजभिस्संक-राजभिः[1] यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलम् ॥

देवस्व तु विष घोरं न विष विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति देवस्व[–] पुत्रपौत्रिकं(का) ॥

'सामान्योय धर्म्म हेतु(सेतुं) नृपाणाम् काले काले पालनीयो भवद्भि[:] सर्व्वा(र्व्वा)नेता भागिन(न् भाविनः) पार्त्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्र[:] ॥ विश्वकर्म्म लिखितम्

चेर राजाओंकी वंशावली इस दानपत्रमें इस प्रकार दी हुई है:—

१. कोङ्गणि प्रथम । २. माधव प्रथम । ३. हरिवर्म्म । ४. विष्णु-गोप । ५. माधव द्वितीय । ६. कोङ्गणि द्वितीय (अविनीत) ।

ये अविनीत महाधिराज कदम्बकुलसूर्य कृष्णवर्म्म-महाधिराजकी प्रिय बहि-नके पुत्र थे । इनके लिये दानपत्रमें कहा गया है कि–'इनका अन्तरात्मा विद्या, विनयकी वृद्धिसे परिपूरित था, अजेय शौर्य इनमें था और विद्वानोंमें प्रथम गिने जाते थे ।' इन्हींसे देसिग (देशीय) 'गण' कोण्डकुन्द 'अन्वय' के गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-भटार, उनके शिष्य शीलभद्र-भटार, उनके शिष्य जयणन्दि- भटार, उनके शिष्य गुणणन्दि-भटार, उनके शिष्य चन्दणन्दि-भटारको तलवननगरके श्रीविजय जिनालयके मन्दिरके लिये

---

1 सामान्यतया 'सगरादिभि.' ।

बदणेगुप्पे नामका सुन्दर गाँव दानमें प्राप्तकर अकालवर्ष पृथवी-वल्लभके मन्त्रीने शकसंवत्सर ३८८ के माघ महीनेकी शुक्ल पञ्चमी, सोमवारको स्वातिनक्षत्रके समय इसे भेंट किया। यह गाँव पूनाड्ड छः हजारके एडेनाड्ड सत्तरके मध्यमें अवस्थित है। साथमें १२ 'कण्डुग' प्रत्येक छः आश्रित गांवोंमेंसे, तथा पोगरिगेल्ले और पिरिकेरेंमें से भी दिया।]

९६

हल्सी (ज़िला बेलगाँव)—संस्कृत।

[ई० पाँचवीं शताब्दिका (फ्लीट)]

प्रथम पत्र।

[१] नमः ॥ जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्र[थि]त [परम] कारुणिकः

[२] त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ परम—

[३] श्रीविजयपलाशिकाया प्रजासाधारणा [शा] नाम् ॥

दूसरा पत्र; पहली ओर।

[४] कदम्बाना युवराजः श्रीकाकुस्थवर्म्मा स्ववैजयिके अशीतितमे

[५] संवत्सरे भगवतामर्हताम् सर्व्वभूतशरण्यानाम् त्रैलोक्य-निस्तार-

[६] काणाम् खेटग्रामे बदोवरक्षेत्र [म्] श्रुतकीर्तिसेनापतये ॥

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

[७] आत्मनस्तारणार्त्थे दत्तवा [न्] [।] तद्यो [हि] न (ना) स्ति स्ववश्यः [प] रवश्यो वा

[८] स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवती (ति) [।] यो भिरक्षती (ति) तस्य सत्यर्व्व (सर्व्वं, या सत्यं सर्व्वं) गु-

[९] णपुण्यावाप्तिः [।।] अपि चोक्तम् [।] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता ॥[1]

[१०] [रा] जभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य य[दा]भू]मिः तस्य तस्य तदा फलम् [।।]

[११] स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा षष्टिवर्षसहस्र(स्रा) णी (णि)

[१२] नरके पच्यते तु सः ॥ नमो नमः [।।] ऋषभाय नमः ॥

[इस लेखमें कदम्ब 'युवराज' काकुस्थ (काकुत्स्थ)वर्माके द्वारा श्रुतकीर्त्ति सेनापतिको दिये गये एक क्षेत्र-दानका उल्लेख है । यह दान खेटग्राम नामक गाँवमें किया गया था ।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २२-२४, नं० २०]

९७

देवगिरि (जिला धारवाड)—संस्कृत ।

—[?]—

सिद्धम् जयत्यर्हंस्त्रिलोकेशः सर्वभूतहिते रतः

रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वरः

स्वस्ति **विजयवैजयन्त्यां** स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषिक्ताना मानव्यसगोत्राणां हारितीपुत्राण(णा) अङ्गिरसां प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चकाना सद्धर्म्मसदम्बाना **कदम्बाना** अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कन्धः आहवार्जितपरमरुचिरदृढसत्वः[2] विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपरंपरागते जगत्प्रदीपभूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये **श्रीशान्तिवर्म्मतनयः**

---

१ यह पूर्ण विरामका चिह्न फजूल है । २ इन पत्रोंमे यह खास बात है कि जहाँ द्वित्वाक्षरोंका इतना अधिक प्रयोग किया गया है वहाँ 'सत्व' और 'तत्व'मे 'त' अक्षर द्वित्व नहीं किया गया ।

श्रीमृगेश्वरवर्मा आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौषसंवत्सरे कार्तिकमासे बहुले पक्षे दशम्या तिथौ उत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे **बृहत्परलूरे** (?) त्रिदशमुकुटपरिघृष्टचारचरणेभ्यः परमार्हद्देवेभ्यः संमार्जनोपलेपनाभ्यर्च्चनभग्नसंस्कारमहिमार्त्थं ग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तन कृष्णभूमिक्षेत्रं चत्वारि क्षेत्रन्निवर्त्तन च चैत्यालयस्य बहिः,[१] एकं निवर्त्तन पुष्पार्थं देवकुलस्याङ्गनञ्च एकनिवर्त्तनमेव सर्वपरिहारयुक्त दत्तवान् महाराजः। लोभादधर्माद्वा योस्याभिहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स तत्पुण्यफलभाग्भवति। उक्तञ्च–

[२]बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम्॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा।
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः॥
अद्भिर्द्दत्त त्रिभिर्भुक्तं सद्भिश्च परिपालितम्।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि चं॥
स्व दातु सुमहच्छक्यं दुःखमन्यार्थपालन।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम्॥

परमधार्मिकेण **दामकीर्ति**भोजकेन लिखितेयं पट्टिका इति सिद्धिरस्तु॥

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३५-३७, न. ३६]

[यह पत्र श्रीशान्तिवर्माके पुत्र महाराज श्री 'मृगेश्वरवर्मा' की तरफसे लिखा गया है, जिसे पत्रमें काकुस्था(त्स्था)न्वयी प्रकट किया है, और इससे ये कदम्बराजा, भारतके सुप्रसिद्ध वंशोंकी दृष्टिसे, सूर्यवंशी अथवा इक्ष्वाकु-

---

१ व्याकरणकी दृष्टिसे यह वाक्य बिल्कुल शुद्ध नहीं मालूम होता। २ यह पद्य मिस्टर फ्लीटके शिलालेख नं० ५ में मनुका ठहराया गया है। आमतौरपर यह व्यासका माना जाता है।

वंशी थे, ऐसा मालूम होता है। यह पत्र उक्त मृगेश्वरवर्मांके राज्यके तीसरे वर्ष, पौर्व (?) नामके संवत्सरमें, कार्त्तिक कृष्णा दशमीको, जबकि उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र था, लिखा गया है। इसके द्वारा अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्नसंस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभावना) इन कामोंके लिये कुछ भूमि, जिसका परिमाण दिया है, अरहन्तदेवके निमित्त दान की गयी है। भूमिकी तफसीलमें एक निवर्तनभूमि खालिस पुष्पोंके लिये निर्दिष्ट की गई है। ग्रामका नाम कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, 'बृहत्परलूरे' ऐसा पाठ पढ़ा\जाता है। अन्तमें लिखा है कि जो कोई लोभ या अधर्मसे इस दानका अपहरण करेगा वह पंचमहापापोंसे युक्त होगा और जो इसकी रक्षा करेगा वह इस दानके पुण्य-फलका भागी होगा। साथ ही इसके समर्थनमें चार श्लोक भी 'उक्तं' च रूपसे दिये हैं, जिनमेंसे एक श्लोकमें यह बतलाया है कि जो अपनी या दूसरेकी दान की हुई भूमिका अपहरण करता है वह साठ हजार वर्ष तक नरकमें पकाया जाता है, अर्थात् कष्ट भोगता है। और दूसरेमें यह सूचित किया है कि स्वयं दान देना आसान है परंतु अन्यके दानार्थका पालन करना कठिन है, अतः दानकी अपेक्षा दानका अनुपालन श्रेष्ठ है। इन 'उक्तं च' श्लोकोके बाद इस पत्रके लेखकका नाम 'दामकीर्ति भोजक' दिया है और उसे परम धार्मिक प्रकट किया है। इस पत्रके शुरूमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक एक सुन्दर पद्य भी दिया हुआ है जो दूसरे पत्रोंके शुरूमें नहीं है, परंतु तीसरे पत्रके बिल्कुल अन्तमें जरासे परिवर्तनके साथ जरूर पाया जाता है।]

९८

देवगिरि (जिला-धारवाड़)—संस्कृत

—[?]—

सिद्धम्॥ विजयवैजयन्त्याम् स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषि-

---

१ साठ संवत्सरोंमें इस नामका कोई संवत्सर नहीं है। सम्भव है कि यह किसी संवत्सरका पर्याय नाम हो या उस समय दूसरे नामोंके भी संवत्सर प्रचलित हों। २ यह और आगेके लेख नं० ९८ और १०५ जैनहितैषी, भाग १४, अङ्क ७-८, पृ० २२८-२२९ से उद्धृत किये हैं।

त्तस्य मानव्यसगोत्रस्य हारितीपुत्रस्य प्रतिकृतचर्च्चापारस्य विबुधप्रति-बिम्बाना कदम्बाना धर्ममहाराजस्य श्रीविजयशिवमृगेशवर्म्मणः विजयायुरोग्यैश्वर्यप्रवर्द्धनकरः संव्वत्सरः चतुर्त्थः वर्षापक्षः अष्टमः तिथिः पौर्ण्णमासी अनयानुपूर्व्या अनेकजन्मान्तरोपार्ज्जितविपुलपुण्यस्कधः सुविशुद्धपितृमातृवशः उभयलोकप्रियहितकरानेकशास्त्रार्थतत्वविज्ञानविवेच्च (?[१]) ने विनिविष्टविशालोदारमतिः हस्त्यश्वारोहणप्रहरणादिषु न्यायामिकीषु भूमिषु यथावत्कृतश्रमः दक्षो दक्षिणः नयविनयकुशलः अनेकाहवार्ज्जितपरमदृढसत्वः उदात्तबुद्धिधैर्यवीर्य्यत्यागसम्पन्नः सुमहति समरसङ्कटे स्वभुजबलपराक्रमावाप्तविपुलैश्वर्यः सम्यक्प्रजापालनपरः स्वजनकुमुदवनप्रबोधनशशाङ्कः देवद्विजगुरुसाधुजनेभ्यः गोभूमिहिरण्यशयनाच्छादनान्नादिअनेकविधदाननित्यः विद्वत्सुहृत्स्वजनसामान्योपभुज्यमानमहाविभवः आदिकालराजवृत्तानुसारी धर्ममहाराजः कदम्बाना श्रीविजयशिवमृगेशवर्म्मा कालवङ्गग्राम त्रिधा विभज्य दत्तवान् । अत्र पूर्वमर्हच्छालापरमपुष्कलस्थाननिवासिभ्यः भगवदर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताभ्य एको भागः, द्वितीयोर्हत्प्रोक्तसद्धर्म्मकरणपरस्य श्वेतपटमहाश्रमणसंघोपभोगाय, तृतीयो निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघोपभोगायेति । अत्र देवभाग धान्यदेवपूजाबलिचरुदेवकर्मकरभग्नक्रियाप्रवर्त्तनाद्यर्थोपभोगाय । एतदेव न्यायलब्ध देवभोगसमयेन[२] योभिरक्षति स तत्फलभाग्भवति, यो विनाशयेत् स पचमहापातकसंयुक्तो भवति । उक्तञ्च-बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल । नरवरसेनापतिना लिखित ।

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३७-३८, नं० ३७]

---

१ इन प्रतिलिपियोंमें विसर्ग उस चिह्नके स्थानमें लिखा गया है जो कण्ठ्यवर्णो (Gutturals) से पहले विसर्गकी जगह प्रयुक्त हुआ है। २ 'देवभागं समयेन' शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है।

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज 'श्रीविजयशिवमृगेश वर्मा' की तरफसे लिखा गया है और इसके लेखक हैं 'नरवर' नामके सेनापति। लिखे जानेका समय चतुर्थसंवत्सर, वर्षा (ऋतु) का आठवाँ पक्ष और पौर्णमासी तिथि है। इस पत्रके द्वारा 'कालवङ्ग' नामके ग्रामको तीन भागोंमें विभाजित करके इस तरहपर बाँट दिया है कि पहला एक भाग तो अर्हच्छाला परम-पुष्कल स्थाननिवासी भगवान् अर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताके लिये, दूसरा भाग अर्हत्प्रोक्त सद्धर्माचरणमें तत्पर श्वेताम्बरमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये और तीसरा भाग निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये। साथ ही, देवभागके सम्बन्धमें यह विधान किया है कि वह धान्य, देवपूजा, बलि, चरु, देवकर्म, कर, भग्नक्रिया-प्रवर्तनादि अर्थोपभोगके लिये है, और यह सब न्यायलब्ध है। अन्तमें इस दानके अभिरक्षकको वही दानके फलका भागी और विनाशकको पंच महापापोंसे युक्त होना बतलाया है, जैसा कि नं० ९७ के दानपत्रमें उल्लेखित है। परंतु यहाँ उन चार 'उक्तं च' श्लोकोंमेंसे सिर्फ पहलेका एक श्लोक दिया है जिसका यह अर्थ होता है कि, इस पृथ्वीको सगरादि बहुतसे राजाओंने भोगा है, जिस समय जिस-जिसकी भूमि होती है उस समय उसी-उसीको फल लगता है।

इस पत्रमें 'चतुर्थ' संवत्सरके उल्लेखसे यद्यपि ऐसा भ्रम होता है कि यह दानपत्र भी उन्हीं मृगेश्वरवर्माका है जिनका उल्लेख पहले नम्बरके पत्र (शि० ले० नं. ९७) में है अर्थात् जिन्होंने पूर्वका (नं० ९७) दान-पत्र लिखाया था और जो उनके राज्यके तीसरे वर्षमें लिखा गया था, परंतु यह भ्रम ठीक नहीं है। कारण कि एक तो 'श्रीमृगेश्वरवर्मा' और 'श्रीवि-जयशिवमृगेशवर्मा' इन दोनों नामोंमें परस्पर बहुत बड़ा अन्तर है। दूसरे, पूर्वके पत्रमें 'आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौष संवत्सरे' इत्यादि पदोंके द्वारा जैसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है वैसा इस पत्रमें नहीं है; इस पत्रके समय-निर्देशका ढंग बिलकुल उससे विलक्षण है। 'संवत्सरः चतुर्थः, वर्षा पक्षः अष्टमः, तिथिः पौर्णमासी,' इस कथनमें 'चतुर्थ' शब्द संभवतः ६० संवत्सरोंमेंसे चौथे नम्बरके 'प्रमोद' नामक संवत्सरका द्योतक मालूम होता है; तीसरे, पूर्वपत्रमें दातारने बड़े गौरवके साथ अनेक विशेषणोंसे युक्त जो अपने 'काकुत्स्थान्वय' का उल्लेख किया है और साथ ही अपने पिताका नाम

भी दिया है, वे दोनों बातें इस पत्रमें नहीं हैं जिनके, एक ही दाता होनेकी हालतमें, छोड़ दिये जानेकी कोई वजह मालूम नहीं होती; चौथे, इस पत्रमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक मंगलाचरण भी नहीं है, जैसाकि प्रथम पत्रमें पाया जाता है; इन सब बातोंसे ये दोनों पत्र एक ही राजाके मालूम नहीं होते।

इस पत्र नं. ९८ में श्रीविजयशिवमृगेशवर्माके जो विशेषण दिये हैं उनसे यह भी पता चलता है कि, यह राजा उभयलोककी दृष्टिसे प्रिय और हितकर ऐसे अनेक शास्त्रोंके अर्थ तथा तत्त्वविज्ञानके विवेचनमें बड़ा ही उदारमति था, नय-विनयमें कुशल था और ऊँचे दर्जेके बुद्धि, धैर्य, वीर्य, तथा त्यागसे युक्त था। इसने व्यायामकी भूमियोंमें यथावत् परिश्रम किया था और अपने भुजबल तथा पराक्रमसे किसी बड़े भारी संग्राममें विपुल ऐश्वर्यकी प्राप्ति की थी; यह देव, द्विज, गुरु और साधुजनोंको नित्य ही गौ, भूमि, हिरण्य, शयन (शय्या), आच्छादन (वस्त्र) और अन्नादि अनेक प्रकारका दान दिया करता था; इसका महाविभव विद्वानों, सुहृदों और स्वजनोंके द्वारा सामान्यरूपसे उपभुक्त होता था; और यह आदिकालके राजा (संभवतः भरतचक्रवर्ती) के वृत्तानुसारी धर्मका महाराज था। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनो ही सम्प्रदायोंके जैनसाधुओंको यह राजा समानदृष्टिसे देखता था, यह बात इस दानपत्रसे बहुत ही स्पष्ट है।]

९९

हल्सी—संस्कृत।

—[१]—

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य [।१।]

कदम्बकुलसत्केतोः हेतोः पुण्यैकसम्पदाम्

श्रीकाकुस्थनरेन्द्रस्य सूनुर्भानुरिवापरः [।२।]

श्रीशान्तिवरवर्म्मेति राजा राजीवलोचनः

खलेन वनिताकृष्टा येन लक्ष्मीर्द्विषद्गृहात् [॥]

तत्प्रियज्येष्ठतनयः श्रीमृगेशनराधिपः ।

लोकैकधर्मविजयी द्विजसामन्तपूजितः [॥]

मत्वा दान दरिद्राणां महाफलमितीव यः

स्वय भयदरिद्रोऽपि शत्रुभ्योऽदाम्महामयम्[1] [॥]

तुङ्गगङ्गकुलोत्सादी पल्लवप्रलयानलः

स्वार्यके नृपतौ भक्त्या कारयित्वा जिनालयम् [॥]

श्रीविजयपलाशिकायां यापनि(नी)यनिर्ग्रन्थकूर्च्चकानां स्ववैजयिके अष्टमे वैशाखे संवत्सरे कार्त्तिकपौर्णमास्याम् । मातृसरित आरम्य आ इङ्गिणीसङ्गमात् राजमानेन त्रयस्त्रिंड्शन्निवर्त्तनं । श्रीविजयवैजयन्ती-निवासी दत्तवान् भगवद्भ्योर्हद्भ्यः[।]तत्राज्ञप्तिः । दामकीर्त्तिभोजकः जियन्तश्चायुक्तकः सर्व्वस्यानुष्ठाता इति [॥]

अपि च—उक्तम् [।]

वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः

यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् [॥]

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्

षष्ठिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते [॥]

सिद्धिरस्तु[2] ।

[यह दानपत्र शान्तिवर्माके ज्येष्ठ पुत्र राजा मृगेशवर्माका है । उन्होंने

---

१ हमारी रायमें यह पाठ 'ऽदान्महाभयम्' ऐसा होना चाहिये । २ यह और आगे का १०३ वाँ शिलालेख (ताम्रपत्र) 'अनेकान्त', वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ८-९ से लिया है ।

स्वर्गगत राजा (शान्तिवर्मा) की भक्तिसे पलाशिका नामक नगरमें जिना-लय निर्माण कराके अपनी विजयके आठवें वर्षमें यापनीयों, निर्ग्रन्थों और कूर्चकोंके लिये भूमि दान किया है । यहाँ कूर्चक सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्र-दायका ही एक भेद मालूम पड़ता है[1] ।

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २४-२५]

१००

हल्सी—संस्कृत ।

—[१]—

प्रथम पत्र

[१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः त्रैलोक्या

[२] श्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानु-

[३] ध्याताना मानव्यसगोत्राणा हारितीपुत्राणां प्रतिकृतस्वाध्याय च [र्चा]-

दूसरा पत्र; पहिली ओर ।

[४] पारगाणाम् स्वकृतपुण्यफलोपभोक्तृणाम् स्वबाहुवीर्य्योपार्ज्जि-

[५] तैश्वर्यभोगभागिनाम् सद्धर्म्मसदम्बाना कदम्बानाम् ॥ काकुस्थ-

[६] वर्म्मनृपलब्धमहाप्रसादः संभुक्तत्राच्छुतनिधिश्श्रुतकीर्त्तिभोजः

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

[७] ग्राम पुरा नृषु वरः पुरुपुण्यभागी खेटाह्वकं यजनदानदयो-

[८] पपन्नः ॥ तस्मिन्स्वर्य्याते शान्तिवर्म्मावनीशः मात्रे धर्म्मार्थं दत्तवान् दा-

[९] मकीर्त्तेः भूमौ विख्यातस्तत्सुतश्श्रीमृगेशः पित्रानुज्ञात धार्म्मि-को दान-

---

[1] देखो अनेकान्त, वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ७-८, में श्री पं. नाथूरामजी प्रेमीका 'कूर्चकोंका सम्प्रदाय' नामक लेख ।

तीसरा पत्र; पहली ओर।

[१०] मेव ॥ **श्रीदामकीर्त्ते**रुरुपुण्यकीर्त्तेः सद्धर्म्ममार्गस्थितशुद्ध-
बुद्धेः ज्याया-
[११] न्सुतो धर्म्मपरो यशस्वी विशुद्धबुद्ध्या'(द्धय) न्न्युतो गुणाढ्यः आचार्य्यवर्य्यो बन्धु—
[१२] षेणाह्वैः निमित्तज्ञानपारगैः स्थापितो भुवि यद्वशः श्रीकीर्त्ति-
[१३] कुलवृद्धये [॥] तत्प्रसादेन लब्धश्रीः दानपूजाक्रियोद्यतः गुरु-

तीसरा पत्र; दूसरी ओर।

[१४] भक्तो विनीतात्मा परात्महितकाम्यया ॥ **जयकीर्त्ति**प्रतीहारः
प्रसादान्नृप-
[१५] ते **रवेः** पुण्यार्त्थं स्वपितुर्म्मात्रे दत्तवान् **पुरुखेटकं** ॥ जिने-
न्द्रमहिमा
[१६] कार्य्या प्रतिसंवत्सरं क्रमात् अष्टाहकृतमर्य्यादा कार्त्तिक्या-
न्तद्धना-
[१७] गमात् वार्षिकाश्चतुरो मासान् **यापनीयास्तपस्विनः**
सु[ञ्जीरस्तु]

चतुर्थ पत्र; पहली ओर।

[१८] यथान्याय्यं महिमाशेषवस्तुकम् [॥] **कुमारदत्तप्रमुखा**
हि सूरयः
[१९] अनेकशास्त्रागमखिन्नबुद्धयः जगत्यतीतास्सुतपोधनान्विताः
गणो
[२०] स्य तेषा भवति प्रमाणतः ॥ धर्म्मेप्सुभिर्ज्जानपदैस्सनागरैः
[२१] जिनेन्द्रपूजा सततं प्रणेया इति स्थितिं स्थापितवान् **रवीशः**
पला [शिका]

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर।

[२२] या नगरे विशाले ॥ स्थित्यानया पूर्व्वनृपानुजुष्ट्या यत्ताम्र-पत्रेषु नि-

[२३] बद्धमादौ धर्म्माप्रमत्तेन नृपेण रक्ष्य संसारदोष प्रविचार्य्य

[२४] बुध्या [॥] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य

[२५] यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत

पञ्चम पत्र

[२६] वसुन्धरा षष्टि वर्षसहस्राणि नरके पच्यते भृशम् ॥ अद्भि-र्दत्त त्रिभि-

[२७] र्भुक्त सद्भिश्च[1] परिपालितम् एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्व्वराज-कृतानि च [॥]

[२८] यस्मिञ्जिनेन्द्रपूजा प्रवर्त्तते तत्र तत्र देशपरिवृद्धिः

[२९] नगराणा निर्भयता तद्देशस्वामिनाञ्चोर्ज्जा ॥ नमो नमः [॥]

[ई० ए० जिल्द ६, पृ० २५–२७, नं. २२]

[यह लेख जैनधर्मका 'अष्टाह्निका' नामका उत्सव मनानेके लिये रवि-वर्म्मा और अन्य लोगों द्वारा दिये गये दानों और हुक्मोंका उल्लेख करता है। इसमें कदम्बोंके राजा काकुस्थ (काकुत्स्थ)वर्मा का, उसके बाद शान्तिवर्मा, तत्पश्चात् श्री मृगेश (वर्मा) का और अन्तमें रविवर्माके दान-का वर्णन है। जिस गांव का दान दिया गया उसका नाम है पुरुखेटक।

---

१ मि० राइस इसको 'षड्भिश्च प्रतिपालितम्' पढ़ते हैं और उसका अर्थ 'छः पीढ़ियोंतक जानेवाला' दान करते हैं।

१०१

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथम पत्र।

[१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्र× प्रथितपरमकारु-
[२] णिकः त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥
[३] **श्रीविष्णुवर्म्म**प्रभृतीन्नरेन्द्रान् निहत्य जित्वा पृथिवीं सम[स्तां]
[४] उत्साद्य **काञ्चीश्वर**चण्डदण्डम् **पलाशिका**यां समवस्थितस्सः[।।]

द्वितीय पत्र, पहली ओर।

[५] **रवि कदम्बोरु** कुलाम्बरस्य गुणांशुभिर्व्याप्य जगत्सम[स्तं]
[६] मानेन चत्वारि निवर्त्तनानि ददौ जिनेन्द्राय महीम् महेन्द्रः [।।]
[७] संप्राप्य भ्रातुश्चरणप्रसाद धर्म्मैकमूर्त्तेरपि **दामकीर्त्तेः**
[८] तत्पुण्यवृद्ध्यर्थमभून्निमित्तम् **श्रीकीर्त्ति**नामा तु च तत्कनिष्ठः[।।]

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

[९] रागात्प्रमादादथवापि लोभात् यस्तानि हिंस्यादिह भूमि-
[१०] पालः आसप्तमं तस्य कुल कदाचित् नापैति कृत्स्नान्निरया-
निमग्नम् [।।]
[११] तान्येव यो रक्षति पुण्यकाङ्क्षः स्ववंशजो वा परवंशजो वा
[१२] स मोदमानस्सुरसुन्दरीभिः चिरं सदा क्रीडति नाकपृष्ठे [।।]

तीसरा पत्र।

[१३] अपि चोक्त **मनुना** [।] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरा-
दिभिः
[१४] यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[१५] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

[१६] षष्टिर्वर्षसहस्राणि निरये स विपच्यते ॥

[इस लेखमें रविवर्माके द्वारा जिनेन्द्रदेवके लिये दिये गये एक भूमि-दानका उल्लेख है। दान की गई भूमि नापमें ४ निवर्तन थी, दामकीर्त्ति, जो कि धर्ममूर्ति थे, की माताके चरणोंका प्रसाद पाकरके ही यह राजा दानमें प्रवृत्त हुआ। दामकीर्ति के छोटे भाईका नाम श्रीकीर्त्ति था। रविवर्मा पलाशिकामें रहते थे। इन्होंने श्रीविष्णुवर्मा(संभवतः 'विष्णुगोप' या 'विष्णुगोपवर्मा' नामका पल्लव राजा) और दूसरे अन्य राजाओंका वध किया था, समस्त पृथ्वीको जीता था और काञ्चीश्वरके चण्डदण्डका उत्सादन (निर्मूलन) किया था।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २९-३०, नं० २४]

१०२

हल्सी—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र ।

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्र× प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

श्रीमत्काकुस्थराजप्रियहिततनयश्शान्तिवर्म्मावनीश

तस्यैव ज्येष्ठसूनु× प्रथितपृथुयशा श्रीमृगेशो नरेशः ॥ (।)

दूसरा पत्र, पहली ओर ।

तत्पुत्रो दीप्ततेजा रविनृपतिरभूत्सत्त्वधैर्य्यार्जितश्रीः

तद्भ्राता भानुवर्म्मा स्वपरहितकरो भाति भूप(:) कनीयान् ॥

तेनेयं वसुधा दत्ता जिनेभ्यो भूतिमिच्छता ।

पौर्ण्णमासीष्वनुच्छिन्न स्नपनार्त्थे हि सर्व्वदा ॥

पलाशिकायाम् कर्दमपट्यां राजमानेन

दूसरा पत्र; दूसरी ओर

पञ्चदशनिवर्त्तना ताम्रशासने भूमिर्निबद्धा उञ्छकरभरादिविवर्जिता श्रीमद्भानुवर्म्मराजलब्धपादप्रसादेन पण्डरभोजकेन परमार्हद्भक्तेन प्रवर्द्ध-मानराज्यश्रीरविवर्म्मधर्म्ममहाराजस्य एकादशे संवत्सरे हेमन्तषष्ठपक्षे

तीसरा पत्र।

दशम्या तिथौ ॥ ता यो हिनस्ति स्ववश्य' परवश्यो वा स पञ्चमहा-पातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥
स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरा
षष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते

[इस लेखमे भानुवर्मा और उसके अधीनस्थ कर्मचारी पण्डर 'भोजक' के दानका उल्लेख है। यह दान भानुवर्माके बड़े भाई रविवर्माके राज्यके ११ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके छठे पक्षमें दसवीं तिथिको दिया गया था। इस भूमिका दान जिनभगवानकी हर पूर्णिमाके दिन पूजन करनेके लिये ही हुआ था। भूमिका नाप १५ निवर्तन था। यह भूमि पलाशिका गाँवके कर्दमपटी की थी। इस लेखसे कदम्बवंशके राजाओंकी रविवर्माके समयतक-की वंशावलीका भी पता चलता है और वह यह है:—

१. काकुत्स्थवर्मा
|
२. शान्तिवर्मा
|
३. श्रीमृगेश
|
४. रविवर्मा (छोटा भाई भानुवर्मा)।

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० २७–२९]

१०३

हल्सी—संस्कृत।

—[1]—

सिद्धम् ॥ स्वस्ति स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तानाम् **'मानव्य'**-सगोत्राणाम् **हारिती**पुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चिकानाम् **कदम्बा(म्बा)**नाम्महाराजः **श्रीहरिवर्म्मा**

बहुभवकृतैः पुण्यै राजश्रियं निरुपद्रवाम्
प्रकृतिषु हितः प्राप्तो व्याप्तो जगद्यशसाखिलम्
श्रुतजलनिधिः विद्यावृद्धप्रदिष्टपथि स्थितः
स्वबलकुलिशाघातोच्छिन्नद्विषद्वसुधाधरः [॥]

स्वराज्यसंवत्सरे चतुर्त्थे फाल्गुणशुक्लत्रयोदश्याम् **उच्चशृङ्ग्याम्** सर्व्वजनमनोह्लादवचनकर्म्मणा सपितृव्येण **शिवरथ**नामधेयेनोपदिष्टः **पलाशिकायाम्** भारद्वाज-सगोत्र**सिंहसेनापति**सुतेन **मृगेशेन** कारितस्यार्हदायतनस्य प्रतिवर्षमाष्टाह्निकमहामहसततच (?) रूपलेपन-क्रियार्त्थं तदवशिष्टं सर्व्वसंघभोजनायेति सुद्दि (?) छि **कुन्दूर**विषये **वसुन्तवाटकं** सर्व्वपरिहारसंयुतं **कूर्च्चकानाम्** **वारिषेणाचार्य्यसङ्ग**-हस्ते **चन्द्रक्षान्तं** प्रमुखं कृत्वा दत्तवान् [॥] य एव न्यायतोभिरक्षति स तत्पुण्यफलभाग्भवति [।] यश्चैन रागद्वेषलोभमोहैरपहरति स निकृ-ष्टतमा गतिमवाप्नोति [॥] उक्तञ्च—

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः [॥]
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् [॥] इति

वर्धतां वर्धमानार्हच्छासनं संयमासनम्

येनाद्यापि जगज्जीवपापपुंजप्रभंजनम् [।।] नमोर्हते वर्धमानाय [।।]

[यह दानपत्र कदम्ब राजवंशके महाराजा हरिवर्माका है। उन्होंने अपने राज्यके चौथे वर्षमें शिवरथ नामके पितृव्यके उपदेशसे, सिंहसेनापतिके पुत्र मृगेशद्वारा निर्मापित जैनमन्दिरकी अष्टाह्निका-पूजाके लिये और सर्वसंघके भोजनके लिए 'वसुन्तवाटक' नामक गाँव कूर्चकोंके वारिषेणाचार्यसंघके हाथमें चन्द्रक्षान्तको प्रमुख बनाकर प्रदान किया। यह और ९९ वां दान-पत्र दोनों, ताम्रपत्रोंपर हैं। नम्बर ९९ वें के दान-पत्रमें यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक इन तीन सम्प्रदायोंके नाम हैं और इसमें सिर्फ कूर्चक सम्प्रदायका। इससे मालूम होता है कि इस सम्प्रदायमें 'वारिषेणाचार्यसंघ' नामका एक संघ था, जिसके प्रधान चन्द्रक्षान्त (मुनि) थे।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० ३०-३१]

१०४

हल्सी—संस्कृत।

—[१]—

प्रथमपत्र।

सिद्धम् ॥ स्वस्ति ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानुध्यानाभिषिक्तानाम् मानव्यसगोत्राणा[म्] हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चापाराणाम् कदम्बानाम् महाराजश्रीरविवर्म्मणः स्वभुजबलपराक्रमावाप्त(?) निरवद्यविपुलराज्यश्रियः विद्वन्मतिसुवर्ण्णनिकषभूतस्य कामादरिगण-

दूसरा पत्र; पहली ओर।

त्यागाभिव्यक्तितेन्द्रियजयस्य न्यायोपार्ज्जितार्त्थं [सं] हितसाधुज [न]-स्य क्षितितलप्रततविमलयशसः प्रियतनयः पूर्व्वसुचरितोपचितविपुल-पुण्यसम्पादितशरीरबुद्धिसत्वः सर्व्वप्रजाहृदयकुमुदचन्द्रमाः महाराज-श्रीहरिवर्म्मा स्वराज्यसंवत्सरे पञ्चमे पलाशिकाधिष्ठाने अर्हदिष्टि-समाहृय-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

श्रमणसङ्घान्वयवस्तुनः धर्म्मनन्द्याचार्य्याधिष्ठितप्रामाण्यस्य चैत्यालयस्य पूजासंस्कारनिमित्तम् साधुजनोपयोगार्थञ्च सेन्द्रकाणां कुलललामभूतस्य भानुशक्तिराजस्य विज्ञापनया मरदे ग्राम दत्तवान् [।।] य एतल्लोभाद्वै कदाचिदपहरेत् स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति यश्चाभिरक्षति स तत्पुण्यफलम्

तीसरा पत्र।

अवाप्नोतीति [।।] उक्तञ्च ।।

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादि [भिः]
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ये सेतूनभिरक्षन्ति भग्नान् संस्थापयन्ति च।
द्विगुण पूर्व्वकर्तृभ्यः तत्फल समुदाहृतम् [।।]

[इस लेखमें अपने राज्यके पाँचवें वर्षमें सेन्द्रकके कुलके भानुशक्ति राजाकी प्रार्थनापर हरिवर्म्माने 'मरदे' नामका गाँव दानमें दिया था, इस बातका उल्लेख है। यह हरिवर्मा रविवर्माका प्रियपुत्र है। यह दान राजधानी पलाशिकामें किया गया। इस दानका निमित्त वह चैत्यालय था जो कि 'अहरिष्टि' नामके श्रमणसङ्घकी सम्पत्ति थी और जिसपर आचार्य धर्मनन्दिकी आज्ञा चलती थी; उस चैत्यालयके पूजा इत्यादिके प्रबंधके लिये तथा साधुजनोंके उपयोगके लिये ही यह दान किया गया।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० ३१-३२.]

१०६

देवगिरि—संस्कृत।'

—[१]—

विजयत्रिपर्व्वते स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तस्य मानव्य-सगोत्रस्य प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापारगस्य आदिकालराजर्षिविम्वाना आश्रि-तजनाम्वानां कदम्वाना धर्ममहाराजस्य अश्वमेधयाजिनः समरार्जितविपु-लैश्वर्यस्य सामन्तराजविशेषरत्नसुनागजिनाकम्पदायानुभूतस्य (?) शरद-मलनभस्युदितशशिसदृशैकातपत्रस्य धर्ममहाराजस्य श्रीकृष्णवर्म्मणः प्रियतनयो देववर्म्मयुवराजः स्वपुण्यफलाभिकांक्षया त्रिलोकभूतहितदे-शिनः धर्मप्रवर्त्तनस्य अर्हतः भगवतः चैत्यालयस्य भग्नसंस्कारार्चनमहि-मार्थं यापनीय [स] ङ्घेभ्यः सिद्धकेदारे राजमानेन (?) द्वादश निवर्त्तनानि क्षेत्रं दत्तवान् योस्य अपहर्त्ता स पचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिर-क्षिता स पुण्यफलमश्नुते (।) उक्त च—वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरा-दिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तथा (?) फलं ॥ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्युक्तं सद्भिश्च परिपालित। एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्वं दातु सुमहच्छक्यं दु (?):ख (म) न्यार्थपालनं।
दान वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरा।
षष्ठिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
श्रीकृष्णनृपपुत्रेण कदम्वकुलकेतुना।
रणप्रियेण देवेन दत्ता भूमिस्त्रिपर्व्वते ॥
दयामृतसुखास्वादपूतपुण्यगुणेप्सुना।
देववर्म्मैकवीरेण दत्ता जैनाय भूरियम् ॥

जयत्यर्हंस्त्रिलोकेशः सर्व्वभूतहितंकरः ।
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वरः ॥

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३३-३५, नं. ३५]

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज श्रीकृष्णवर्माके प्रियपुत्र 'देववर्मा' नामके युवराजकी तरफसे लिखा गया है और इसके द्वारा 'त्रिपर्वत' के ऊपरका कुछ क्षेत्र अर्हन्त भगवानके चैत्यालयकी मरम्मत, पूजा और महिमाके लिये 'यापनीय' संघको दान किया गया है ।

पत्रके अन्तमें इस दानको अपहरण करनेवाले और रक्षा करनेवालेके वास्ते वही कसम दिलाई है अथवा वही विधान किया है जैसा कि ९७ नम्बरके दानपत्रके सम्बन्धमें पहले बतलाया गया है। वही चारों 'उक्तं च' पद्य भी कुछ क्रमभंगके साथ दिये हुए हैं और उनके बाद दो पद्योंमें इस दानका फिरसे खुलासा दिया है, जिसमें देववर्माको रणप्रिय, दयामृतसुखास्वादनसे पवित्र, पुण्यगुणोंका इच्छुक और एकवीर प्रकट किया है । अन्तमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक प्रायः वही पद्य है जो ९७ नम्बरके दानपत्रके शुरूमें दिया है । इस पत्रमें श्रीकृष्णवर्माको 'अश्वमेध' यज्ञका कर्ता और शरद् ऋतुके निर्मल आकाशमें उदित हुए चंद्रमाके समान एक छत्रका धारक, अर्थात् एकछत्र पृथ्वीका राज्य करनेवाला लिखा है ।]

पूर्वके नं० ९७,९८ व इस दानपत्रपरसे निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तियोंका पता चलता है:—

१ स्वामिमहासेन—गुरु ।
२ हारिती—मुख्य और प्रसिद्ध पुरुष ।
३ शान्तिवर्मा—राजा ।
४ मृगेश्वरवर्मा—राजा ।
५ विजयशिवमृगेशवर्मा—महाराजा ।
६ कृष्णवर्मा—महाराजा ।
७ देववर्मा—युवराज ।
८ दामकीर्ति—भोजक ।
९ नरवर—सेनापति ।

१०६

अल्तेम (जिला कोल्हापुर)—संस्कृत ।

[शक ४११=४८८ ई०]

पहला पत्र ।

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तसंसारपारावारैकसेतव:
महावीरार्हतः पूताश्चरणाम्बुजरेणवः ॥

श्रीमता विश्व-विश्वम्भराभिसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणा हारीति-पुत्राणा सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिरभिवर्द्धिताना कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणा भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्षण-वशीकृताशेषमहीभृताना (भृताम्) चालुक्यानां कुलमलकरिष्णोः ॥ स्वभुजोपार्जितवसुन्धरस्य निजयशश्श्रवणमात्रेणैवावनतराजकस्य कीर्त्तिप-ताकावभासितदिगन्तरालस्य जयसिंहस्य राजसिंहस्य (?) सूनुस्सूनृत-वागनवरतदानार्द्रीकृतकरस्सुरगज इव प्रशमनिधिस्तपोनिधिरिव दृप्तवैरिषु प्राप्तरणरागो रणरागोऽभवत् [॥] तस्य चात्मजे श्वमेधनाव (०मेधात्र) भृत (थ)-स्नानपवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनृपतिमकुटतटघटितहटन्मणिगण-किरणवार्द्धाराधौतचारुचरणकमलयुगले चित्रकण्ठाभिधानतुरङ्गमकण्ठीरवे-णोत्सारितारातिस्तम्बेरममण्डले वर्ण्णाश्रमसर्व्वधर्म्मपरिपालनपरे गङ्गासेतु(?) मध्यवर्तिदेशाधीश्वरे शक्तित्रयप्रवर्द्धितप्राज्यसाम्राज्ये गङ्गायमुनापालि-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

ध्वजदडक्कादिपञ्चमहाशब्दचिह्ने करदीकृतचोल-चेर-केरल-सिंहल-कलिंगभूपाले दण्डितपाण्ड्यादिमण्डि (ण्ड) लिके अप्रतिशासने 'सत्याश्रय'-श्री-पुलकेश्यभिधानपृथिवीवल्लभमहाराजाधिराजे पृथिवीमे-कातपत्रं शासति सति [॥] राजा सन्द्रनीलसैन्द्रकवंशशशाकायमानः

प्रचण्डदोर्दण्डमण्डितमण्डलाग्रो **गोण्ड**नामासीत् [॥] अय-नय-विनयसम्पन्नस्तनयोऽस्य समररसरसिक**स्सिवारा**ख्यया ख्यातः [॥] पुत्रोऽस्य भूता (तो) धात्रीतिलकायमानः पराक्रमाक्रान्तवैरिनिकुरुम्बः अवार्य्यवीर्यसमन्वितः कार्य्याकार्य्यनिपुणः हनूमानिव रामस्याभिरामस्य तस्य मृत्यस्सत्यसन्धो धार्मिक**स्सामियार**स्समभूत् [॥] स तत्प्रसादसमासादित**कुहुण्डी**विषयस्त परिपा[ल] यं (यन्) तदन्तर्भूताल**क्तका**भिधाननगर्य्यांग्रामसप्तशतराजधान्यामशेषविषयविशेषकायमानाया शालिव्रीहीक्षुवणचणकप्रियङ्गुवरकोदारकश्यामाकगोधूमाद्यनेकधान्यसमृद्धायां तद्देशविलासिनीमुखकमलमिव विराजमानायां धनधान्यपरिपूर्णकृषीवलप्रायायाम् ॥

ऐन्द्र्या दिशि महेन्द्राभः प्रासादं प्रवरम्महत् जिनेन्द्रा—

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

यतनं भक्त्याकारयत् सुमनोहरम् ॥

प्रोत्तुग-प्रासादं त्रिभुवनतिलकं जिनालय प्रवरं

नानास्तम्भसमुद्धृतविराजमानं चिरं जगति ॥

शकनृपाब्देष्वेकादशोत्तरेषु चतुष्षष्टेषु व्यतीतेषु **विभवसंवत्सरे** प्रवर्त्तमाने ॥ कृते च जिनालये ।

वैशाखोदितपूर्ण्णपुण्यदिवसे राहो (हौ) विधौ (धोः) मण्डलं

श्लेष्टेन्देर्त्थिकमज्जनार्द्दुपगतं स्नेहाद् गृहं भूभुजम्

श्रीसत्याश्रयमाश्रय गुणवतां विज्ञापयामास स

तज्जैनालयपूजनोचितनुतक्षेत्राय धर्म्मप्रियः ॥

आयुर्जन्मवतामिद ननु तदि (डि) त् सन्ध्येन्द्रा(न्द्र)चापोपमं

ज्ञात्वा धर्म्मम (ध) नार्जन बुधजनैर्म्मार्त्ये (र्त्यैः): फल मन्यते

---

१ सभवत शुद्ध पाठ 'श्लिष्टेऽन्वर्थिकमज्जनाद्' होना चाहिये ।

इत्येवं प्रविबोध्य सम्यजनतां सत्याश्रयो वल्लभो
भक्त्या तज्जिनमन्दिरोपमक्रिये क्षेत्रं ददौ शासनम् ॥
वैशाखपौर्ण्णमास्यां राहौ विधुमण्डलं प्रविष्टवति
सत्याश्रयनृपतिस्त्रिभुवनतिलकाय दत्तवान् क्षेत्रम् ॥
कनकोपलसम्भूतवृक्षमूलगुण (णा) न्वये
भूतस्समग्रराद्धान्तस्सिद्धनन्दिमुनीश्वरः ॥
तस्यासीत् प्रथमश्शिष्यो देवताविनुतक्रमः
शिष्यैः पञ्चशतैर्युक्त—

तीसरा पत्र; पहिली ओर।

श्चितकचार्य्य-संज्ञितः ॥
श्रीमत्काकोपलाम्नाये ख्यातकीर्त्तिर्बहुश्रुतः
लक्ष्मीवान्नागदेव्याख्यश्चितकाचार्य्यदीक्षितः ॥
नागदेवगुरोश्शिष्यः प्रभूतगुणवारिधिः
समस्तशास्त्रसम्बोधि (धी) जिननन्दिः प्रकीर्त्तितः ॥
श्रीमद्विविधराजेन्द्रप्रस्फुरन्मकुटालिभिः
निघृष्टचरणाब्जाय प्रभवे जननन्दिने ॥

जिननन्द्याचार्य्यसूर्य्याय दुश्चरतपोविशेषनिकषोपलभूताय समधि-सर्व्वशास्त्राय नगराशतलभोगाश्च प्रददौ [॥] तत्र तलभोगसीमान्याह [।] चैत्यालयाद् वायव्या दिशि तटाक तटो ऋजुसूत्रक्रमेण पश्चिमाभिमुख गत्वा पथ तस्य मध्ये निखातपाषाण तस्माद् दक्षिणाभिमुखमनुपथ गत्वा प्रवाहं तस्य (स्य) मध्ये निखातपाषाण पूर्वाभिमुख गत्वा तिन्त्रिणीकवृक्षं यावत् तस्मादुत्तराभिमुखं गत्वा पूर्व्वोक्त-तटाकं[1]। यावत्

---

१ इस पूर्णविराम की यहाँ कोई जरूरत नहीं है। 'पूर्व्वोक्त-तटाकं यावत्' ऐसा सम्बन्ध है।

स्थितं एतन्नगरनिवेशक्षेत्रम् [॥] तत्र तलभोगक्षेत्रसीमान्याह [।]
नगरस्य दक्षिणस्या दिशि सेतुबन्धात् प्रभृत्यनुजलवाहलं पूर्व्वाभिमुख
गत्वा यावदौञ्छिकक्षेत्र तत्पश्चिमसीम्नि निखातपाषाण यावत्तस्मादनुसी-
मोत्तराभिमुख गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्मात्पुनः पूर्व्वाभिमुखं गत्वा
यावत् स्थलगिरि तस्मात्पुनरनुगिर्य्युत्तराभिमुखं गत्वा यावद्गिरेरुच्चप्रदेश
तस्मात् पश्चिमाभिमुख गत्वा यावद्गिरि तस्मात् पश्चिमाभिमुखं गत्वा याव-
त्स्थलगिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुख गत्वा यावत्सेतुबन्धन (नं) स्थितं राज-
मनेन पञ्चाषट् सदुत्तरनिवर्त्तनशत तलभोगक्षेत्र चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥
नरिन्दकुनामग्रामे नैर्ऋत्या दिशि नरिन्दक-सामरिवाद (ड) ग्रामपथि
मध्यवर्त्तिसिंगतेगतटाकाद् ऋजुसूत्रक्रमेण नरिन्दकग्रामपथ यावत्तावत्स्थितं
चत्वारिंशत् नि (सन्नि) वर्त्तन क्षेत्र दक्षिणदिशि राजमानेन ॥ **किण-
यिगे**नामग्रामे पूर्व्वस्या दिशि अशीतिनिवर्त्तनं क्षेत्र राजमानेन पिशाचा-
रामं नैर्ऋत्या दिशि यावच्छमीझाटवल्मीकं तस्मात् पूर्व्वाभिमुख गत्वा
यावत्पथ तस्माद्दक्षिणाभिमुखं गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात् पश्चिमा-
भिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावच्छमीस्थल तस्मादुत्तराभिमुखं गत्वा
यावच्छमी-झाटवल्मीक स्थितं चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ **पन्तिगणगे** नामग्रामे

चतुर्थ पत्र; पहिली ओर।

नैर्ऋत्या दिशि मान्यस्य क्षेत्रं उत्तरस्यां दिशि चत्वारिंशन्निवर्त्तन
क्षेत्र राजमानेन पश्चिमस्या दिशि स्थलगिरि तस्मादनुसीमं पूर्व्वाभिमुख
गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्माद्दक्षिणाभिमुख गत्वा **कोमरञ्चे**-ग्राम-सीम
तस्मात्पूर्व्वाभिमुखमनुसीम गत्वा यावज्जलवाहलं तस्मादुत्तराभिमुखमनु-
वाहलं गत्वा यावच्छमीझाटवल्मीकं तस्मात्पश्चिमाभिमुखं गत्वा यावत्तटा-
कोत्तरकोढि (टि) तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्तावत्स्थित
चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥

मंगलीनामग्रामपश्चिमदिशि राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तन क्षेत्र तस्य सीमान्याह स्थलगिरेः पश्चिमाभिमुखमनुपयं गत्वा यावद्रूविकग्रामसीम तस्मादुत्तराभिमुखमनुसीम गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात्पूर्व्वाभिमुख-मनुस्थलगिरि गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा स्थित चतुस्सीमाव (वि) रुद्धम् ॥ करण्डिगे नाम ग्रामे प—

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर।

श्चिमस्या दिशि चन्दवुर-पन्दर्ङ्गवल्लिनामग्राममार्गमध्ये अश्वत्थतटा-काद् वायव्या दिशि राजमानेन पञ्चविंशतिनिवर्तनं क्षेत्रम् ॥ दावनवल्लिनामग्रामे पश्चिमस्या दिशि अलक्तकनगरकुम्बयिजनामग्राम-मार्ग्गमध्ये विम्बालयपिशाचारामात्पश्चिमे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ पुनरपि तस्मिन्नेव ग्रामे दक्षिणस्यां दिशि हिङ्गुटीतटाकादुत्तरस-मीपस्थ राजमानेन शतं नि (शत-नि) वर्तन क्षेत्रम् ॥ नन्दिपिगेनाम ग्रामे पूर्व्वस्या दिशि वरवुलिकसीम श्रीपुरमार्गमध्ये राजमानेन चत्वारिं-शन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ सिरिपत्तिनामग्रामे पश्चिमस्या दिशि श्रीपुरमार्ग्गतो दक्षिणतो राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ अर्ज्जुनवाद (ड) नामग्रामे पश्चिमस्या दिशि श्रीपुरमार्ग्गतो उत्तरतो राजमानेन पञ्चाश-न्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ ग्रामनामान्याह ॥ कुम्बयिज-द्वादशस्यो (स्या) न्तः रूविको नाम

पाँचवाँ पत्र।

ग्रामः प्रथमः ॥ सामरिवादो (डो) नाम ग्रामः द्वितीयः ॥ बढमाले द्वादशस्यान्तः लहिवादो (डो) नाम ग्रामः तृतीयः ॥ श्रीपुरद्वाद-शस्य मध्ये पेल्लिदको नाम ग्रामः चतुर्थः ॥ इत्येते चत्वारो ग्रामाः चतु-स्सीमाव (वि) रुद्धक्षेत्रः (त्राः) सोदङ्गाः स (सो) परिकराः अचाटभटप्रवेश्याः

[॥] तदागामिभिरस्मद्वंश्यैरन्यैश्च राजभिरायुरैश्वर्य्यादीना विलसितमचि्र-राशुचञ्चलमवगच्छद्भिराचन्द्रार्क्कधरार्ण्णवस्थितिसमकालं यशश्चिचीशुभिः स्वदत्तिनिर्व्विशेष परिपालनीयमुक्त च मन्वादिभिः ॥

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि-
र्यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ।
स्व दातु सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालन
दान वा पालनं श्रेयो श्रेयो दानस्य पालनम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं र्व्वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते क्रृमिः ॥

[ई ए, ७, पृ० २०९–२१७, नं. ४४]

[इस दानपत्रमें पुलिकेशीकी वंशावलि उसके पितामह (बाबा) जयसिंह और उसके पिता रणराग से लेकर दी हुई है। ऊपर विरुदावलिमें यह वाक्यावली आती है, 'जयसिंहस्य राजसिंहस्य सूनुः···रणरागोऽभवत्'— जिससे सर वाल्टर इंलियटने सन्देहास्पदरूपसे यह फलितार्थ निकाला है कि 'राजसिंह' जयसिंहका दूसरा नाम था। पर यदि 'राजसिंह' यह व्यक्तिवाचक नाम हो भी, तो इससे जयसिंहकी उपाधिका ही पता लगेगा, जयसिंहके दूसरे नामका नहीं।

तत्पश्चात् दानपत्रमें उसके (जयसिंहके) एक सामन्त सामियारका उल्लेख है जो रुन्द्रनील–सैन्द्रक वंशका है। यह सामियार कुहुण्डी जिलेका शासक था। इसके बाद यह वर्णन है कि सामियारने अलक्तकनगरमें, जो कि उस जिलेके ७०० गावोंके समूहोंमें एक प्रधान नगर था, एक जैनमन्दिर बनवाया, और राजाज्ञा लेकर, विभव संवत्सरमें 'जब कि शकवर्ष ४११ व्यतीत हो चुका था वैशाख महीने की पूर्णिमाके दिन चन्द्रग्रहणके अवसर-पर कुछ जमीन और गाँव मन्दिरको दिये।]

१०७

आडूर [-ज़िला धारवाड]; संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

—[?]—

पूर्ववर्ती चालुक्य कीर्त्तिवर्म्मा प्रथमका शिलालेख

[१]..... ....जयत्यनेकधा विश्व विवृण्वन्नंशुमानिव
....श्री-वर्द्धमानदेवे...... ....

[२]............न् (?) यप-दु:-प्रबाधनः [||]
प्रभास (?) ति मुवं भूयो..........................

[३]............प्रताप-क्षत..... ...[... ...[..............दान
....

[४]...........कु (?) र (?)-तेजसा वैजय
..........र.... ....

[५]............त्पाशसृद्विषमो यमः चित्तं वा मानसं सत्यं स्थितं
..............[||] तेनेप (?)........

[६]....गामुण्ड-निर्म्मापितजिनालयदानशालादिसंवृद्ध्यै विज्ञप्तेन
यशस्विना [।] पञ्चविं-

[७] शति-संख्यान-निवर्त्तन-कृत-प्रमं क्षेत्रं राजमानेन दत्तं
त्वहितरक्षणं [।] [वि]-

[८] श्राव्य साक्षिणः कृत्वा उञ्छोरिन्द-प्रधानकानन्यैरपि च
राजन्यै रक्षणीयं स........[||]

[९] उक्तं च [।] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टाय(ा)म् [जाय]-

[१०] ते कृमिः [॥] स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनं
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रे[योऽनु]–

[११] पालनम् [॥] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि [:]
यस्य यस्य यदा भूमिस् [तस्य त]–

[१२] स्य तदा फलम् [॥] आसीद् **विनयनन्दीति परलूरगणा-**
प्रणीरिन्द्रभूतिरिव धरात् चत्······[सं]–

[१३] घ-संहतेः [॥] तस्यान्ते वसन्नासीत् **वासुदेवो** गुरुर्गुरुः
तस्य शिष्य [:] **प्रभा**··················[॥]

[१४] शिष्य [:] **श्रीपाल**नामास्य धर्म्मगामुण्ड-पुत्रजः
प्रातिष्ठिपच्छिलापट्टं स्थेयादाचन्द्र [तारकं] [॥]

दूसरा लेख।

[१५] स्वस्ति श्रीमत् प्रि (पृ) थु (थि) वीवल्लभ राजाधिराज
परमेश्वर **कीर्त्तिवर्म्मरसर्** पृथु (थि) विरा [ज्यं-गे]–

[१६] ये सिन्दरसरग (? ग्गा; ? ग्गं)गि (? धि) **पाण्डीपुरमा-**
नाले परमेश्वरं **माधवत्तियरसरग्गे** वि [ज्ञापनं-गे]–

[१७] य्दु **दोणगामुण्डरु एळगामुण्डरु** मल्लेयरु उञ्छराढां
(? वा) सर्वेरेयरु ह··················

[१८] करणसहितमागि हविरक्षतगन्धपुष्पादिगन्धे **कर्म्मगल्लूए**
पडुवण म························ .

[१९] य केळगे एण्टु मत्तलगल्दे राजमान जिनेन्द्र-भवनक्कित्तोरि-
दानाराद् सलिप्पोर [व]–

[२०] तें धर्म्ममारारिदा[न्] किडिप्पोरवर्त्तेंपाप[म्] [॥]
परल्लूरा चेदियद बळि **प्रभाचन्द्र**-गुरावर्पेडेदा[र्] [॥]

[इस लेखमें कुल २० पंक्तियाँ हैं। पंक्ति १ से १४ तकमें एक संस्कृत शिलालेख है जिसमें दानशालाके लिये तथा दूसरे और भी कार्योंके लिये एक खेत के, तथा गामुण्ड (गाँव के मुखियों) में से किसी के द्वारा निर्म्मापित जिनालय के दानकी प्रशस्ति है। वैजयन्ती या वनवासी का वर्णन चौथी पंक्तिमें हुआ-सा मालूम पड़ता है।

पंक्ति १५ से २० तक प्रायः पूर्ण हैं (खण्डित नहीं हैं) और उनमें एक पुरानी कर्णाटक-भाषाका लेख है जिसमें यह उल्लेख है कि, जिस समय कीर्तिवर्म्मा सार्वभौम-सत्ताके रूपमें शासन कर रहा था, और जब कि सिन्द नामका कोई एक राजा पाण्डीपुर नगरमें शासन कर रहा था दोण-गामुण्ड और एलगामुण्ड आदिने, राजा माधवत्तिकी सम्मतिसे, जिनेन्द्रके मन्दिरको पूजाके प्रबन्धके लिये अक्षत (अखण्ड चावल), सुगन्ध, पुष्प आदि, और चावलके खेतोंके आठ 'मत्तल' शाही मापसे नाप कर दिये। ये चावलके खेत कर्म्मगल्लूर गाँवकी पश्चिमदिशामें थे।

इस शिलालेखका काल नहीं दिया है। लेकिन कीर्त्तिवर्म्माको जो उपाधियाँ दी हुई हैं उनसे, तथा अक्षरोंकी लिखावटसे यह स्पष्ट मालूम पड़ता है कि इस लेखमें उल्लेखित कीर्त्तिवर्म्मा पूर्ववर्ती चालुक्य राजा कीर्त्तिवर्म्मा प्रथम है, जिसके राज्यका अन्त शक ४८९ में हुआ था। इस लेखसे यह भी मालूम पड़ता है कि कीर्त्तिवर्म्मा प्रथमने कदम्बोंको जीता था।]

[ई. ए०, ११, पृ० ६८-७१, नं० १२०]

१०८

पहोले (जिला-कलदूगी)-संस्कृत।

[शक सं० ५५६=६३४ ई०]

चालुक्यवंशोद्भवश्रीपुलकेशीका शिलालेख।

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो[वी]तज[रा-म]रणजन्मनो यस्य।
ज्ञानसमुद्रान्तर्गतमखिल जगदन्तरीपमिव ॥ १ ॥
तदनु चिरमपरिमेयश्चालुक्यकुलविपुलजलनिधिर्जयति।
पृथिवीमौलिललामो यः प्रभवः पुरुषरत्नानाम् ॥ २ ॥

शूरे विदुषि च विभजन्दान मानं च युगपदेकत्र ।
अविहितयाथातथ्यो जयति च **सत्याश्रयः**[१] सुचिरम् ॥ ३ ॥
पृथिवीवल्लभशब्दो येषामन्वर्थतां चिरं जातः ।
तद्वंशे (श्ये) षु जिगीषुषु तेषु बहुष्वप्यतीतेषु ॥ ४ ॥
नानाहेतिशताभिघातपतितभ्रान्ताश्वपत्तिद्विपे
नृत्यद्भीमकबन्धखड्गकिरणज्वालासहस्रे रणे ।
लक्ष्मीर्भावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-
द्राजासीज्जयसिंहवल्लभ इति ख्यातश्चलुक्यान्वयः ॥ ५ ॥
तदात्मजोऽभूद्रणरागनामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।
अमानुषत्व किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुःप्रकर्षात् ॥६॥
तस्याभवत्तनूजः **पुलकेशी** यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।
श्रीवल्लभोऽप्ययासीद्वातापिपुरीवधूवरताम् ॥ ७ ॥
यत्त्रिवर्गपदवीमल क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम् ।
भूश्च येन हयमेधयाजिना प्रापितावभृथमज्जना बभौ ॥ ८ ॥
नलमौर्यकदम्बकालरात्रिस्तनयस्तस्य बभूव **कीर्तिवर्मा** ।
परदारनिवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा ॥ ९ ॥
रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुग्णमशेषतः ।
नृपतिगन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥१०॥
तस्मिन्सुरेश्वरविभूतिगताभिलाषे
राजाभवत्तदनुजः किल **मङ्गलीशः** ।
यः पूर्वपश्चिमसमुद्रतटोषिताश्वः
सेनारजःपटविनिर्मितदिग्वितानः ॥ ११ ॥

---

१ 'सत्याश्रय' यह पुलकेशीका नामान्तर है ।

स्फुरन्मयूखैरसिदीपिका शतैर्व्युदस्य मातङ्गतमिस्रसंचयम् ।
अवाप्तवान् यो रणरङ्गमन्दिरे कलच्चुरिश्रीललनापरिग्रहम् ॥ १२ ॥

पुनरपि च जिघृक्षोः सैन्यमाक्रान्तसालं
रुचिरबहुपताकं रेवतीद्वीपमाशु ।
सपदि महदुदन्वत्तोयसंक्रान्तबिम्बं
वरुणबलमिवाभूदागत यस्य वाचा ॥ १३ ॥

तस्याग्रजस्य तनये नहुषानुभावे
लक्ष्म्या किलाभिलषिते पुलकेशिनाम्नि ।
सासूयमात्मनि भवन्तमतः पितृव्यं
ज्ञात्वापरुद्धचरितव्यवसायबुद्धौ ॥ १४ ॥

स यदुपचितमन्त्रोत्साहशक्तिप्रयोग-
क्षपितबलविशेषो मङ्गलीशः समन्तात् ।
स्वतनयगतराज्यारम्भयत्नेन सार्धं
निजमतनु च राज्य जीवितं चोज्झति स्म ॥ १५ ॥

तावत्तच्छत्रभंगे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्ध
यस्यासह्यप्रतापद्युतिततिभिरिवाक्रान्तमासीत्प्रभातम् ।
नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्तभागै-
र्गर्जद्भिर्वारिवाहैरलिकुलमलिनं व्योम या(जा)त कदा वा ॥ १६ ॥

लब्ध्वा काल भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकाख्ये
गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तराम्भोधिरथ्याः ।
यस्यानीकैर्युधि भयरसज्ञत्वमेकः प्रयात-
स्तत्रावाप्त फलमुपकृतस्यापरेणापि सद्यः ॥ १७ ॥

वरदातुङ्गतरङ्गरङ्गविलसद्धसानदीमेखला
वनवासीमवमृद्नतः सुरपुरप्रस्पर्धिनी संपदा ।
महता यस्य बलार्णवेन परितः संछादितोर्वीतलं
स्थलदुर्गं जलदुर्गतामिव गत तत्तत्क्षणे पश्यताम् ॥१८

गङ्गाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितसंपदोऽपि ।
यस्यानुभावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानशौण्डाः ॥ १९ ॥

कोङ्कणेषु यदादिष्टचण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।
उदस्तास्तरसा मौर्यपल्वलाम्बुसमृद्धयः ॥ २० ॥

अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरीं पुरभित्प्रभे
मदगजघटाकारैर्नावां शतैरवमृद्नति ।
जलदपटलानीकाकीर्णं नवोत्पलमेचक
जलनिधिरिव व्योम व्योम्नः समोऽभवदम्बुधिः ॥ २१ ॥

प्रतापोपनता यस्य लाटमालवगूर्जराः ।
दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवाभवन् ॥ २२ ॥

अपरिमितविभूतिस्फीतसामन्तसेना-
मुकुटमणिमयूखाक्रान्तपादारविन्दः ।
युधि पतितगजेन्द्रानीकबीभत्सभूतो
भयविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ २३ ॥

भुवमुरुभिरनीकैः शासतो यस्य रेवा
विविधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्योपकण्ठा ।
अधिकतरमराजत्स्वेन तेजोमहिम्ना
शिखरिभिरिभवर्ज्या वर्ष्मणा स्पर्धयेव ॥ २४ ॥

विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक्रकल्प-
स्तिसृभिरपि गुणौघैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।
अनमदधिपतित्वं यो महाराष्ट्रकाणां
नवनवतिसहस्रग्रामभाजा त्रयाणाम् ॥ २५ ॥

गृहिणां स्वगुणैस्त्रिवर्गतुङ्गा विहितान्यक्षितिपालमानभङ्गाः ।
अभवन्नुपजातभीतिलिङ्गा यदनीकेन सकोसलाः कलिङ्गाः ॥२६॥

पिष्ठ पिष्टपुरं येन जात दुर्गमदुर्गमम् ।
चित्र यस्य कलेर्वृत्त जात दुर्गमदुर्गमम् ॥ २७ ॥

सनद्धवारणघटास्थगितान्तराल
नानायुधक्षतनरक्षतजाङ्गरागम् ।
आसीज्जल यदवमर्दितमभ्रगर्भा-
कैणालमम्बरमिवोर्जितसाध्यरागम् ॥ २८ ॥

उद्धूतामलचामरध्वजशतच्छत्रान्धकारैर्बलैः
शौर्योत्साहरसोद्धितारिमथनैर्मौलादिभिः षड्विधैः ।
आक्रान्तात्मबलोन्नतिं वलरजःसच्छन्नकाञ्चीपुरः
प्राकारान्तरितप्रतापमकरोद्यः पल्लवानां पतिम् ॥ २९ ॥

कावेरी द्रुतशफरीविलोलनेत्रा चोलानां सपदि जयोद्यतस्तस्य (?) ।
प्रश्च्योतन्मदगजसेतुरुद्धनीरा संस्पर्शं परिहरति स्म रत्नराशेः ॥ ३० ॥

चोलकेरलपाण्ड्याना योऽभूत्तत्र महर्द्धये ।
पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥ ३१ ॥

उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिसहिते यस्मिन्समन्ताद्दिशो
जित्वा भूमिपतीन्विसृज्य महितानाराध्य देवद्विजान् ।

वातापी नगरीं प्रविश्य नगरीमेकामिवोर्वीमिमा
चञ्चन्नीरधिनीरनीलपरिखा सत्याश्रये शासति ॥ ३२ ॥
त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादितः ।
सप्ताब्दशतयुक्तेषु श (ग) तेष्वब्देषु पञ्चसु (३७३५) ॥३३ ॥
पञ्चाशत्सु कलौ काले षट्सु पञ्चशतासु च (६५६) ।
समासु समतीतासु शकानामपि भूभुजाम् ॥ ३४ ॥
`तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य
सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादम् ।
शैलं जिनेन्द्रभवनं भवन महिम्नां
निर्मापित मतिमता रविकीर्तिनेदम् ॥ ३५ ॥
प्रशस्तेर्वसतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः ।
कर्ता कारयिता चापि रविकीर्तिः कृती स्वयम् ॥३६॥
येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म ।
स विजयता रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः ३७

[प्राचीनलेखमाला, प्रथमभाग, ले० १६, पृ० ६८-७२, से उद्धृत]

[यह शिलालेख बीजापुर (पूर्वका कलाद्गी) जिलेके हुनुण्ड तालुकाके ऐहोळेके मेगुटि नामके प्राचीन मन्दिरकी पूर्वकी तरफकी दीवालपर है । लेखमें कुल १९ पक्तियाँ है, जिनमेंसे १८ वी पंक्ति पूर्ण और १९ वी छोटी पक्ति बादमें किसीकी जोड़ी हुई है और जिनमें महत्त्व-पूर्ण कोई बात नहीं है ।

समूचा शिलालेख किसी रविकीर्त्तिका बनाया हुआ है । वे (रविकीर्त्ति) चालुक्य पुलकेशी सत्याश्रय (अर्थात् पश्चिमी चालुक्य पुलकेशी द्वितीय) के राज्यमे थे । यह राजा उनका संरक्षक या पोषक था । इन्होंने शिलालेखवाले जिनालयमें जिनेन्द्रकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की । प्रतिष्ठाके समय यह लेख उत्कीर्ण करवाया गया था जिसमें सामान्यरूपसे चालुक्य वंशकी, और विशेषतः पुलकेशी द्वितीय (रविकीर्तिके आश्रयदाता) के

पराक्रमोंकी प्रशस्ति है । इस लेखमें आये हुए ऐतिहासिक तथ्योंका पूरा विवरण प्रो० भाण्डारकर और डा० फ्लीटने दिया है[1] ।

इस लेख (या काव्य) का मुख्य भाग १७-३२ श्लोकोंका है । इनको रविकीर्त्ति के आशयानुसार, रघुवंशके (चौथे सर्गके) रघुदिग्विजयके समान, 'पुलकेशी-सत्याश्रय दिग्विजय' कहा जा सकता है । इस काव्य (कविता) की रचनामें रविकीर्त्तिका कालिदासके रघुवंशका तथा भारविके किरातार्जुनीयका गहरा अध्ययन स्पष्ट काम कर रहा है; इसलिए उन्हींके शब्दोंमें उनका यह कथन कि 'स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित-कालिदासभारवि-कीर्त्तिः' सचमुचमें ठीक है ।

श्लोक २२ में बताया गया है कि पुलकेशीका प्रताप इतना तेज था कि लाट, मालव और गूर्जर लोग अपने-आप ही उनकी शरण आते थे, बलपूर्वक नहीं ।]

[इं० ए०, जिल्द ५, पृ० ६७-७१]

१०९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

—[१]—

जयत्यतिशयजिनैर्भ्भासुरस्सुरवन्दितः ।
श्रीमाञ्जिनपतिस्सृष्टेरादेः कर्त्ता दयोदयः ॥

देहहिसरि (इह हि स्वस्ति) ॥

चालुक्यपृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुष्वतीतेषु रणपराक्रमाङ्कमहाराजो भवत्तद्राजतनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वर्यश्चतुस्समुद्रान्तख्याततुरङ्गेभपदातिसेनासमूहः एरेय्यनामधेयः श्रीमान् ॥

---

[1] देखो प्रो० भाण्डारकरकी Early History of the Dekkan, 2nd ed., especially p. 51; और डॉ० फ्लीटकी Dynasties of the Kanarese Districts, 2nd ed. especially p. 349 ff.

अपि च ॥

शासतीमा समुद्रान्तां वसुधां वसुधाधिपे ।
सत्याश्रयमहाराजे राजत्सत्यसमन्विते ॥

भुजगेन्द्रान्वयसेन्द्रावनीन्द्रसन्ततौ अनेकनृपसंत्तमेश्वतीतेषु तत्कुल-गगनचन्द्रमाः बहुसमरविजयलब्धपताकावभासितदिगन्तरालवलयः **विजयशक्ति**र्न्नाम नृपतिर्ब्बभूव [।।] तत्सूनुरुदिततरुणदिवाकरकरसम-प्रभः सौ (शौ)र्य्य-धैर्य्य-सत्त्व-गुणोपपन्नः सामन्तबृ(वृ)न्दमौलि-मालवलीढचरणः **कुन्दशक्ति**र्न्नाम राजाभूत् तस्य प्रियतनयः ॥ अद्वि-तीयपुरुषकारसम्पन्नः । धर्म्मार्थकामप्रधानः अनेकरणविजयवीरपताका-ग्रहणोद्धतकीर्त्तिः [।।] तेन **दुर्ग्गशक्ति**नामधेयेन **शङ्खजिनेन्द्र**चैत्यनित्य-पूजार्थं पुण्याभिवृद्धये च **पुलिगेरे**-नामनगरस्योत्तरपार्श्वे पञ्चाशन्नि-वर्त्तनपरिमाणक्षेत्र दत्तम् ॥ तस्य सीमा समाख्यायते [।] पूर्व्वतः **किन्न-रीक्षेत्रम्** । पावकदिशि **ज्येष्ठलिङ्गभूमिः** । दक्षिणतः **घटिकाक्षेत्रम्** । नैर्ऋत्या दिशि **दं(? पं)-डीस(श)** श्रेष्ठिभूमिः । पश्चिमतः **रामे-श्वरक्षेत्रम्** वायव्या **होनेश्वरक्षेत्रम्** । उत्तरतः **सिन्देश्वरक्षेत्र** ई(ऐ) शान्यां दिशि **भट्टारीक्षेत्रम्** । तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्त**किन्नरीक्षेत्रम्** ॥

देवस्व विष लोके न विष नें (२) विषमुच्यते ।
विषमेकाकिन हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[यह लेख, जिसमें उस बड़े शिलालेख (नं. १४९) का दूसरा भाग (पंक्तियाँ ५१-६१) निहित है, 'सेन्द्र' कुलका लेख है।

---

१ यहाँ 'क' की जगह 'म' भी हो सकता है और तब 'मन्दशक्ति' पढ़ा जायगा। २ यह 'न' अतिरिक्त है और भूलसे जुड़ गया है।

इसका प्रारम्भ 'रणपराक्रमाङ्क' नामके एक चालुक्य राजा और उसके पुत्र एरैय्यके उल्लेखसे हुआ है। लेकिन ये दोनों नाम पश्चिमी या पूर्वी चालुक्योंमेंसे किसीकी भी वंशावलीमें अभीतक नहीं मिले हैं। रणपराक्रमाङ्क शायद 'रणराग'के लिये उल्लेखित हुआ है, जो जयसिंह प्रथमका पुत्र और पुलिकेशी प्रथमका पिता था। जयसिंह प्रथमका जो दक्षिणके इस वंशके प्रथम पुरुष हैं, वर्णन कभी-कभी आता है।

इसके अनन्तर 'सत्याश्रय' नामके एक राजाका उल्लेख आता है। परन्तु उससे यह पता नहीं चलता कि इस उपाधि (सत्याश्रय) को धारण करनेवाले किस पश्चिमी चालुक्य राजासे मतलब है।

इसके बाद, सत्याश्रयके समकालवर्तीके तौरपर, 'दुर्गशक्ति' राजाका उल्लेख आता है। यह राजा 'भुजगेन्द्र' अर्थात् नागवंशके अन्वयसे सम्बन्ध रखनेवाले सेन्द्र राजाओंके वंशका था। यह विजयशक्तिके पुत्र कुन्दशक्तिका पुत्र था।

इसमें दुर्गशक्तिके द्वारा शङ्खजिनेन्द्र नामके चैत्यके लिये दिये गये भूमिदानका कथन है। यह भूमिदान पुलिगेरे नगरमें किया गया था।

लेखका काल नहीं दिया गया है। यह संभवतः प्राचीनतर कालका मालूम पड़ता है, जो यहाँ सिर्फ पूर्वकालके लेखके निश्चय या सुरक्षाके लिये ही दुहराया गया है।]

[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पंक्तियों ५१-६१)]

११०

[यह लेख श्रवण-बेल्गोलाका संस्कृत और कन्नडमें है। इसे 'जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग' में देखना चाहिये।]

[L. Rice, EC, II, sr.-Bel ins. no 24.]

१११

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६०८=ई० सन् ६८७]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखितसंग्रहकी पहली जिल्दमें पृष्ठ २१ पर दिये गये ८७ पंक्तिवाले एक लेखका चौथा भाग है और पंक्ति ६९

चींसे शुरू होता है। उस समस्त लेखका सिर्फ कुछ भाग ही उस पुस्तकमें पाषाण-लेखपरसे लिया गया है, पूरा लेख नहीं। इसलिये उस लेखका यहाँ देना मुश्किल होनेसे सिर्फ उसकी विगत यहाँ दी जाती है।

उस विशाल लेखकी ६९ वीं पंक्तिसे एक दूसरा पश्चिमी चालुक्य शिलालेख शुरू हो जाता है। इस लेखकी ६९ से ८२ तककी पंक्तियाँ यद्यपि अस्पष्ट हैं, फिर भी अति सुरक्षित हैं; उसके नीचेकी पाँच पंक्तियोंका भी कुछ निशानोंसे पता चल जाता है, यद्यपि अक्षर इतने घिसे हुए हैं कि पढनेमें नहीं आते। इसमें पो(पु)लिकेशीवल्लभसे लेकर विनयादित्य-सत्याश्रय तककी वंशावली है और मूलसङ्घ अन्वयकी देवगण शाखाके किसी आचार्यको, उसके द्वारा दिये गये, दानका उल्लेख है। यह दान ६०८ शक वर्षके बीतनेपर जब उसके राज्यका पाँचवाँ था सातवा वर्ष चालू था और जब उसकी विजयका कैम्प (विजयस्कन्धावार) रक्तपुर नगरमें लगा हुआ था, माघ महीनेकी पूर्णमासीको दिया गया था। यह काल ७७-७८ पंक्तियोंमें यों दिया हुआ है:—अष्टोत्तर-षट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यपञ्चम-(? सप्तम)-संवत्सरे श्री रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे माघमासे पौर्णमास्याम्। यहाँ वार (दिन) नहीं दिया हुआ है।]

[इं० ए० ७, पृ० ११२, नं० ३९, चतुर्थभाग]

११२

श्रवणबेलगोला (विना कालका)-कन्नड।

(देखो "जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग"।)

११३

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५१=ई० सन् ७२९]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखित संग्रह (Elliot's Ms. Collection) की पहली जिल्दमें पृष्ठ २,२ पर ८७ पंक्तिके एक बड़े लेखमें दिया हुआ है। उसमेंसे पंक्ति २८ से शुरू होकर पंक्ति ५३ तक

पश्चिमी चालुक्योंका शिलालेख है। इसमें पो (पु) लिकेशीवल्लभ, अर्थात् पुलिकेशी प्रथमसे लेकर विजयादित्य सत्याश्रय तककी वंशावली दी हुई है तथा यह भी उल्लेखित है कि अपने राज्यके चौंतीसवें वर्षमें जब कि शक संवत्के ६५१ वर्ष व्यतीत हो चुके थे फाल्गुनकी पूर्णिमाके दिन, जब कि उसका विजय-स्कन्धावार रक्तपुर नगरमें था, पुलिकर नगरकी दक्षिण सीमापर बसे हुए कर्दम गाँवका दान अपने पिताके पुरोहित उदयदेव पण्डितको, जिन्हें 'निरवद्यपण्डित' भी कहते थे, दिया। ये श्रीपूज्यपादके शिष्य थे तथा मूलसंघ अन्वयकी देवगण शाखाके थे। यह दान पुलिकर नगरमें शङ्ख-जिनेन्द्रके मन्दिरके हितार्थ दिया गया था। कालनिर्देश पंक्ति ४२–४४ में यों दिया हुआ है:—एकपञ्चाशदुत्तरषट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्त्तमान-विजयराज्यसंवत्सरे चतुर्स्त्रिंशे वर्त्तमाने श्री-रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे फाल्गुनमासे पौर्णमास्याम्। वार (दिन) इसमें नहीं दिया हुआ है।]

[इं० ए०, ७, पृ० ११२, नं० ३९ (द्वितीय भाग)]

११४

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५६=७३४ ई०]

स्वस्ति [।।]

जयत्याविःकृतं विष्णोर्व्वाराह क्षोभिताण्णर्वं।
दक्षिणोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रान्तभुवन वपुः ॥

श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारीति-पुत्राणां सप्तलोकमातृभिः सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणवशीकृताशेषमहीभृतां चालुक्यानां कुलमलङ्करिष्णोरश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतगात्रस्य श्रीपोलिकेशीवल्लभमहाराजस्य प्रियसूनुः श्रीकीर्त्तिवर्म्मपृथ्वीवल्लभमहाराजस्तस्यात्मजस्य सत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-

राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियतनयः (यस्य) प्रभावकुलिशदलितपाण्ड्य-चोल-केरल-कदम्बप्रभृतिभूभृदुदग्रविभ्रमस्य नित्यावनतकाञ्चीपतिमुकुटचुम्बितपादाम्बुजस्य **विक्रमादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियसूनुः (नोः) सकलोत्तरापथनाथमथनोपार्ज्जितपालिध्वजादिसमस्तपारमैश्वर्यचिह्नस्य **विनयादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकस्य प्रियात्मजः साहसरसरसिकः पराङ्मुखीकृतशत्रमण्डलस्सकलपारमैश्वर्यव्यक्तिहेतुपालिध्वजावुज्व (ज्ज्व)लराज्यचिह्नो **विजयादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज(जः) [।।] [तत्-]प्रियसूनोः प्रतिदिनप्रवर्द्धमानया(यौ)वनो (नस्य) रिपुमण्डलाक्रान्तिराज्याभ्युदयः (यस्य) कस्तूरीकिशोरविक्रमैकरसो (सस्य) **विक्रमादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरभट्टारकस्य विजयस्कन्धावारे **रक्तपुर**मधिवसति **षट्पञ्चाशदुत्तरषट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यसंवत्सरे द्वितीये वर्त्तमाने माघपौर्णमास्यां मूलसंघान्वयदेवगणो**दितः (ताय) परमतप(पः)श्रुतमूर्त्तिविशे(शो)**करामदेवाचार्य्य**शिष्यो (ष्याय) विजितविपक्षवादि**जयदेवपण्डि**तान्तेवासी (सिने) समुपगतैकवादित्वादि**श्रीविजयदेवपण्डिताचार्य्याय** जिनपूजाभिवृद्ध्यर्त्थं बाहुबलिश्रेष्ठिविज्ञापनेन **पुलिकरनगरस्य शङ्खतीर्त्थवसते**र्म्मण्डनमण्डितं तस्य **धवलजिनालयस्य** जीर्ण्णोद्धारण कृत्वा खण्डस्फुटितनवसंस्कारबलिनिमित्तं दानशीलादिप्रवर्त्तनार्त्थं नगरादुत्तरस्या दिशि गव्यूतिप्रमाणव्यवस्थित **कर्प्पटितटाका**द्दक्षिणस्या दिशि राजमानेन शतार्द्धनिवर्त्तनप्रमाणक्षेत्र सर्व्वबाधापरिहारं दत्तम् [।।] तस्य सीमा समाख्यायते। पूर्व्वदिशि तत्साधितकिन्नरपाषाणाद्दक्षिणस्यामाशाया धवलपाषाणपार्श्वे-

शम्यः । पश्चिमस्या दिशि श्वेतपाषाणादेकशमी उत्तरस्यां दिशि आनीलपाषाणात् प्राक्प्रकाशिततटाकात् पूर्व्वस्यां दिशि अरुणपाषाणात् पूर्व्वोक्तन्दक्तकिन्नरपाषाणसंगता सीमा ॥

स्व दातु सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानात्पालनाचेति (दानं वा पालन चेति) दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
न विषं विषमित्याहुः देवस्व विषमुच्यते ।
विपमेकाकिनं हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥

प्रथ्यताम् जिनशासनम् [॥]

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पंक्तियाँ ६१-८२)]

[यह लेख उस बड़े लेख (नं. १४९) का तीसरा व अन्तिम भाग (पंक्तियाँ ६१-८२ तक) है। यह पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयका लेख है। यह उसके राज्यके द्वितीय वर्षका है जब कि शक वर्ष ६५६ (७३४-५ ई०) व्यतीत हो चुका था, और फलतः पूर्व किसी लेख (शिलालेख या ताम्रपत्र) से यहाँ निश्चय या सुरक्षाके लिये दुहराया गया है। यह लेख उसकी छावनी 'रक्तपुर' से निकाला गया है। 'रक्तपुर' आजकलका कौन-सा स्थान है, यह नहीं कहा जा सकता।

इसमें 'पुलिकर'—पूर्वके दो शिलालेखोंका 'पुलिगेरे'—शहरकी 'शङ्खतीर्थवसति' तथा 'धवलजिनालय' नामके एक दूसरे मन्दिरकी सजावट तथा मरम्मतका उल्लेख है और कहा गया है कि 'जिन' की पूजाके प्रबन्धके लिये कुछ भूमिदान किया गया।

यह लेख अपने वंशावली-परिचायक भागमें पश्चिमी चालुक्योंके शिलालेखोंसे मिलता है। इसमें दो आगेकी पीढ़ियोंका—विजयादित्य और विक्रमादित्य द्वितीयका, जो विनयादित्यके क्रमशः पुत्र और पौत्र है,—भी उल्लेख है।]

११५

पञ्चपाण्डवमलै—(आर्कटके निकट)-तामिल

—[?]—

१. नन्दिप्पोत्तरश[ ] कु अय् [म्] बदावदु नाग[ण]न्दि-
   गुर [वर्]
२. [इरु] क्क पोन्नियय [क्] किय[ा]र् पडिमं कोट्टुवित्ता [न्]
३. पु[ग]ळालैमंग[ल]त्तु मरुत्तुवर् मगन् नारण-
४. न् [॥]

अनुवाद—नन्दिप्पोत्तरशर्के ५ वें (वर्ष) में,—पुगळालैमङ्गलंके मरुत्तुवरके पुत्र नारणन् (नारायण) ने नागणन्दि (नागनन्दि) गुरुकी मूर्तिके साथ-साथ पोन्नियक्कियार्की मूर्त्ति खुदवाई ।

[EI, IV, no 14, A.]

११६

अनहिलवाड-पाटन—संस्कृत ।

(संवत् ८०२= ई० स० ७४५)

यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

[J Burgess and H. Cousens, Antiquity of North Gujerat (A SI, XXXII).]

११७

श्रवणबेलगोळा (विना कालका)—संस्कृत ।

[देखो "जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग" ।]

११८

नन्दी (गोपीनाथ पर्वत)—संस्कृत ।

विना कालनिर्देशका [=संभवतः ७५० ई० (लु० राइस)

[नन्दीमें, गोपीनाथ पहाडीके ऊपर गोपालस्वामी मन्दिरके पासकी चट्टानपर]

स्वस्ति श्रीमत् जित भगवता जिनवर-वृषमेण वृषमेण पुरा कलि-अवसर्पिण्या द्वावरे युगे लोक-स्थितिरक्षात्थं काङ्क्षित-मनुष्य-जन्मना पुरुषोत्तमेन सूर्य्य-वंश-व्योम-सूर्य्येण महारथेन दाशरथिना **राम-स्वामिना** प्रतिष्ठापिताय भगवतोर्हत: परमेष्ठिन: सर्व्वज्ञस्य चैत्य-भवनाय पश्चात् पाण्डवजनन्या **को(कु)न्तिदेव्या** पुनर्न्नवीकृत-संस्काराय भूमिदेव्या-स्तिलकायमानाय स्वर्गापवर्ग-पदयोस्सोपान-पदवीभूताय धराधर-धरणेन्द्रस्य फणा-मणि-लीलानुकारिणे धराधरवराय जिनेन्द्र-चैत्य-सान्निध्यात् पावनाय परम-तीर्थाय तपश्चरण-परायण-महर्षि-गणाध्यासित-कन्दराय **श्रीकुन्दाख्याय** (यहाँ बन्द हो जाता है)

[वृषभ-देवको नमस्कार करनेके बाद,—

प्राचीन समयमें, कलि-अवसर्प्पिणीके द्वापर-युगमें, सूर्यवंशके गगनमें सूर्यके समान, दशरथके पुत्र महारथ राम-स्वामी (रामचन्द्रजी)के द्वारा अर्हन्त परमेष्ठीका यह चैत्य-भवन प्रतिष्ठापित किया गया। बादमें, पाण्डवोंकी माता कुन्तीने इसे फिरसे नया बनवा दिया।

भूमिदेवीको तिलकके समान, स्वर्ग और अपवर्ग दोनोंके लिये सीढी, सब पर्वतोंमें उत्तम, जिनेन्द्र-चैत्य (बिम्ब)के सान्निध्यसे पवित्रीकृत, परमतीर्थ, जिसमें जगह-जगह तपश्चरण-परायण महर्षिगणोंके लिये कन्दराएँ (गुफायें) बनी हुई हैं, ऐसा 'श्रीकुन्द' नाम पर्वत (यहाँ लेख खतम हो जाता है।[१])

[EC, X, Chik-ballapur tl, no 29.]

११९

बेलवत्ते—कन्नड़।

विना काल-निर्देशका (संभवत. लगभग ७५० ई०)

[बेलवत्ते-मैसूर तालुकेमें, बसवेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओर]

नेरेयर्दि एर्दनु मुने⋯⋯ळलियु प्रभिन्न-वाग्वि विळ्ळोरु गुर्रि⋯⋯

---

१ प्रारम्भके शब्द 'स्वस्ति' को यहाँ अन्तमें लगा देनेसे यह लेख सभाव्य-रूपसे पूर्ण समझा जा सकता है, क्योंकि 'स्वस्ति'के योगमें चतुर्थी विभक्ति होती है, जो यहाँ है।

दु एल्दु दवे तम्म क्षेमकिरदल्लि-मेच्चिर ताळ्वदु परत्रे यपुदेवदेरू महा-प्रभु-**गोवपय्यन्** इन्त् इळ्दपु समाधियोळे मुडिपि ताळ्दिदन्नितमरेन्द्र-भोगमं ॥ पदेदोम् **श्री-पुरुषय्यल्** आम्मु-मोदलोळ् कल्नाडन् अन्दो बळेक् एदेयोळ् अक्कुडु मूतिमूतुगानो दोत घाण घीक्षे सळे पडेदे····पितृ-कळत्र-मित्र-जनमं काव्यान्य ताळ्दु अप्पोडी-नुडियल् वेल्कुमे पेम्पन् ओप्प गुणते तोळमिकिळ्द गोपय्यनम् ॥

[महाप्रभु गोवपय्यको श्रीपुरुषकी तरफसे भूमि-दान मिला था और वे (गो. प.) समाधिमरणपूर्वक मरे थे ।]

[EC, III, Mysore tl, no 6]

१२०

देवलापुर—कन्नड़ ।

विना कालनिर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[देवलापुर (कृष्णराजनगर तालुका), मारीगुडीके पूर्वमें]

स्वस्ति **श्रीपुरुष**-महा··········पृथुवी-राज्यकेये **अरट्टि**····रम्मगन्दिर् **सिंगं** दीक्षे वीळदु **अरट्टि-तीरर् कुडलूरद** गोट्टे **मडिओडे**-यम्बर् आळ्विकय

(पृष्ठभागपर)

नोक्कज-ओडे आगगदीकड··········कोट्ट नेल तेनेन्धक काळ्र्कु साक्षी कुडलूर पोन्नुलरु एळमडियरु एळ्लिरियरुं मद्दुगरुं कागब्बरुं साक्षि आग कोट्टदु आळ् आळ् किडिशिदोन वारणासिया शासिर-कविले शासिर-पार्वर् कोन्द कोले आका कोडिशिदोनु··········कडुवेडिळोनुडि तेने··· ळिद खचोनु····अरट्टिग तळर कुडलूर् आव्वत्ति

[जिस समय इस पृथ्वीपर श्री-पुरुष महाराज राज्य कर रहे थे;—अरट्टि......के पुत्र सिंगस् के (जिन) दीक्षा लेनेके बाद, (उसकी मां) अरट्टितिने कुडलूर् किलेके भट्टि-ओडेके द्वारा शासित प्रदेशमें भूमिदान किया।]

[EC, III, Mysore tl., no. 25.]

१२१

देवरहल्लि—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक सं० ६९८=७७६ ई०

[देवरहल्लि (देवलापुर प्रदेश)में, पटेल कृष्णय्यके ताम्रपत्रोंपर]

(Ib) स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्नवेयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितः काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्कोङ्गणिवर्म्मधर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तिः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः पितृपैतामहगुणयुक्तोऽनेकचातुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्धरिवर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रो द्विजगुरुदेवतापूजनपरो (IIa) नारायणचरणानुध्यातः श्रीमान् विष्णुगोपमहाधिराजः तत्पुत्रः त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यः कलियुगबलपङ्कावसन्नधर्म्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धः श्रीमान् माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः श्रीमत्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिनः कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रियभागिनेयो विद्याविनयातिशयपरिपूरितान्तरात्मा निरवग्रहप्रधानशौर्यो विद्वस्तु ? (विद्वत्सु) प्रथमगण्यः श्रीमान्

कोङ्गणिमहाधिराजः अविनीतनामा तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्तित्रयः **अन्दरि-आलत्तूर्-प्पोरुळरे-पेल्लनगरा**घनेकसमरमुखमखहुतप्रहतशूर-पुरुपपशूपहारविघसविहस्तीकृतकृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयपञ्चदश-सर्ग- (IIb) टीकाकारो **दुर्व्विनीत**नामधेयः तस्य पुत्रो दुर्द्दा-न्तविमर्द्दविमृदितविश्वम्भराधिपमौलिमालामकरन्दपुञ्जपिञ्जरीक्रियमाणचरण-युगलनलिनो **मुष्कर**नामधेयः तस्य पुत्रश्चतुर्द्दशविद्यास्थानाधिगत-विमलमतिः विशेषतोऽनवशेषस्य नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो रिपुति-मिरनिकरनिराकरणोदयभास्करः **श्रीविक्रम**प्रथितनामधेयः तस्य पुत्रः अनेकसमरसम्पादितविजृम्भितद्विरदरदनकुलिशाघात-व्रणसंरूढभास्वद्वि-जयलक्षणलक्षीकृतविशालवक्षस्थलः समधिगतसकलशास्त्रार्थतत्त्वस्समा-राधितत्रिवर्गो निरवद्यचरितर् प्रतिदिनमभिवर्द्धमानप्रभावो **भूविक्रम**-नामधेयः

अपि च—

नानाहेतिप्रहारप्रविघटितभटोरष्कवाटोत्थितास्रग्-
धारास्वाद-प्र(IIIa) मत्तद्विपशतचरणक्षोदसम्मर्द्दभीमे ।
संग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद्यो **विळन्दा**-भिधाने
राज-श्रीवल्लभाख्यस्समरशतजयावाप्तलक्ष्मीविलासः ॥

तस्यानुजो नतनरेन्द्रकिरीटकोटि-
रत्नार्कदीधितिविराजितपादपद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्वृतपतिर्न्न**वकाम**नामा
शिष्टप्रियोऽरिगणदारणगीतकीर्त्तिः ॥

तस्य **कोङ्गणिमहाराजस्य शिवमारा**परनामधेयस्य पौत्रः सम-वनतसमस्तसामन्तमुकुटतटघटितबहलरत्नविलसदमरधनुष्खण्डमण्डितच-

रणनखमण्डलो नारायण[चरण]निहितभक्तिः शूरपुरुषतुरगनरवारणघटासं-घट्टदारुणसमरशिरसि निहितात्मकोपो भीमकोपः प्रकटरतिसमयसमनु-वर्त्तनचतुरयुवतिजनलोकधूर्त्तोऽलोकधूर्त्तः सुदुर्द्धरानेकयुद्धमूर्धलब्धविजय-सम्पद हितगजघ (IIIb) टाकेसरी राजकेसरी। अपि च।

यो गङ्गान्वयनिर्म्मलाम्बरतलव्याभासनप्रोल्लसन-
मार्त्तण्डोऽरिभयङ्करः शुभकरस्सन्मार्गरक्षाकरः।
सौराज्य समुपेत्य राज्यसमितौ राजन् गुणैरुत्तमै-
राज-श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः॥
कामो रामासु चापे दशरथतनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्ये वलारिर्व्विहुमहसि रविस्स्व-प्रभुत्वे धनेशः।
भूयो विख्यातशक्तिस्स्फुटतरमखिलं प्राणभाज विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजानां पित(पति)रिति कवयो य प्रशंसन्ति नित्यं॥

तेन प्रतिदिनप्रवृत्तमहादानजनितपुण्याहघोषमुखरितमन्दिरोदरेण **श्रीपुरुषप्रथमनामधेयेन पृथुवीकोङ्गणिमहाराजेन अष्टानवत्युत्तरे-[षु] षट्च्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमानविजयैश्वर्य्ये संवत्सरे पञ्चाशत्तमे प्रवर्त्तमाने** मान्यपुरमधिव-(IVa)सति विजयस्कन्धावारे श्रीमूल-मूलगणाभिनन्दितनन्दिसङ्घान्वये **एरेगित्तू-**र्न्नाम्नि गणे **पुलिकल्गच्छे** स्वच्छतरगुणकिर[ण]प्रततिप्रह्लादितसकललोकः चन्द्र इवापरः **चन्द्रनन्दी**नाम गुरुरासीत् तस्य शिष्यस्समस्तविबुधलो-कपरिरक्षणक्षमात्मशक्तिः परमेश्वरलालनीयमहिमा कुमारवद्द्वितीयः **कुमार-ण(न)न्दी** नाम मुनिपतिरभवत् तंस्यान्तेवासी समधिगतसकलतत्त्वार्थ-समर्थितबुधसार्थसम्पत्सम्पादितकीर्त्तिः **कीर्त्त(र्त्ति)नन्द्याचार्यो** नाम महामुनिस्समजनि तस्य प्रियशिष्यः शिष्यजनकमलाकरप्रबोधनकः

मिथ्याज्ञानसन्ततसन्तमससन्तानान्तकसद्धर्म्मव्योमावभासनभास्करः **विमलचन्द्राचार्य**स्समुदपादि तस्य (IV b) महर्षेर्द्धर्म्मोपदेशनया श्रीमद्बाणकुलकलः सर्व्वतपमहानन्दीप्रवाहः महादण्डमण्डलाग्रखण्डितारिमण्डलद्रुमषण्डो **दुण्डुप्रथमनामधेयो नीर्गुन्दयुवराजो** जज्ञे तस्य प्रियात्मजः आत्मजनितनयविशेषनिःशेषीकृतरिपुलोकः लोकहितमधुरमनोहरचरितः चरितार्थत्रिकरणप्रवृत्तिः **परमगूळप्रथमनामधेयश्रीपृथुवीनीर्गुन्दराजो**ऽजायत पल्लवाधिराजप्रियात्मजाया सगरकुलतिलकात् **मरुवर्म्मणो** जाता **कुन्दाच्चि**नामधेया भर्तृभवन आवभूव भार्य्या तया सततप्रवर्त्तितधर्म्मकार्य्यया निर्म्मिताय **श्रीपुरो**त्तरदिशमलङ्कुर्व्वते **लोकतिलकनाम्न जिनभवनाय** खण्डस्फुटितनवसंस्कारदेवपूजादानधर्म्मप्रवर्त्तनार्थं तस्यैव **पृ(Va)थिवीनीर्गुन्दराजस्य** विज्ञापनया महाराजाधिराजपरमेश्वरश्री**जसहितदेवेन** नीर्गुन्दविषयान्तर्पाति **पोन्नळ्ळि**नामग्रामस्सर्व्वपरिहारोपेतो दत्तः तस्य सीमान्तराणि पूर्व्वस्या दिशि नोलिबेळदा बेळ्गल्-मोरींदि पूर्व्वदक्षिणस्या दिशि पण्यङ्केरी दक्षिणस्या दिशि बेळगल्लिगेरेंया ओळगेरेंया पल्लदा कूडल् दक्षिणपश्चिमायान्दिशि जैदरा केय्या बेळ्गल्-मोर्ड्डु पश्चिमायान्दिशि पोङ्केवि ताल्लुवायराकेरी पश्चिमोत्तरस्यां दिशि पुणुसेया गोड्डेगाला कल्कुप्पे उत्तरस्या दिशि सामगेरेया पोल्लदा पेर्म्मुरिक्कु उत्तरपूर्वस्यां दिशि कळम्बेत्ति-गट्टु इमान्यन्यानि क्षेत्रान्तराणि दत्तानि दुण्डुसमुद्रदा वयल्लुळ् किर्रुदारींमेगे **पदिर्कण्डुगं** मण्णं **पळेया एरेनल्लूरा** ऊर्प्पाळु ओर्कण्डुगं **श्रीवुरदा दु (Vb) ण्डुगामुण्डरा** तोण्टदा पड्डुवायोन्दुतोण्ट श्रीवुरदा वयलुळ् कर्म्मेगेट्टिनल्लि इर्कण्डुगं कळनि पेर्गेरेंया केळगे आर्रुगण्डुगमेरे पुलिगेरेंया कोयिल्गोडा एडे इर्प्पत्तुगण्डुग ब्बेडे आदुवु श्रीवुरदा बडगण पड्डुवण कोणुळळ्ण् **देवङ्केरि** मदमने ओन्द

मूवत्ता-ओन्दु मनेय मनेताणमस्य दानसाक्षिणः अष्टादश प्रकृतयः ॥
(VIa) अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवतिसहस्रविषयप्रकृतयः योऽस्या-पहर्त्ता लोभात् मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्म्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यभाग्भवति अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥
स्व दातु सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
देवस्वं तु विष घोरं न विषं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्वकलाधारभूतचित्रकलाभिज्ञेन विश्वकर्म्माचार्य्येणेद शासनं लिखित चतुष्कण्डुकव्रीहिवीजावापमात्रं द्विकण्डुककङ्गुक्षेत्र तदपि ब्रह्म-देयमिव रक्षणीयम् ॥

[इस लेखमें सर्वप्रथम गङ्गनरेशोंकी राजपरम्परा बताई गई है। वह निम्न भाँति थी:—

१ काण्वायनसगोत्रीय कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज ।
इनके पुत्र—
२ माधव-महाधिराज; ये दत्तकसूत्र-वृत्ति (टीका) के प्रणेता थे ।
इनके पुत्र—
३ हरिवर्म्म-महाधिराज ।
इनके पुत्र—
४ विष्णुगोप-महाधिराज ।
इनके पुत्र—

५ माधव-महाधिराज। इनके पुत्र—

६ कदम्बकुलके सूर्य कृष्णवर्म्म महाधिराजकी बहिनके पुत्र अविनीत नामके कोङ्गणि-महाधिराज थे। इनके पुत्र—

७ दुर्व्विनीत थे। इन्होंने अन्दरि, आलत्तूर्, पोरुळरें, पेळ्ळनगर तथा और भी अन्य जगहोंके युद्धोंको जीता था। ये किरातार्जुनीय संस्कृत काव्यके १५ सर्गों तकके टीकाकार भी थे। इनके पुत्र—

८ मुष्कर थे। इनके पुत्र—

९ श्रीविक्रम। इनके पुत्र—

१० भूविक्रम हुए, जिन्होंने विळन्द नामक स्थानमें पल्लवेन्द्र नरपतिको जीता था। सौ युद्धोंमें जीतनेसे प्राप्त लक्ष्मीका विलास (भोग) करनेसे इनको 'राज श्रीवल्लभ' भी कहते थे। इनके अनुजका नाम नवकाम था।

इसके पश्चात्— उन कोङ्गणिमहाराजका जिनका दूसरा नाम 'शिवमार' था पौत्र

११ राज-श्रीपुरुष हुआ। इन्हींका द्वितीय नाम 'पृथिवीकोङ्गणिमहाराज' था। ये जब, शक सं० के ६९८ वर्ष बीत जाने पर और अपने राज्यका जब ५० वाँ वर्ष चालू था, अपने विजयस्कन्धावार मान्यपुरमें निवास कर रहे थे, तब.—

मूल मूलसंघमेंसे निकले हुए नन्दिसंघके एरेगित्तूर्-गणके पुलिकल्-गच्छमें चन्द्रनन्दि गुरु हुए। उनके शिष्य कुमारनन्दि मुनिपति, उनके शिष्य कीर्त्तिनन्द्याचार्य, उनके शिष्य विमलचन्द्राचार्य हुए।

१२ इन महर्षिके धर्मोपदेशसे निर्गुन्द युवराज, जिनका पहला नाम 'दुण्डु' था और जो 'बाणकुल' के नाशक प्रतिबुद्ध हुए थे। इनके पुत्र—

१३ पृथिवी-निर्गुन्द-राज हुए। इनका पहला नाम परमगूळ था। इनकी पत्नीका नाम कुन्दाच्चि था। यह सगरकुल-तिलक मरुवर्म्माकी पुत्री थीं और इनकी माता पल्लवाधिराजकी प्रियपुत्री थीं जो मरुवर्म्माकी पत्नी थीं। इसने (कुन्दाच्चिने) श्रीपुरकी उत्तर दिशामें 'लोकतिलक' नामका

जिनमन्दिर बनवाया था। उसकी मरम्मत, नई वृद्धि, देवपूजा, दानधर्म आदिकी प्रवृत्तिके लिये पृथिवी निर्गुन्द-राजके कहनेसे महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-जसहित-देवने निर्गुन्द देशमें आनेवाले 'पोसळ्ळि' ग्रामका दान, सर्व करो और बाधाओंसे मुक्त करके दिया।

इसके बाद इस लेखमें इस गाँवकी आठ दिशाओंकी सीमा दी हुई है। तथा अन्य क्या क्या क्षेत्र दानमें दिये गये थे उनकी सूची है। दानके साक्षी कौन कौन थे, इसका उल्लेख है। तत्पश्चात् मनुके वे प्रसिद्ध चार श्लोक हैं जो बहुत-से शिलालेखोंके अन्तमें पाये जाते हैं। सबसे अन्तमे, इस लेख (शासन) को उत्कीर्ण करनेवाले शिल्पीने अपना नाम 'विश्व-कर्म्माचार्य' दिया है तथा उसी समय उसको भी कुछ भूमिदान किया गया था उसका भी इसमें उल्लेख है।]

[EC, IV, Nagamangala tl. n° 85]

१२२

मण्णे—संस्कृत।

शकवर्ष ७१९=७९७ ई०

[मण्णेमें, शीलवन्त रुद्रय्यके अधिकारके ताम्रपत्रो पर]

(१ ब) स्वस्ति जित भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करः स्वखड्गैकप्रहार-खण्डित-महा-शिला-स्तम्भ-लब्ध-बल-पराक्रमो दारुणारि-गणविदारणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितः काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्-कोङ्गणि-वर्म्म-धर्म्म-महाधिराजः,तस्य पुत्रः पितुरन्वागत-गुण-युक्तो विद्या-विनय-विहित-वृत्तः(त्तिः) सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्कवि-काञ्चन-निकषोपल-भूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-सूत्र-वृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधव-महाधिराजः, तत्पुत्रः पितृ-पितामह-गुण-युक्तोऽनेकचातुर्-दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादितयशः श्रीमद्धरिवर्म्म-महाधिराजः, तत्पुत्रो द्विज-गुरु-देवता-पूजन-परो नारायण-चरणानुध्यातः

श्रीमान् **विष्णुगोपमहाधिराजः**, तत्पुत्रस् त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रजः-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-(२ अ)क्र(क्री)तराज्यः कलि-युग-बल-पङ्कावसन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-नित्य-सन्नद्धः श्रीमान् **माधव-महाधि-राजः**, तत्पुत्र [श्र्] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः **कृष्णव-र्म्म-महाधिराजस्य** प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनयातिशय-परिपूरितान्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौर्य्यो विद्वत्सु प्रथम-गण्यः श्रीमान् **कोङ्गणि-महाधि-राजः अविनीत**-नामा, तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्ति-त्रयः अन्दरि-आल-त्तूर्-प्पोरुळरे-पेळ्नगराद्यनेकसमर-मुख-मख-हुत-प्रहत-शूर-पुरुष-पशूप-हार-विघस-विहस्तीकृत-कृतान्ताग्नि-मुखः किरातार्जुनीय-पञ्च-दश-सर्ग-टीकाकारो **दुर्व्विनीत**-नामधेयः, तस्य पुत्रो दुर्द्दान्त-विमर्द्द-विमृदित-विश्वम्भराधिप-मौळि-माला-मकरन्द-पुञ्ज-पिञ्जरीक्रियमाण-चरण-युगळन-ळिनो **मुष्कर**-नामधेयः, तस्य पुत्रश्चतुर्द्दश-विद्या-स्थानाधिगत-विमल-मति-र्व्विशेषतोऽनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ (क्तृ)-प्रयोक्तृ-कुशलो रिपु-तिमिर-निकर-निराक[र]णोदय-भास्करः **श्रीविक्रम**-प्रथित-ना[म]धेयः, तस्य पुत्रः अनेक-समर-सम्पादित-विजृ (२ ब) म्भित-द्विरद-रदन-कुलिशाभिघात-व्रर्ण्ण(व्रण)संरूढ-भास्वद्विजय-लक्षण-लक्षीकृत-विशाल-व-क्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ-तत्त्वस्समाराधित-त्रिवर्गो निरवद्य-चरित[ः]प्रतिदिनमभिवर्द्धमान-प्रभावो **भूविक्रम**नामधेयः

अपि च

नाना-हेति-प्रहार-प्रविघटित-भटोरःकवाटोत्थितासृग्-
धारास्वाद-प्रमत्त-द्विप-शतचरण-क्षोद-सम्मर्द्द-भीमे ।
सङ्ग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद् यो **विळन्दा**भिधाने
राजा **श्रीवल्लभाख्य**स्समर-शत-जयावास-लक्ष्मी-विलासः ॥

तस्यानुजो नत-नरेन्द्र-किरीट-कोटि-
रत्नार्क-दीधिति-विराजित-पाद-पद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्वृत-पतिर्न्नव-काम-नामा
शिष्ट-प्रियोऽरि-गण-दारण-गीत-कीर्त्तिः ॥

तस्य कोङ्गुणि-महाराजस्य शिवमारापर-नामधेयस्य पौत्रः समवनतसमस्त-सामन्त-मुकुट-तट-घटित-वहल-रत्न-विलसदमर-धनुष्-खण्ड-मण्डितचरण-नख-मण्डलो नारायण-चरण-निहित-भक्ति[:]शूर-पुरुष-तुरग-नरवारण-घटा-संघट्ट-दारुण-समर-शिरसि भी(निहि)तात्म-कोपो भीम-कोपः प्रकटरति-समय-समनुवर्त्तन-चतुर-युवति-जन-लोक-धूर्त्तोऽलोक-धूर्त्तः सुदुर्धरानेक-युद्ध-मूर्द्ध-लब्ध-विजय-सम्पदहित-गज-घटा-केसरी राज-केसरी ।

अपि च

यो गङ्गान्वय-निर्म्मलाम्बर-तल-व्याभासन-प्रोल्लसन्-
मार्त्तण्डोऽरि-भयंकरश्शुभकरस्सन्मार्ग्ग(३ अ) रक्षा-करः ।
सौराज्य समुपेत्य राजसमितौ राजद्(न्)-गुणैरुत्तमै
राजा श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथ-तनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्य्ये वलारिर्वा(व)ह्नु-महसि रविः स्व-प्र[भुत्]वे धनेशः ।
भूयो विख्यात-शक्तिस्स्फुटतरमखिलप्राण-भाजं विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजाना पतिरिति कवयो यं प्रशसन्ति नित्यम् ॥

स तु प्रतिदिन-प्रवृत्त-महादान-जनित-पुण्याह-घोष-मुखरित-मन्दिरोदरः श्रीपु[रु]ष-प्रथम-नामधेयः पृथिवी-कोङ्गणि-[म]हाधिराजः, तत्पुत्रः प्रताप-विनमित-सकल-महीपाल-मौलि-माला-ललित-चरणारविन्द-युगलो निज-भुज-विराजि-निशित-खड्ग-पट्ट-समाकृष्टानिष्ट धरावल्लभ-

जय-श्री-समालिङ्गितस्समर-मुख-सम्मुखागत-रिपु-नृपति-गज-घटा-कुम्भ-निर्भेदनोच्चलित-रक्त-च्छटा-पात-पाटलित-निज-भुज-स्तम्भः आ-कर्ण्ण-समाकृष्ट-चाप-चक्र-विनिर्मुक्त-नाराच-परम्परा-पात-पातितारातिमण्डलो बहु-समर-समार्ज्जित-जय-पताका-शत-[श]बलित-नभस्-तलः

यस्मिन् प्रयातवति कोप-वश महीशे
यान्ति क्षणादहित-भूमिभुजो रणाग्रे ।
अन्त्रावली-वलय-भीषणमन्तक (३ ब) स्य
वक्त्रान्तरं क्षतज-कर्द्दम-दुर्निरीक्ष्यम् ॥

स तु शिशिरकर-निर्म्मल-निज-यशो-राशि-विशदीकृत-दशाशा-चक्र[ः] समस्त-चक्रवर्त्ति-लक्षणोपलक्षितो निरपेक्षा-परोपकार-सम्पादनैक-व्यसनः प्रवर्त्तित-न्याय-बल-समुन्मूलित-कलि-काल-विलसितो निपुण-नीति-प्रयोगापहसित-बृहस्पतिः कु-नृपति-कदम्बक-कपाट-कोटि-विघट्टित-धर्म्मावलं ····न ···शिलास्तम्भायमान-चरितः सतत-प्रवृत्त-दान-सन्तर्प्पित-द्विजाति-लोकः ।

प्रोन्मूलित-विकारेण सर्व्व-लोकोपकारिणा ।
यस्य दानेन दिङ्-नाग-दान-धाराप्यधःकृता ॥

अपि च

जटानां संघातैरिह भुवि कृतोऽनून-विपदाम्
कलानामाधारो बुध-जन-हितः पालन-परः ।
गुणाना शुद्धानामपि नियतमुत्पत्ति-भवनम्
नृपाणा नेता····कविरिति मतः काव्य-कुशलः ॥

दुर्व्व(दुरव)गाह-फणिसुत-मत-पारावार-पारदृश्वा प्रमाण-शास्त्र-शाण-निशातीकृत-धीर-धिषणः सामज-तन्त्र-तत्त्वावबोध-विमदीकृत-मु(बु)धो

हस्तिनी-(व)वक्त्रोद्भव-यति-प्रवर-मतावबोधन-गभीर-मतिर्व्विद्वान्-मति-वितति-विकल्प...........विचार-विचक्षणोऽङ्गीकृ[त]-तुरङ्गमागम-प्रयोग-परिणतो धनु-र्व्विद्याम्भोरुह-वन-गहन-विकासित-विदग्ध-म(४ अ)रीचि-माली निज-निर्म्मित-गज-मत-कल्पनानल्प-चेता विराजित-सेतु-बन्धनो नन्दित-विपश्चिन्मण्डलस्सकल-नाटक-विषय-सन्धि-सन्ध्यङ्गादि-योजना-चतुरो निरुपम-निज-रूप-निर्जित-मकरध्वजो मकरध्वज-गुरु-चरण-सरोज-विनमन-पवित्री-कृतोत्तमाङ्गो मुदुकुन्दूर्-नाम-ग्रामोपविष्ट-राष्ट्रकूट-चालुक्य-हैहय-प्रमुख-प्रवीर-सनाथ-वल्लभ-सैन्य-विजय-विख्यापित-प्रभावः ।

अपि च ।

> घोराश्वीय समन्तात् प्रबलमुपगत-व्याप्त-दिक्-चक्रवालम्
> निर्ज्जित्यानेक-संख्यैर्न्निशित-निज-भुजोन्मुक्त-नाराच-जालैः ।
> देवो यः प्राज्य-तेजस् तिमिरमिव महत्-तीव्रभानुर्म्मयूखैर्
> दुर्व्वारोदार-पातैरुदयमभिलपन् स्वन्निवेशं विवेश ॥

स तु हरिरिव सतत-सम्भावित-द्विज-पतिः सहस्रकिरण इव प्रति-दिवसोचितोदयः भुजङ्गलोक इव विगत-भयो (१) आत्माकर इवास्पृष्ट-कलङ्को दुर्य्योधनोऽप्यभिनन्दिताज्र्जुन-गुणो वाहिनी-पतिरप्यजडाशयः शीतकरोऽप्यनालिङ्गित-मलिन-भावो राष्ट्रकूट-पल्लवान्वय-तिलकाभ्या मूर्द्धा-भिषिक्त-गोविन्द-राज-नन्दि-वर्म्माभिधेयाभ्या समनुष्ठित-राज्याभिषेका-भ्या निज-कर-घट्टित-पट्ट-विभूषित-ललाट-पट्टो विख्या[त]-विमल-गङ्गान्वय-नभस्-तल-गभस्तिमाली कोङ्गुणि-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-शिव-मार-देवः (४ ब) ॥ तत्पुत्रो निज-भुज-निहित-निशात-हेति-पात-पातिताराति-वर्गो वर्ग-द्वयोपार्ज्जनार्ज्जितोर्ज्जित-यशस्सन्तान-सन्तर्प्पित-स-

मस्त-जन-हृदयः प्रभवत्कलि-काल ···विवर्द्धित-कलङ्क ···लाय····कल्प-कल्याण-चरितः स्ववश-विशद-वियदंशुमाली समस्त-नीति-शास्त्र-प्रयोग-प्रवीणाग्रगण्यस्तुरङ्गमारोहण-नैपुण्य-प्रीणित-क्षोणीपति-सुत-सहस्र-लब्ध-साम-ध्वनिरनेक-सङ्गर-रङ्ग-सङ्गमाङ्गीकृत-जय-श्री-समालिङ्गित-भुजङ्ग-भोगाभ-भीम-भुज-दण्डः

यस्मिन् शासति सत्य-धाम्नि विमले राजन्वती मेदिनी
यस्मि····र्य्यमुपेत्य बृहित-बलो धर्म्मोऽधिकं जृम्भते ।
यस्यैवाभय-दायिनोऽतिदयिता दोश्शालिनश्शाश्वती
लक्ष्मीर्यत्र यशो-निधौ पतिमती जाता जगद्वल्लभा ॥

स तु पितामह इवानेक-राजहंस-संसेवितः पद्मावासश्च मधुमथन इव त्रिलोकाधिक-विक्रमाक्षिप्त-बलि-रिपुरहीन-स्थितिरविश्व धूर्जटिरिवाविनश्वरेश्वर-भावो वीर-भद्रश्च कार्त्तिकेय इव सकल-जगदुदीरित-स्वामि-शब्दश्शक्ति-सम्पन्नश्च महा-मेरुरिव स्व-महिमाधःकृत-महीभृन्मण्डलो महासत्त्वश्च ।

अपि च ।

मन्त्रादि-(षोड) (५ अ) षोडश-महीश-गुणानुरागो
य प्राप्य विस्मृति-पद ज [ग] तो जगाम ।
यस्य प्रतापदहनोऽहित-बुद्धि-वार्द्धौ
और्व्वायते नरपतेरतिदूरतोऽपि ॥

यश्च समर-शिरसि····कलत्रे च निज-जने मित्रायते रिपु-तिमिर-निचये च अनेक-प्रकारण-रणकार्द्दितान्तःकरणाना शरणायते सम्पदां च अतिप्रभूत-मति-निकेत-तमस्-तति-तिरस्कृतौ प्रद्योतायते ···खिल-जगदनुल्लंघिताज्ञा-सम्पत्तौ च सकल-कुवलय-लोचनानन्दकरताया द्विजेशायते हरि-वाहन-निहित-चित्तत्वे च ।

अपि च ।

यस्यैकस्यापि सर्व्वं जगदपि स-रुषो नाग्रतस् स्थातुमीष्टे

दित्सा-सम्भूत-बुद्धेरपि नच निचयो यस्य नालं नृपस्य ।

जिह्रे तीव्राभिमानात् कपट-विजयिनां यद्-धृतेर्न्नाकधाम्नाम्

[रा] ज्ञा विज्ञातकीर्त्ति [स्स] सकल-जगतां नन्दनो **मारसिंहः** ॥

यश्च सतत-सम्पादित-कमलानन्दोऽप्यप्रचण्डकरः पुण्यं-जन-सत्त्व-समेतोऽप्यनृशंस-मानसः मत्त-मातङ्ग-स्कन्ध-लालितोऽप्यति-शुचि-स्वभावः प्रिय-धनुरप्यमार्ग्गणः समनुष्ठित-दण्ड-नीतिरप्यदण्डक्रम-गतिः ॥

अपि च ।

धूसरीकुरुते यस्य चरणाम्भोज-ज रजः ।

प्रणतानन्त-सामन्त-चूडामणि-मधुव्रजम् ॥

तेन लो (५ व) क-त्रिनेत्रापर-नामधेयेन समधिगत-यौवराज्य-पदेन भगवत्सहस्र-किरण-चरण-नलिन-षट्चरणायमान-मानसेन ॥ त-स्मिंश्च प्रसाधिताशेष-सामन्त·······अखण्डं **गङ्ग-मण्डलमनुशासति श्रीमारसिंहा**भिधाने आसीत् समस्त-सामन्त-सेनाधिपतिः परमार्हतः परम-धार्म्मिकः मन्त्र-प्रभूत्साह-शक्ति-सम्पन्नः **श्रीविजयो** नाम यश्च सहस्रदी-धितिरिव तिरोहिताखिल-पर-तेजः पर-तेजः-प्रसरोऽपि असन्तापित-भूतलः सुनाशीर इवाखण्डित-सकल-जनाज्ञोऽपि अगोत्र-भेदन-करः गुह इव शक्ति-समुत्सारिता-त्वर्गोऽपि अकृत-बल-भावःशिशिरगभस्तिरिव प्रह्लादनो-द्योतनसमर्थोऽपि अदोपाश्रित-विग्रहः वारिराशिरिव अपरिमित-सत्व-समाश्रयोऽपि अपङ्क-मल-गृहीतः विनतानंद [न] इव अतिदूर-द [र्श] नोऽपि अपिशिताशनः शतक्रतुरिव बुध-गुरु-मित्र-परिवृतोऽपि न [प] र-दार-रति-शासः झषकेतन इव स्ववशीकृत-सकल-जनोऽपि अप्र (प)

हृत-बलाबलो-तप....यश्च अमृतमयो भृत्याना सुखमयो मित्राणां सुधामयो रामाणामुत्साहमयः प्रजानां विनयमयो गुरूणा नयसूख (६ अ) ल्द्-वृत्तीना अग्रणी रसिकाना स्रष्टा काव्य-रचनाना उपदेष्टा नयाना द्रष्टा स्वामि-कार्य्याणा विद्विष्टा कृत-दोषाणा यष्टा महा-मखानां परिमार्ष्टा पापाना प्रष्टा निर्म्माण-हेतूना परिक्लिष्टा श्रितागसाम् ।

अपि च ।

उदन्वानिव गाम्भीर्य्ये विवस्वानिव तेजसि ।
शशलक्ष्मेव लावण्ये नभस्वानिव यो वले ॥
मनोभूरिव सौरूप्ये मघवानिव सम्पदि ।
सुरमन्त्रीव शास्त्रार्थे उशनेव च यो नये ॥
ग्रामे पुरे नदी-तीरे गिरौ द्वीपे सरोऽन्तिके ।
प्रावर्त्तयत् स्व-कीर्त्याभा योऽनेकं वसतिं प्रभुः ॥ ·
स **मान्यनगरे** श्रीमान् **श्रीविजयो**ऽकार [य] च्छुभम् ।
जिनेन्द्र-भवन तुङ्ग निर्म्मल स्व-महस्-समम् ॥

तस्य च प्रसाधिताशेप-सामन्त-चन्द्रस्य श्री-**मारसिंह**स्यानुज्ञया **श्रीविजयो** महानुभावः **किपु-वेकूर**-ग्राममादाय **मान्यपुर**-विनिर्म्मिताय भगवदर्हदायतनाय अदादिति तस्य च ग्रामस्य (**यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है**) ।

अपि च ।

आसीद(त्)-**तोरणाचार्य्यः** कोण्डकुन्दान्वयोद्भवः
स तै [द] द्विषये धीमान् **शाल्मली**ग्राममाश्रितः ॥
निराकृततमोऽरातिः स्थापयन् सत्पथे जनान् ।
स्वतेजोद्द्योतित-क्षोणिः चण्डार्च्चिरिव यो वभौ ॥

तस्याभूत् पुष्पनन्दीति शिष्यो विद्वान् गणाग्रणीः ।
तच्छिष्यश्च प्रभाचन्द्रः तस्येय वसतिः कृता ॥

(३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

इदष शक-वर्षं एळनूरा पत्तोम्भत्तु वर्षङ्गं मूषु तिङ्गळुमाषाढ-शुक्ल-पक्षदा पञ्चमियुमुत्तराभाद्रपतेयुं सोमवारमुं शासन निर्मितं । अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवति-सहस्र-विषय-प्रकृतयः योऽस्यापहर्त्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यवान् भवति

अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुंधराम् ।
(७ अ) षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठा [यां जा] यते कृमिः ।
स्व दातुं सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ब्रह्मस्व तु विषं घोरं न विष विषमुच्यते ।
विषमेकाकिन हन्ति देव-स्व पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्व-कलाधारभूत-चित्र-कलाभिज्ञेय-विश्वकर्म्माचार्य्येणेदं शासनं लिखितं चतुष्कण्डुक-व्रीहि-बीजावाप-क्षेत्रं द्वि-कण्डुक-कङ्गु-क्षेत्रं तदपि देव-भोगमिति रक्षणीयम् ॥

[जाह्नवी (गङ्गा)-कुलके स्वच्छ आकाशमे चमकते हुए सूर्य; काण्वा-यन-सगोत्रके

(१) श्रीमत्-कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाधिराज थे ।
(२) उनके पुत्र श्रीमान् माधव-महाधिराज थे ।

(३) उनके पुत्र श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराज थे।

(४) ,, ,, श्रीमान् विष्णुगोप-महाधिराज थे।

(५) ,, ,, ,, माधव-महाधिराज थे।

(६) उनके पुत्र, जो कदम्ब-कुलवंशीय कृष्णवर्म्म-महाधिराजकी प्रिय बहिनके पुत्र थे, अविनीत नामके श्रीमान् कोङ्गणि-महाधिराज थे।

(७) उनके पुत्र दुर्विनीत थे। इन्होंने अन्दरि, आलत्तूर्, पोरुलरे, पेळ्नगर और दूसरे स्थानोंके युद्धोंको जीता था। इन्होंने किरातार्ज्जुनीय के १५ सर्गोंपर टीका की थी।

(८) इनके पुत्र मुष्कर थे।

(९) उनके पुत्र श्रीविक्रम थे, ये चौदहों विद्याओंमें पारङ्गत थे।

(१०) उनके पुत्र भूविक्रम थे। इन्होंने विळन्दकी भयानक लड़ाईमें राजा पल्लवेन्द्रको जीता था, और सौ लड़ाइयोंमें विजय लाभ करनेसे इनको 'राजश्रीवल्लभ' भी कहते थे।

(११) उनका छोटा भाई नव-काम था।

(१२) शिवमार-कोङ्गणि महाराजका नाती श्रीपुरुष था, उन्हें पृथिवी-कोङ्गणि-महाधिराज भी कहते थे।

(१३) उनके पुत्र, प्रसिद्ध गंगवंशके स्वच्छ आकाशके सूर्य, कोङ्गणि-महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-शिवमार-देव थे। इनकी बहुत-सी प्रशंसाका वर्णन है।

(१४) उनके पुत्र, मारसिंह थे।

जब वे अखण्ड गङ्ग-मण्डलपर राज्य कर रहे थे;-उनका एक श्रीविजय नामका सेनापति था। उसकी प्रशंसा। उसने मान्य-नगरमें एक शुभ, विशाल जिनमन्दिर बनवाया। उसे श्रीमारसिंहसे किपु-चेकूरु गाँव मिला था, वह उसने इसी अर्हत्-मन्दिरको भेंट कर दिया। इस गाँवकी सीमायें।

शाल्मली गाँवमें रहनेवाले, कोण्डकुन्दान्वयके तोरणाचार्य्य थे। उनके शिष्य पद्मनन्दि थे। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जिन्होंने अपना आवास यहीं बना लिया था। जडियके तालावोंकी नीचेकी जो जमीनें उनको दी गईं थीं उनकी विगत। यह शासन (लेख) शक वर्ष ७१९ के ३ महीने बाद, आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी, उत्तरभाद्रपद, सोमवारको निकला था।

इस दानके साक्षी–९६००० के विद्यमान अफसर (अधिकारी गण)। वे ही आपात्मक श्लोक।

विश्वकर्म्माचार्य्यने इस शासनको लिखा था। प्रभाचन्द्र देवको दी गई भूमिकी विगत।]

[EC, IX, Nelamangala, tl., n° 60]

१२३

मन्ने—संस्कृत।

शक ७२४=८०२ ई०

[मन्नेमे, शानभोग नरहरियप्पके अधिकारके ताम्रपत्रोंपर]

(१ ब) स वोऽव्याद् वेधसां धाम यन्नाभि-कमलं कृतम्।
हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलङ्कृतम् ॥
भूयोऽभवद् बृहदुरुस्थल-राजमान-
श्री-कौस्तुभायत-करैरुपगूढ-कण्ठः।
सत्यान्वितो विपुल-बाहु-विनिर्जितारि-
चक्रोऽप्यकृष्ण-चरितो भुवि कृष्ण-राजः ॥

पक्ष-च्छेद-भयाश्रिताखिल-महा-भूभृत्-कुल-भ्राजिताव्
दुर्ल्लङ्घ्यादपरैरनेक-विपुल-भ्राजिष्णु-रत्नान्वितात्।
यश्चालुक्यकुलादनून-विबुधा[....]श्रया [द्] वारिधेः
लक्ष्मीं मन्दरवत् स-लीलमचिरादाकृष्टवान् वल्लभः ॥
तस्याभूत् तनयः प्रता [प]-विसरैराक्रान्त-दिङ्-मण्डलश्
चण्डांशोस्सदृशोऽप्य-चण्ड-करतःप्रह्लादित-क्ष्माधरो।
धोरो धैर्य्य-धनो विपक्ष-वनिता-वक्त्राम्बुज-श्री-हरो
हारीकृत्य यशो यदीयमनिशं दिङ्-नायिकाभिर्धृतम् ॥

ज्येष्ठोल्लघन-जातयाप्यमलया लक्ष्म्या समेतोऽपि सन्
योऽभून्निर्म्मल-मण्डल-स्थिति-युतो दोषाकरो न क्वचित् ।
कर्ण्णाधः-कृत-दान-सन्तति- (२ अ) भृतो यस्यान्य-दानाधिकम्
दानं वीक्ष्य सु-लज्जिता इव दिशा प्रान्ते स्थिता दिग्-गजाः ॥
अन्यैर्न्न जातु विजित गुरु-शक्ति-सारं
आक्रान्त-भूतलमनन्य-समान-मानम् ।
येनेह बद्धमवलोक्य चिराय गङ्गान्
दूरे स्व-निग्रह-भियेव कलिः प्रयातः ॥
एकत्रात्म-बलेन वारिनिधिनाप्यन्यत्र रुध्वा धनान्
निष्कृष्टासि-भटोद्धतेन विहरद्-ग्राहातिभीमेन च ।
मातङ्गान् मद-वारिनिर्झर-मुचः प्राप्यानतात् पल्लवात्
तच्चित्रं मद-लेशमप्यनुदिनं यस्स्पृष्टवान् न क्वचित् ॥
हेला-स्वीकृत-गौड-राज्य-कमलान् चान्तःप्रविश्याचिराद्
उन्मार्गे मरु-मध्यम-प्रतिबलैर्यो वत्सराजं बलैः ।
गौडीयं शरदिन्दु-पाद-धवल-च्छत्र-द्वय केवलम्
तस्मादाहृत-तद्-यशोऽपि ककुभा प्रान्ते स्थितं तत्-क्षणात् ॥
लब्ध-प्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूरम्
उत्सार्य्य शुद्ध-चरितैर्धरणी-तलस्य ।
कृत्वा पुनः कृत-युग-श्रियमप्यशेषम्
चित्रं कथ निरुपमः कलि-बल्लभोऽभूत् ॥
प्राभू-(२ ब)द् धर्म-परात् ततो निरुपमादिन्दुर्य्यथा वारिधेः
शुद्धात्मा परमेश्वरोन्नत-शिरस्-संसक्त-पादस्तथा ।
पद्मानन्दकरः प्रताप-सहितो नित्योदयस्सोन्नतेः
पूर्व्वाद्रेरिव भानुमानभिमतो गोविन्दराजः सताम् ॥

यस्मिन् सर्व्व-गुणाश्रये क्षितिपतौ श्री-राष्ट्रकूटान्वयो
जाते यादव-वशवन्मधुरिपावासीद् अलङ्घ्यः परैः।
दृष्ट्वा सावधयः कृतास्सु-सदृशाः दानेन येनोद्धताः
मुक्ताहार-विभूपिताः स्फुटमिति प्रत्यर्थिनोऽर्थ्यार्थिनः॥
यस्याकारमनानुपं त्रिभुवन-व्यापत्ति-रक्षोचितम्
कृष्णस्येव निरीक्ष्य यच्छति पद यत्राधिपत्य भुवः।
आस्ता तात तवेयमप्रतिहता दत्ता त्वया कण्ठिका
किन्त्वाज्ञैव मया धृतेति पितरं युक्तं स तत्राभ्यधात्॥
तस्मिन् स्वर्ग-विभूपणाय जनने याते यशश्शेषताम्
एकीभूय समुद्यतान् वसुमती-संहारमाधित्सया।
वि-च्छायान् सहसा व्यधत्त नृपतीनेकोऽपि यो द्वादश
ख्यातानप्यधिक-प्रताप-विसरैस्संवर्त्त (३ अ) कोल्कानिव॥
येनात्यन्त-दयालुनोग्र-निगल-क्लेशादपास्यानतस्
स्व देशं गमितोऽपि दर्प-विसरद् यः प्रा [ ]कूल्ये स्थितः।
लीला-भ्रू-कुटिले ललाट-फलके यावच्च नालक्ष्यते
विक्षेपेण विजित्य तावदचिरादाबद्ध-गङ्गः पुनः॥
सन्धायासि शिलीमुखान् स्व-समयात् वाणासनस्योपरि
प्राप्त वर्द्धित-बन्धु-जीव-विभव पद्माभिवृद्ध्यान्वितम्।
सर्व्वं क्षेत्रमुदीक्ष्य य शरद्-ऋतु पर्ज्जन्यवद् गूर्जरो
नष्टः क्वापि भयात् तथापि समयं स्वमेऽप्यपश्यन्……॥
यत्पादानति-मात्र क-शरणानालोक्य लक्ष्मी-धिया
दूरान् मालव-नायको नय-परो यत्रातिबद्धाञ्जलिः।
यो विद्वान् बलिना सहाल्प-बलवान् स्पर्द्धां न धत्ते पराम्
नीतेस्सूतिरसौ यदात्म-परयोराधिक्य-सम्वेदनम्॥

विन्ध्याद्रेः कटके निविष्ट-कटकः श्रुत्वा चरैर्य्यन्निजैः
स्व देशं समुपागतः श्रुवमिव ज्ञात्वा धिया प्रेरितः ।
माराशर्व्व-महीपतिर्भृतमगादप्राप्त-पूर्व्वां (३ ब) परैर्
व्यस्येच्छामनुकूल[.......]धनैः पाद-प्रणामैरपि ॥
नीत्वा श्रीभवने घनाघन-घन-व्याप्ता परं प्रावृषम्
तस्मादागतवान् समं निज-बलैरा-तुङ्गभद्रा-तटम् ।
तत्रस्थः स्व-करागतं प्रकृतिभिर्न्निश्शेषमाकृष्टवान्
विक्षेपैरपि चित्रमानत-रिपुर् जग्राह तं **पल्लवात्** ॥
लेखाहार-मुखोदितार्द्ध-वचसा यत्रा.... **वेङ्गीश्वरो**
नित्यं किङ्करवद् व्यधादविरतं ...र्म्म स्वमात्मेच्छया ।
बाह्यालि-वृत्तिरस्य येन रचिता व्योमाव्रलग्ना रुचम्
चित्र मौक्तिक-मालिकामिव धृताम्मूर्द्ध [न्] इ स्व-तारा-गणैः ॥
सन्त्रासात् पर-चक्र-राजकमगात् तच्छुद्ध-सेवा-विधि-
व्याबद्धाञ्जलि-शोभितेन शरण मूर्ध्ना यदङ्घ्रि-द्वयम् ।
यद्वादत्त परार्द्ध्य-भूषण-गणैर्न्नालङ्कृत तत् तथा
मा भैष्वीरिति सत्य-पालित-यशस्-स्थित्या यथा तद्गिरा ॥
तेनेदमनिल-विद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारम् ।
क्षिति-दानमपरपुण्यं प्रवर्त्तित देव-भोगाय ॥

स (४ अ) च परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमद्-**धारा-वर्षदेव**-पादानुध्यात-परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-पृथिवी-वल्लभ प्रभूतवर्ष-श्रीमत्-**गोविन्दराजदेवः** ।

भ्राताभूत् तस्य शक्ति-त्रय-नमित-भुवः **शौचकम्भा**भिधानो
ज्येष्ठस्त्यागाभिमान-प्रभृति-गुण-गणाधः-कृतादि-क्षितीशः ।
राजा राजारि-लोकास्थिर-तिमिर-घटा-पाटने शुद्ध-वृत्तः
स श्रीमान् दिक्षु कीर्त्तिश्शशिविशद-रुचिस्स्थापिता येन भूयः ॥

तेन शौच-कम्भ-देवेन रणावलोकापर-नाम्ना राजाधिराज-परमेश्वर-श्रीप्रभूतवर्षानुज्ञानुमतेन

कोण्डकुन्दान्वयोदारो गणोऽभूत् भुवन-स्तुत· ।
तदैदत्-विषय-विख्यातं शाल्मली-ग्राममावसन् ॥
आसीत् [····]ता(तो)रणाचार्य्यस्तपः-फल-परिग्रहः ।
तत्रोपशम-सम्भूत-भावनापास्तकल्मषः ॥
पण्डितः पुष्पणन्दीति बभूव भुवि विश्रुतः ।
अन्तेवासी मुनेस्तस्य स-कलश्चन्द्रमा इव ॥
प्रतिदिवस-भवद्-वृद्धि-निरस्त-दोषो व्यपेत-हृदय-मलः ।
परिभूत-चन्द्र-बिम्बस् तच्छिष्योऽभूत् प्रभाचन्द्रः ॥

(४ ब) तस्य धर्म्मोपदेश-परितुष्ट-हृदयतया च सत्येन धर्म्म-तनयः स्फुरत्प्रतापेन पद्मिनी-बन्धु दानेन सुर-द्विरद जयतितरां यश्श्रियो भर्त्ता

विविशुरग्गुणा रिपूणाम् ।
हृदयान्यपि यस्य सत्व-शौर्य्याद्याः ॥
तेषामुरस्स्थल-स्थित-
कमलामाक्रष्टुमि [व] रम्यम् ॥

तस्य विष्णोरिव बलि-प्रताप-निर्व्वापणोद्यत-पराक्रमस्य पराक्रम-बलोकस्य प्रताप-निरन्तरतयाक्रान्त (·) समस्त-सुभट-लोकस्य केसरिण इव विक्रमैकर [स] स्य श्री-बप्पय्य-इति-सु-गृहीत-नाम्नः कुमारस्य वीर-श्री-लतारोहण-कल्पवृक्षायमानभुजदण्ड-दण्डितारातेःप्रियात्मजस्य विज्ञापना कर्ण्णोपजात-कुतूहलतया च । राजाधिराज-परमेश्वर-श्री-निरुपमदेव प्रभूतवर्ष-प्रसादोपलब्ध-महा-सामन्ताधिपत्यालङ्कृत-महानुभावेन भगवदर्ह[द्]-भटारक-चरण-परिचरण-प्रणत-पवित्रितोत्तमाङ्गेन महा-विजय-विक्षे-

धापति-श्री-श्रीविजयराजेन निर्म्मापिता-(५ अ) य जिन-भवनाय मान्यपुरीपश्चिम-दिगङ्गना-ललाम-भूताय चतुर्व्विंशत्युत्तरेषु सप्त-शतेषु शक-वर्षेषु समतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमान-विज [य]-संवत्सरे मान्यपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे सोम-ग्रहणे पुष्य-नक्षत्रे शु [भ] लग्ने वार-विलासिनी-विरचित-नृत्त-गीत-वा(वा)द्य-वलि-विलेपन-देव-पूजा-नव-कर्म्म-प्रवर्त्तनार्थं एदेदिण्डे-विषय-मध्य-वर्त्ति-पेर्व्वडियूर्-नाम ग्राम सर्व्व-बाध-परिहारं उदक-पूर्व्वं दत्तः तस्य सीमान्तरं (यहाँ सीमायें आती है) पादरि-ऊरुळ् पत्तु-भागदोळेन्दु-भाग देवर्गे कोट्टु

(इसमेशाके वे ही अन्तिम श्लोक)।

[विष्णुसे रक्षाकी कामना ।

पृथ्वीपर कृष्ण-राज विद्यमान थे। उनके धोर नामका एक पुत्र था। उसीके दूसरे नाम कलि-वल्लभ, वत्सराज, निरुपम थे।

गुणी निरुपमसे गोविन्दराज उत्पन्न हुआ। जब यह राजा हुआ तो राष्ट्र-कूट-वंश दूसरे लोगों (वंशों) की प्रतियोगितासे ऊपर उठ गया। उसने गंगको बन्धनसे छुड़ाया था, लेकिन अपने घमण्डी स्वभावके कारण शीघ्र ही पुनः बाँध लिया गया। उसकी बहुत-सी प्रशंसा। उसके पराक्रमोका वर्णन। उसने देव-भोग (मन्दिरके लिये दान) रूपसे भूमिदान किया। उसके बड़े भाईका नाम शौच-कम्भ था। इसी शौच-कम्भका दूसरा नाम रणावलोक था।

इस-विषय (देश) में प्रसिद्ध शाल्मली नामक गाँवमें कोण्डकुन्दा-न्वयके उदारगणमें तोरणाचार्य्य हुए। पुष्पनन्दि-पण्डित उनके शिष्य थे। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे। उनके एक बप्पय्य नामके भक्त श्रावक थे। उनका पुत्र शत्रुओंका दण्ड देनेवाला था। अपने प्रिय पुत्रकी प्रार्थना सुनकर उन्होंने, मान्यपुरके पश्चिममें जो जिनमन्दिर खड़ा हुआ था उसके लिये, उसके शासक श्रीविजय-राजकी कृपासे शक सं० ७२४ के बीतने पर, अपने ही विजय-वर्षमें, मान्यपुरमें पड़े हुए अपने विजयी कैम्प (स्कन्धा-

वार) में पुदेदिण्डे-विषयका पेर्व्वेडियूर नामका गाँव, सर्व करोंसे मुक्त करके, जलधारापूर्वक दानमें दिया। इस गाँवकी सीमायें। पद्दरियूरमें ५० भाग दानमें दिया गया। वे ही शापात्मक श्लोक।]

[NC, IX, Nelamangala tl. n° 61]

१२४

कडव—संस्कृत तथा कन्नड।

(सन्देहास्पद)

[शक ७३५=८१२ ई०]

राष्ट्रकूटवंशोद्भव द्वितीय प्रभूतवर्ष महीपतिका दानपत्र।

१ ॐ स्वस्ति [।।] विस्तृत-विशद-यशो-वितान-विशदीकृताशाचक्र-वालः करवाल-प्रवालावतंस-विराजित-जयलक्ष्मी-समालिं-

२ गित-दक्ष-दक्षिणा-भूरि-भुजार्गल. गलित-सार-शौर्य्य-रस-विस-र-विसखलीकृतोप्रा-

३ रि-वर्ग्गः वर्ग्ग-त्रय-वर्ग्गणैक-निपुणोऽचलाभार-चार्व्वी-विशेष-निर्ज्जितोर्व्वी-मण्डलोत्सवोत्पादनपरः

४ पर-भूपाल-मौलि-माला-लीढाङ्घ्रि-द्वन्द्वारविन्दो गोविंदराजः ।। तस्य-सू-

४ नुः सुतरुण-भावोदय-दया-दान-दीनेतर-गुण-गण-समर्प्पित-बन्धु-जनः सक-

६ ल-कलागम-जलधि-कलशयोनिः मनुदर्शितमार्ग्गानुगामी राष्ट्र-कूट-कुला-

७ मल-गगन-मृगलाञ्छनः बुधजन-मुख-कमलांशुमाली मनोह-

८ र-गुण-गणालङ्कार-भारः कक्कराज-नामधेयः [।।] तस्य पुत्रः स्व-वशानेक-नृ-

९ प-संघात-परम्पराभ्युदय-कारणः परम-ऋषि-ब्राह्मण-भक्ति-

तात्पर्य—

१० कुशलः समस्त-गुण-गणाधिम्बोनो[1] विख्यात-सर्व्व-लोक-निरुपम-
स्थिर-भाव-नि(वि)जिता—

११ रि-मण्डलः यस्यैममासीत् ॥ जित्वा भूपारि-वर्गान्नय-कुशल-
तया येन रा—

१२ ज्य कृत यः कष्टे मन्त्रादिमार्ग्गे स्तुत-धवल-यशा न क्वचिद्
यागपूर्व्वः[2] [।] संग्रामे यस्य शेषा

१३ स्व-भुज-कर-बल-प्रापिता या जयश्रीर्यस्मिञ्जाते स्ववशोभ्युदय-
धवलता यातवान्नर्क्कतेजः [॥ १] अ—

१४ साविन्द्रराज-नामधेयः [॥] तस्य पुत्रः स्व-कुल-ललामायमानो
मानधनो दीनाना—

दूसरा पत्र; पहली बाजू.

१५ थ-जनाह्लादनकर-दान-निरत-मनोवृत्तिः हिमकर इव सुखकर-
करः कुलाचल-समु—

१६ दाय इव सुधाधार-गुण-निपुणः हिमशैल-कूट-तट-स्थापित
यशस्तम्भलिखिता—

१७ नेक-विक्रम-गुणः [।] अघ-संघात-विनाशक-सुरापगा यस्य
सद्यशो विशदं [।] गायन्तीव तरङ्ग-प्रभव—

१८ रवैर्व्वहति जन-महिता ॥ [२] असौ वैरमेघ-नामधेयः [॥]
तस्य पितृव्यः हृदय-पद्मा—

---

१ 'गणाधिष्वानो' इति राइसमहोदयः। २ 'यातपूर्व्वे' पाठ ठीक मालूम
पड़ता है।

१९ सनस्थ-परमेश्वर-शिरश्शिशिरकर- [कर-]निकर-निराकृत-तमो-
वृत्तिः सविशेषस्य जगत्रय—

२० सारोच्चयेनेव विरचितस्य चतुर्थ-लोकोदय-समानस्य कृतयुग-
शतैरिव निर्म्मि—

२१ तस्य यस्य यशसः पुञ्जमिव विराजमानः[१] ॥ प्रदग्ध-कालागरु—

२२ धूप-धूमैः प्रवर्द्धमानोपचयाः पयोदाः [।] यस्याजिरं स्वच्छ-
सुगन्ध-तोयैः

२३ सिञ्चन्ति सिद्धोदित-कूट-भागाः ॥ [२] न चेदृश प्राप्यमिति
प्रलोभात् भवोद्भवो भावि- [शु] गा—

२४ वतारे [।] अवैमि यस्य स्थितये स्वय तत् कल्पान्तरं नैव च
भाव्यतीति ॥ [४] तारा-ग—

२५ णेषून्नत-कूट-कोटि-तटार्प्पितासूज्ज्वल-दीपिकासु [।] मोमुह्यते
रात्रि-विभेदभा-

२६ वः निशात्ययः पौरजनैर्न्निशाया ॥ [५] आधारभूताहमिद
व्यतीत्य मा वर्द्धते

२७ चायमतिप्रसङ्गः [।] यस्यावकाशार्त्थमितीव पृथ्वी पृथ्वीव
भूतेति च मे वि—

२८ तर्कः ॥ [६] विचित्र-पताका-सहस्र-सञ्छादितं उपरि परिच-
रण-भयात् लोकै—

२९ क-चूडामणिना मणि-कुट्टिम-संक्रान्त-प्रतिबिम्ब-व्याजेन स्वयमव-
तीर्य्य

---

१ 'पुञ्ज इव विराजमानं' ऐसा पढ़ना चाहिये ।

दूसरा पत्र; दूसरी बाजू

३० परमेश्वर-भक्ति-युक्तेन नमस्क्रियमाणमिव विराजमानं प्रहत-पुष्कर-मन्द्र-निनादा—

३१ कर्ण्णनोदितानुरागैः प्रावृडारम्भ-काल-जनितोत्सवारम्भैः मयूरैः प्रारब्ध-वृत्त-नृ—

३२ त्यन्त घूम-वेला-लीला-गत-विलासिनी-जनाना कर-तल-किसलय-रस-भाव-सद्भाव-प्रक—

३३ टन-कुशल-शशिवदनाङ्गना-नर्त्तनाहूत-पौर-युवति-जन-चिन्ता-न्तरं समस्त-सिद्धान्त-साग—

३४ र-पारग-मुनि-शत-सङ्कुलं देवकुलमासीत् कृष्णेश्वरन्नाम स्व-नामधेयाङ्कितं असा—

३५ वकालवर्ष इति विख्यातः [।।] तस्य सूनुः आनत-नृप-मकुट-मणि-गण-किरण-जाल-रञ्जित—

३६ पद-युगल-नख-मयूख-प्रभा-भासित-सिंहासनोपान्तः कान्ताजन-कटक-खचि—

३७ त-पद्मराग-दीधिति-विसर-शुम्भत्-कुसुम्भ-रस-रञ्जित-निज-धवल-वीज्यमान-चारु-चा—

३८ मर-निचय-विख्यात-प्राज्य-राज्याभिषेकान्तरैकैश्वर्य्य-सुख-समनुभ-वस्थि—

३९ तिः निज-तुरङ्गमैक-विजयानीत-राजलक्ष्मी-सनाथो महीनाथो यः कल्पाङ्घ्रिपः ससेव[1]

---

१ 'सत्यमेव' ऐसा शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है।

४० चिन्तामणिरिति ध्रुवं य वदन्त्यर्थिनः । नित्यं प्रीत्या प्राप्तार्थ-
सम्पदसौ प्रभूतवर्ष इति वि-

४१ ख्यातो भूपचक्रचूडामणिः [॥] तस्यानुजः धारावर्ष-श्री-पृथ्वी-
वल्लभ-महाराजाधि-

४२ राजपरमेश्वरः खण्डितारि-मण्डलासि-भासित-दोर्दण्डः पुण्डरीक[1]
इव बलिरिपु-मर्दना-

४३ क्रान्त-सकल-भुवनतलः सुकृतानेक-राज्य-भार-भारोद्वहन-समर्थः
हिमशैल-वि-

४४ शालोर.स्थलेन राजलक्ष्मी-विहरण-मणि-कुट्टिमेन चतुराङ्गनालिं-
गन-तुङ्ग-कुच-

तीसरा पत्र; पहली बाजू

४५ संग-सुखोद्रेकोदित-रोमाञ्च-योजितेन स्व-भुजासि-धारा-दलित-
समस्त-[2] गलित-मुक्ताफल-वि-

४६ सर-विराजितारि-चल-हस्ति-हस्तास्फालन-दन्त-कोटि-घट्टित-घनी-
कृतेन विराजमानः त्रिपुर-

४७ हर-वृषभ-ककुदाकारोन्नत-विकटांस-तट-निकट-दोधूयमान-चारु-
चामर-चयः फेन-पिण्ड-

४८ पाण्डुर-प्रभावोदितच्छविना वृत्तेनापि चतुराकारेण सितातपत्रे-
णाच्छादित-समस्त-दिग्-विव-

४९ [3]रो रिपुजनहृदयविदारणदारुणेन सकलभूतलाधिपत्यलक्ष्मीली-

---

१ 'पुण्डरीकाक्ष' पढ़ो। २ 'दलितमस्त' पढ़ो। ३ आगे ४९ वीं पंक्तिसे प्राचीन लेखमाला, प्रथम भाग, लेख ११ परसे लिया है।

लामुत्पादयता प्रहतपटहढक्कागम्भीरध्वानेन घनाघनगर्जनानुकारिणा अस्याचितो विनोदनिर्गमः (?) स्वकीया साञ्चलता (?) परनृपचेतोवृत्तिषु दातुमित्रोच्चैराविलोलप्रकटितराज्यचिह्न (?) तुरङ्गमखरखुरोत्थितपांशुपटलमसृणितजलदसंचयानेकमत्तद्विपकरटतटगलितदानधाराप्रतानप्रशमितमहीपरागः ।

यस्य श्री चपलोदया खुरतरङ्गालीसमास्फालना-
निर्भिन्नद्विपयानपात्रगतयो ये संचलच्चेतसः । (?)
तस्मिन्नेव समेत्य सारविभवं संत्यज्य राज्य रणे
भग्ना मोहवशात् स्वय खलु दिशामन्तं भजन्तेऽरयः ॥
इद कियद्भूतलमत्र सम्यक् स्थातु महत्संकटमित्युदग्रम् ।
स्वस्यावकाशं न करोति यस्य यशो दिशा भित्तिविभेदनानि ॥

अनवरतदानधारावर्षागमेन तृप्तजनतायाः **धारावर्ष** इति जगति विख्यातः सर्वलोकवल्लभतया **वल्लभ** इति । तस्यात्मजो निजभुजबलसमानीतपरनृपलक्ष्मीकरधृतधवलातपत्रनालप्रतिकूलरिपुकुलचरणनिबद्धखलखलायमानधवलशृङ्खलारवबधिरीकृतपर्यन्तजनो निरुपमगुणगणाकर्णनसमाह्लादितमनसा साधुजनेन सदा संगीयमानशशिविशदयशोराशिराशावष्टब्धजनमनःपरिकल्पनत्रिगुणीकृतस्वकीयानुष्ठानो निष्ठितकर्तव्यः **प्रभूतवर्ष-श्रीपृथ्वीवल्लभराजाधिराजपरमेश्वरस्य** प्रवर्धमानश्रीराज्यविजयसंवत्सरेषु वदत्सु[1] । चारुचालुक्यान्वयगगनतलहरिणलाञ्छनायमानश्रीब-लवर्मनरेन्द्रस्य सूनुः स्वविक्रमावजितसकलरिपुनृपशिरःशेखरार्चितचरणयुगलो **यशोवर्म**नामधेयो राजा व्यराजत । तस्य पुत्रः 'सुपुत्रः कुलदीपक' इति पुराणवचनमवितथमिह कुर्वन्नतितरा धीराजमानो

---

१ 'वहत्सु' पाठ मालूम पड़ता है ।

मनोजात इव मानिनीजनमनस्थलीयः (?) रणचतुरश्चतुरजनाश्रयः श्रीसमालिङ्गितविशालवक्षस्थलो नितरामशोभत । असौ महात्मा

कमलोचितसद्भुजान्तरश्रीविमलादित्य इति प्रतीतनामा ।
कमनीयवपुर्विलासिनीना भ्रमदक्षिभ्रमरालिवञ्कपद्मः ॥

यः प्रचण्डतरकरवालदलितरिपुनृपकरिघटाकुम्भमुक्तमुक्ताफलविकीर्णितरुचिरत्ताब्धिकान्तिरुचिरपरीतनिजकलत्रकण्ठः शितिकण्ठ इव महितमहिमामोचमानरुचिरकीर्तिरशेषगङ्गमण्डलाधिराज, श्रीचाकिराजस्य भागिनेयः भुवि प्रकाशत[1] यस्मिन् कुनुन्गिलनामदेशमयशःपराङ्मुखो[2] मनुमार्गेण पालयति सति श्रीयापनीयनन्दिसंघपुंनागवृक्षमूलगणे श्रीकित्याचार्यान्वये[3] बहुष्वाचार्येष्वतिक्रान्तेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरणकूविलाचार्य्याणामासीत् (?) तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्रमाहार' स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदय' विजयकीर्तिनाममुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तमः ।
तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य विमलादित्यस्य शणेश्वर (?)पीडापनोदाय मयूरखण्डिमधिवसति विजयस्कन्धावारे चाकिराजेन विज्ञापितो वल्लभेन्द्रः इडिगूर्विषयमध्यवर्तिनं जालमङ्गलनामधेयग्रामं शकनृपसंवत्सरेषु शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां पुष्यनक्षत्रे चन्द्रवारे मान्यपुरवरापरदिग्विभागालंकारभूतशिलाग्रामाजनेन्द्रभवनाय[4] दत्तवान् तस्य पूर्वदक्षिणापरोत्तरदिग्विभागेषु स्वस्तिमङ्गल-

---

१ 'प्रकाशते यस्मिन्' यह पाठ मालूम पड़ता है। २ 'पराङ्मुखे' यह अपेक्षित है। ३ 'श्रीकीर्त्याचार्य' जान पड़ता है। ४ 'जिनेन्द्र' ऐसा पाठ मालूम पड़ता है।

बेल्लिन्द-गुड्डनूरत्तारिपाल इति प्रसिद्धा ग्रामाः एव चतुर्णा ग्रामाणा मध्ये व्यवस्थितस्य जालमङ्गलस्यायं चतुरावधिक्रमः[1] पुनस्तस्य सीमा-विभागः ईशानतः मुकूडल्दक्षिणदिग्विभागमवलोक्य एल्तगकोडल-मूडग-केल-बन्दु इर्प्पेय-कोषदे-पल्लद्-ओलगण उलिअलरियेकोदेयालि-बेळने सयकने-बन्दु पोल पुणसे एव कीले अन्ते पोयिए विदिरूगेरे मुकूडल् ततः पश्चिमतः पुलिपदिय तेङ्कण पेर् ओल्वेये पेर्विलिके एल-गल-करण्डलो मुकूडल् अन्ते सयकने पोगि नायमणिगेरेय तायगण्डि मुकूडल् ततः उत्तरतः वल्लगेरेय पडुव गजगोड पळम्बे पुणुसेये आने-दलो गेरेए पुल्पडिये एलगल्ले पुलिगारद गेरे मुकूडल् ततः पूर्वतः निड्डु विळिङ्के····दविन पुल्पडिये कब्बगार गल्ले पोल एल्ले पुणुसये वट्टपु-णुसये वेळने वन्दु ईशानद मुकूडलोल् कूडि निन्दत्तू । राचमल्लगाम-ण्डनुं शीरनुं गङ्गामुण्डनु मारेयनु वेल्गोरेय् ओडेयोरुं मोदवागे-एल्पदि-म्बरु कुनुन्गिल्-अयसाबेरु साक्षियागे कोट्टत्तू । नमः ।

अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं षड्भिश्च परिपालितम् ।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥
स्व दातु सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दान वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुंधराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥
देवस्वं[हि] विषं घोरं कालकूटसमप्रभम् ।
विषमेकाकिन हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकम् ॥

(इण्डियन् एण्टिक्वेरी १२।१३–१६)

[एपिग्राफिका इण्डिका, ४।३४०–३४५]

---

१ 'चतुरवधिक्रमः' यह पाठ मालूम पड़ता है ।

[इस शिलालेखमें बताया है कि राजा प्रभूतवर्ष (गोविन्द तृतीय) ने जब कि वे मयूरखण्डीके अपने विजयी विश्रामस्थलपर ठहरे हुए थे, चाकिराजकी प्रार्थनापर शक सं० ७३५ में जालमङ्गल नामका गाँव जैन मुनि अर्ककीर्तिको भेंट दिया। यह भेंट शिलाग्राममें स्थित जिनेन्द्रभवनके लिये दी गई थी। कारण यह था कि कुनुन्गिल जिलेके शासक विमलादित्यको उन्होंने (अर्ककीर्ति मुनिने) शनैश्चर (?)की पीड़ासे उन्मुक्त किया था।

इस लेखमें पं० १—६४ तकमें राष्ट्रकूट राजाओंकी प्रशंसामात्र है। इसमें उनकी वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—

लेखप्रस्तुत नाम	ऐतिहासिक नाम
(१) गोविन्द	=गोविन्द प्रथम
(२) कक्क	=कर्क प्रथम
(३) इन्द्र	=इन्द्र द्वितीय
(४) वैरमेघ	=दन्तिदुर्ग या दन्तिवर्म्मन् द्वि०
(५) अकालवर्ष [वैरमेघका चाचा (पितृव्य)]	=कृष्ण प्रथम
(६) प्रभूतवर्ष	=गोविन्द द्वितीय
(७) धारावर्ष श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम—वल्लभ=ध्रुव (प्रभूत वर्षका छोटा भाई)	
(८) प्रभूतवर्ष श्रीपृथ्वीवल्लभ [महा]-राजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम वल्लभेन्द्र	=गोविन्द तृतीय

२४ वीं पंक्तिमें कहा गया है कि अकालवर्षने अपने ही नामसे 'कण्णेश्वर' नामक मन्दिर बनवाया था। पंक्ति २९–३० से ऐसा मालूम पड़ता है कि यह मन्दिर शिवके लिये अर्पण किया गया था। पं० ८१ में बताया

गया है कि दानके समय गोविन्द-तृतीय मयूरखण्डीके अपने विजय-स्कन्धावार (पड़ाव) में ठहरे हुए थे।

पंक्ति ६५-७५ में विमलादित्यकी वंशावलीका उल्लेख हुआ है। उनके पिता राजा यशोवर्मा थे और उनके बाबा नरेन्द्र बलवर्मा थे। चालुक्योंसे इस कुलका संबंध था; लेकिन वर्तमानमें चालुक्यवंशी राजाओंमें इन नामोंके राजा नहीं मिलते हैं, इसलिए प्रो० भाण्डारकरने उन्हें एक स्वतन्त्र शाखाका माना है। विमलादित्य कुनुन्गिल् देश (ज़िले) का राजा था। विमलादित्यको चाकिराजकी बहिनका पुत्र बताया गया है। चाकिराजको गङ्गों (अशेष-गङ्गमण्डलाधिराज) के समूचे प्रान्तका शासक कहा गया है। इसीकी प्रार्थनापर दान किया गया था।

पंक्ति ७५-८० में दानपात्रका विशेष वर्णन है। उनका नाम अर्ककीर्ति था, ये कूविल आचार्यके शिष्य विजयकीर्तिके शिष्य थे। यह मुनि श्री यापनीय नन्दिसंघके पुंनागवृक्षमूलगणके श्रीकीर्त्याचार्यके अन्वय (परम्परा) के थे। इनका एक विशेषण 'व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरणः' है।

लेखके अन्तिम भागका सार ऊपर दे दिया गया है। लेखके अन्तिम भागमें कुछ साक्षियोंके नाम भी दिये गये हैं जिनके सामने यह दान किया गया था। अन्तके चार वे ही साधारण शापात्मक श्लोक हैं।]

१२८

नौसारी—संस्कृत।

[शक ७४३=८२१ ईस्वी]

यह शिलालेख सम्भवतः श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

[H. H Dhruva, Zeitschr. d deut. morg Gesell., XL, p. 321, n? VII, a.]

१२९

कांगड़ा—संस्कृत।

[लौकिक वर्ष ?]=८५४ ई० ? (बूल्हर)

श्वेताम्बर सम्प्रदायका।

[EI, I, n° XVIII (p. 120), t. & tr.]

१२७

कोन्नूर (जिला धारवाड़)—संस्कृत ।

[शक सं० ७८२=८६० ई०]

श्रियः प्रियस्संगतविश्वरूपस्सुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः ।
दिश्यादनन्तः प्रणतामरेन्द्रः श्रियं ममाद्यः परमा जिनेन्द्रः ॥ १ ॥
अनन्तभोगस्थितिरत्र पातु वः प्रतापशीलप्रभवोदयाचलः ।
सु-राष्ट्रकूटोर्जितवंशपूर्व्वजस्स वीर-नारायण एव यो विभुः ॥ २ ॥
तदीयभूपायतयादवान्वये क्रमेण वार्द्धाविव रत्नसञ्चयः ।
बभूव गोविन्दमहीपतिर्भुव. प्रसाधनो प्रच्छकराज-नन्दनः ॥ ३ ॥
इन्द्रावनीपालसुतेन धारिणी प्रसारिता येन पृथु-प्रभाविना ।
महौजसा वैरितमो निराकृत प्रतापशीलेन स कर्क्कर-प्रभुः ॥ ४ ॥
ततोऽभवद्दन्तिघटाभिमर्द्दनो हिमाचलादुर्जित-सेतु-सीमतः ।
खलीकृतोद्धृत्तमहीपमण्डलः कुलाग्रणीः यो भुवि दन्तिदुर्ग्ग-राट् ॥ ५ ॥
स्वयम्वरीभूतरणाङ्गणे ततस्स निर्व्यपेक्ष शुभतुङ्गवल्लभः ।
चकर्ष चालुक्यकुलश्रियं बलाद्विलोल-पालिध्वज-माल-भारिणीं ॥ ६ ॥
जयोच्चसिंहासनचामरोर्जितस्सितातपत्रो प्रतिपक्ष राज्य(ज)हा ।
अकालवर्षोर्जितभूपनामको बभूव राजर्षिरशेषपुण्यतः ॥ ७ ॥
ततः प्रभूतवर्षोऽभूद्धारावर्षसुतश्शरैः ।
धारावर्षायितं येन संग्रामभुवि भूभुजा ॥ ८ ॥ तस्य सुतः—

यज्जन्मकाले देवेन्द्रैरादिष्ट वृषभो भुवः ।
मोक्तेति हिमवत्सेतु-पर्य्यन्ताम्बुधिमेखलाम् ॥ ९ ॥
ततः प्रभूतवर्षस्सन् स्वयम्पूर्णमनोरथः ।
जगत्तुङ्गस्सुमेरुर्वा भूभृतामुपरि स्थितः ॥ १० ॥

बन्धूना वन्धुराणामुचितनिजकुले पूर्वजाना प्रजाना
जाताना **वल्लभानां** भुवनभरितसत्कीर्त्तिमूर्त्ति-स्थिताना ।
त्रातु कीर्त्ति स-लोक कलिकलुषमथो हन्तमन्तो[1] रिपूणा
श्रीमान् सिंहासनस्थो भवनवनिमतो[2]**ऽमोघवर्षः** प्रशास्ति ॥ ११ ॥
यस्याज्ञा परचक्रिणः स्रजमिवाजस्र शिरोभिर्व्वह-
न्त्यादिग्दन्तिघटावलीमुखपटैः कीर्त्तिप्रतानस्स तैः ।
यत्रस्थः स्वकरप्रतापमहिमा कस्याप्यदूरस्थितः
तेजःक्रान्तसमस्तभूभृदिव एवासौ न कस्योपरि ॥ १२ ॥
चतुस्समुद्रपर्य्यन्त (?) स्वमुद्र यत्प्रसाधितं ।
भग्ना समस्तभूपालमुद्रा गरुडमुद्रया ॥ १३ ॥
राजेन्द्रास्ते वन्दनीयास्तु पूर्व्वे, येषा धर्म्मः पालनीयोऽस्मदीयैः ।
ध्वस्ता दुष्टा वर्त्तमानास्सधर्म्माः प्रार्थ्या ये ते भाविनः पार्थिवेन्द्राः ॥१४॥
भुक्तं कश्चिद्विक्रमेणापरेभ्यो
दत्त चान्यैस्त्यक्तमेवापरैर्य्यत् ।
कास्थानित्ये तत्र राज्ये महद्भिः
कीर्त्या (र्त्त्यै ?) धर्म्मः केवल पालनीयः ॥ १५ ॥
तेनेदमनिलविद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारं ।
क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्त्तितो देवदायोऽयम् ॥ १६ ॥

स एव परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-**जगत्तुङ्गदेव**-पादानुध्यान(त)परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-पृथ्वीवल्लभ-श्रीमद्-**मोघवर्ष**-श्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः सर्व्वानेव यथासम्बध्यमानकान्-राष्ट्रविपय-

---

१ 'हन्तुं' पढ़ो । २ 'भवनमिदमतो' या 'भवनमनमितो' ।

पति-ग्रामकूटायुक्तक-नियुक्ताधिकारिकमहत्तरादीन् समादिशत्यस्तु वस्संवि-
दितं यथा ॥

विक्रमविलासनिलयो मुकुल-कुले पूर्व्ववन्धुभिर्म्मान्यैः
एरकोटिनामधेयः प्रविकसितोऽभूत्प्रसूनसमः ॥ १७ ॥
आविरासीत्प्रभुस्तस्मात् प्रसूनात्फलसन्निभः ।
नाम्ना धोरः कुलाधारः कोलनूराधिपस्स्वयम् ॥ १८ ॥
सुतोऽस्य विजयाङ्कायामभूद्भुवनमानितः ।
प्रचण्डमण्डलातङ्को वङ्केशः से(चे)ल्लकेतनः ॥ १९ ॥
मदीयो विततज्योतिर्णि(न्नि)शितोऽसिर्व्वापरैः ॥
उन्मूलितद्विपद्वृक्षमूलो मौलवलप्रभुः ॥ २० ॥
मत्प्रदेशेन संलब्ध-वनवासी-पुरस्सरान् ।
ग्रामान् त्रिंशत्सहस्राणि भुनक्त्यविरतोदयः ॥ २१ ॥
महाप्रतापादुच्छेदमुदयच्छन् मदिच्छया ।
मूलादुच्छेत्तुमुत्तुङ्ग गङ्गवाडी-वटाटवीम् ॥ २२ ॥
मन्त्रान्तरेऽस्मत्सावमन्तैर्म्मात्सर्याहितमानसैः ।
रुपेक्षितोऽपि कोपोवत्साहसैकसखः स्वयम् ॥ २३ ॥
ध्वस्तरिपुनीतिमार्गो रणविक्रममेकबुद्धिमभिनीय ।
स मदीयहृदयसंगतमवन्ध्यकोपत्वमावहति ॥ २४ ॥ येन—
तत्-केदलाभिधानं दुर्गं वप्रार्गलादिदुर्ल्लङ्घयं ।
मौल-वलाधिष्ठितमपि सद्यः प्रोल्लङ्घ्य हेलयाग्राहि ॥ २५ ॥
जनपदमदः कृत्वा हस्ते विधूय विरोधिन
तलवनपुराधीशं कृत्वा श्रुतं रणविक्रमम् ।
मदरिविजयी भर्तुः श्लाघ्यस्समन्वितसंगरः
समरसमये विद्विट्-चक्रैरविक्षतविक्रमः ॥ २६ ॥

कावेरीं गुरुपूरदुर्गमतमामुल्लङ्घ्य सिंहक्रमात्
प्रत्यग्र-स्फुरित-प्रताप-दहन-प्रोद्यच्छिखाश्रेणिभिः ।
निर्दह्यैकपदेन सप्तपदकान्विद्विट्टनोच्छेदिना
येनाकम्पि जगत्प्रकम्पनपटोर्वैराज्यमप्यूर्जितम् ॥ २७ ॥
तस्मान्तरे मदन्तिकमन्तर्भेदेन जातसंक्षोभे ।
प्रत्यागन्तव्यमिति त्वयेति मद्वचनमात्रेण ॥ २८ ॥
अप्राप्ते **वल्लभेन्द्रो** मयि जयति यदा विद्विषः स्यान्तदाह
सन्यस्ताशेषसङ्गो मुनिरथ विधिना विद्विष स्याज्जयश्री॰ ।
तत्राप्युद्दामधूमध्वजविततशिखासूत्पतामि प्रतापा-
दित्यारूढप्रतिज्ञः कतिपयदिवसैः प्रापदस्मत्समीपम् ॥ २९ ॥
मासत्रयस्य मध्ये यदि भोजयितुं न शक्यते स्वामी ।
क्षीरं विजित्य शत्रु तथापि वह्निं विशाम्येव ॥ ३० ॥
इत्युक्त्वा क्रमविक्रमोच्छिखशिखीज्ज्वालावलीढ (ढ)व्र(त्र) जे
धूमश्याम [लि] ते तिरोहिततनौ प्राय॰ परप्रेषिते ।
ये ते मत्तनये स्थितान्यनृपतीन्निर्जित्य यो जित्वरो
वन्दीकृत्य रिपून्निहित्य च तदा तीर्णप्रतिज्ञोऽभवत् ॥ ३१ ॥
आविष्कृतकोपशिखानिर्दग्धारीन्धनो विनाप्यनिलात् ।
अज्वालितोऽपि यस्य प्रतापवह्निर्मुहुर्ज्वलति ॥ ३२ ॥
यस्य च कृपाण-[वारिणि]रुधिराकुलिता द्विषा महालक्ष्मीः ।
मज्जत्युन्मज्जति तु स्वाधिपतेः कुङ्कुमा(? भा)क्त्वेव ॥ ३३ ॥
हुत्वा येन रिपु विरोधिरुधिरप्राज्याज्यधाराहुति-
व्रात-प्रस्फुरित-प्रताप-दहने विद्विष्टशान्तेश्रितं ।
विप्रेणेव रणाध्वरे सुविहित-श्री-मन्त्रशक्त्यार्जित
कल्पान्तस्थिरवीरशासनमिदं मद्वीरनारायणात् ॥ ३४ ॥

तेनैवम्भूतेन बङ्केयाभिधानेन मदिष्टभृत्येन प्रार्थितः सन् तत्प्रार्थनया मान्यखेटराजधान्यामवस्थितेन मया [मा]-तापित्रोरात्मनश्चैहिकामुत्रिकपुण्ययशोभिवृद्धये कोलनूरे तद्बङ्केयनिर्म्मापित-जिनायतन-परिपालननियुक्ताय

श्रीमूलसङ्घ-देशीयगण-पुस्तकगच्छत· ।
जातस्त्रैकालयोगीशः क्षीराब्धेरिव कौस्तुभ ॥ ३५ ॥

तच्चारित्रवधूप(पु)त्रः श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरः ।
सैद्धान्तिकाग्रणीस्तस्मै बङ्केयो[यामदान्मु]दा ॥ ३६ ॥

तद्वसतिसम्बन्धिनवकर्म्मोत्तरभाविखण्डस्फुटित-सम्मार्जनोपलेपनपरिपालनादिधर्म्मोपयोगिकर्म्मकरणनिमित्त मञ्जन्तिय-सप्ततिग्राम-भुक्त्यन्तर्गत तलेयूरनामग्रामः तस्य चाघात (टः) तत्कोलनूरात् पूर्व्वतः चेन्दनूरु दक्षिणत. सासवेवाडु तत्पश्चिमत पडिलगेरी उत्तरत. कील-वाडः एवमयं चतुराघाटनोपलक्षित. सोद्रंगस्स-परिकरः सदण्डदशापराधस्सम्भूतोपात्तप्रत्यय[1]ः सोत्पद्यमानविष्टिति (क): सधान्यहिरण्यादेयः द्वादशपुष्पवाट पञ्चाशदुत्तरशतहस्तविस्तार· पञ्चशतहस्तप्रमाणायामः गृहाणामाघाटस्समुदित. प्रवेश्यस्सर्व्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीयः आचन्द्रार्क्कार्णव-क्षिति-सरित्-पर्व्वत-समकालीनः पुत्रपौत्रान्वयक्रमेण प्रतिपाल्यः पूर्वप्रदत्त-देवब्रह्मदायरहितोऽद्य(भ्य)न्तरसि [द्] द्धया भूमिच्छिद्रन्यायेन शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु द्वा(द्व्य)-शीत्यधिकेषु तदभ्यधिक-समनन्तर-प्रवर्त्तमान-त्रयो[2]शीतितम-विक्रमसंवत्सरान्तर्गताश्वयुजपौर्णमास्यां सर्व्वग्रासि-सोमग्रहणे

---

१ 'सम्भूतोपात्तप्रत्यायम्' शब्द है। २ 'त्र्यशीतितम' पढ़ना चाहिये।

महापर्व्वणि बलिपक्षवैश्वदेवाग्निहोत्रातिथिसन्तर्पणाद्यारोदकातिसर्गेण प्रतिपादितः ॥ तथात्रैव तत्कोलनूरतद्भुक्तिमध्यवृत्त्यवरवाडि वेण्डनूरु **मुदुगुण्डि किर्त्तवोले सुळ्ळ मुस दघरे माविनूरु मत्तिकट्टे नीलगुन्दगे तालिखेड बेळ्ळेरु संगम पिरिसिङ्गि मुत्तलगेरी काकेयनूरु बेहेरु आलूगु [पार्व्व] नगेरी होसंजललु इन्दुगलु नेरिलगे हगनूरु उनल्गरु इन्दगेरी मुनिवळ्ळी कोट्टसे ओड्डिट्टगे सि [किमन्नि ?] गिरि [पि] डलु** नामधेयेष्वेतेषु **कोलनूरार्त** तद्भुक्तिवर्त्तिषु त्रिंशत्स्वपि ग्रामेष्वेकैकग्रामे द्वादश निवर्त्तनानि भूमेः प्रतिपादितानि [॥] अतोऽस्योचितया देवदायदायस्थित्या भुञ्जतो भोजयतः कृषतः कर्षयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्चिदल्पापि परिपन्थना कार्या तथागामिभद्रनृपतिभिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्व्वा सामान्य भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोलान्यैश्वर्याणि तृणाग्रलग्नजलबिन्दुचञ्चल च जीवितमाकलय्य स्वदायनिर्व्विशेपोऽस्मद्दायोऽनुमन्तव्यः प्रतिपालयितव्यश्च ।

यस्त्वज्ञानतिमिरपटलावृतमतिराच्छिद्यमानक वानुमोदेत स पञ्चभिर्म्महापातकैस्सोपपातकैश्च सयुक्तः स्यादित्युक्त भगवता **वेदव्यासेन** ॥

पष्टिंवर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः ।
आच्छेत्ता चानुमन्ता च तामेव नरके वसेत् ॥ ३७ ॥

विन्ध्याटवीष्वतोयासु शुष्ककोटरवासिनः ।
कृष्णसर्प्पा हि जायन्ते भूमिदानं हरन्ति ये ॥ ३८ ॥

अग्नेरपत्य प्रथमं सुवर्ण्णं भूर्वैष्णवी सूर्य्यसुतश्च गावः ।
लोकत्रयन्तेन भवेद्धि दत्त यः काञ्चनं गा च महीं च दद्यात् ३९॥

---

१ 'आघाटे' ऐसा पढ़ो ।

वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ ४० ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यत्नाद्रक्ष्ये[1] नराधिपः ।
मर्ही महीमतां श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥ ४१ ॥

इति कमलदलाम्बुविन्दुलोल
श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवित च ।
अतिविमलमनोभिरामकै-
र्नहि पुरुषैः परकीर्त्तयो विलोप्याः ॥ ४२ ॥

लिखितञ्चैतद् वालभकायस्थवंशजातेन धर्म्माधिकरणस्थेन भोगिकव-त्सराजेन श्रीहर्षसूनुना ग्रामपट्टलाधिकृतलेखकरणहस्ति-नाग-वर्म्म-पृथ्वीराम-भृत्येन ॥

वङ्केयराजमुख्यो गणपतिनामा महत्तरः प्राज्ञः ।
राज्ञः समीपवर्त्ती तेनेदमनुष्ठित सर्व्वम् ॥ ४३ ॥

मिथ्याभावभवातिदर्प्पपरतद्दु:शासनोच्छेदकं
प्रोज्ञाज्ञावशवर्त्तमानजनतासत्सौख्यसम्पादकम् ।
नानारूपविशिष्टवस्तुपरमस्याद्वादलक्ष्मीपदं
जेजीयाज्जिनराजशासनमिद स्वाचारसारप्रदम् ॥ ४४ ॥

सिद्धान्तामृतवार्द्धितारकपतिस्तर्क्काम्बुजाहर्प्पति-
शब्दोद्यानवनामृतैकसरणिर्य्योगीन्द्रचूडामणिः ।
त्रैविद्यापरसार्त्थनामविभवः प्रोद्भूतचेतोभवः
जीयादन्यमतावनीभृदशनिः श्रीमेघचन्द्रो मुनिः ॥ ४५ ॥

---

1 'रक्ष नराधिप' पढो ।

इदे हसीवृन्दमींटल्वगेदपुड्डचकोरीचय
चञ्चुविन्दं कर्दुकल् सार्द्दप्पुडीशं जडेयोळ् इरिसलेन्दिर्द्दप
सेज्जेगीरल् पदेदप्प कृष्णनेम्बन्तेसेदु विसलसत्कन्दलीकन्दकान्तं
पुदिदत्ती मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥ ४६ ॥

वैदग्ध्यश्रीवधूटीपतिरखिलगुणालकृतिर्मेघचन्द्र-
त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिमृतो भेदने वज्रपातः
सिद्धान्तव्यूहचूडामणिरनुपमचिन्तामणिर्भूजनाना
योऽभूत्सौजन्यरुन्द्रश्रियमवति महौ वीरनन्दीमुनीन्द्र. ॥४७॥

य शब्दत्त(?)-नभस्थली-दिनमणि. काव्यञ्चूडामणि-
र्यस्तर्कस्थितिकौमुदीहिमकरस्तूर्यैत्रयाब्जाकरः ।
यस्सिद्धान्तविचारसारधिषणो रत्नत्रयीभूषण·
स्थेयादुद्धतवादिभूभृदशनिः श्रीवीरनन्दीमुनिः ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्ज्जगता जनस्य नयने कर्पूरपूरायते
यद्वृत्तिर्व्विदुपां ततेश्श्रवणयोर्म्माणिक्यभूषायते ।
यत्कीर्त्तिः ककुभा श्रियः कचभरे मल्लीलतान्तायते
जेजीयाद्भुवि वीरनन्दिसुनिपः सैद्धान्तचक्राधिपः॥ ४९ ॥

श्रीकोन्दकुन्दान्वयाम्बरद्युमणि विद्वज्जनशिरोमणि समस्तानवद्यविद्या-विलासिनीविलासमूर्त्ति श्रीवीरनन्दिसै[द्धा]न्तिक-चक्रवर्तिगळु श्रीमन्महा-स्थान कोळ्नूर महाप्रभु हुलियमरसनुं, मूरुपुरपञ्चमठस्थानङ्गलुं ताम्र-शासनम नोडि वरेयिसिमेनल्का शासनदोळन्तिर्द्दुदन्ती गीलशासनम वरे-यिसिदरु [।।] मङ्गलमहाश्री श्री श्री नमो…………[।।]

[जिस पाषाणपर यह लेख है वह कोन्नूरके परमेश्वरके मन्दिरकी दीवालमें लगा हुआ है ।

इस लेखके दो भाग हो जाते हैं। श्लोक १ से लेकर ४३ तक द प्रशस्ति है। यह दान ८६० ई० में राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथमने ५ था। श्लोक ४४ से लेकर लेखके अन्तिम गद्य तकका भाग जैनधर्म और मुनियों-मेघचन्द्र त्रैविद्य और उनके शिष्य वीरनन्दीकी प्रशंसा करनेके बाद, इसमें यह सूचित करता है कि वीरनन्दिके पास एक ताम्रशासन (तांबे के ऊपरका लेख) था, जिसको बादमें कोळनूर (कोन्नूर जहांका यह शिलालेख है) के महाप्रभु हुलियमरस तथा औरोंकी प्रार्थनापर प्रस्तुत शिलालेखके रूपमें उत्कीर्ण किया गया। इस कथनके अनुसार शिला-लेखका आदिसे लेकर ४३ श्लोक तकका भाग, जिसमें दान-प्रशस्ति है, ताम्र-शासनके लेखपरसे लिया गया है। वीरनन्दी और उनके गुरु मेघचन्द्र त्रैविद्यके कालसे इस पाषाण-लेखके कालका निर्णय एफ् कील-हॉर्नने स्थूल रूपसे ईसवीकी १२ वीं सदीका मध्य निश्चित किया है। यह काल शिलालेख-निर्दिष्टकाल ८६० ई० (शक सं० ७८२) से भिन्न पड़ता है।

शिलालेखके मुख्य भागमें (श्लोक १--४३ तक) यह उल्लेख है कि आश्विन महीनेकी पूर्णिमाको सर्वग्राही चन्द्रग्रहणके अवसरपर, जब कि शक सं० ७८२ वीत चुका था, और जगत्तुंगके उत्तराधिकारी राजा अमोघ-वर्ष (प्रथम) राज्य कर रहे थे, उन्होंने अपने अधीनस्थ राज्यकर्मचारी बङ्केयकी महत्त्वपूर्ण सेवाके उपलक्ष्यमें कोळनूरमें बङ्केयद्वारा स्थापित जिनमन्दिरके लिये देवेन्द्रमुनिको तलेयूर गाँव पूरा तथा और दूसरे गाँवोंकी कुछ जमीन दानमे दी। ये देवेन्द्र पुस्तक गच्छ, देशीय गण, मूलसंघके त्रैकालयोगीशके शिष्य थे। शिलालेखके प्रारम्भिक भाग (श्लोक ३ से ११) में अमोघवर्षकी वंशावली दी हुई है। १७--३४ तकके श्लोकोंमें बंकेय की सेवाओंकी प्रशंसा वर्णित है। इस भागके अन्तिम अंशमें (४२ वें श्लोकके बादके गद्य अंश और ४३ वें श्लोकसे) लेखकका नाम वत्सराज तथा बङ्केयराजके मुख्य सलाहकारका नाम महत्तर गणपति दिया हुआ है।

इस शिलालेखपरसे अमोघवर्षकी जो वंशावली निकलती है तथा दूसरे ताम्र--पत्रोंपर जो उत्कीर्ण है उसमें कुछ अन्तर पड़ता है। पाठकोंके जाननेके लिये हम यहाँ दोनो वंशावलियाँ दे देते हैं।

इस शिलालेखपरसे	दूसरे ताम्रपत्रोंपरसे
१ यादव वंशमें, पृच्छकराजका पुत्र गोविन्द	गोविन्दराज प्रथम
२ राजा इन्द्रका पुत्र कर्कर	उसका पुत्र कक्कराज या कर्कराज
	उसका पुत्र इन्द्रराज
३ उसका पुत्र दन्तिदुर्ग	उसका पुत्र दन्तिदुर्ग
४ शुभतुंगवल्लभ—अकालवर्ष	शुभतुंग-अकालवर्ष (कृष्णराज प्रथम, जो कि कर्कराजका पुत्र है)
५ धारावर्षका पुत्र प्रभूतवर्ष	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष (गोवि-न्दराज द्वि०)
६ उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुग	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग (गोविन्द)
७ अमोघवर्ष	उसका पुत्र अमोघवर्ष]

[EI, VI, n° 4 (1st part)]

१२८

देवगढ (मध्यप्रान्त)—संस्कृत ।

[विक्रम सं० ९१९ तथा शक सं० ७८४=८६२ ई०]

१ [ओं²] [।।] परमभट्टार [क]-मह [1] राजाधिराज-परमेश्वरश्री-भो-
२ जदेव-महीप्रवर्द्धमान-कल्याणविजयराज्ये
३ तत्प्रदत्त-पञ्चमहाशब्द-महासामन्त-श्री-[वि] ष्ण [.]-
४ [र] म-परिभुज्यमा [क]¹ लुअच्छगिरे श्री-शान्त्यायत [न]-
५ [सं] निधे श्री-कमलदेवाचार्य-शिष्येण श्री-देवेन कारा-
६ [पि] तं इद स्तम्भं² ।। संवत् ९१९ अस्व (श्व) युज-शुक्ल-
७ पक्ष-चतुर्दश्यां बृ (बृ) हस्पति-दिनेन उत्तरभाद्रप-

---

१ 'माने' या 'मानके'। २ 'कारितोऽय स्तम्भ' यह शुद्ध रूप पढ़ना चाहिये।

८ दा-नक्षत्रे[1] इद स्तम्भ समाप्तमिति ॥०॥ वाजुआ–

९ गगाकेन गोष्ठिक-भूतेन[2] इद स्तम्भ घटितमिति ॥०॥

१० [श]ककाल-[ब्द]-सप्तशतानि चतुराशीत्यधिकानि ७८४ [॥]

[इस लेखमें उल्लेख यह है कि परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीभोजदेवके राज्यमें जब लुअच्छगिरिपर (देवगढका ही एक नाम मालूम पडता है—[एफ० कीलहॉर्न]) महासामन्त विष्णुरमका शासन था, तब जिस स्तम्भपर यह लेख खुदा हुआ है वह आचार्य कमलदेवके शिष्य श्रीदेवके द्वारा श्री शान्तिनाथ मन्दिरके पास बनवाया गया था और यह विक्रम सं० ९१९ के आश्विन सुदी १४, बृहस्पतिवारके दिन उत्तर भाद्रपदा नक्षत्रके योगमे बनकर तैयार हुआ था। बनानेवालेका नाम गोष्ठिक वाजुआगगाक था। इसके अतिरिक्त, अन्तिम पंक्ति शक संवत्, अक्षरों और अङ्क दोनोंमे, ७८४ का निर्देश करती है।]

[EI, IV, n° 44, A]

१२९

बड़नगर—संस्कृत।

[सं० ९३२=८७५ ई०]

१ तर प्रसिद्धम् श्री * * * क्क राज्ये यदु-कुल म्ल कु * ।

२ क्त्यत्रयिविघनो ततक्षेत्र मिर्व्विभावित अक्कोदेः श्री *

३ दिघ्हागो धनपतेः ककुभि निर्प मार्ग्गः अस्य मुदह्गुन् *

४ मिमस्य शशाङ्क तपनस्थितेः उभनेय नवहट्टक ।

---

१ '०त्रेऽय स्तम्भ समाप्त इति' ऐसा पढ़ो। २ '–भूतेनायं स्तम्भो घटित इति' पढ़ो। ३ प्रो० बूल्हरकी रायमें 'गोष्ठिक' लोग धर्मदानोंका प्रबंध करनेवाली समितिके सदस्य थे, जिनको आजकलकी भाषामें 'ट्रस्टी' कह सकते हैं।

५ स्यम् सं ९३३ वैशाखो सुदि १४ ।†

[पथारिसे दक्षिणकी ओर करीब ३ मीलपर ज्ञाननाथ पर्वतकी तलहटीमें एक झीलके किनारे बारो या बड़नगरके ध्वंसावशेष सुन्दर रीतिसे अवस्थित हैं। वहाँपर एक 'गडर-मर' नामका मन्दिर है, जो कि किसी गडरियेका बनवाया हुआ था।

इस गडरमर मन्दिरकी पश्चिम दिशामें छोटे-छोटे जैन मन्दिरोंका एक समूह है। उसके चतुष्कोण प्राङ्गणके बाहर एक चतुष्कोण छोटे पत्थरपर उक्त शिलालेख मिला था।]

[A Cunningham, Reports, X, p 74]

१३०

सौंदत्ति—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ७९७=८७५ ई०]

लेख

द्वादशग्रामाधिष्ठानस्य सुगन्धवर्तिसम(सन्न)न्धिनि ॥ ग्रामे मूलगुन्दाख्ये । सीवटे पड् निवर्त्तन । देवस्य (ख) चि(गु)रवे दत्तं । नमश्यं (स्य) कन्नभूभुजा ॥ तस्य दक्षिणे भागे । तिन्तिणीवृक्षयोर्द्वयोः । मध्ये या स्थिता भूमिद्व (र्द) त्ता श्रीकन्नभूभुजा । सुगन्धवर्त्तिय सीमेयिन्द पडु (डु) वल् पिरियकोलल् मत्तर् ६ ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन [।] जीयार्त्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन ॥ श्रीमन्मैळापतीर्त्थस्य गणे कारेयनामनि [।] वभूवोग्रतपोयुक्तः मूलभट्टारको गणी ॥ तच्छिष्यो गुणवान्सूरिः

† दुर्भाग्यसे यह लेख दोनों ओर (प्रारम्भ और अन्तमें) अधूरा ही है, इसलिये कनिंघम साहब इधर-उधर कुछ शब्दोंकी पूर्त्तिके वजाय इसके पूर्णरूपसे समझनेमें असफल रहे हैं। अतएव इसका विशेष साराश भी नहीं दिया जा सका।

गुणकीर्त्तिमुनीश्वरः [।] तस्याथासीं (सीदिं) द्रकीर्तिस्वामी कामम-दापहः ॥ तच्छात्रः पृथ्वीरामः लक्ष्मीरामविराजितः [।] सत्यरत्नप्ररो-हाद्रिः (मे)चडस्याग्रनन्दनः ॥ श्रीकृष्णराजदेवस्य लक्ष्मीलक्षितवक्षसः [।] नम्रभूपालवृन्दस्य पादाम्बुर्ह(रुह)सेवकः ॥ यस्य बालप्रतापा-ग्निज्वालानिकरशोषितस्समुद्री (द्र) त्पासुहृद्दर्प्परसो निश्शेषको यथा । यस्य राजन्वती भूमिर्ज्जितानन्दकरैः करैः [।] राज्ञो यो धीमतो नीति-मार्गो दुर्ग्गभयंकरः ॥ यस्य संक्रीडते कीर्तिहंसी लोकसरोवरे [।] यद्वाख्य प्रश्र(स्र)नं जात प्रणताराातिभूपतेः ॥ सप्तस(श)त्या नवत्या च समायुक्त (क्ते) स (षु) सप्तसु [।] स(श) ककालेश्व (ष्व) तीतेषु मन्मथाह्वयवत्सरे ॥ ग्रामे सुगन्धवर्त्याख्ये तेन भूपेन कारित [।] जिनेन्द्रभवनं दत्त तस्याष्टदशनिवर्त्तनं ॥ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ (भ) महाराजाधिराज (ज) परमे-श्वरं (र) परमभट्टारक राष्ट्रकूटकुलतिलकं श्रीमत्कृष्णराजदेवविजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं बरं सलुत्तमिरे [।] तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्दमहासामन्त वीरलक्ष्मीकान्त विरोधिसामन्तनगवज्रदण्ड विद्वज्जनकमलमार्त्तण्ड सुभटचूडामणि भृत्य-चिन्तामणि श्रीमन्महासामन्तेन पृथ्वीरामेण (न) स्वकारितजिनेन्द्र-भवनाय चतुर्षु स्थलेषु स्थितमष्टादशनिवर्तन सर्व्वनमश्य (स्य) दत्तं ॥ पृथ्वीरामेण (न) यद्दत्तं निवर्त्तन कार्त्तवीर्येण भूयः स्वगुरवे दत्त सर्वबादा (धा) विवर्जित ॥ सूर्योपरागसंक्रान्तो (तौ) कार्तवीर्यप्रकान्तया । श्रीमागला(ला)विकादेव्या नमश्य (स्य) कृतमंजसा ॥

[सौंदत्तिमे जिसका पुराना नाम सुगन्धवर्ती है, एक छोटे जिनमन्दिर-की बाईं ओर दीवालमें जडे हुए पाषाण-शिलापरसे यह लेख लिया गया है। लेखमें अनेक विशेष दान हैं। यह बहुत-कुछ राजाओंकी वंशावलीका

हाल भी बताता है। हम देखते है कि रट्टोंमें प्रथम जिसने कि प्रमुख अधिकारी होनेका पद पाया था मेरडका पुत्र पृथ्वीराम था। उसको यह प्रमुख अधिपति होनेका पद राष्ट्रकूट राजा कृष्णकी अधीनतामें मिला था। इससे पहिले वह पूज्य ऋषि मैलापतीर्थके कारेय गणमें सिर्फ एक धार्मिक विद्यार्थी था। इस शिलालेखमें कृष्णराजदेवकी उपाधियाँ चालुक्य राजाओंके समान ही हैं तथा चक्रवर्तीकी उपाधियां हैं, और हम यह भी देखते हैं कि शक ७९८ में[1], जो मन्मथ संवत्सर था सुगन्धवर्त्तिमे उसने एक जिनमन्दिर बनवाया, और इसके लिये १८ 'निवर्तन' भूमि दी। किन्तु यह लेख किसी उत्तरवर्ती समयमें खोदा गया होगा, क्योंकि प्रथम चार पंक्तियोंमें राजा कन्नके जो कि पृथ्वीरामके ५ या ६ पीढी आगे हुआ है, एक दानका उल्लेख आता है। यह दान सुगन्धवर्तिके मुलुगुन्दके 'सीवट' में किया गया था।

लेखका वंशावलीका भाग लेख नं० २१७ की 'रट्टवंशोद्भव. ख्यातो' पंक्तिसे शुरू होता है। प्रथम नाम नन्नका आया है। उसका पुत्र कार्त्तवीर्य था जो चालुक्य राजा आहवमल्ल या सोमेश्वरदेव प्रथमके अधीन था। सोमेश्वरदेव प्रथमका काल सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९६२ (ई० १०४०-१) से लेकर शक ९९१ (ई० १०६९-७०) दिया है और इसी लेखसे यह पता चलता है कि कार्त्तवीर्यने ही कुहुण्डी (जो कि उत्तरवर्ती लेखोंका 'कुण्डी तीन हजार' है) की सीमायें निर्धारित की थीं। इसके बाद तीन पीढी बीतनेपर चौथी पीढीमें कार्त्तवीर्य द्वितीयका नाम आता है। यह चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लदेव, पेर्माडिदेव या विक्रमादित्य द्वितीय था।]

[JB, X, p 194-198, ins n° 2, 1st part]

१३१

बिलियूर—कन्नड़।

[शक ८०९=८८७ ई०]

भद्रमस्तु जिनशासनाय (।) शक-नृपातीता (त) काल-संवत्सरगळे-

---

१ मूल लेखमें, "शक कालके ७९७ वर्ष व्यतीत होने पर" है।

न्तुनूरॉम्बत्तनेय वर्ष 'प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज कुवलाल-पुरवरेश्वर नन्दगिरि-नाथ श्रीमत्-पेर्म्मनडिय राज्याभिषेक गेय्द पडि नेण्टनेय वर्षदन्दु पा (फा) ल्गुण-मासद श्री-पञ्चमे यन्दु शिवणन्दि-सिद्धान्तद-भटारर शिष्यर् स्सर्व्वे (वें) णन्दि-देवर्गे पेण्णे-गडङ्गद सत्यवाक्य-जिनालयक्के पेङ्गोरें-गरेय बिळियूर्-प्पन्निर्प्पळ्ळियुम सर्व्व-पाद-परिहार पेर्म्मनडि कोट्टो तोम् मद्दरु-सासिर्व्वरु अय्-सामन्तरु वेङ्गोरेंगरेय एल्पदिम्बरु एन्तोक्कलु इदक्के साक्षी मले-सासिर्व्वरु अय्मुर्व्वरुम (अय्नूर्व्वरु) अय्-दामरिगरु इदक्के कापु इदनळ्ळिदो बारणासियुम सासिर्व्वर्प्पोर्व्वरुम सासिरं कविले युम-नळ्ळिदोम् पञ्चमहापातकनक्कु सेदोजन लिखित्त (तं) बेळियूर् ऐम्बट्टु-गद्याण पोन्नू एण्टु-नूरु-बट्टमु तेरुवोम् ।

[यह दान शकवर्ष ८०९ के चालू रहते हुए फाल्गुन महीनेके पाँचवें दिन, जिस वर्ष पेर्म्मनडिके राज्याभिषेकका १८ वां वर्ष चालू था, उन्होने शिवनन्दि-सिद्धान्त- भट्टारके शिष्य सर्व्वनन्दि-देवको पेङ्गोरेंगरेके अन्तर्गत बिलियूरके १२ छोटे गाँव, हमेशाके लिये लगान वगैरः से मुक्त करके, दिये। यह दान पेण्णे-कडङ्गके सत्यवाक्य जिनचैत्यालयके लिये दिया गया था। ऐसा दीखता है कि 'सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज' पेर्म्मनडि-की ही उपाधि या विरुद है। ये दोनो एक ही व्यक्ति है, अलग-अलग नहीं। ये कुवलाल-पुरके प्रभु तथा नन्दगिरिके नाथ थे।

आगे लेखमें साक्षियों तथा संरक्षकोंका परिचय है। इस दानको भङ्ग करनेवालेको अमुक-अमुक पापका भागी बताया है। यह लेख सेदोजका लिखा हुआ है।

बिलियूर की आमदनी ८० गद्याण सोना और ८०० (नाप) तन्दुल (चावल) की है।]

[EC, I, coorg ins, n° 2]

१३२

हुम्मच—कन्नड़।

शक ८१९=८९७ ई०

[हुम्मचमें गुड्डद बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

स्वस्त्यनवद्य-दर्शन महोग्र-कुल-तिलक नय-प्रताप-सम्पन्न पर-चक्र-गण्ड गोण्ड बह्लात कार्म्मुक-राम श्रीमत्-तोलापुरुष-विक्रमादित्यशान्तरं शक-वर्ष येण्टनूर यिप्पत्तनेय वर्ष प्रवर्त्तिसुत्तिरे श्रीमत्-कोण्डकुन्दान्वयद मोनि-सिद्धान्तद-ब (भ) टारर्गे कल्ल वसदिय माडिसियदक्के पोम्बुल्चद (यहाँ दानकी विशेष चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव आते हैं)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम्।
दुष्टनोर्व्वनदर फलव तवे तिम्बवम्।
सिष्टिमेले परमात्मने बन्द्....... .... .. ।
कष्टव्....विदिरन्ते कुल-क्षय मागुगुम् ॥

[स्वस्ति। जिनका दर्शन (मत) अनवद्य (निर्दोष) है, महोग्र-कुल-तिलक, न्याय करनेमें प्रसिद्ध, विदेशी राज्योंके शूरवीरोंको पकडनेमें चतुर, धनुषको पकडनेवाले रामकी तरह दिखनेवाले, तोलापुरुष विक्रमादित्य-शान्तरने, (उक्त मितिको), कोण्डकुन्दान्वयके मोनि-सिद्धान्त-भट्टारके लिये एक पाषाणकी वसदि बनवाई, और इसके लिये (उक्त) दान किये। शापात्मक श्लोक।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 60]

१३३

वल्लीमलै (जिला नार्थ आर्कट)—कन्नड।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [:] [।।] शिवमार-आत्मजा (ज)-वरना प्रवर-श्रीपुरुषनाम—

२ नातन तनयं । भुवनीश रणविक्रमन्नवन मक (ग) न् रा–

३ जमल्लन् अमलिनचरितन् [॥ १] कण्डु गिर [ि] वरमना भूमं–

४ डलपति राजमल्लन् अभयनुदारम् [।] पण्डितजन–

५ प्रिय कैय्-कोण्डान् कोण्डन्ते वसतियम्माडि–

६ सिदान ॥ [२]

अनुवाद—(श्लोक १) शिवमारके पुत्रोंमें सबसे अच्छा पुत्र श्रीपुरुष नामका (राजपुत्र) था। उसका पुत्र लोकप्रभु रणविक्रम हुआ। उसका पुत्र अमलचरित राजमल्ल हुआ।

(श्लोक २) इसको सबसे अच्छा पर्वत समझकर, भूमण्डलपति, अभय एवं उदार तथा पण्डितजनप्रिय राजमल्लने इसे अपने अधिकारमें कर लिया, और तत्पश्चात् इसपर एक वसति (मन्दिर) बनवाई।

[EI, IV, n° 15, A]

१३४

वल्लीमलै—कन्नड।

[बिना काल-निर्देशका]

(यह लेख दाहिनी तरफसे पहली प्रतिमाके नीचेका है)

१ स्वस्तिश्री [।।] बालचन्द्र-भटारर

२ शिष्यर् अज्जनन्दि-भटारर्

३ माडिसिद प्रतिमे गोवर्धन्

४ भटाररेन्दोडमवरे [।।]

अनुवाद—यह प्रतिमा भट्टारक बालचन्द्रके शिष्य भट्टारक अज्जनन्दि (आर्यनन्दि) के द्वारा बनवाई गई; और प्रतिमा 'गोवर्धन भट्टारक' की है।

[EI, IV, n° 15, D.]

१३५

वल्लीमलै—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका]

ब—यह लेख बाईं तरफसे दूसरी प्रतिमाके नीचेका है।

श्री [॥] अज्जनन्दि-भटारर् प्र [ति] मं [`] म [ा] ड [ि] दा [र] [॥]

अनुवाद—स्वस्ति। भट्टारक या भटार अज्जनन्दि (आर्यनन्दि)ने (इस) प्रतिमाको बनाया।

[EI, IV, n° 15, B]

१३६

वल्लीमलै—कन्नड।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [॥] बाणरायर
२ गुरुगळप्प भवणन्दि-भ-
३ टारर शिष्यरप्प देवसेन-
४ भटारर प्रतिमा [॥]

अनुवाद—स्वस्ति श्री। यह प्रतिमा भट्टारक देवसेनकी है। ये देवसेन बाणरायके गुरु भट्टारक भवणन्दि (भवनन्दि)के शिष्य हैं।

[EI IV, n° 15 C.]

१३७

मूलगुण्ड (जिला धारवाड़); संस्कृत।

शक ८२४=९०२ ई०

लेख

श्रीमते महते शान्त्यै श्रेयसे विश्ववेदिने [।] नमश्चन्द्रप्रभाख्याय जैनशासनमृद्धये [॥] शकनृपकालेऽष्टशते चतुरुत्तरविंशदु (त्यु)

त्तरे संप्रगते दुन्दुभिनामनि वर्षे प्रवर्त्तमाने [।] जनानुरागोत्कर्षे श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति महीं विततयशसि सकल तस्मात् पालयति महाश्रीमति विनयाम्बुधिनाम्नी धवळविषय सर्व [।] तस्मिन् मुळगुन्दाख्ये नगरे वरवैश्यजातिजात (तः) ख्यात चन्द्रार्य्यस्तत्पुत्रश्चिकार्य्यो चीकर (रत) जिनोन्नतभवन तत्तनयो नागार्य्यो नाम्ना [।।], तस्यानुजो नयागमकुशल· अरसार्य्यो दानादिप्रोद्युक्तसम्यक्त्वसक्तचित्तव्यक्तः [।।] तेन दर्शनाभरणभूषितेन पितृकारितजिनालयाय चन्दिकवाटे शेनान्वयानुगाय नरनरपतियतिपतिपूज्यपादकुमारशे(से)नाचार्यमी (मे) खवीरशे (से) नमुनिपतिशिष्यकनकशे (से) नसूरिमुख्याय कन्दवर्ममाळक्षेत्रे ए (ऐ) (छे) कमणिवकनकुळार्य्ये (२ ये) (र्य्ये) क···वम्मानाहस्तात्सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं द्रव्यसिन्दु (धु) ना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेशे दत्त [।।] तज्जिनालयाय त्रिशतषष्टिनगरै· चतुर्भि· श्रेष्ठिभिः पिळ्ळग (छे) क्षेत्रे सहस्रावल्लीमात्रक्षेत्र दत्त [।।] तज्जिनभवनाय त्रिंशतिमहाजनानुमताद्वेळ्ळचिकुलब्राह्मणैश्च तत्कन्दवर्म्ममालक्षेत्रे सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्र दत्त [।।] एव त्रीण्यपि नागवल्लिक्षेत्राणि सर्वाबाधा

[यह शिलालेख जिस पत्थरके टुकड़ेपर है वह धारवाड़ जिलेके डम्बळ-तालुकाके मूलगुण्डकी दीवालमें लगा हुआ है। इस टुकड़ेका शेष अंश अभीतक नहीं मिला है। मगर सौभाग्यसे इसी बचे हुए टुकड़ेमें लेखका महत्त्वपूर्ण भाग आ जाता है। लुप्त भागमें सिर्फ थोड़े-से अन्तिम वे ही श्लोक हैं जिनमें लेखके रक्षण और मिटानेपर क्रमशः अनुग्रह (पुण्य) और शापका वर्णन मिलता है। लेख पुराने टाइपके प्राचीन कनड़ीके अक्षरोंमें खुदा हुआ है। ये प्राचीन कनड़ीके अक्षर गुफा-वर्णमाला (Cave-alphabets) से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

यह लेख धारवाड़ जिलेके मूलगुण्डमें वैश्य जातिके चन्द्रायके पुत्र चीकार्यके द्वारा एक जैनमन्दिरके निर्माणका तथा उस मन्दिरकी तरफसे कुछ भूमिदानका उल्लेख करता है। यह निर्माण और दान दुन्दुभि संवत्सर शक ८२५ में† किया गया था। उस समय राजा कृष्णवल्लभ राज्य कर रहे थे। लेखगत 'धवल' जिलेसे देशके किस भागसे मतलब है, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि यह लेख लघु है, पर महत्त्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं है कि इस लेखका 'राजा कृष्णवल्लभ' वही है जो राष्ट्रकूट या रट्ट कुलके राजा कृष्णराजदेव हैं और जो इसी पुस्तकके शिलालेख नं० १३० के अनुसार शक ७९८में राज्य कर रहे थे। बादके अन्य शिलालेखोंमें इन्हें ही रट्टवंशका प्रथम राजा कहा गया है।

पूर्ववर्ती चालुक्य राजाओंके उत्तराधिकार और कालके विषयमें बहुतसे सन्देह उत्पन्न होते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि उनमेंसे तीन चालुक्य राजा राष्ट्रकूट युवराजोंके साथ बहुत ही सीधे और घातक संघर्षमें आये हैं। वे तीन राजा जयसिंह प्रथम, तैलप प्रथम और तैलप द्वितीय थे। राष्ट्रकूटवंश और चालुक्यवंशके पूर्ववर्ती राजाओंकी वंशावली यदि काल-सहित संग्रह की जाय तो वह इस विषयमें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।]

[JB, X, p 190-191, ins. n° 1]

१३८

क्यातनहल्लि—कन्नड।

[बिना काल-निर्देशका (सम्भवतः लगभग ९०० ई०)]

भद्रमस्तु जिनशासनायानवरत·········दखिलसुरासुरनरपतिमौलि-माला········ ···णारविन्द-युगल शरवळ-श्रीराज्य-युवराज [रप्प भद्र] बाहु-चन्द्रगुप्त-मुनिपति-चरण-मुद्राङ्कित-विशाळशि····मान-जगल्ल-ता(ला)मायितश्रीकल्बप्पु-तीर्त्थ-सनाथ-बेल्गोळ-निवासि-·········श्रवण-सङ्घ-स्याद्वादाधारभूतरप्प श्रीमत्स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्गणि-[व]-र्म्म-

---

† मूलमें "शक राजाके कालमें ८२४ वर्ष व्यतीत होनेपर" ऐसा पाठ है।

धर्म्म-महाराजाधिराज कुवालपुर-वरेश्वर नंदगिरिनाथ स्वस्ति समस्तभुवनविनूत-गङ्ग-कुल-गगननिर्म्मलतारापति जलधिजलविपुलवलयमेखलाकलापालङ्कृतेलाधिपत्य-लक्ष्मी-स्वय-वृत-पतित्वाद्यगणित-गुण-गंण-भूषण-भूषित-विभूति श्रीमत्पेर्म्मानडिगळुं एरेयप्प-रसरु इल्दु चागि पेर्म्मानडिगळ कल्लुवसद अय्यर्प्पेरपिङ्गे कोमारसेन-भटाररू पडेद स्तिति विळियक्किदु सोल्लगेयु विट्टियुन् तुप्पमुमन् एल्ला-कालकं सर्व्व-बाधा-परिहारमागे विडिसि दरिदन् अळिदुण्डोनुं कोण्डोनु पसुवु पार्व्वरुं केरेयुं आरमेयु वारणासियुमनळिदो पञ्चमहापातकं

देवस्व तु विष घोरं, न विष विपमुच्यते ।

विपमेकाकिनं हन्ति, देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराजने, जो कि कुवलाल नगरके अधिपति थे, और श्रीमत्पेर्म्मनडि ऐरेयप्परसने निम्नलिखित दान कुमारसेन भटारको पेर्म्मनडि पाषाण-बसदिके लिये दिया:—सफेद चावल, मुफ्त अन्न, घी । और हमेशाके लिये किसी भी चुङ्गीसे मुक्त कर दिया ।]

[EC, III, Servangapatam tl., n° 147]

१३९

कूलगेरी—कन्नड ।

[शकसं० ८३१=९०९ ई०]

[कूलगेरी (कूलगेरी प्रदेश) में तालाबके किनारेके पाषाणपर]

भद्रं भद्रेश्वरस्य स्यात् क्षुद्रवादिमदच्छिदः ।

....श्रीमज्जिनेन्द्रस्य शासनाय भवद्विषे ॥

---

१ इस लेखमें जो 'कल्वप्पु-तीर्त्त(र्थ)' शब्द है, उसका अर्थ चन्द्रगिरि है । इस शिलालेखसे यह पता चलता है कि कल्वप्पुशिखर (चन्द्रगिरि) पर महामुनि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्तके चरणचिह्न हैं । यह शिलालेख लगभग शक सं० ८२२ का है ।

शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतंगळ् एन्टु-नूर मुवत्तोन्दनेय वरिष प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति **कोङ्गुणि-वर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराज **कुवळालपुर-**परमेश्वर नन्दिगिरि-नाथ श्री-**नीतिमार्ग्ग-पेर्म्मनडिगळ्** राज्यं उत्तरोत्तरं सल्लुत्तं इरे **सान्तरर**....मेच्चे **मणलेयारं कनकगिरिय-तीर्त्थद** मीगे बसिदियू इम्मडिसि अरसरध्यक्षदोळ् **कनकसेन**-भट्टारर्ग्गे **तिप्पेयूरोळाद** अट्टदेरेयुं कुर्उ-देरेयुं उट्ट-सामन्त-देरेयेल्लव बिट्टन् इदन् आलिदों केरेयुं आरवेयुमन् आलिडु-कोण्डोम् महापातकमक्कुं

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । शक-नृपके सैकडों वर्ष वीतनेके बाद वर्त्तमान ८३१ वें वर्षमें; जब कि नीतिमार्ग्ग-पेर्म्मनडि, नन्दगिरिनाथ, कुवलालपुर-परमेश्वर कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराजका राज्य चारों दिशाओंमें बढ़ रहा था—सान्तरर [सु] की सम्मतिसे, मनलेयारने, कनकगिरि-तीर्थकी बसदिको दुगुना करके, राजाके ही सामने, तिप्पेयूरमें कनकसेन-भट्टारको ऊपरके कमरोंका कर, मेड़ोंका कर, तथा पूर्ण पोशाक पहिने सरदारोंका(?)कर दिया । जो कोई इस दिये हुए दानको नष्ट करेगा, उसे तालाब या कुअके नष्ट करनेका तथा और भी बड़ा पाप लगेगा, इत्यादि ।]

[EC, III, Malavalli tl., n° 30]

१४०

बन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ८४०=९१८ ई०]

[बन्दलिकेमें, बस्तिके प्रवेश-द्वारके पाषाणपर]

स्वस्त्यकालवरिष श्री-पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभ-ट्टारक श्री-**कन्नर-देवरराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिगे** सल्लुत्तिरे **शकनृप-काला-**

तीत-संवत्सर-सतङ्गल् एण्टुनूर-मूवत्त-नाल्कनेय . . . . . .
प्रवर्त्तिसे स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्त काल्क-देवय्सरन्व
यदोळ् कलिविट्टरसर् वनवासिपन्निच्छांसिरमनाळुत्तिरे नागरखण्ड-
मेल्पत्तर्क सत्तरर् नागार्ज्जुन नाळ्-गावुण्ड गेय्युत्तु श्री-कलिविट्ट-
रसर् वेसदोल्तीतनादोडातन गावुण्डगरसर् नाळ्-गावुण्ड-पत्तमनित्तोडे
जक्कियब्बे नाळ्-गावुण्डु गेय्युत्तिरे नण्डुवर कलिगं पेर्ग्गडेतनं गेय्ये
सन्दिगर कुडिवुल्द कोडङ्गेयूर्ग्गे पेर्ग्गडेतन गेय्युत्तिरे एळपदिम्बरुं मूणू-
ब्बरु जक्कियब्बेयोळ् नुडिदवुतवूरं विडिसिदोड् जक्कियब्बे नागर-
खण्डमेळ्पतर्क अवुतवूरोळाद नाळ्-गावुण्डवागम विसुतोळ् देवारके
जक्किलियोळ् नाल्कु मत्तल् केय्यं कोट्टळ् ॥

वृत्त ॥ उत्तम-प्रभु-शक्ति-युक्ते जिनेन्द्र-शासन-भक्ते कान्- ।
त्मात्त-विभ्रमे जक्कियब्बे समस्तु नागरखण्डमेळ् ।
पत्तुम वधुवागियु निज-वीर-विक्रम-गर्व्वदिम् ।
पेत्तव प्रतिपालिसुत्तोसदिव्ददळिव्ददवसानदोळ् ॥
तनु रुजेय पुदुङ्कुलिसे संसृति-भोगमसारमेन्दु निच्च् ।
चिनिसि निज-प्रियात्मजेगे सन्ततिय करेदित्तु मोह-वन् ।
धनद तोडर्प्पिनोळ् तोडल्दु मोहिसि नि···र वल्ले वन्दु बन्- ।
दनिकेय तीर्त्थदोळ् तोरदुदचरिय····जक्कियब्बेया ॥
वसु-जलरासि-चारिदपथं शक-भू····ताब्द-संक्ये वर् ।
त्तिसे वहुधान्यमेम्ब वरिषं त्रिक-मासद काळ-पक्षदोळ् ।
दसमियोळार्क्य-वारदुदितोदित-वेळेयोळण्मि भक्तियिम् ।
वसदिगे वन्दु नोन्त मपूर्व्वतरं गड जक्कियब्बेया ॥

वरेदोम् नागवर्म्म देवारके कोट्ट केय् ग अवुतवूर्गं काळान्तरदोळ् मोह-सन्दोम् पञ्च-महा-पातकनक्कु

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

(बाजूमें) ई-कल्ल सन्दिगरं कुळि····मुहन् निरिसिदोम्···· वेळेयम्मन मगम्

[जब प्रजापति संवत्सर शक वर्ष ८३४ मे, महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कन्नर-देवका राज्य प्रवर्धमान था,—जिस समय कालिक देव-य्सर्-अन्वयके महासामन्त कलिविट्टरस वनवासि १२००० का शासन कर रहे थे,—नागरखण्ड सत्तरके 'नाळ-गावुण्ड' के पदको धारण करने-वाले सत्तरस नागार्जुनके मर जानेपर राजाने जक्कियब्वेको आवुतवूर और नागरखण्ड-सत्तर दे दिया। जक्कियब्वेने भी जक्कलिमें मन्दिरके लिये ४ मत्तल चावलकी भूमि दी। एक बीमारीके समय उसने शक सं० ८४० में, बहु-धान्य वर्षमें, पूर्ण श्रद्धासे बसदिमें आकर समाधिमरण ले लिया।]

१४१

गिरनार—संस्कृत-भग्न।

(काल लुप्त)

[यह लेख नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिण तरफके प्रवेशद्वारके पासके प्राङ्गणके पश्चिम दिशाकी तरफके एक छोटे मन्दिरकी दीवालपर है। पाषाण टूटा हुआ है।]

॥ स्वस्ति श्रीधृति

॥ नमः श्रीनेमिनाथाय ज

॥ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ गुरौ श्री

॥ तिलकमहाराज श्रीमहीपाल

॥ वयरसिंहभार्या फाउसुतसा

॥ सुतसा० साईआ सा० मेलामेला

॥ जसुतारूडीगांगीप्रभृती

॥ नाथप्रासादा कारिता प्रतिष्ठ

॥ ····द्रसूरि तत्पट्टे श्रीमुनिसिंह

॥ ·············कल्याणत्रय

अनुवादः—स्वस्ति श्री श्रुति·············श्री नेमिनाथको नमस्कार... ...वर्ष......फाल्गुन सुदी ५, बृहस्पतिवार, श्री·············श्रीमहीपाल, महाराज और·············के तिलक......फाऊ नामकी वयरसिंहकी भार्या; उसका पुत्र माननीय······· ····उसके पुत्र माननीय साईआ और मेलामेला········· ··उसकी पुत्रियाँ रूडी, गांगी इत्यादि। इन सबने एक नेमिनाथका मन्दिर बनवाया —जिसकी प्रतिष्ठा . ...द्रसूरिके पट्टपर विराजमान श्रीमुनिसिंहने की·············कल्याणत्रय··· ।

[ASI, XVI, p 353-354, n° 11

१४२

सूदी (जिला-धारवाड़) संस्कृत और कन्नड़।

शक सं ८६०=९३८ ई०

लेख

पहला ताम्रपत्र

१ श्रीर्व्विभाति भुवि (धी)र्य्यस्य निरवद्य [।] निरत्(य्) अया तस्मै नमोऽर्हते

२ लोक-हित-धर्म्मोपदेशिने ॥ जित [–] भगवता [गत]-घनग-[ग]नाभे–

३ न पद्मनामेन [॥] श्रीमज्जाह्नवीय-कुला[म]ल-व्योमावभासन-भास्करः ॥

४ स्व-खड्गैक-प्रहार-खण्डित-महा-शीलास्तम्भ-लब्ध-बळ-पराक्रमो दारुणा–

५ रि-गण-विदारणोपलब्ध-व्र (व्र)ण-विभूषण-भूषितः क[ा]ण्वा-

६ यन-सगोत्र [:] श्रीमत्-**कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म**महाराजाधिराजः [॥]

७ तत्पुत्रः । पितुरन्वागत-गुण-युक्तो । विद्या-विनय-विहित-वृत्तिः

८ सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्रा-वि(धि)गत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्-क-वि-का–

९ ञ्चन-निकषोपळ-भूतो नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-

१० सूत्र-वृत्ते(:)-प्रणेता श्रीमन्**माधव**महाधिराजः ।(॥) ओ तत्पुत्र[:] पितृ-पैता-

११ महगुणयुक्तोऽनेक-चा(च)तु[र्] दन्[त]अ-युद्ध[ा]वाप्त-चतु-

द्वितीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

१२ रुदधि-सळीळास्वादितयशाह श्रीम[ा]न् **हरिवर्म्म**-महाधिराजः [॥]

१३ तत्पुत्रः श्रीमान् **विष्णुगोप** मह[ा]धिराजः [॥] ॐ तत्पुत्रः

१४ स्व-भुज-बळ-पराक्रम-क्रय-क्र[ी]तराज्यः कलियुग-बळ-पङ्काव-

१५ सन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-निते(त्य)सन्नद्धः श्रीमान् **माधव**-महाधिराजः। (॥) ओ .

१६ तत्पुत्र[:] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः । **कृष्ण(ष्ण)वर्म्म**-स(म)-

१७ हाधिराजस्य प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनय-पूरिता-

१८ न्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौर्य्यो विद्वत्षु[1] प्रथम-गण्य[:]श्रीमान्

---

१ 'विद्वत्सु' पढ़ो।

१९ कोङ्गुणिवर्म्म-व (ध)र्म्ममहाराजाधिराज-पु(प)रमेश्वरः ।मद
अविनीत-प्रथम—
२० नामज (धे) यः [।।] तत्पुत्रो विजृम्भमाण-शक्ति-त्रयः अन्द्
रि-आलत्तूर-पुरुळरे-पेर्ण्ण—
२१ गराद्यनेक-समर-मुख-मख-ह(हु)त-प्रहत-शूरपुरुष-पशूप-हार-
विघ—
२२ स-विहस्ति(स्ती)कृत-कृतान्ताग्निमुखः किरातार्ज्जुनीयस्य पञ्चदश-
सर्ग-टीकाकार[ः]

दूसरा ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

२३ श्रीमद्-[द]ुर्व्विनीत-प्रथम-नामधेयः [।।] ओ तत्पुत्रो दुर्द्दान्त-
श(वि)मर्द्द-मृदिते(त)-विश्व[ं]भरा—
२४ रि(धि)प-मो(मौ)लि-माल(ा)-मकरन्द-पु[ ]ज-पि[ं]जरीक्ष (क्रि)-
यमाण- चरणयुगल-नलिनः श्री [मुष्क]र—
२५ प्रथम-नामधेयः । [।।] ओ तत्पुत्रश्चतुर्द्दशविद्यास्थानाधिगतेरमल-
मतिर्व्विगेपतो [नि] र—
२६ वशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ [तृ]-प्रया (यो) क्तृ-कुशलो रिपु-
तिमिर-निकर-सरकरुणोदय-भा—
२७ स्करः श्री-विक्रम-[प्र]थम-नामधेयः [।।] ओं तत्पुत्रा(त्रो)ऽनेक-
समर-संप्रसत-विजय—
२८ लक्ष्मी-लक्षित-वक्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ[ः]श्री-भूवि-
क्रम-प्रथम—
२९ प्रथमे -नामधेयः [।।] ओ तत्पुत्रः स्वकीय-रूपातिशय-विजी-
(जि) त-नल-भूपा—

---

१ इस शब्दकी अनावश्यकरूपसे पुनरावृत्ति हुई है ।

३० काराश्शिवमा[र-प्रथम-ना]मध[े]यः [।।] ओं तत्पुत्रः प्रतिदिन-प्रवर्द्धमान-महादान-जनित-पुण्यो

३१ ह्मुळ-मुखरित-मन्दरोदराः श्री कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधि-राज-परमेश्वरः

३२ श्रीसु(पु)रुष-प्रथम-नामधेयः।(।।) तत्पुत्रो विमल-ग[ं]गान्वय-नभ[:]स्थलः र(ग)भस्तिमाली श्रीकों–

३३ गुणिवर्म्म-दा(ध)र्म्ममहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री श[ि]व-मारदेव-प्रथम-नामधेयः ।

३४ शैगोत्तापरनामा [।।] तस्य कनीयान् श्री-विजयादित्यः। (।।) र (त)त्पुत्रस्समधिगत-राज्य-

३५ लक्ष्मी-प(स)मालिङ्गित-वक्षः सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्मम-हाराजाधिरा-

तृतीय ताम्रपत्र; पहली बाजू.

३६ ज-परमेश्वर[:]श्री-राजमल्ल(ल्ल)-प्र[थ]म-नामधेयस्तत्पुत्रः रामति-(? दि)-समर-संहा-

३७ रिप(रि)तोदार-वैरि-वि(वी)रपुरुपो नीतिमार्ग्ग-कोङ्गुणि-वर्म्म-धर्मराजाधिराज-परमेश्वर[:]

३८ श्रीमद्-एळे(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः[।।]ओ तत्पुत्रः सामिय-समर-सञ्जनित-विज-

३९ [य]श्रीः श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-श्वर[:] श्री-राजमल्ल-

४० प्रथम-नामधेयः । (।।)ओं तस्तु(स्य)कनीयान् निर्लोरि(ठि)तं-पल्लवा-
धिपः श्रीम[द्]मोघवर्षदेव

४१ पृथ्वीवल्लभ-सुतया[२] श्रीमद्ब्बलब्बायाव्ह(याः) प्राणेश्वर[:]
श्रीबूटुग-प्रथम-ना-

४२ मधेयः गुणदुत्तरङ्गः। (।।) ओ तत्पुत्रः । एल्ले(रे)यप्प-पट्टवन्ध-
परिष्कृत-ललाटो]ज(? वं)-

४३ टेप्पेरुपेञ्जेरु-प्रभृति-युद्ध-प्रवन्ध-प्रकवि (टि) त-पल्लर(व)पराजय[:]
श्री-[नी]त[ि म्]ार्ग-

४४ रंगिणिवर्म्म-र(ध)र्म्ममहाराजावि(धि)राज-परमेश्वर[.] श्रीमदेळे
(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः

४५ कोमर-वेडेङ्गः ।(।।)ओ तत्पुत्र[:]श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-
महाराजाधिराज-परमेश्वर[:]

४६ श्रीमन्नरसि[ं]घदेव-प्रथम-नामध[े]यः वी(वी)रवेडङ्गः ।। ओं
तत्पुत्रः कोट्टमरद........ • ...

४७ तोण्णिरग-श्री-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[:] श्री-र[ाजम]ल्ल-

४८ प्रथम-नामधेयः । कच्छेय-गङ्गः । (।।) ॐ त्रि(वृ) [।।]
तस्यानुजो निजभुजार्जित-सम्पदार्थो

तृतीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

४९ भूवल्लभ [--]-समुपगम्य ल(ड)हाड़देशे श्री-वद्देगं तदनु त-

५० स्य सुतां सहैव वाक्कन्यया व्यवहदुत्तवि (म)-धीस्त्रिपु-

---

१ 'निर्ल्लुण्ठित' और भी शुद्धरूप होगा। २ 'सुताया' पढ़ो।

-५१ र्य्यां [॥] अपि च ॥ लक्ष्मीमिन्द्रस्य हर्त्तुं गतवति दिवि यद् बोद्देगाङ्कि (के)
५२ महीशे ह [ृ]त्वा ल [ल् ?] एय-हस्तात्करि-तुरग-सितच्छात्रेनि[1] (सिं)-
५३ हासनानि । प्रा[दा]त् कृष्णाय राज्ञे क्षित [ि]-पति-गणनाश्च-
५४ ग्रणीर्य्य(:)प्रतापात् राजा श्री-बूटुगाख्यस्समजनि विजि-
५५ तारातिचक्रः प्रचण्डः ॥ कश्चातः किन्नं[2] नागादळचपुर-पतिः
५६ कङ्कराजोऽन्तकस्य विज्ञाख्यो दन्तिवर्म्मा युनि (धि) निज-वनवासी त्व-
५७ म राजवर्म्मा शान्तत्वं शान्तदेशो नुळुवु-गिरि-पतिर्द्दाम-रिर्द्दर्प्प-भङ्ग [—]

चतुर्थ ताम्रपत्र; पहिली बाजू

५८ मध्येऽन्तं नागवर्म्मा भयमतिरभसाद् गङ्ग-गाङ्गेय-भू-
५९ पात् ॥ राजादित्य-नरेश्वरं गज-घटाटोपेन संदर्प्पित (म्)
६० जित्वा देशत एव गण्डुगमहां निद्धोव्य[3] तञ्जापुरीं नाल्कोटे-
६१ प्रमुखाद्रि-दुर्ग-निवहान् दग्ध्वा गजेन्द्रान् हयान् कृष्णा-
६२ य प्रथितन्धन स्वयमदात् श्री-ग[ं]ग-नारायणः [॥]
६३ आर्य्या ॥ एकान्तमत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द्र-कुम्भ-सम्भेद ॥ (।)
६४ नैगम-नयादि-कुलिशैरकरोज्जयदुत्तरङ्ग-नृपः ॥ गद्यम् ॥
६५ सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराधिराज-परमेश्वर [:]

---

१ 'सितच्छत्र' पढ़ो । २ सभवत यह पाठ 'किञ्चात. किन्तु' रहा होगा । ३ 'निर्द्धाव्य' पढ़ो ।

चतुर्थ ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

६६ श्री-बूतुग-प्रथम-नामधेयो नन्निय-गङ्गः षण्णवति-

६७ सहस्रमपि गङ्ग-मण्डल [म्] प्रतिपाळ्या(य)न् पुरिकर-पुरे कु-

६८ तावस्थानं (:) स (श) क-चरि [श]षु[1] षष्ठ्युत्तराष्ट[श] तेषु अतिक्रान्तेषु विका-

६९ नि(रि)-संवत्सर-का[ ] त्त[ ] क-नन्दीस्व (श्व)र-सु(शु) क्ल-पक्षः, अष्टम्यां आदित्यवारे

७० [स्वक]ीय-प्रियायाः सम्यग्द[ ]शन-विशुद्धतया प्रत्यक्ष-धै-(दे)

७१ वत्याः श्रीमद्दीवलाम्बिकायाः चैत्यालयाय सुल्घाटवी-स-

७२ प्तति-ग्राम-मुख्य-भूतायान्नगर्य्यां सून्द्यां विनिर्मापिता-

७३ य खण्ड-स्पु(स्फु)टित-नवकर्म्मार्त्थं पूजाकरणार्त्थमाहारार्त्थं

७४ च षट् श्रा(श्र)मण्यो जनान् दानसन्मानादिना सन्तर्प्योत्तर-दिशाया

पाँचवाँ ताम्रपत्र

७५ राजमानेन दण्डेन पष्टि-निवर्त्तनं श्रीमद्वाडि(? टि)युर्ग्गण-मुख्य-

७६ स्य नागदेव-पण्डितार्य[2] स्व[य]मेव पादो (दौ) प्रक्षाळ्य(ल्य) सून्द्यां दत्तवान् [।।]

७७ तस्याघट[3] पूर्व्वतः मानसिंग-केय्-दक्षिणतः पन्नसिनभूमिः प-

७८ श्चिमतः के (क्को)प्परपोलमुत्तरतः वाल्लगेरिय वन्द पल्लं[।।] अरुवणं गद्या-

७९ ण-त्रयं ग्रामो दीयते[4]ऽशेष-कम ग्रामो रक्षति ॥

---

१ 'वर्षेषु' इति शुद्धपाठः । २ 'पण्डितस्य' पढ़ो । ३ 'आघाटाः' पढ़ो । ४ 'ददात्यशेष' पढ़ो ।

८० सामान्योऽयं धर्म्म-सेतु[ं]र्नृपानां काले-काले पालनीयो भवद्भि-स्सर्वानि-

८१ तान् भाविनः पार्थिवेन्द्रो (न्द्रान्) भूयो-भूयो याचते रामभद्रः ॥ वहुभिर्व्वसु-

८२ धा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि [:] यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

८३ सुल्धाटवी-सप्तति-मुख्य-सून्धामचीकरं[१]जैन-गृहं प्रसिद्ध पद्-ग्रामणी-

८४ ष्टि-विधान-पूर्वं श्री दीवळ(ा)म्बा जगदेकरम्भा । (॥)

ॐ । ॐ । ॐ

[J. F Fleet, EI, III, n° 25, f, S, t et tr]

भावार्थ

[यह शिलालेख अप्रेल, १९९२ ई० में जे. एफ़ फ्लीटके देखनेमें आया। उन्होंने ही इसे, सबसे पहले, एपिग्राफिआ इण्डिका, जिल्द ३, में (पृ० १५८-१८४) छपाया। यह उन्हे सूदीके एक निवासीसे ताम्रपत्रों (Plates) पर मिला।

इस शिलालेखमें उस पश्चिमी गंग युवराज वूतुगका उल्लेख है जिसने चोलराजा राजादित्य और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीयके बीचमें ९४९-५० ई० में या इससे पहले हुए युद्धमें चोल राजा राजादित्यको मार डाला था। इस अभिलेखका उद्देश्य उस जमीनके दानका लेखन है जो उसने अपनी पत्नीद्वारा सून्दी, यानी सूदीमें निर्माण कराये गये जैनमन्दिरको दी थी। उसकी पत्नी का नाम दीवळाम्बा था। यह लेखन (Record) बनावटी है।]

इस लेखपरसे फलित पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली इस प्रकार हैः—

१ 'अचीकरज्जैन' पढ़ो।

पूर्ववर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली

|

कोङ्गणिवर्मन्

|

माधव प्रथम

|

हरिवर्म्मन्

(२४८ ई०)

|

विष्णुगोप

|

माधव द्वितीय

|

अविनीत-कोङ्गणि

(४६६ ई०)

|

दुर्विनीत-कोङ्गणि

|

मुस्कर, या मोक्कर

|

विक्रम, या श्रीविक्रम
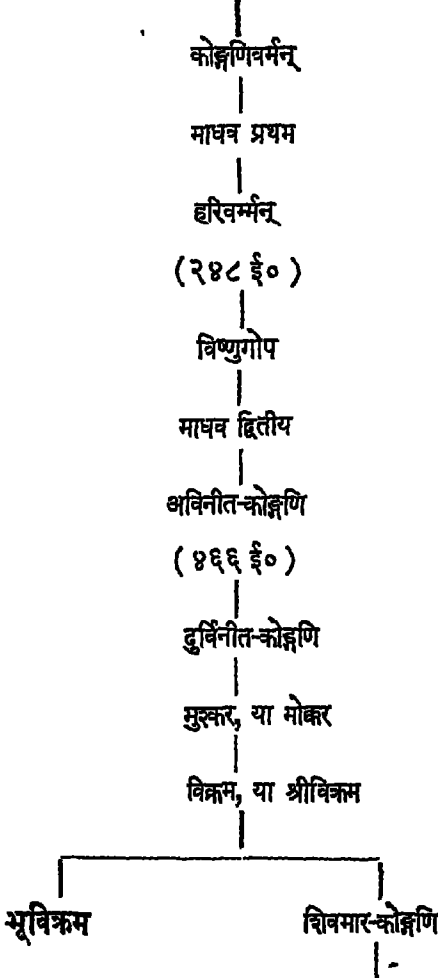
भूविक्रम | शिवमार-कोङ्गणि

(पुत्र)
श्रीपुरुष-पृथिवी-कोङ्गणि
(७६२ तथा ७६६-६७ ई०)
उत्तरवर्त्ती पच्छिमी गंगोंकी वंशावली
भूविक्रम
शिमवार
श्रीपुरुष—कोङ्गुणिवर्मन्
शिवमार सैगोत्त-कोङ्गुणिवर्मन्
विजयादित्य
राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्
एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्
(रामटि या रामदिके युद्धमें विजयी था)
राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्
(सामियके युद्धमें विजयी हुआ था)
गुणदुत्तरङ्ग-बूतुग
(पल्लवराजाको लूटकर

अमोघवर्षकी कन्या अब्बलब्बासे विवाह किया)

|

कोमरवेडङ्ग-एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्

(एरेयप्पके, या द्वारा, पट्टबन्धसे उसका ललाट शोभित था;

और उसने जन्तेप्परुपेक्केरुमें पल्लवोंको हराया था)

|

वीरवेडङ्ग-नरसिंघ-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्

|

कच्छेयगङ्ग--राजमल्ल-नीतिमार्ग-कोङ्गणिवर्मन्

जयदुत्तरंग-गंगगांगेय-गंगनारायण-नन्नियगंग-

बूतुग-सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गणिवर्मन्

(९३८ ई०)

(इसने डहाळ देशके त्रिपुरीमें, वद्देगकी पुत्रीसे विवाह किया था, वद्देग-की मृत्युपर कृष्णके लिये राज्य प्राप्त किया,--लल्लेय (?) के पक्षसे इसको निकाला; अलचपुरके कक्कराजको, बनवासीके बिज्ज-दन्तिवर्मन्को, राज-वर्माको, नुलुबुगिरिके दामरिको, तथा नागवर्माको भय उत्पन्न किया; राजादित्यको जीता, तञ्जापुरीको घेरा, और नाल्कोटेके पहाड़ी किलेको जला डाला । इसकी पत्नी दीवलाम्बा थी ।)

१४३

मदनूर--(जिला-नेल्लोर) संस्कृत ।

शक ८६७=९४५ ई० सन्

प्रथम पत्र ।

१ भद्रं स्यात्रिजगन्नुताय सततं श्रीमज्जिनेन्द्रप्रभोरुद्दामाततशासन[ा]-

२ य विलसद्धर्म्मावलंवाय च। सामर्थ्यात् खलु यस्य दुष्कलिकृता दोषाश्च मिथ्योद्भवा (।) दु-

३ र्वृत्तानि च भूतलेन वितता शान्तिश्च नित्यं क्षिते[ः] ॥१॥ स्वस्ति श्रीमता सकलभुवनसं–

४ स्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारितिपुत्राणां कौशिकिवरप्रसाद-लब्धरा–

५ ज्यानाम्मातृग[ण]परिपालिताना स्वामिमहासेनपादानुध्यायिनाम् भगव–

६ न्नारायणप्रसादसमासादितवरवराहलाञ्छनेक्षणक्षणवशिकृतारातिमण्ड[ला]–

७ नामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषाम् चालुक्यानां कुलमल-करिष्णोस्सत्या[श्र]-

८ यवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्द्धनोष्ट[ा]दशवर्षाणि वेंगि-मण्डलमपालयत्। तदात्म–

प्रथम पत्र, दूसरी ओर।

९ जो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम्। तदनुजेन्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्द्धनो नव। तत्सूनुर्म्मंगियुवराज–

१० ×पचविंशतिन्तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयोदश। तदवरज[ः]कोक्किलिष्षणमासान्। तस्य ज्येष्ठो भ्राता

११ विष्णुवर्द्धन[स्त]मुचाव्य[स]प्तत्रिंशतम् वर्षाणि[।]तत्पुत्रो विजयादित्यभट्ट[ा]रकोष्टादश। तत्सुतो

---

१ °वशीकृता° पढ़ो।

१२ विष्णुवर्द्धनष्षट्त्रिंशतम् । नरेन्द्रमृगराजाख्यो मृगराजपरा-
क्रमः[।]विजयादित्य-भूपालश्चत्वारिंशत्समाष्टभिः

१३ [।।२]तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्द्धनोप्यर्द्धवर्षं । त-

१४ त्पुत्रः परचक्ररामापरनामधेयः[।]हत्वा भूरिनोडंबराष्ट्रनृपति-
मं गिम्महासंग--

१५ रे गंगानाश्रितगंगकूटशिखरान्निर्जित्य सङ्ग[ह]लाधीशं संकि-
लसुभवल्लभयुत यो भ [।]--

१६ यित्वा चतुश्चत्वारिंशतमव्दकाश्च विजयादित्यो ररक्ष क्षितिं ।
[३] तदनुजस्य लब्ध--

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

१७ यौवराज्यस्य विक्रमादित्यस्य सुतश्चालुक्यभीमस्त्रिंशतं[।]
तस्याग्रजो विजयादित्यः

१८ षण्मासान् [।] तदग्रसूनुरम्मराजस्सप्तवर्षाणि । तत्सूनुमाक्रम्य
वाल चालुक्यभीमपि--

१९ तृव्ययुद्धमल्लस्य नन्दनस्तालनृपो मासमेकं । नाना-सामन्तव-
र्गैरधिकवलयुतैर्म्म--

२० त्तमातंगसेनैर्हत्वा त तालराजं विषमरणमुखे सार्द्धमत्युग्रते--

२१ जाः [।] एकाब्दं सम्यगम्भोनिधिवलयवृतामन्वरक्षद्धरित्रीं श्रीमां-
श्चालुक्य--

२२ भीमक्षितिपतितनयो विक्रमादित्यभूपः । [४] पश्चादहमह-
मिकया विक्रमादित्यास्त--

२३ म [य]ने राक्षसा इव प्रजाबाधनपरा दायादराजपुत्रा राज्याभिला-
षिणो युद्धमल्लरा--

२४ जमार्त्तण्डकण्ठिकाविजयादित्यप्रभृतयो विग्रहीभूता आसन् [।] विग्र—

तीसरा पत्र, पहली ओर ।

२५ हेणैव पंचवर्षाणि गतानि [।] ततः [।] योऽवधीद्र [।] जमा-र्त्तण्डन्तेष[।] येन रणे कृतौ [।] क—

२६ ण्ठिकाविजयादित्ययुद्धमल्लौ विदेशगौ । [५] अन्ये मान्यमही-भृतोपि बहवो दु—

२७ ष्टप्रवृत्तोद्धता (:) देशोपद्रवकारिणः प्रकटिनाः कालालयं प्रापिताः [।] दोर्द्दण्डेरि—

२८ तमण्डलाग्रलनया यस्योग्रसंग्रामकाबाज्ञा[1] तत्परभूनृपैश्च

२९ शिरसो मालेव सन्धार्य्यते । [६] नादग्ध्वा विनिवर्त्तते रिपुकुलं कोपाग्निरामूल—

३० तः शुभ्रं य [स्य] यशो न लोकनखिल सन्तिष्ठते न भ्रमत् [।] द्रव्यांभोधरराशिरप्यनुदिनं

३१ सन्तप्यमाने भृशं दारिद्रयोग्रनरातपेन जनतासस्ये न नो वर्षति । [७] स चालुक्यभीमनप्ता वि—

३२ जयादित्यनन्दन[ः ।] द्वादशाब्दसमास्सम्यग् राजभीमो धरा-तलं । [८] तस्य महेश्वरमू—

तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

३३ र्त्तेरुमासमानाकृतेः कुमाराभः[।] लोकमहादेव्याः खलु यस्सम-भवद्रम[रा]—

३४ जाख्यः ॥ [९] जलजातपत्रचामरकलशाकुशलक्ष्णां[क]करचर-

---

1 शायद "साग्रामिकस्याज्ञा" पढ़ो ।

णतलः [।] लसदाजा—

३५ न्ववलंवितभुजयुगपरिघो गिरीन्द्रसानूरस्कः ॥ [१०] ।.दे. ..
धिपविद्यो विविधायु—

३६ धक्रोविदो विलीनारिकुलः [।] करितुरगागमकुशलो हरचरण
युग—

३७ लमधुपश्श्रीमान् ॥ [११] कविगायककल्पतरुर्द्विजमुनिदीनान्ध—
वन्धुजन-

३८ सुरभिः [।] याचकगणचिन्तामणिरवनीशमणिर्म्महोग्रमहसा द्युमणिः
॥ [१२] गिरिसर्वसु—

३९ संख्याब्दे शकसमये मार्ग्गशीर्षमासेस्मिन् [।] कृष्णत्रयोदश—
दिने भृगुवारे मैत्रनक्षत्रे [॥ १३]

४० धनुषि रवौ घटलग्ने द्वादशवर्षे तु जन्मनः पट्टं [।] योधादुदय—
गिरीन्द्रो रविमिव लोका—

चतुर्थ पत्र; पहली ओर ।

४१ नुरागाय ॥ [१४] स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजा—
धिराजपरमेश्वरपरम[भा]—

४२ म्मिकोम्मराजकम्मनाण्डुविनयनित्रासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटु—
म्बिनस्सर्व्वे[।] नित्यमाज्ञापयति [।]

४३ आर्य्या[ः]। किरणपुरमधाक्षीत्कृष्णराजास्थितं यत्त्रिपुरमिव महे—
शपा(ण्डु ?)रंग[ः]प्रतापी [।] तदिह [मु]—

४४ खसहस्रैरन्वितस्याप्यशक्यं गणनममलकीर्तेस्तस्य सत्साहसानाम् ॥
[१५] तस्य[।]त्म-

४५ जो निरवद्यधवल[ः] कटकराजपट्टशोभितललाटः [।] तत्तनयो विजयादित्यकट-

४६ काधिपति[ः] । वृत्तं । तत्पुत्रो दुर्ग्गराजप्रवरगुणनिधिर्द्धार्मिक-स्सत्यवादी त्यागी भो[गी]

४७ महात्मा समितिषु विजयी वीरलक्ष्मीनिवासः [।] चालुक्यानां च लक्ष्म्या यदसिरपि सदा रक्षणा[र्थे]-

४८ व वश[ः] ख्यातो यस्यापि वेंगीगदितवरमहामण्डलालंबनाय । [१६] तेन कृतो धर्म्मपु[रीद]-

४९ क्षिणदिशि सज्जिनालयश्चारुतरः [।] कटकाभरणशुभाकितनाम च[1] पुण्यालयो वसति [॥ १७]

चतुर्थ पत्र; द्वितीय ओर ।

५० [श्री] यापनीयसंघप्रपूज्यकोटिमडुवगणेशमुख्यो यः [।] पुण्या-र्हनन्दिगच्छो जिननन्दिमुनीश्वरो [श] ग-

५१ [ण] धरसदृशः । [१८] तस्याग्रशिष्यप्रथितो धरायाम् (।) दिव[ा]कराख्यो मुनिपुगवोभूत् [।] यत्केवलज्ञाननिधि-

५२ र्म्महात्मा स्वय जिनानां सदृशो गुणौघैः ॥ [१९] श्रीमान्दि-रदेवमुनिस्सुतपोनिधिरभवदस्य शिष्यो धीम[ा]न् [।] य-

५३ स्प्रातिहार्य्यमहिम्ना संप्पन्नमिवाभिमन्यते लोकः [॥ २०] तद-धिष्ठितकटक[ा]भरणजिनालय[ा]-

५४ य कटकराजविज्ञप्ते खण्डस्फुटनवकृत्यावलिप्रपूजादिसत्रसिद्ध्यर्थंमु-

---

1 इस सम्पूर्ण समाससे 'कटकाभरणशुभनामाङ्कित' अपेक्षित है, जिसके रखनेसे छन्दोभङ्ग हो जाता ।

५५ त्तरायणनिमित्ते मलियपूण्डिनामग्रामटिका सर्वकरपरिहार(
मुदक-
५६ पूर्व्वं कृत्वा दत्ता। अस्य ग्रामस्यावधयः पूर्व्वतः मुंजुन्यरु। दक्षिणतः यिनिमिलि ॥ पश्चि[म]-
५७ तः कल्वकुरु ॥ उत्तरत[:] धर्म्मवुरमु ॥ एतद्ग्रामस्य क्षेत्रा' वधयः पूर्व्वतः गोल्लनि-
५८ गुण्ठ ॥ आग्नेयत[:] रावियपेरिय ꣸ वु । दक्षिणतः स्थापित-शिला ॥ नैर्ऋत्यां स्थ[ा] पितशिलैव [।]

पञ्चम पत्र।

५९ पश्चिमतः मल्कप ꣸ ꣸ को ꣸ वोयुतट[ा] कश्च ॥ वायव्यतः स्थापितशिलैव। उत्तरतः दुव[चे] ꣸ वु [।]
६० ऐशान्याम् (।) कल्वकुरि ऐव्वोकचेनि सीमैत्र सीमा ॥

[चूंकि लेखमें एक जैनमन्दिरके दानका उल्लेख है, अतः इसका प्रारम्भ जैनधर्मके मंगलाचरणसे किया गया है। पंक्ति ३ से लेकर ४१ में पूर्वी चालुक्य वंशकी 'समस्तभुवनाश्रय' विजयादित्य (छठे) या अम्मराज (द्वितीय) तक की वंशावली है। वंशावलीके भागमें ऐतिहासिक महत्त्वके दो स्थल हैं, पहिला (पं० १३-१६) विजयादित्य तृतीयके राज्यका वर्णन करता है और दूसरे (पं. २२-३२) मे चालुक्यभीम द्वितीयका अभिषेक अर्थात् राजतिलक है।

शिलालेखमें वर्णित मङ्गि नोलम्बवाडिका एक पल्लव राजा और सङ्किल दाहल (या चेदि) का प्राचीन सरदार मालूम पड़ता है। अन्तमें इस शासन (लेख) में विजयादित्य तृतीयका एक नया उपनाम परचक्रराम (पं० १४) आता है। विक्रमादित्य द्वितीयकी मृत्युके बाद बराबर पाँच वर्षतक युद्ध-मल्ल, राजमार्त्तण्ड और कण्ठिका-विजयादित्यमें लड़ाई होती रही। अन्तमें राजभीम (या चालुक्यभीम द्वितीय) राजमार्त्तण्डका वधकर, कण्ठिका-

१ या सम्भवत· 'मुंजुन्युरु'।

विजयादित्य और युद्धमल्लको हराकर या देशनिकाला देकर व्यवस्था एवं शान्तिके स्थापनमें सफल हुआ।

उल्लिखित दान उत्तरायणमें (पं० ५४) किया गया था। दानपात्र एक जिनमन्दिर था, जो धर्मपुरी (श्लोक १७) के दक्षिणमें तथा यापनीयसंघके एक मुनिके अधिकारमें था। इसकी स्थापना 'कटकराज' (पं० ५४) दुर्गराज (श्लो० १६) ने की थी और उन्हींके उपनामसे वह कटकाभरण-जिनालय (श्लो० १७ तथा पं० ५३) कहलाया। उसकी प्रार्थना पर (पं० ५४) ही दान किया गया था, और दानके वर्णनका भाग उसके कुटुम्बकी वंशावलीके वर्णनसे शुरू होता है। कहा गया है कि उसके पूर्वज पाण्डुरंगने कृष्णराज (श्लो० १५) के निवासस्थान किरणपुरको जला दिया था, और तदनुसार वह विजयादित्य तृतीयका कोई सैनिक अधिकारी होना चाहिये। उसके पुत्र निरवद्यधवलको 'कटकराज' का पट्ट दिया गया था (पं० ४४)। उसका पुत्र 'कटकाधिपति' विजयादित्य (पं० ४५) था, और उसका पुत्र दुर्गराज (श्लो० १६) था।

दान की गई चीज मलियपूण्डि (पं० ५५) नामका एक छोटा गाँव था; वह कम्मनाण्डु (पं० ४२) जिलेमें था। इसकी सीमाएं पंक्ति ५६ में दी गई हैं। उत्तरकी सीमा धर्म्मवुरमु (धर्म्मपुरी) के दक्षिणमें यह जिनालय था।]

[EI, IX, n° 6]

१४४

कलुचुम्बरू (जिला अत्तीली)—संस्कृत तथा तेलुगू।

[बिना कालनिर्देशका (ई० सन् ९४५ से ९७० के लगभग)]

ओं स्वस्ति श्रीमता सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्य-सगोत्राणां हारिति-पुत्राणा कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानाम्मातृगणपरिपालितानां स्वामिमहासेनपदानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादित-वर-वराह-लाञ्छनेक्षणक्षणवशीकृताराातिमण्डलानामश्वमेधावभृतस्नानपवित्रीकृतवपुषं चालुक्यानां कुलमलंकरिष्णोस् सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता [।]

श्रीपतिर्व्विक्रमेणाद्यो दुर्ज्जयाद्बलितो हृतां
अष्टादशसमाः कुब्ज-विष्णुर्जिष्णुर्महीमपालयत् ।(॥)
तदात्मजो जयसिंहस्त्रयास्त्रिंशत [।] तद-

दूसरा पत्र; प्रथम ओर

नुजेन्द्रराज-नन्दनो विष्णुवर्धनो नव । तत्सूनुर्म्मङ्गी-यु . ..
पञ्चविंशतिं । तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयोदश ॥ तस्य द्वैमातुरानुजः कोकिलिः
षण्मासान् [।] तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्द्धनस्तमुच्चाट्य सप्तत्रिंशतम् ।
तत्सुतो विजयादित्यभट्टारकोऽष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्द्धनः षट्-
त्रिंशतं । तत्सुतो नरेन्द्रमृगराजस्साष्टचत्वारिंशतं । तत्पुत्रः कलि-वि-
ष्णुवर्द्धनोऽध्यर्द्ध-वर्ष [॥] तत्सुतो गुणग-विजयादित्यश्चतुश्चत्वारिं-
शत । अथवा ।

सुतस्तस्य ज्येष्ठो गुणग-विजयादित्य-पतिरं-
ककारस्साक्षाद्वल्लभनृप-समभ्यर्च्चितभुजः
प्रधानः शूराणामपि सुभट-

दूसरा पत्र; दूसरी तरफ

चूडामणिरसौ
चतस्रश्चत्वारिंशतिमपि समा भूमिमभुनक् ॥
तद्भ्रातुर्युवराजस्य विक्रमादित्यभूपतेः ।
शत्रुवित्रासकृत्पुत्रो दानी कानीनसन्निमः ॥
जित्वा संयति कृष्णवल्लभमहादण्डं सदायादकन् (?)
दत्वा देव-मुनि-द्विजातितनयो धर्म्मार्थमर्थम्मुहुः ।
कृत्वा राज्यम[क]ण्टकन्निरुपमं संवृद्धमृद्धप्रजं
भीमो भूपतिरन्वभुंक्त भुवनं न्यायात् समास्त्रिंशतं ॥

तदनु **विजयादित्यस्तस्य** प्रियतनयो महा-
नधिकधनदस्सत्य-त्याग-प्रताप-समन्वितः ।
परहृदयनि[र्]भेदी नाम्नैव **कोल्लबिगण्ड**-भू-
पतिरकृत षण्मासान् राज्यन्नयस्थितिसंयुतः ॥

तस्याग्रसूनुरपराजितशक्ति**रम्म**-
राजः पराजितपरावनिराजराजिः ।
राजाभवद्विदित**राजमहेन्द्र**नामा
वर्षाणि सप्त सरणिः करुणारसस्य ॥

तस्यात्मज**विजयादित्य**बालमुच्चाट्य श्री**युद्धमल्ला**त्मज-
स्तालपराजो मासमेकमरक्षीत् ॥ तमाहवे विनिर्जित्य **चालुक्य-
भीम**तनयो **विक्रमादित्यो** विक्रमेणाक्रमे निक्षिप्य नव मासान-
पालयत् ॥ ततो **युद्धमल्लस्तालप**-राजाग्रजन्मा सप्त वर्षाणि गृही-
त्वाऽतिष्ठत् ॥

तत्रान्तरे विदित**कोल्लबिगण्ड**-सूतो
द्वैमातुरो विनुत-**राजमहेन्द्र**-नाम्नः
भीमाधिपो विजितभीमबलप्रतापः
प्राचीं दिशं विमलयन्नुदितो विजेतुम् ॥

श्रीमन्तं राजमय्यन्-धळग-मुरुत्त(त)रन् **तातबिक्किं** प्रचण्डं
बिज्जं स[जं च] युद्धे बलिनमतितरा**मय्यपं** भीममुग्रं
दण्डं **गोविन्द**-राज-प्रणिहितमधिकं **चोळपं लोवबिक्किं**
विक्रान्तं **युद्धमल्लं** घटितगजघटान् सन्निहत्यैक एव ॥
भीतानाश्वासयन् सच्छरणमुपगतान् पालयन् कण्टकानुत्-
सन्नान् कुर्व्वन् सुगृह्णन् करमपरभुवो रञ्जयन् स्वं जनौघं ।

तन्वन् कीर्त्तिं नरेन्द्रोच्चयमवनमयन्नार्ज्जवन् वस्तुराशी-
नेवं श्रीराजभीमो जगदखिलमसौ द्वादशाब्दान्यरक्षत् ॥
तस्य महेश्वरमूर्त्तेरुमासमानाकृतेः कुमारसमानः
लोकमहादेव्याः खलु यस्समभवदम्मराज इति विख्यातः ॥

यो रूपेण मनोजं विभवेन महेन्द्रमहिमकरं
उरुमहसा हरमरि-पुरदहनेन न्यक्कुर्वन् भाति विदितनिर्मलकीर्तिः [॥]

यद्बाहुदण्डकरवालविदारितारि-
मत्तेभकुम्भगलितानि विभान्ति युद्धे
मुक्ताफलानि सुभट-क्षटजोक्षितानि
वीजानि कीर्ति-विततेरिव रोपितानि । (॥)

स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टा-
रकः परमब्रह्मण्योऽत्तिलिनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-
नस्समाहूयेत्थमाज्ञापयति ॥ अड्डकलि-गच्छ-नामा । वल-

चतुर्थपत्र; दूसरी बाजू

हारिगणप्रतीतविख्यातयशा[ः] । चातुर्व्वर्ण्य-श्रमण-विशेषानश्राणना-
भिलषित-मनस्कः ॥ श्रीराजचालुक्यान्वयपरिवारित पट्टवर्द्धिकान्व-
यतिलका । गणिकाजनमुखकमलद्युमणिद्युतिरिह हि चामेकाम्बाभूत्
सा । (॥) जिनधर्मजलविवर्धनशशिरुचिरसमानकीर्त्तिलाभविलोला ।
दानदयाशीलयुता चारुश्रीः श्रावकी बुधश्रुतनिरता ॥

यस्याः गुरुपंक्तिरुच्यते—

सिद्धान्तपारदृश्वा प्रकटितगुणसकलचन्द्रसिद्धान्तमुनिः ।
तच्छिष्यो गुणवान् प्रभुरमितयशास्सुमतिरय्यपोटिमुनीन्द्रः ॥

तच्छिष्याऽर्हनन्द्यङ्कितवरमुनये चामेकाम्बा सुभक्त्या ।
श्रीमच्छ्रीसर्व्वलोकाश्रयजिनभवनख्यातसन्नार्थमुच्चैं ॥
र्व्वेङ्गिनाथाम्मराजे क्षितिभृति कलुचुम्वर्रुसुग्राम मिष्ट ।
सन्तुष्टा दापयित्वा वुधजनविनुता यत्र जग्राह कीर्त्तिं ॥

उत्तरायणनिमित्तेन खण्डस्फुटितनवकर्म्मार्थं सर्व्वकरपरिहारं शासनी-कृत्य दत्तमस्यावधयः [।]

पूर्व्वतः आरुविल्लि । दक्षिणतः कोरुकोलनु । पश्चिमतः यिडि-यूरु । उत्तरतः गुल्लिकोडमण्ड्डु । तस्य क्षेत्रावधयः । पूर्व्वतः शर्क्करा-कर्रु । दक्षिणतः इर्रुलकोळ्ळु । पश्चिमतः इडियूरि पोल्गरुसु । उत्तरतः कञ्चरिगुण्ड्डु ॥ अस्योपरि न केनचिद्बाधा कर्त्तव्या यः करोति स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति । (॥)

वहुभिर्व्वसुधा दत्ता (त्ता) वहुभिश्चानुपालिता ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
स्वदत्तां परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥

अस्य ग्रामस्य ग्रामकूटत्वं कट्टलाम्वात्मज-कुसुमायुधाय दत्तं शाश्वतं ॥ अस्य ग्रामस्य [क²] प्याभिधानं करवर्जितं ॥

आज्ञप्तिः कटकाधीशो भट्टदेवश्च लेखकः ।
कविः कविचक्रवर्त्ती शासनस्साश्युकृत्[1] ॥

पेड्ड-कलुचुवुवरिति शासनम्बुशेसिन भट्टदेवनिकार्हनन्दिभटारुल्ल गुम्सिमिय रेट्टेड्लुगाम्वुलनुण्डिपनु(पने) ण्डु तूमुन नि वुट्लु विड्ड-पड्ड नसादञ्चेसिरि [॥]

---

[1] शासनस्यास्य काव्यकृत् ।

[यह लेख प्राच्य चालुक्यराजा अम्म द्वितीय अपरनाम विजयादित्य षष्ठकी प्रशस्ति है। इसका काल नहीं दिया है। लेकिन दूसरे प्रमाणोंसे पता चलता है कि उसका राज्याभिषेक शुक्रवार, ५ दिसम्बर, ९४५ ई० को हुआ था और उसने २५ वर्षतक राज्य किया था।

अत्तिलिनाण्डु प्रान्त (विषय) के कलुचुम्बर्रु नामके गांवके दानका इसमें उल्लेख है। यह दान वलहारि गण और अड्डकलि गच्छके अर्हनन्दि जैन गुरुको दिया गया था। दानका प्रयोजन सर्व्वलोकाश्रय-जिनभवन नामके जैनमन्दिरके धर्मादेकी भोजनशाला (या भोजनभवन) की मरम्मत वगैरः कराना था। यह दान स्वयं अम्म द्वितीयने किया था, लेकिन पट्टवर्धिक वंशकी और अर्हनन्दिकी एक शिष्या चामेकाम्बाकी ओर-से दिलवाया गया था। प्रशस्तिके अन्तका तेलुगू भाग स्वयं अर्हनन्दिके द्वारा प्रशस्तिके लेखकको दिये गये एक इनामका जिक्र करता है।]

[EI, VII, n° 25, f. 5.]

१४९

हुम्मच—संस्कृत।

[काल लुप्त, संभवतः लगभग ९५० ई० (लु० राइस)।]

[पार्श्वनाथबस्तिके दरवाजेकी पश्चिम ओरकी दीवालपर]

श्रीमत् स्वस्त्यनवद्य-दर्शन-महोग्ररुं प्रताप-सम्पन्न पर-चक्रगण्ड·····
·······प्युत्तिरे शक-वर्षमेण्टु-नू·············· ···नाड नाळ्गामुण्डं मक्ते-
यर म····सर्गतन्·············नाळ्गामुण्ड बी···ळ्ळिडोळ् किशुकबे
सर्गतन बाणसिगेयाकेय पिरिय-मगं···ळियकं तोलापुरुष-सान्तरन
ळेयाके तम्मब्वेय सन्या····ळुत्तमी-कल्ल बसदियुमोन्दु-देवारसुमं माडि-
सिदळ्····श्रीसामियब्बे सेदेगोट्टडे सान्तरन विन्नणप्प मोगमं नोडेनेन्द-
रसि····पषिदु प्रभावति-कन्तियरेन्दु पेसरं कोण्डु सन्यासनं गेय्दोडे····
कुक्कस-नाड किषिय-साल्येुरं बसदिगित्तं। बल्क-नाड सुळ्ळिगोड देवा-
रके····भटारर्गे बळियं नदि बसदिगं देवारकं कोट्टळ् पाळियकं बोलि-

यक्क पुत्तु ···णक्केय्यं····इक्कण्डुग-वित्तवुदं कोट्टळ् कुन्दय्यं कोन्दरोळ्····
···येम्बुदु मण्णिकंण्डुग·········इं पोरवक्कनुं सेम्बक्कनुं पाळियक्कन केळ-
दियें पुळियण्णवी-धर्म्मं नडयिसु········री-नाडरसं रणविक्रमं पाळियक्कन
बसदिगे बदरीनाडानन्दु प्पन्नेरड वण्ण तम्म बाणसिगेय बयल कोट्ट
ईधर्म्ममं श्रीसामियब्बे गेल्लुगन मुन्नमे सालिय्····र ने डि पाळियक्कन
बसदिगित्तळ् गेल्लुगन धर्म्मं कावोनु नडयिसुवोनु·······गळ महा श्री ॥
श्री-माधवचन्द्रत्रैविद्य-देवर शिष्यरप्प नागचन्द्र-देवर पुत्र मादेय-
सेनबोव····स·· ·पुन-प्रतिष्ठेयं माडिदनु मङ्गळ महा श्री श्री-वीतरा[ग] ॥

[स्वस्ति। जिस समय अनवद्यदर्शन, महोग्र, प्रतापसम्पन्न, परचक्रगण्ड, ·············शासन कर रहा था,—(उक्त मितिको), प्रत्यक्षरूपसे तोळापुरुष—शान्तरकी पत्नी पालियक्कने, अपनी माताकी मृत्युपर, पालियक्क बसदि नामकी एक पाषाण—बसदि खड़ी की और बहुतसे दान इसके लिये किये गये।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 45]

१४६

कुम्सी—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न।

[वर्ष साधारण ९५०·ई० (लु० राइस)]

[कुम्सीमें, किलेके भण्डार-गृहके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

तनगेन्दु····व···················नन्- ।
द···पुत्रङ्गति-मीतिय······मतावष्टम्भदिं माडि कों- ।
डनो जाम····सोम्युवेंत्त पोळलोळ् कुंम्बशिकेयोळ माडिदम्।
जिन-गेहङ्गळवाशेयिं पलवु·································॥

........यिणेन्द्र.................. तुङ्गाद्रिय ।
दोरेय............... भक्ति-मनदिं पुम्बुच्चुमिपन्नेगम् ।
............लोकियब्बेयं जिन-गेहमं माडिदम् ।
घरेयेल्ल पोगळ्वन्नेग वि........अवनीपाळकम् ॥

जिनदत्त-रायं श्रीमन्महा...... ... धिपति-बोम्मरस-गौडर मक्कळु... ....ति-दत्त तन्न अनुज मानिभद्र-गौडर मक्कळु रायविभाड राज....रेवन्त नडे-गौड सुरितण्ण हिरिय-तम्मगौडरु मुख्यवाद आतन अनुज पद्मयनु आतन तम्म चिक्क-तम्म-गौडरु आतन अनुज होन्नण-गौडरु धर्म-शासनव साधारण-संवत्सरद् कार्तिक-सुद्द-पुन्नमि-सो.... ....सेट्टि सोकि-सेट्टि पदुम-सेट्टि.. . ...वाद आ-दित्य-स्थानंके.............सन्दायवेन्दु.........देरिगे येन्दु विट्टि येन्दु केळ-सल्लदु ईधर्म्मव नडसिदवरिगे स्वर्गपदव पडेवरु ईधर्मक्के तप्पिदवरु एळनेय नरकक्के होहरु जिन-रभिषेक-निमित्त । घन-पूर्ण कुम्बकेन्दु कुम्बसे-पुरमम् । जिनदत्त-रायनित्त । कनक-कुळोद्भवरु कलस-राजान्वयरुम् ॥ सन्नकोप्पद वस्तियिन्द बडगल्लु बेव्ळल कोप्पद् केरे कल्लु सरुहु सह विट्टरु.. . .....बीजवरि....कोट्टरु प्रतिपालिसुवदु

[जिनशासनकी प्रशंसा । .... पोलल्लु और कुम्बसिकेमें, पोम्बुच्च जबतक जिन्दा रहे तवतक उन्होंने जिनमन्दिर बनवाये; जिनमन्दिरमें लोकि-यब्बेकी स्थापना की । और जिनदत्त-राय [की स्वीकृतिसे], शासक बोम्मरस और अनेक गौडोने (जिनके नाम दिये हैं),— तथा कुछ सेट्टि लोगोंने उक्त मितिको इसके लिये वार्षिक दान दिया । शापात्मक श्लोक ।

जिनदत्तराय, जिसने जिनके अभिषेकके लिये 'कुम्बसे-पुरका दान किया था, कलस राजाओंके खानदानके कनककुलमें उत्पन्न हुआ था । उसने कुछ जमीन भी दी थी ।]

[E.C. VII, Shimoga t, n° 114.]

१४७

खजुराहो—संस्कृत

(विक्रम संवत् १०११=९५५ ई०)

१ ॐ [।।] संवत् १०११ समये ।। निजकुलधवलोयं दि-

२ व्यमूर्त्ति खसी (शी) ल स (श) मदमगुणयुक्त सर्व्व-

३ सत्वा (त्त्वा) नुकंपी [।] स्वजनजनिततोषो धांगराजेन

४ मान्य प्रणमति जिननाथोय भव्यपाहिल (ल्ल) -

५ नामा । (।।) १ ।। पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २

६ लघुचंद्रवाटिका ३ सं (शं) करवाटिका ४ पंचाइ-

७ तलवाटिका ५ आम्रवाटिका ६ ध (धं) गवाडी ७ [।।]

८ पाहिलवंसे (शे) तु क्षये क्षीगे अपरवसो (शो) यः कोपि

९ तिष्ठति [।] तस्य दासस्य दासोय मम दतिस्तु पाल-

१० येत् ।। महाराजगुरुस्वी (श्री) वासवचंद्र [।।] वैसा (शा) ष (ख)

११ सुदि ७ सोमदिने ।।

[एपिग्राफिआ इण्डिका, जि० १, पृ० १३६]

[EI. 1, p. 135-136]

[यह शिलालेख खजुराहोमें जिननाथके मन्दिरके बायें दरवाजेपर उत्कीर्ण है। इसमें ११ पंक्तियाँ हैं। इसमें बताया गया है कि राजा धङ्ग या धाङ्गके राज्यकालमें विक्रम सं० १०११ या ९५४ ई० में भव्य पाहिल या पाहिल्लने जिननाथके मन्दिरको बहुत तरहकी वाटिकाओं (छोटे उद्यानों या बगीचों) का दान किया। दानोंके निम्नलिखित नाम हैं:—

१. पाहिल-वाटिका, या पाहिल बगीचा

२. चन्द्र-वाटिका, या चन्द्र बगीचा

३. लघु चन्द्रवाटिका, या छोटा चन्द्र बगीचा

४. शंकर-वाटिका, या शंकर बगीचा

५. पञ्चाइतल-वाटिका ?

६. आम्र-वाटिका, या आमके पेडोंका बगीचा

७. धङ्ग वाड़ी, या धङ्ग उद्यान-भवन।

ए० कनिंघमने सम्वत् १०११ को सुधारकर और युक्तिपूर्वक सिद्ध कर इसको सं० ११११ पढ़ा है। शिलालेखका पूरा श्लोक प्रो० एफ् कीलहोर्नने इस तरह शुद्ध किया हैः—

निजकुलधवलोय दिव्यमूर्त्तिः सुशीलः
शमदमगुणयुक्तः सर्वसत्वानुकम्पी।
सुजनजनिततोषो धङ्गराजेन मान्यः
प्रणमति जिननाथं भव्यपाहिल्लनामा ॥ १॥]

१४८

सुहानिया [ग्वालियर]—संस्कृत।

[सं० १०१३=९५६ ई०]

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकमा (खो?) दिता[1]

[सुहानियामें माधवके पुत्र महेन्द्रचन्द्रने एक जैन मूर्ति प्रतिष्ठापित की। संवत् १०१३।]

[JASB, XXXI, p 399, a, p 410, t.]

[ई० ए० जिल्द ७, पृ० १०१-१११ नं० ३८ १-५१ की पंक्तियाँ]

१४९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ८९०=९६८ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ यह 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश मालूम पड़ता है।

स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन [।।] श्रीमज्जाह्नवीयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणविभूषितः कण्वायनसगोत्रः श्रीमान् कोङ्गणिवर्म्मधर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमाधवप्रथमनामधेयः ।। तत्पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता श्रीमन्माधवमहाराजाधिराजः ।। तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तो(ऽ)नेकचतुर्द्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्धरिवर्म्ममहाराजाधिराजः ।।

अपिच ।। वृत्त ।।

आसीज्जगद्दहनरक्षणराजसिंहः
क्ष्मामण्डलाब्जवनमण्डनराजहंसः ।
श्रीमारसिंह इति बृंहितबाहुकीर्त्ति-
स्तस्यानुजः कृतयुगक्षितिपालकीर्तिः ।।

आदेशाद्देवचोलान्तकधरणिपतेर्गंगचूडामणिस्त्वां
वेगादभ्येति योद्धुं त्यज गजतुरगव्यूहसन्नाहदर्प्पम् ।
गङ्गामुत्तीर्य्य गन्तुं परबलमतुलं कल्पयेत्याप दूतै-
र्व्विज्ञप्त गूर्ज्जराणां पतिरक्कृति तथा यत्र जैत्रप्रयाणे ।।

पद्माम्भोरुहभृङ्गभृत्यभरणव्यापारचिन्तामणिः
संत्रासग्रहविह्वलीकृतरिपुक्ष्मापालरक्षामणिः
विद्वत्कण्ठविभूषणीकृतगुणप्रोद्भासिमुक्तामणि-
र्व्वीरस्सज्जनवर्ण्णनीयचरितश्रीगङ्गचूडामणिः ।।

मन्दाकिन्या जिनेन्द्रस्नपनविधिपयस्स्यन्दसम्पादितायाः
कालिन्द्याश्चण्डवैरिप्रहतगजमदश्वेतनिर्व्वर्त्तितायाः ।
सम्मेदे श्रीनिकेताङ्गणभुवि भवतो गङ्गकन्दर्पभूप-
व्यातन्यो दिग्वधूनां विधुविजयी (यि) यशो हारमाचन्द्रतारम् ॥

अपि च ॥ वृत्त ॥

निर्व्वादोज्ज्वलबोधपोतवलतस्सिद्धान्तरत्नाकरम्
चारित्रोत्प्लुतयानपात्रवलतस्संसारमीनाकरम् ।
उत्तीर्ण्णस्समुदीर्ण्णभक्तिविनतैर्बन्धाभिधानो बुधै-
रासीद् देवगणाग्रणीर्ग्गुणनिधिर्द्देवेन्द्रभट्टारकः ॥

उद्दामकामकलिनिर्द्दलनैकवीर-
स्तस्यैकदेव इति योगिषु देव एकः ।
शिष्यो बभूव हृदि यस्य दधाति भव्यो
रत्नत्रयं शिरसि यच्चरणद्वयं च ॥

महितस्य तस्य महितैर्म्महता, प्रथमस्य च प्रथमशिष्यतया ।
जयदेवपण्डित इति प्रथितः, प्रथमानशास्त्रमहिमद्रविणः ॥

अपि च ॥ गद्य ॥

तस्मै स भुवनैकमङ्गलजिनेन्द्रनित्याभिषेकरत्नकलशः स तु सत्य-वाक्य-कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमारसिंहदेवप्रथम-नामधेयः गङ्गकन्दर्प्पः ॥ शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेष्वष्टेसु-नवत्युत्तरेषु प्रवर्त्तमाने विभवसंवत्सरे शङ्खवसति-तीर्थव-सतिमण्डलमण्डनस्य गङ्गकन्दर्प्पजिनेन्द्रमन्दिरस्य दानपूजादेवभोग-निमित्तं पुलिगेरे-नगरात्पूर्व्वस्यां दिशि तल-वृत्तिं दत्ते स्म [॥] तस्या-स्सीमा, समाख्यायते तद्यथा ।

---

१ शुद्धपाठ सभवत 'भूपस्यातेने' होना चाहिये ।

कुमारीसरसः पूर्व्वस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तराद्दुपलयुगलाद्दक्षिणस्यां दिशि बेल्कनूरग्रामपश्चिमसीम्नः पावकदिशि कोशितटाकपुरोवर्त्तिन-श्शिलासरसस्समीरणदिक्कोणे हस्ति-प्रस्तरात् पश्चिमस्या दिशि वट-तटाक-पुरोनिकटनिम्नोत्तरदिग्वर्त्तिनः कृष्णपाषाणादुत्तरस्यां दिशि नागपुरग्राम-मार्ग्गाद्दक्षिणस्या दिशायां मळिगमार्त्तण्डगृहक्षेत्रादैशान्या दिशायामानी-लशिलायाः पुनः पश्चिमस्या दिशि कृष्णसरस उत्तरजलप्रवाहनिर्ग्गमा-दुत्तरस्यां दिशि नीलिकार-तटाकागतप्रवाहादुत्तरस्यामाशायामेकनिव-र्त्तनान्तरे वायव्यदिक्कोणवर्त्तिरक्तपापाणपार्श्ववर्त्तिन्याश्शम्याः। पूर्व्वदि-ग्मुखेनागत्योत्कीर्ण्णादरुणपापाणान्नागपुरग्राममार्गस्योत्तरपार्श्वे पूर्वदि-ग्मुखेन गत्वोत्तरदिशं प्रति निवृत्तात्पश्चिमदिशायामेकनिवर्त्तनान्तरे पूर्व्वोत्तरदिशि कृष्णपाषाणाद्दक्षिणस्यामाशाया शमी-कन्थारीगुल्मान्त-र्ग्गतानीलशिलायाः पश्चिमतः पुरोक्तव्यक्तपाषाणयुगले सङ्गता सीमा [॥] प्राक्प्रकाशितकृष्णसरःपुरोभागवर्त्तीनि षण्निवर्त्तनान्यभ्यन्तरी-कृत्य सुष्ठि(स्थी)कृतानि षष्टि-शतं , निवर्त्तनानि ॥ तस्मादेव नगरा-द्वरुणदिग्भागवर्त्तिन्यास्तलवृत्तेस्सीमा समाम्नायते तद्यथा। देशग्रामकूट-क्षेत्राद्वायव्या ककुभि त्रिशमीरक्तोपलाद् वायव्यामाशायामेकशम्या आख-ण्डलदिशायामेकदण्डान्तरादरुणपाषाणादाग्नेयकोणवर्त्तिनो विशालशमी-कन्थारीजालात्पश्चिमस्या दिशि श्रेष्ठितटाकदक्षिणजलप्रवाहनिर्ग्गमाद् वल्ल-भराजमार्ग्गात् पूर्व्वस्यामाशाया कन्थारीगुल्मात् सवसी-ग्राममार्ग्गाद्दक्षि-णतश्शमीकन्थारीकुञ्जात् कुबेरककुभो वायव्यायामाशाया ज्येष्ठलिङ्ग-भूमेर्निर्ऋत्या हरितकृष्णपाषाणात् पूर्व्वस्या दिशि वल्लभराजमा-र्ग्गात् पश्चिमस्यामाशायामुत्तरदिग्मुखप्रवृत्तमहाप्रवाहान्तर्गतकिभर-पाषाणाद् दक्षिणस्यां दिशायामन्धकारक्षेत्रात् पश्चिमसीम्नि प्राक्प्र-

कटीकृतादेशग्रामकूटक्षेत्राद् वायव्यां दिशि त्रिशमीशोणपाषाणे समागता । एवं पश्चिमदिग्वर्त्तीनि चत्वारिंशच्छतं निवर्त्तनानि ॥ शङ्ख वसतेर्व्वासवदिशि निवर्त्तनमात्रः पुऽप(पुष्प)वाटः पश्चिमदिशि च निवर्त्तनद्वय-द्वयदो (?) पुऽप(पुष्प)वाटः ॥ तस्य चैत्यालयस्य पुरप्रमाणमाख्यायते [।] पूर्व्वतः बाळवेश्वरपश्चिमप्राकारः पावकदिशि चर्म्मकारदेवगृहसीमान्तम् [।] तत्पश्चिमतः वारिवारणसीमां कृत्वा दक्षिणस्यां दिशि पुऽप(ष्प)वाटाङ्ग(?)जचैत्यपुरपुरः श्रीमुकरवसतेः पश्चिमस्या दिशि गोपुरपर्य्यन्तात् पश्चिमदिग्वर्त्तिदेवगृहद्वयमभ्यन्तरीकृत्य मरुदेवीदेवगृहस्य पश्चाद्भागादुत्तरस्या दिशि चन्द्रिकाम्बिकादेवगृहात् पूर्व्वतः मुकरवसतिं प्रविष्टीकृत्य रायराचमल्लवसर्तिं(तिं)दक्षिणप्राकारः ततः पूर्व्वतः श्रीविजयवसतिदक्षिणप्राकारः ई(ऐ)शान्यां दिशि कर्म्मटेश्वरदेवगृहं तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्तबाळवेश्वरपश्चिमसीमा [॥] देवनगरात्पश्चिमदिशि पुऽप(ष्प)वाटद्वयनिवर्त्तनक्षेत्र दत्तम् ॥ तस्य सीमा पृथक्क्रियते [।] परवसरसः पूर्व्वदिशि तपसीग्रामपथादुत्तरतो पुऽप(ष्प)वाटनिवर्त्तनमेक । गङ्ग-पेर्म्माडिचैत्यालयपुऽप(ष्प)वाटादुत्तरतो निवर्त्तनमेकं नागवल्लीवनम् । एवं गङ्गकन्दर्प्पभूपालजिनेन्द्रमन्दिरदेवभोगनिमित्त निवर्त्तनशतत्रयमात्रक्षेत्रं पुऽप(ष्प)वाटत्रयमुर्व्वीशदेशग्रामकूटाकारविष्टिप्रभृतिबाधापरिहारं मनोहरमिदम् ॥ श्लोक ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजाभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
पापादपेतमनसो भुवि भाविभूपाः ।

ये पालयन्ति मम धर्म्ममिमं समस्तं
तेषां मया विरचितोऽञ्जलिरेष मूर्ध्नि ॥

[यह शिलालेख धारवाड़ जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेकी ओर मिरज रियासतके लक्ष्मेश्वर तालुकेके प्रसिद्ध शहर लक्ष्मेश्वरके शङ्खवसति नामके मन्दिरमें पत्थरकी एक लम्बी शिलापर है। इसमें ८२ पंक्तियाँ हैं। अक्षर दशवीं शताब्दिकी पुरानी कर्णाटक (कन्नड़) लिपिके हैं। इसमें तीन विभिन्न शिलालेख समाविष्ट हैं।

पहला भाग—१ से लेकर ५१ वी पंक्तितक गङ्ग या कोङ्गु वंशका शिलालेख है। इसमें उल्लिखित दान, ८९० शक वर्षके व्यतीत होनेपर और जब विभव संवत्सर प्रवर्त्तमान था, मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा, के द्वारा जिन्हें गङ्ग-कन्दर्प भी कहते थे, जयदेव नामके एक जैन पुरोहित (पण्डित) को किया गया था। विभव संवत्सर शक ८९० ही था और शक ८९१ शुक्ल संवत्सर था, इसलिये शिलालेखका समय ठीक दिया हुआ है। यह दान पुलिगेरे (जिसका अर्थ होता है चीतेके तालाबका नगर) नगरकी कुछ भूमियोंका था। इस 'पुलिगेरे' नगरको मिस्टर फ्लीटने लक्ष्मेश्वरका ही पुराना नाम माना है। यह दान एक जैनमन्दिरके लिये, जिसे इसमें 'गङ्गकन्दर्प जिनेन्द्रमन्दिर' कहा गया है, किया गया था। इस मन्दिरको स्वयं मारसिंहदेवने बनवाया या उसका जीर्णोद्धार किया था।]

वंशावली इस तरह दी गई है:—

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (१-५१ की पंक्तियाँ)]

१५०

कडूर—कन्नड़

[शक ८९३=९७१ ई०]

[कडूरमें, किलेके दरवाजेके एक खम्भपर]

(पश्चिममुख) स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण-मुख्यर् देवेन्द्रसिद्धान्त-भटार-रवर पिरियशिष्यर् चान्द्रायणदभटाररवर-शिष्य-गुणचंद्र-भटाररवर-शिष्यर् श्रीमदभयणन्दि-पण्डित-देवर नाणब्बे-कन्तियर शिश्शिन्तियर्पडियर-दोरपय्यन पिरियरसि पाम्बब्बे तले-वरिदु मूवत्त-वरिसं तप गेय्दय्दं नोन्तुच्छम-ठाणमेरिदर्बरेदोनवर मगं विडि..............

(उत्तरमुख) परसे महा-प्रसाददोळोरेवकनिम्मडि-धोरनोल्दुतन्न्- ।

अरसुममौल्य-वस्तुगळुमं कुडे बूतुगनक्कनेन्दु विस्- ।
तरिसे धरित्रि जीय वेसनेनेने सन्दिवु सन्दवल्लेविन्द् ।
अरसु दलेन्दु पाम्बबेगळन्तु तपो-नियमस्तरादोर् (आदोर्) आर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मोनानुष्ठान-परायणे(यणे)यरप्प श्री-पाम्बब्बे-कन्तियरय्दं नोन्तुच्छम-ठाण-मेरिदर् । बरेदोनवर मगनर्हद्भक्तम् ।

(दक्षिण मुख) [ऊपरका श्लोक, जो 'परसे' इत्यादिसे शुरू होता है, यहाँ दुहराया गया है ।]

शक-काल ८९३ य प्रजापति-संवत्सरदन्तर्गत मार्गशिर-मासद शुद्ध-त्रयोदशियुं गुरुवार[द]न्दु अय्दं नोन्तुच्छम-द्राण मेरिदर बरेदोनवर मगं वि............

[पडियर-दोरपय्यकी ज्येष्ठ रानी पाम्बब्बेने,—जो कोण्डकुन्दान्वयके देशिय-गणके मुख्य देवेन्द्र सिद्धान्त-भटारके ज्येष्ठ शिष्य चान्द्रायणदभटारके शिष्य गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-पण्डित-देवकी (शिष्या) नाणब्बे-कन्तिकी शिष्या थी,—केशलोंच करनेके बाद, तपके पूरे ३० साल पूर्ण किये, और पाँच अणुव्रतोंको धारण करके उच्च अवस्थाको पहुँची। उसके पुत्र विद्दि ....से लिखा हुआ।

आगेके श्लोकमें उसके त्याग और तपकी प्रशंसा है। दक्षिण और पूर्व मुखकी तरफ भी ये ही लेख कुछ भेदके साथ, उसके अन्य दो पुत्रों, अर्हद्भक्ति और बि.......के द्वारा लिखाये गये हैं।]

[EC. VI, Kadūr tl., n° 1]

१५१

श्रवण बेल्गोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

१५२

श्रवण बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लगभग ९७५ ई० (फ्लीट)]

[देखो, जैन शि० ले० सं० प्रथम भाग]

१५३

[सुहानिया (ग्वालियर]-संस्कृत

[सं० १०३४=९७७ ई०]

सम्वतः। १०३४ श्री वज्रदाममहाराजाधिराज वइसाखवदि पाचमि * * *

संवत् १०३४ की वैशाख वदी ५ को महाराजाधिराज वज्रदाम (शेष लेख स्पष्ट नहीं है।)।

[JASB, XXXI, p 399, a, p. 411, t.]

१५४

पेग्गूर—कन्नड़

[शक ८९९=९७७ ई०]

[पेग्गूर (किग्गट्‌-नाड्‌में)में एक पाषाणपर]

स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतङ्ग ८९९ नेय ईश्वर-[सं] वत्सरं प्रवर्त्तिसे सत्या(त्य)वाक्य-कोङ्गिणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधि-राज कोळाळ-पुरवरेश्वर नन्दगिरिनाथ श्रीमत् राचमल्ल-पर्म्मनडिगळ् तद्वर्ष[ा]भ्यन्तर पा(फा)ल्गुण(न)-शुक्ल-पक्षद नन्दीश्वरं तल्प-देवसमागे स्वस्ति समस्तवैरिगजघटाटोपकुम्भिकुम्भ-स्तळ-स्फुटितानर्घ्य-मुक्ताफल-ग्रहण-मीकर-करासे-निवासित-दक्षिण-दोर्द्दण्ड-मण्डित-प्रचण्ड अण्णन-वण्ट वडवर-नण्टं श्रीमत् रकस वेद्दोरेगरेयनाळुत्तिरे भद्रमस्तु जिनशासनाय श्री-बेळ्गोळ-निवासिगळप्प श्री-वीरसेनसिद्धान्त-देवर वर-शिष्यर् श्री-गोणसेन-पण्डित-भट्टारकर वर-शिष्यर्[1] श्रीमत् अनन्तवीर्य्यय्यङ्गळ् पे[र्]ग्गोदूरं पोस-वादगमुमन् अभ्यन्तर-सिद्धियागे पडेदरदर्क्के साक्षी तोम्भत्तरुसासिर्व्वरुमय्-सामन्तरुं वेद्दोरेगरे-येळपदिम्बरुमेण्टोक्कलुमिद कावर्न्नाल्वर् म्मलेपरुमयूर्व्वरुमय्-दामरिगरु श्रीपुरुष-महाराजरदत्तियनावोनोर्व्वनळिदोम् वाणरासियुं सासिर्व्व-ब्राह्म-णरुं सासिर-कविलेयुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कु इदनारोर्व्वर् कादरवर्गे पिरिद्‌ पुण्यं चन्दणन्दियय्यन लिखितम् ॥ पेग्गोदूर वसदिय शासनम् ।

[शक नृपके सैकड़ों वर्ष बीतने पर जब ईश्वर नामका संवत्सर ८९९ वाँ चालू था:—

---

१ ये दोनों शब्दसमूह 'देवरवर शिष्यर्' तथा 'भट्टारकरवर शिष्यर्' भी पढ़े जा सकते हैं ।

और जिस समय सत्यवाक्य–कोङ्गिणिवर्म्म–धर्म्म–महाराजाधिराज राचमल्ल पेर्म्मनडिका, जो कोळालपुरके ईश्वर तथा नन्दगिरिके नाथ थे, राज्य था, उस समय श्रीमत्–रकस बेद्दोरेगरेपर राज्य कर रहा था। उससे श्री–बेल्गोलके निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य्यय्यने पे[र्]ग्गदूर तथा नयी खाई प्राप्त की। अनन्तवीर्य्यय्य गोणसेन–पण्डित भट्टारकके शिष्य थे और ये बीरसेन–सिद्धान्त–देवके शिष्य थे। यह लेख चन्द्रणन्दियय्यका लिखा हुआ है।]

[EC, I, Coorg. ins., n° 4.]

१५५

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

१५६

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़ तथा तामिल।

[विना काल-निर्देशका]

१५७

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

[देखो जैनशिलालेखसंग्रह, भाग १]

१५८

बिदरे—कन्नड़

[शक ९०१=९७९ ई०]

[बिदरे (चेकूर परगना) में, तालाबके व्यर्थ पड़े हुए बाँधपरके एक पाषाणपर]

स्वस्ति स (श) क–वर्ष ९०१ नेय प्रमातिक–संवत्सरद कार्त्तिक-मासदोळ् त्रिलोकचन्द्र-भटारर शिष्य रविचन्द्र- भटारर संन्यसनं गेय्दु मुडिपिदर् कोण्डकुन्दान्वयद देसिग- गणद भानुकीर्त्ति-भटारर् परोक्षविनयं माडिसिदर्

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (देवलापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया (Boulder) पर]

श्रीमतु कलुकरें-नाड् आळ्वरु चोक-जिनालयके मत्तिकेरेय नट्ट कळ चतुस्सीमान्तरेषु विट्ट दत्ति इदं किडिसिदवं कविले ब्राह्मणनुव कोन्द ब्रह्म······एय्दुगु

[कलुकरें-नाड्के शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरेंका दान दिया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 92.]

१७१

तिरुमलै—(नार्थ अर्काट)-तामिल

[१००५ ई०]

१ स्वस्ति श्री [।।] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे-

२ ल्वियुन् तनक्के युरिमै पूण्डमै मनक्कोळ क्कान्दळुर् च्चालै कलम-रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुड् गङ्गपाडियु

३ नुळ्म्बपाडियु न्तडिगै पाडियुड् कुडमलैनाडुड् कोल्लमुङ् कलिङ्गमुं एण्डिशै पुगळ्तर विळमण्डलमुं तिण्डिरल् वेन्रि त्त-

४ ण्डार्कोण्ड[चे]ळ्ळि् वळरुळिं एल्लायाण्डुं तोळुतेळ विळङ्गुयाण्डै चेळिआरैत्तेचु कोळ् श्रीकोवि-

५ राज इराजकेशरिपन्मरान श्रीइराजइराजदेवर्कु याण्डु २१ आवदु अलैपुरियुं पुनर् पोन्नि आरुडैय चोळन्

६ अरुमोळिक्कु याण्डु इरुपत्तोन्रावदेन्रुङ्गलै पुरियुमतिनिपुणन् वेण् किळान्

तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं समरविजय-लक्ष्मीकान्तं वै(चै ?)सान्वयसरोजवनमार्तण्डं नुडिदंतेगण्डं हयवत्स-राजं रूपमनोजं परबळ-सूरेकारं वैरिवंगारं नरसं(शं)कमीम चलदंकरामं गण्डरगण्डं वैरिभेरुण्डं प्रतिपन्नमन्दरं शरणागतव्रजपंजरं श्रीमत् **शान्तिवर्म्मरसर** वंशावतरमेन्तेन्दोडे [॥] श्रीमदमरेन्द्रविभवो-द्दामं संग्रामरामनूर्जिततेज भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोळ् **पृथ्वीराम**-ननुपरूपं ॥ तत्सुत ॥ आरूड(ढ)**वत्सराज**नुदारगुण विनुतकन्दुका-दित्य श्रीनारीकान्तं निर्जितवैरिप्रजनेनसि **पिङ्गं** सले नेगर्दं ॥ वृ ॥ अन्त-कनन्ते बन्दिदिरोळान्त**जम(व)र्म्म**न नोडिमुत्ते मारान्तोरनेकरं तविसि वस्तुगळं मदवारणंगळं कान्तेयरं तुरंगचयमं पिडिदित्तोडे मेच्चिरामयं दन्तियनित्तनन्तदुवे पेळदे **पिङ्ग** निन्न गेल (ल्लु)मं ॥ तदग्रपत्नि ॥ वृ ॥ पोगळल्लुम्बमप्प चरितं मिगे वण्णिसलब्जसंभवंगगणितमप्प रूपविभवं पतिभक्तियोळोन्दि सज्जनीकेगे नेलेयाद मान्तनद पेंपु समन्तळवट्ट **नीजिकब्बरसि**गे सन्दरुन्धति पेळ्ळ द्दोरेयेन्ददे दोस(ष) वल्लुदे ॥ तत्तनूज । क ॥ श्रीमदुदयाद्रिशिखरोद्दामोदयतपनविभवरूप कीर्ति-श्रीमहिमातिशय जयरामारमण जितारि **शान्त**नृपाळं ॥ दयेयिन्दोळिपन तेळिपिनिं गुणगणाळंकारदिं मार्ग्गनिर्ण्णयदिं तत्व(त्त्व)विचारदिं गमक-दिंदाहारभैषज्यसाभयशास्त्रामळदानदिन्दधिकनेन्दन्दोळिपिनिं **शान्ति-वर्म्म**न विख्यातियनोन्दे नाळिगेयोळिन्ने वण्णिपं वण्णिप ॥ तदग्रपत्नि ॥ श्रीवनिते ताने बन्दु महीवनितेगे तिळकमेनिसि **शान्त**न ललितश्रीवनि-तेयाद विभवमने वोगळवुदो **चन्दिकब्बे**यरसिय पेप ।

यतितारकापरीतः कण्डूरगणोरुकन्धिवृद्धिकरः । बाहुबलिदेवचन्द्रो जिनसमयनभस्तले भाति ॥ व्याकरणतीक्ष्णदंष्ट्रस्सिद्धान्तनख(खः) प्रमाणकेसरभारः । बाहुबलिदेवसिंहं (हः) प्रवादिगजतीव्रमदहरस्सं-

जयते ॥ वृ ॥ अवनीपाळानतश्रीपदकमळयुग तत्व(त्त्व)निर्णि (र्णि)ताद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमळवच(चः)श्रीवधूकान्तन-गोद्भवदर्प्पारण्यदावानळनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं रविचन्द्रस्वामी भव्या-म्बुजदिनपनघो (घौ)घाद्रिसद्वज्रपात ॥ कं ॥ कण्डूर्ग्गणाब्धिचन्द्रनख-ण्डितसुतपोविभासि खण्डितमदनं दिण्डीरपिण्डसुरवेदण्डयशःपिण्डन-र्हणन्दिमुनीन्द्र ॥ वृ ॥ कन्तुराजगजेन्द्रकेसरि भव्यलोकसुखाकरं कान्तवाग्वनितामनोरमनुग्रवीरतपोमयं शान्तमूर्तिं दिगंतकीर्तिविराजितं शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवनिळेश्वरवर्दितपादपंकरुहद्वय ॥ क ॥ नुतयाप-नीयसंघप्रतीतकण्डूर्ग्गणाब्धिचन्द्रमरेन्दी क्षितिवळे(ळ)यं पोगळिपन मुनतिवेत्तम्मौनिदेवदिव्यमुनीद्र् ॥ जितकर्म्मारातिभूपाळककुळतिळ काळकृताङ्घ्रिद्वय राजितभव्यव्रातपंकेरुहवनदिनपं चारि(रु)चारित्रमार्गा-चितसूक (कं) शब्दविद्यागमकमळभवं श्रीप्रभाचन्द्रधे (दे) वव्र (व्र) ति षट्तर्ककर्कशंरोणेयेने नेगर्दं । जैनमार्ग्गाब्धिचन्द्र [॥]

स्वस्ति स (श)कनृपकाळातीतसंवत्सरशतंगळ् ९०२ नेय विक्रम-संवत्सरद पौषशुद्ध दशमी बृहस्पतिवारदन्दिनुत्तरायण शं(सं)क्रमणदोळ् बाहुबलिभट्टारकरकालं कर्च्चि शान्तिवर्म्मरसं सुगन्धवर्त्तियल् तन्न माडिसिद बसदिगा वूर तन्न सीवटद पोलदोळगे सर्वबाधापरिहार-मागि बिट्ट मत्तर्न्नूरर्व्वत्तदर चतुराघाटद सीमेयावुदेन्दडे [।] तद्दर पोलद बदगिवोलद सन्दिनलीशान्यद गुड्डे । अल्लि तेकलेळेयकेरेय विळिय कल्लु अल्लि पडुवल् सीवट्टद सन्दिनोळ् नैरि (ऋ) तिय गुड्डे । अल्लि बडगल् सीवट्टद तद्दरपोलद संदिनल् वायव्वद गुड्डे [॥] मत्तं नी-जियब्बरसि तन्न मगं शान्तिवर्म्मरसं माडिसिद पिरिय बसदिगे तन्न सीवट पिरियपस(सु)ण्डिगे पोद बट्टेयिं तेक काडियूर पोलद·····नू

रुवतुं म(त्त)र्कैय्यं नमस्यमागि विट्टळा भूमिय चतुस्सी····र कुकुम्बा[ळ] पोलद सन्दिनलीशान्यद गुड्डे । अर्ळि तेक··· कुकुंवाळ सुगन्ध[व]र्त्तिय पोलद सन्दिनलाग्नेयद [गुड्डे ।]····गिनकूद···· गिनोळ[गे नै]रि[ऋ]तिय गु [ड्डे ।]········ वायव्य [द गु] ड्डे । इन्ति [नि] तु भूमियि····[हं]वीर्व्वरुं प्र[तिपाळि]सुवर [॥] मा····[य] मुना साग[र] दवर्ग्गे ण्डन् मु········वन्धरान्ध··········

[यह लेख भी उसी जैनमन्दिरसे लिया गया है जिसमेंसे लेख नं० १३०। यह पृथ्वीरामके पुत्र, प्रपौत्र तथा उनकी पत्नियोंके नाम बताता है। पृथ्वीरामके पुत्र पिट्टगके सम्बन्धमें एक ऐतिहासिक तथ्य वर्णित है, पर मि० जे. एफ. फ्लीट इस बातका निश्चय नहीं कर सके कि यह अजवर्मा कौन था जिसे पिट्टगने जीता था। लेखमें पिट्टगके प्रपौत्र शान्त या शान्तिवर्माके १५० 'मत्तर' भूमिके दानका उल्लेख है, जिसे उसने ९०३ शकमें किया था।[1] इतना ही दान शान्तिवर्माकी माता नीजिकब्बे या नीजियब्बेने सुगन्धवर्त्तिमें बनवाये हुए जैनमन्दिरको किया।]

[JB, X, p. 171–172, a; p. 204–207, t., p 208–212, tr. (ins. n° 3.)]

१६१

मथुरा,—संस्कृत

[स० १०३८=९८१ ई०]

[तीर्थंकरोंकी विशाल पद्मासनस्थ मूर्तियाँ]

इसका लेख साफ-साफ पढ़नेमें नहीं आता है। कुछ भाग पढ़ा जाता है, कुछ नहीं। परंतु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है। यह मूर्ति या लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यानगम्य है। डा० फूहररके मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर संप्रदायकी तरफसे हुआ था।[2]

---

[1] मूलमें "शक राजा कालके ९०२ वर्ष बीतने पर" है। [2] "Progress Report" for 1890–91, p. 16.

ये दोनों स्तम्भवत् (विशाल) मूर्तियाँ (विक्रम सं० १०३८ और ११३४ [शि० ले० नं. २११]) दिसम्बर १८८९ में, श्वेताम्बर संप्रदायके मालूम पडनेवाले मध्यवर्ती मन्दिरके पास मिली थीं।

महमूद गजनवी (गजनीका रहनेवाला) के द्वारा मथुराका विनाश ई० सन् १०१८ में हुआ। उक्त प्रतिमा (सं० १०३८=९८१ ई० की) इस विनाशसे पहिलेकी स्थापित हुई हैं और शि. ले. नं. २११ की इस घटनाके करीब ६० साल बाद। आक्रामकने चाहे-जितना विनाश किया हो, लेकिन यह स्पष्ट है कि जैन लोगोंके पास उनके पवित्र स्थान बिना किसी ज्यादा बाधाके बने रहे।]

[Antiquities of Mathura (ASI, XX), p 53, t]

१६२

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़-भग्न।

[वर्ष चित्रभानु=९४२ ई० (लू. राइस)]

[जैन शि० ले० सं०, भाग १]

१६३

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[जैन शि० ले० सं०, भा० १]

१६४

हेमावती—कन्नड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[हेमावतीमें, पूर्वकी तरफके खेतमें पाषाणपर]

उद्द-वळमेळेवरेम्बुदे ।

विद्दं सुन्नल्लि कडुपिनोळ् बहु-विधदिन्दू ।

उद्द-वळमेळेदु सुरिगुम् ।

विद्दमेनल् बलळद पोरगनेळेव-चेडङ्गम् ॥

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकाण्मे कोळ्व तेरनल्लदे ।
नेरेये वरल् तक्कडियल्लि विसुवल्लियें विस अरिदयिल्ल ।
परियना दिट्टि मुरिवल्लि कल्लुपिनोळ् मुरिदयिल्लिल्लिय विन्नणवन् ।
नेरेये कल्पदे वीरर वीरनं गिडेगळाभरणनं नेड्डिकल्ल ॥
आसुवनुं कूसुवनुम् ।
वीसुवनुं गडेय नेगळ्द तक्कडियोळेनुत्त् ।
आसदेयुं कुक्कदेयुम् ।
वीसन्देयु विद्द मेळेगुमेळेव-वेडङ्गम् ॥
एरगळरियदे मेण्टुकम्मगुळ्दु वरलणमरियदे तप्पा पिन्दम् ।
तेरेननरियदे भागमनिक्कियुं मूरेडेगल्लदे कट्टाड्डियु मुरिये पायिसिद ।
तुरुय कोन्दु धरेगेडेतेगे गेडेयिवनेनिसद ।
नेरेये कडु-जाणनेनिसल्के वर्कुमे गडेगळाभरणन कल्लदन्नम् ॥
कालगळ कय्गळ तुरगद ।
कोलगळ तिणिवुगळोळल्लि वब्बिसुतेळेगुम् ।
गेल्गुमेने नेगळ्द मार्ग्गदे ।
गेल्गुमे वणेदल्लि कीर्त्ति-नारायणनम् ॥

वनधि-नभो-निधि-प्रमित-संख्य-स(श)कावनिपाळ-काळमं ।
नेनेयिसे चित्रभानु परिवर्त्तिसे चैत्र-सितेतराष्टमी-
दिन-युत-भौमवारदोळनाकुळ-चित्तदे नोन्तु ताळ्दिदम् ।
जन-नुतनिन्द्र-राजनखिळामर-राज-महा-विभूतियम् ॥

[एरेव-वेडङ्गम्, कीर्त्ति-नारायणके युद्धमें शौर्य्यके कार्यों का वर्णन । (उक्त मितिको) अनाकुल चित्तसे व्रतोंको पालते हुए, प्रसिद्ध

इन्द्रराजने स्वर्गकी विभूति पाई-(अर्थात् मर गये)[१] ।]

[EC, XII, Sira tl., n° 27.]

१६५

श्रवण-वेलगोला—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं , भा. १.]

१६६

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ९९० ई० का]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

(सामने)..................सुद पञ्चमी-बृहस्पति वारदन्दु स्वस्ति ...यम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायणरप्प द्रविळ-संघद.... वद श्री-कोण्डकुन्दान्वयद त्रिकालमौनि-भट्टारक शिष्यर् श्रीमदिरिव-बेडेङ्ग ...ळन गुरुगळ् विमलचन्द्र-पण्डित-देवर् सन्यासन-विधियिं मुडिपि मुक्तियनेय्दिदर् ॥ (-पीछे) श्रुत-विमळादिचन्द्र.............. श्रीमनु..................पण्डिताह्वयप्नु-विमळचन्द्र-मुनिः ॥

नमो विमळचन्द्राय कळाकळित-मूर्त्तये ।

सत्त्वात् सद्-बुधसेव्याय शान्तामृतमयात्मने ॥

श्री-विमळचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डी हवुम्ब्बेया तङ्ग शान्तियव्वे तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनयं गेय्दर् ॥

[(साधु-गुणोंसहित), द्रविड-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-गच्छके त्रिकालमौनि-भट्टारकके शिष्य,—श्रीमद् ईरिव-बेडेङ्ग...के गुरु,—

---

१ उसका काल और अंतिमावस्थाका कथन वही है जो श्रवणबेलगोला नं० ५७ के शिलालेखमें हैं। इन्द्रराज अन्तिम राष्ट्रकूट राजा था।

विमलचन्द्र-पण्डितदेवने, संन्यास-विधिसे मरण कर, मुक्ति प्राप्त की। पण्डित पदके साथ विमलचन्द्रमुनिकी प्रशंसा।

विमलचन्द्र-पण्डित-देवकी गृहस्थ शिष्या इच्चुम्बेकी छोटी बहिन शान्तियव्वेने अपने गुरुके स्वर्गवासके उपलक्ष्यमें स्मारक खड़ा किया।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 11]

१६७

पञ्चपाण्डवमलै—तामिल

[काल लगभग ९९२ ई०]

श्री

१ स्वस्ति [॥]

२ [को] विरांजराज [क] ` [सर] 'व [न्] मर्कु याण्डु ८ आ [व]दुपडुवूर्क[ो]ट्टत्तुप्पेरुन्-तिमिरिनाट्टुत्तिरुप्प[ा]न्मलैप्पो-

३ गमागिय कूरग[न्पु]ाडि [इ] रैयिलि प[ळ्]ळिच्चन्दचै की [ळ्]-पु-[प]ग[लां]ड[इ]लाडर[ा]जर्गळ् कर्पूर-विलै को [ण्डु इ] द्र[मे्]मङ्क

४ ट्टुप्पोगि[न्]रडेन् [रु उ]डैयार् इला[ड]राजर् पु[ग]ळ्वि-प्पवर्-[ग] ण्डर् मग[ना]र् [वी]रशोळर्तिरु[प्पान्]मलैदेवर्-त्तिरुव-

५ [डित्तो]ळु [देळुन्]द[रु]ळि इ [रु]उक इ[व]र् देवियार् इलाडमह[ा]देवि[य]ार् कर्पूर-विलैयुमन्नियाय[य]त्तावद[ण्ड]विरै [यु] म [ो]-

६ ळिन्द[रुळ वे]ण्डुमेन्रु विण्णप्पञ्जेय् [य उ]डै[या]र् [वी] र-शोळर् कर्पूर-विलैयुमन्नियाय[य] वात्तदण[ड]विरै-

७ युमो [ळ्] ि ञ्जोमेन्ररुच्चेय्य अरि[यु]ऊर् किळ [वन्]ा गि[य वी] र-शोळवि-लाड-प्पेर [र्] ` य[नु]डैयार् .[क] न्मियेया]-

८ णत्तियागविट्टु[1] कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-[वा] वदण्ड[व्]-इरैयुमे। ञ्जु शासनाञ्चेय्द-पडि [।] इट्टु [व]-

९ ळ [ट्] ट कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-वावदण्डव्-इरैयुमिप्पळ्ळिच्चन्द-त्तैक्कोळ्[व्]ान् गङ्गैयि-

१० डै [कुमरिय्] इडैच्चेय्दार् शे[य्] द पा [व]ङ्कोळ्वारिट्टुवळ्ळदिप्प-ळ्ळिच्चन्दत्तै केडुप्पार वळ्ळ[रै]

११ ....[न]रु[व] [।] [इ]-द्द [र्म्मत्]तै [र]क्षिप्पान् पादधूळिय् एन्-[रले] मे[ल]न [।] अर[म]रवर्क अरमल्ल तु[ण]ै यिल्लै ॥

[यह शिलालेख तमिल गद्यकी ११ पंक्तियोंका है। लेखकी दूसरी पंक्तिमें राजराज-केशरीवर्मन्के राज्यका ८ वा साल इसका काल बताया गया है। प्रस्तुत लेख महाराजा राजराज चोलके राज्य-कालका है। यह ९८४-८५ ई० में गद्दीपर बैठे थे। इस लेखमें किसी विजयका वर्णन नहीं है। इस शिलालेखके नीचे एक पशु बनाया गया है, वह चीता होना चाहिये, क्योंकि चोल राजाओंका वह चिह्न रहा है।

लेखमें (पंक्ति ३) लाटराज वीरचोलका एक शासन है। वह चोल राजा राजराजका कोई अधीनस्थ राजा होना चाहिये, क्योंकि राज्यकाल उसीका (राजराजका) दिया हुआ है। लाटराज वीर-चोल पुगळ्विप्पवर गण्डका पुत्र था। वीर-चोल और उनके पूर्वजोंके नामके पहले लाटराज ऐसा विरुद लगा रहनेसे मालूम पड़ता है कि ये लोग पहले किसी समय लाट (गुजरात) से आये थे।

यह अभिलेख इस बातका उल्लेख करता है कि अपनी रानीकी प्रार्थना पर वीर-चोलने तिरुप्पान्मलैके देवताके लिये (पं० ४) कूरगन्पाडि गाँवसे कुछ आमदनी बाँध दी थी।

यद्यपि चैत्यालयका नाम सिर्फ 'तिरुप्पान्मलैका देवता' दिया गया है, परन्तु 'पळ्ळिच्चन्दम्' इस शब्दसे मालूम पड़ता है कि यह कोई जैन

---

१ 'इन्द' पढ़ो।

चैत्यालय होना चाहिये। शिलालेख नं० ११५ से भी यह निर्णीत होता है। उसमें यक्षिणी और नागनन्दि गुरुकी प्रतिमा है। यद्यपि यक्षिणियोंको बौद्ध और जैन दोनों ही मानते हैं, परन्तु नागनन्दि यह जैन नाम है।]

लेखमें कूरगम्पाडिके 'पल्लिचन्दं' की आमदनी दो तरहकी बताई गई है:- एक तो कर्पूरविलै (कपूरके खर्च) की, दूसरी 'अन्नियाय वावदण्ड-विरै' की। कपूरखर्चकी बात तो ठीक समझमें आ जाती है, लेकिन उत्तरकी आमदनी 'अन्नियाय-वावदण्डविरै' का क्या अर्थ है, सो स्पष्ट नहीं है। इसके भी दो अर्थ किये जाते हैः एक तो अन्याय वावदण्ड (जुलाहोंका करघा) इरै (कर)। इसका अर्थ होगा 'अनधिकृत करघोंपरका कर' (The tax on unauthorised looms)। दूसरा अर्थ इसका यह हो सकता है अन्याय+आव+दण्ड+इरै। 'आव'का अर्थ होता है बाणोंका तूणीर। इसका तात्पर्य यह है कि विना अधिकारपत्र पाये जो धनुषबाणका प्रयोग करते थे उनपर जुर्माना (दण्ड) किया जाता था।

[EI, IV. n° 14, B.]

१६८

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६९

कुम्बरहल्लि—कन्नड़—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १००० ई०]

[कुम्बरहल्लि (कूडनहल्लि परगना) में, बसवगुडिकी दक्षिणी दीवालपर]

स्वस्ति श्रीमदजितसेनपण्डितदेवर शिष्यण ना•••क पुणि-समय

[इसमें अजितसेन-पण्डितके शिष्यका वर्णन है।]

[EC, III, Mysore tl., n° 31.]

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (देवकापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया (Boulder) पर]

श्रीमतु कलुकरें-नाड् आल्वरु चोक-जिनालयके मत्तिकेरेय नट्ट कल चतुस्सीमान्तरेषु विट्ट दत्ति इदं किडिसिदवं कविले ब्राह्मणनुव कोन्द ब्रह्म······एय्दुगु

[कलुकरें-नाडूके शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरेंका दान दिया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 92.]

१७१

तिरुमलै—(नार्थ अर्काट)—तामिल

[१००५ ई०]

१ स्वस्ति श्री [।।] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे-

२ ल्वियुन् तनक्के युरिमै पूण्डमै मनक्कोळ क्कान्दलूर् च्चालै कलम-
रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुइ् गङ्गपाडियु ·

३ नुळम्बपाडियु न्ताडिगै पाडियुइ् कुडमलैनाडुइ् कोल्लमुइ् कलिङ्गमुं
एण्डिशै पुगळ्तर विळमण्डलमुं तिण्डिरल् वेन्रि त्त-

४ ण्डार्कोण्ड[त्ते]ळिल् वळरुळि-एल्लायाण्डुं तोळुतेळ निळ्ळुयाण्डे
चेळिआरैत्तेचु कोळ् श्रीकोवि-

५ राज इराजकेशरिपन्मरान श्रीइराजइराजदेवर्कु याण्डु २१
आवदु अलैपुरियुं पुनर पोन्नि आरुडैय चोळन्

६ अरुमोळिनकु याण्डु इरुपत्तोन्रावदेन्रुङ्गलै पुरियुमतिनिपुणन् वेण्
किळान्

७ गणिशेखरमरुपोरचुरियन्रन् नामत्ताल् वामनिलै निरुकुड्-
८ कलिन्चिह्नु नीमिर् वैय्यौमलैक्कु नीडुळि इरुमरुङ्कुं नेल् विळैय-
९ क्कण्डोन् कुलै पुरियुं पडै औरचर कोण्डाडुं पादन गुणवीरमा-
मुनिवन्
१०·कुळिर् वैय्यौक्कोवेय् [॥]

[यह अभिलेख कोविराजाराजकेसरिवर्मन्, उर्फ राजराज-देवके २१ वें वर्षमें अभिलिखित है, तथा पोन्नि, अर्थात्, कावेरी नदीके स्वामी 'शोरन् अरुमोरी' के इक्कीसवें वर्ष में (शब्दोंमें)।

लेख बताता है कि किसी गुणवीरमामुनिवन्ने एक नहर या मोरी (Sluice) गणिशेखर-मरु-पोर्चुरियन् नामके उपाध्यायके नामसे बनवाई थी। तिरुमलै चट्टानका उल्लेख "वैय्यौमलै" नामसे है।]

[South Indian Ins, I, n° 66 (p. 94–95), t. & tr.]

१७२

बेलूरु—कन्नड़-भग्न

[शक ९४४=१०२२ ई०]

[बेलूरु (कोत्तत्ति परगने)में, तालाबपर दुर्गा-देवीके पीछेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-रिपु-नृप-कुम्भि-कुम्भ-दळन-पञ्चास्य समुदित-श्रीम···· ळ-बिमुक्त-चोळ-भूपाळ····लितः····जित-वीर-लक्ष्मी आश्रित-भक्त-मला-पकर्षण भूमिसञ्चरण जय-मूल-स्तम्भं श्रीमद् अ····गङ्गमण्डलेश्वर प्रभु-पद्म-युग्माशोक-भोगिकाश्रित-भ्रमद्-भ्रमर जित-रिपु संसित-समर-प्रताप राज्य-भार-धुरन्धरं अमात्य-समिति-विराजमानम् सत्यत्व-नाभि-कानीनम् समर-जित-भूप-जीव-प्रदनुं अतिपूताचरणम् रिपु-खरकिरणम्········ तिगाङ्गनेयं सौच-गाङ्गेयं शरणागत-वज्र-पञ्जरम् रिपु-कञ्ज-कुञ्जरम् तन्त्र-रक्षामणि मन्त्री-चिन्तामणि विनेय-विळासम् श्रीमत्-पेर्ग्गडे-हासम्

निश्व-विस-हासर् प्पतिहिताभरणम् ॥ शक-नृप-का... सं ..
शतङ्गळ् ९४४ नेय दुर्म्मुखि (दुर्म्मति) संवत्सरद फाल्गुण-मास-सुद्ध
पञ्चमी-सोमवार पुनर्वसु-नक्षत्रदन्दु गङ्ग-पेर्म्मनडिगळु कर्न्नाटनाळुत्त
मिरे तम्म ख-दोराळदन्दुं.......नव जिनालयके पेर्म्मनडि जीवितम्
.......द बलोर-कट्टलाळ्वाद केरेय मेट्टुकं वोग्सि कट्टेय कट्टिसि
तूवनिरसि मुन्नं तव....कोळ्ग मण्णु त्रिट्ट दोन्द...केरेंगे.........मुमं
बिट्ट मिदनळिद कोटि-कविलेयं ब्राह्मणरु काशियुमनल्लुकिरे

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[इस लेखमें 'पेर्गोडे हासम्' के द्वारा, उक्त मितिको, बलोर-कट्टके गहरे तालाबकी सीढ़ियोंके बनवाने, बांधके निर्माण कराने, नहर या मोरीके बनाये जाने, तथा...............एक 'कोलग' भूमिके देनेका जिक्र है। उसके समयमें कण्णाट (कर्नाटक) पर गङ्ग पेर्म्मनडि शासन कर रहे थे। यह पुण्यकार्य पेर्म्मनडिके दीर्घजीवनकी कामनाके लिये उसकी सरकारके स्थानमें एक नये जिनालयके रूपमें किया गया था।]

[EC, III, Mandya IL, n° 78]

१७३

मथुरा—संस्कृत

[संवत् १०८०=१०२३ ई० सन्]

१ ओ श्रीजिनदेवः सूरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत् ।
आचार्यविजयसिङ्ग-
२ स्तच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥ [१ ॥]
सुश्रावकैर्नवग्रामस्थानादिस्थै स्वसक्तितः ।

---

१ सवत्सर 'दुर्म्मुखि' दिया हुआ है. यह स्पष्टतः गल्तीसे लिखा गया है। इसकी जगह 'दुर्म्मति' होना चाहिये जो शक ९४४ से मेल खाता है।

३ वर्द्धमानश्चतुर्बिंबः कारितोयं सभक्तिभिः ॥ [॥ २]
संवत्सैरे १०८० थंभकप-
४ प्पकाभ्यां घटितः ॥ ओं[1]

अनुवादः— ॐ। श्री जिनदेवसूरि हुए; उसके बाद श्री भावदेव हुए। उनके शिष्य आचार्य विजयसिङ्घ (विजयसिंह) हैं। उनके उपदेशसे नवग्राम, स्थान आदि (शहरों) में रहनेवाले सुश्रावकोंने स्वशक्ति और स्वभक्तिके साथ वर्धमानकी चतुर्बिंब (सर्वतोभद्र) प्रतिमाका निर्माण करवाया। यह प्रतिमा १०८० [विक्रम] संवत्में थंभक और पप्पक शिल्पियोंके द्वारा बनकर तैय्यार हुई थी। ओं ॥

[EI, II, n° XIV, n° 41]

१७४

तिरुमलै – तामिल

[१०२१ ई०]

१ स्वस्ति श्री [॥] तिरुमन्नि वळरविरु निलमडन्दैयुं पोऱ्चयप्पावैयुञ् चीर्त्तनिच्चेल्वियुन् तन् पेरुन् देवियराकि इन्पुरु नेडु तियल् ऊळियुळ् इडैतु-
२ रैनाडुनतुडर् वनवेलिप्पडर् वनवासियुञ् चुळ्ळिच्चुळ् मदिट्को-ळ्ळिप्पाकैयु नण्णर्करु मुरण् मण्णैकडकमुं पोरु कडल् ईळत्तरशर् तमुडियुं आड्ग-
३ वर् देवियरोङ्केळिन् मुडियुमुन्नवर् पकल्त्तेन्नवर् वैत्त सुन्दर-मुडियुं इन्दिरनारमुन्तेण्डिरै ईळमण्डलमुळुवदुं एरि पडैक्के-रळर्

१ यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

४ मुरैमैयिर्शुङ्कुलतनमाकिय पळर् पुगळ् म
मालैयुम् चङ्कादिर् वेलैत्तोल् पेरुङ्कावर् पल
चेरुविर् चेन-

५ विल् इरुपत्तोरु कालेरचुकळे कट्ट परशुरामन् मेवरुम् शान्ति
मत्तिववरण् करुति इरुत्तिय चेम् पोर्रिरुच्चकु मुडियुं भयङ्कोडु
पळि मिग मुशङ्गियिल् मु-

६ दुकिट्टोळित्त जयसिङ्गन् अळप्पेरु पुगळोडु पीडियल् इरट्ट-
पाडि एळरै इलकमु नवनेदिकुल प्पेरुमलैकळुं विकिरमवीरर्
शक्करकोड्डमु-

७ मुदिरपडवळै मदुरमण्डलमु कामिडैवळैय नामणैकोणमुं
वेङ्गिलैवीरर् पञ्चप्पळ्ळियुं पाचुडैप्पळनन् माशुणिदेशमु
अयर्वि-

८ ल् वण् किर्त्तियातिनगर वैयिर् चन्दिरन् रोल् कुलत्तिरतरनै
विळैयमर्कळत्तुक्किळैयोडु पिडित्तुप्पल तनत्तोडु निरै कुल
तनकुवै-

९ युम् चिद्दरुम्चेरि मिळैयोड्डविषैयमुं भूशुरर् चेर नल्कोशलै-
नाडुन्तन्मपालनै वेम् मुनैयळित्तु वण्डुरै चोलैत्तण्डयुत्तियु-
मिरण

१० शूरनै मूरनूर त्ताकि त्तिकणै किर्त्तिचकणलाडमुङ् गोविन्द-
चन्दन् माविळिन्तोडत्तङ्गाद चारल् वङ्गाळदेशमुन्तोडु
कडर्शङ्गुकोडून् महीपालनै

११ वेञ्जम वळाकत्तञ्चुवित्तरुळि ओण्टिरल् थानैयुं पेण्डिर् पण्डार-
मुनित्तिल नेडुङ्कडलुत्तिरलाडमुं वेरि मणर्रिर्चेत्तेरि पुनर्गङ्गै
शुमापू-

१२ प्पोरु तण्डाइकोण्ड कोप्परकेशरिपन्मरान उडैयार् श्रीराजेन्द्रचोळदेवर्कु याण्डु १२ आवदु जयङ्गोण्डचोळमण्डलत्तु पङ्गाळनाट्टु नडुविल्

१३ वगैमुगैनाट्टुप्पळ्ळिच्चन्दं वैगवूर् तिरुमलै श्रीकुन्दवैजिनालयत्तु देवर्कु प्पेरुंबाणपाडिक्करैवळिमळ्ळियूर् इरुक्कुंव्या-

१४ पारि नन्नप्पयन् मणवाट्टि चामुण्डप्पै वैत्त तिरुनन्दाविळक्कु [॥] ओन्रिनुक्कुक्काशु इरुपदुं तिरुवमुदुक्कु वैत्त काशु पत्तुम् [॥]

[यह अभिलेख कोपरकेसरिवर्मन्, उर्फ उडैयार् राजेन्द्र-चोल-देवके बारहवें वर्षका है। इसके आरम्भमें उन सभी देशोंके नाम दिये हुए हैं जिनको इस राजाने जीता था। उनमें हमें ७॥ लाख भूमिकरवाले 'इरट्टपाडि' का पता चलता है जिसे राजेन्द्रचोलने जयसिंहसे लिया था। इस देशको उन्होंने अपने राज्यके ७ वें और १० वें वर्षके मध्यमें जीता होगा। इस अभिलेखका जयसिंह 'पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीय' (लगभग शक ९४० से लगभग ९६४ तक) के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। जब कि राजेन्द्र-चोल और जयसिंह तृतीय दोनों एक दूसरेको जीतनेकी डींग मारते हैं, तब हमें यह मान लेना चाहिये कि या तो सफलता दोनोंको क्रमशः मिली होगी, या चिर विजय किसीको भी नहीं, मिली होगी।

दूसरे दो देश, जिन्हें राजेन्द्र-चोलका जीता हुआ कहा जाता है, 'इडैतुरैनाडु' और 'वनवासि' हैं। पहला 'ईडतोरे' देश है, जोकि मैसूर जिलेके एक तालुकेका हेड-क्वार्टर है, दूसरा बम्बई प्रान्तके 'नॉर्थ केनारा' जिलेका 'वनवासि' है।

"कोल्लिप्पाकै" मि० फ्लीटके अनुसार, पश्चिमी चालुक्य राजा ... तृतीयकी राजधानियोंमेंसे एक था।

'ईरम्' या 'ईर-मण्डलम्' से मतलब सीलोन (लङ्का) से है। तेन्न वन्=‘दक्षिणका राजा' से प्रयोजन पाण्ड्य राजासे है। उसके ... अभिलेख कहता है कि उसने पहिले 'सुन्दर' का मुकुट सीलोनके राजाको दे दिया था जिससे राजेन्द्र-चोलने पुनः वह सुन्दरका मुकुट ले लिया। वर्तमान लेखमें 'सुन्दरका मुकुट' से मतलब 'पाण्ड्य राजाका मुकुट' मालूम पड़ता है। यहाँ 'सुन्दर' कोई पाण्ड्य-वंशका राजा मालूम पड़ता है। उसका नाम लेखके कर्त्ताने नहीं दिया और न सीलोनके राजाका नाम जिसे राजेन्द्र-चोलने जीता था। आगे लेख यह भी बताता है कि राजेन्द्र-चोलने 'केरळ' अर्थात् मलबारके राजाको जीता था। उसने 'शक्कर-कोट्टम्' के राजा विक्रम-वीरको भी हराया था। लेखका 'मदुरा-मण्डलम्' पाण्ड्य देश है, जिसकी राजधानी मदुरा थी। 'ओड्ड-विषय' उड़ीसा है। 'कोशलैनाडु' दक्षिण कोसल है, जो जनरल कनिंघमके अनुसार, महानदी और इसकी सहायक नदियोंकी ऊपरकी घाटी है। 'तक्कणलाडम्' और 'उत्तिरलाडम्' से मतलब क्रमशः दक्षिणी और उत्तरी लाट (गुजरात) से है। पहला किसी 'रणशूर' से लिया गया था। आगे बताया जाता है कि राजेन्द्र-चोलने 'बङ्गालदेश' अर्थात् बङ्गाल को किसी गोविन्दचन्द्रसे जीतकर उसका विस्तार गङ्गातक किया था। शेष देश और राजाओंके नाम, ई० हुल्ज (E. Hultzsch) कहते हैं कि, वे पहचान नहीं सके।

लेखमें तिरुमलै, अर्थात् 'पवित्र पहाड़' का वर्णन है, और वह इसके ऊपरके मन्दिरको जिसे 'कुन्दवै-जिनालय' कहा गया है, दिये गये दानका उल्लेख करता है। यह 'कुन्दवै' कौन थी, इसके विषयमें ऐतिहासिकोंके दो मत हैं।

इस शिलालेखके अनुसार, तिरुमलै पहाड़की तलहटीमें जो गाँव है उसका नाम 'वैगवूर्' है। यह 'मुगैनाडु' का है, जो 'जयङ्कोण्ड-चोल मण्डलम्' के 'पङ्गळनाडु' का एक डिवीजन (भाग) है।

[South Indian Ins., I, n° 67 (p. 95–99)

१७५

चिक्क-हनसोगे—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०२५ ई० का]

[चिक्क-हनसोगे (हनसोगे परगना)में, जिन-बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

(ग्रन्थ और तामिल अक्षर)

श्री-राजेन्द्र-चोळन जिनालयं देशिगणं बसदि पुस्तक-गच्छम्

[राजेन्द्र-चोळ जैनमन्दिर, देशि-गण और पुस्तक-गच्छकी बसदि]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 21]

१७६

खजुराहो—संस्कृत

(सं० १०८५=१०२८ ई०)

संवत् १०८५ । श्रीमत् आचार्य पुत्र श्री

ठाकुर श्री देवधर सुत । श्री सिवि

श्री चन्द्रयदेवः श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमा कारी ।

[इस लेखमें स्थापित प्रतिमाका नाम शान्तिनाथ है, सेतनाथ नहीं, जैसा कि लोगोंमें प्रसिद्ध है । सम्वत् (विक्रम) भी साफ १०८५ दिया हुआ है ।]

[A. Cunningham, Reports, xx i p, 61.]

१७७

मुल्लूर—संस्कृत

[विना काल निर्देशका । लगभग १०३० ई० (लू० राइस) ।]

[मुल्लूरमें, बस्ति मन्दिरमें शान्तीश्वर बस्तिके सामने पादद कल्लु पर]

गुणसेन-पण्डितस्य गुरोः पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवस्य श्री-पादम् ।

[गुणसेन-पण्डितके गुरु पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके पवित्र पदचिह्न या पादुकाएँ ।]

[EC, IX, Coorge tl., n° 41]

१७८

अङ्गडि—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०४० (?) ई०
(लू० राइस)।]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, हरमकि दोड्ड-डडवेमें पाषाणपर]

.................राज्यं गेये....द्रविणान्वयद मूल-सं.........

....पण्डित...............तु तर्काब्धाळिताभा....जलधि-यशो...कुतू-हल...शय वज्रपाणि पण्डित-चरण ॥ एनिसि सले गङ्गवाडिय। मुनि-वररिं राजमल्ल-भूपालकनीमनु-नीति-मार्गेनभयं । जन-पति-सम्य-क्त्व-भार-नृपतिय गुरुगळ् ॥ वृ ॥ इरदापनिगळ्ळुळिं तळ...व्यत्त हो....। दुरितारण्यमनेय्दे सुड्डु सोसवूरोळ् विळ्द कालान्तदोळ् । ....रे सन्यास-विधानदिं मुडिपि पूज्यं वज्रपाणि-व्रतीश्वररत्युत्तम-मुक्तियं पडेदरेम् पुण्यवन्तर् नो.... ॥

(बायीं ओर).............रविकीर्तिमुनीन्द्रनेन्दु पट्टविोये पेळ्देनेळ्ळ कल्नेले-देवर साहसोक्तियम् ॥ श्रीमत्-कल्नेले-देवर्त्तम्म गुरुगळ्गे निषिधिगेयं माडिसिदर् मङ्गळ

[द्रविणान्वय, मूलसंघके ..पण्डितके शिष्य वज्रपाणि-पण्डितके चरणोंमें जब · राज्य कर रहा था:-गङ्गवाडिके मुनियोंमें प्रसिद्ध राजा राजमल्ल था। इसके गुरु वज्रपाणि-व्रतीश्वरने सोसवूरमें अपना जीवन व्यतीतकर अन्तमें संन्यास-मरण धारण किया और उन्हींका यह स्मारक है।]

[EC, VI, Müdgere tl., n° 18]

१७९

ब्या(बया)ना (राजपूताना)—संस्कृत

[सं० ११००=१०४४ ई]

[IA, XIV, p. 8-10 n° 151, t. & a.]

---

१ यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

१८०

दोड्ड-कणगालु—कन्नड़।

[वर्ष तारण=१०४४ ई० ? (लू० राइस) ।]

[दोड्ड-कणगालुमें, गौडके खेतमें एक दूसरे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गुळेश्वरद बळिय•••••••शुभचन्द्र-देवर प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प प्रभाचन्द्र-देवर निसिधि तारण-संवत्सर-चैत्र-शुद्ध-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु मुक्तरादरु।

[श्री-मूलसंघ देसिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय और इङ्गलेश्वर बलिके•••शुभचन्द्र-देवके प्रिय ज्येष्ठ शिष्य प्रभाचन्द्र-देवकी समाधि (निसिधि) । (उक्त वर्षमें) उन्हें छुटकारा मिला, अर्थात् स्वर्गगत हुए।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 56]

१८१

बेळगामि—कन्नड़

[शक ९७०=१०४८ ई०]

[सोमेश्वर मन्दिरके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चाळुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर विजय-राज्यं प्रवर्त्तिसे तत्पाद-पल्लवोपशोभितोत्तमाङ्ग स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं वनवासि-पुर-वरेश्वरं महालक्ष्मी-लब्ध-वर-प्रसादं त्याग-विनोदमायदाचार्य्यनसहाय-शौर्य्यं गण्डर गण्डं गण्ड-भेरुण्ड मूरु-रायास्थान-कलि बिरुद-मण्डलिक-वृषभ-शंकरं कलिगळ मोगद कयि बिरुदरादित्यम् प्रत्यक्ष-विक्रमादित्य जगदेक-दानि-

नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं चा-ण्ड . ..
बनवासि-पन्निर-च्छासिरमनाळुत्तमिरल् राजधानि-बळ्ळिगावेय नेऽ.
वीडिनोळ् शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-
त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु जजाहुति-श्री-शान्तिनाथ-सम्बन्धियप्प
बळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारकर-शिष्यरप्प केशवनन्दि-अष्टो-
पवासि-भळा(ट्टा)रर बसदिगे पूजा-निमित्तदिं धारा-पूर्व्वक जिड्डुळिगे
७० र बळिय राजधानि-बळ्ळिगावेय पुळ्ळेय-बयलोळ् मेरुण्ड-गळेयोळ्
कोट्ट गळ्दे मत्तरय्दु अदर सीमे (सीमाओंकी चर्चा)

धर्म्मेण शौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।
गण्ड-भेरुण्ड-सादृश्यो न भूतो न भविष्यति ॥
(इमेशाके अन्तिम श्लोक)
वनवासे-देसदोळगण ।
जिन-निळयं विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।
मुनि-गण-निळयमिवं रा- ।
यन बेसर्दि नागवर्म्म-विभु माडिसिदम् ॥

[जिस समय, (इमेशाकी चालुक्य उपाधियों सहित), त्रैलोक्यमल्ल देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान था'—बनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-भेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदों सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस बनवासी १२००० पर शासन कर रहा था;—बळिळगावे राजधानीसे, (उक्त मितिको), जजाहुति शान्ति-नाथके साथ सम्बद्ध बळगार गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि-भट्टारकी बसदिमें पूजा करनेके लिये, जिड्डुळिगे-सत्तरमें, राज-धानी बळ्ळिगावेके मृगवनमें, 'भेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया। (भूमिकी सीमाएँ) ।

गण्ड-मेरुण्ड' की प्रशंसा। इमेशाके अन्तिम श्लोक।
बनवासे देशमें, जिन-निवास, विष्णु-निवास, ईश्वर-निवास और मुनिगणके लिये निवास। ये, रायकी आज्ञासे, नागवर्म्मा-विभुने बनवाये।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 120]

१८२

कल्भावी—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक २६१ (?)

ॐ (॥) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्त्यमोघवर्षदेव-परमेश्वर-परमभट्टारक-विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं कुवलालपुरवरेश्वरं पद्मावतीलब्धवरप्रसादितं कोङ्गुणि-पट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजयमेरीनिर्घोषणं भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणं सकलभूपालमौलिमाणिक्यचूडारत्नरञ्जितचरणं विद्विष्टमनोरमालङ्कारहरणं सारस्वतजनितभाषात्रयकविताललितवाग्ललनालीलाललामं गजविद्याधामं श्रीमत्-शिवमाराभिधानसैगोट्टगङ्ग-पेर्म्मानडिगळ् मरदलुमेतेयागे गङ्गवाडि-तोम्भत्तारु-सासिरमं सुखसङ्कथाविनोददिं प्रतिपाळिसुत्तिल्दु कादलवळ्ळि-मूवत्तरोळगण कुम्मुदवाडदोळ् जिनेन्द्रमन्दिरमं माडिसिदनदे दोरेयदेन्दोडे ॥ वृ ॥

इदु गङ्गाधीश्वर-श्रीगृहमिदु विलसद्गङ्गभूपालराम्नायद
कीर्तिश्रीविहारास्पदकरमिदु गङ्गावनीनाथरौदार्य्यद
जन्मस्थानमेम्बन्तिरे विबुधजनानन्दमं भव्यसंपत्पदमं
सैगोट्ट-पेर्म्मानडि जिनगृहमं माडिदं भक्तियिन्दम् ॥

आ जिनमन्दिरक्के । वृ० ।

विमळश्रीगुणकीर्तिदेवरवरंतेवासिगळ्-
नागचन्द्रमुनीन्द्रर्तदपत्यरुद्घजिनचन्द्राख्य-
र्तदीयात्मजर्ईमिताघश्शुभकीर्तिदेवरेसेद-
र्तच्छिष्यरुवद्वचो-रमणीयर्स्सले देवकीर्तिगुरुगळ्वादीभकण्ठीरव[१॥]

आ परमेश्वरर्प्परवादिविध्वंसिगळु विदिताशेषशास्त्रर मैलापान्वय मेनिसिद [क]ारेयगणगगनचूडामणिगळुमप्प देवकीर्तिपण्डित-देवर कालं कर्च्चि ॥ ॐ शकवर्ष २६१ नेय विभवसंवत्सरद पौष्य (ष)-बहुल-चतुर्द्दशीसोमवारमुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु सैगोट्ट-गङ्ग कुम्मुदवाडमेम्बूरं विट्टनल्लिये मत्तं दानसालेगे पोल्तुम कुम्मुदब्बेय देगुलदिं वडग पोगि मूड मुखं केरिवुमं वसदियिं मूडलु दानसालेगे पन्निर्कयि-निवेसणमुमं । ऊरिं मूड सपार्सि(?)गे-गर्द्देयुं वयलुमं विट्ट-॥-ना ग्रामद सीमेयेन्तेन्दोडे । आलिगोण्डदिं । सिडिलनेरेलिं । समेयदातनकेरेयिं । मलप्प-बूदनि । तोळप-बळप-बिळियब्बिरियिं । गङ्गरोळ्ळादुव-संकिय-केरेयिं । हिचलगेरेय कोडियिं । निन्दवेलिं । सिन्दगिरि-बोम्भागदिं । सून्दिगेरेय नीर तट-बोम्भागदिं । सिङ्गस-गेरेयिं । कदिकोट्ट-बळिवळि-गर्द्देयिन्दोळ-गुळ्ळ भूमि कुम्मुदवाडक्के ॥ मत्तमूरिं तेङ्क दानसालेय पोलक्के एरप-केरेय मूडण कोडिय वडगण गुत्तिय तेङ्क मुखदे मूडल्मेरे । तेङ्क [लु] बळिवळि-गर्द्देयु । आलिगोण्डमुं मेरे । वडगलिंगिन-केरेय मध्यं मेरे । पडुवलु बिक्किय-बेट्टद तेङ्कण वागोळगागि मेरे ॥ (।) इन्तिन्दोळगुळ्ळ भूमि दानसालेगे ॥ ओम् [॥]

ॐ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं कुवलाल-पुरवरेश्वरं पद्मावतीलब्धवरप्रसादितं कोङ्गुणिपुट्टबन्धनिराजितं शासनदेवीविजय-

भेरीनिर्ग्घोषणं भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणनुमप्प श्रीमत्कश्वरस-स्सैंगोट्ट-गङ्गर्नि वन्द धर्म्ममं समुद्धरिसिदनिदन्तप्पदे प्रतिपालिसिदातं वारणासियोळ् सासिर्व्वरु ब्राह्मणर्ग्गे सासिर कविलेय[म्] कोट्ट फलम् । इदनळिदात वाणरासियोळ् सासिर कविलेयुम सासिर्व्वर्त्तपोधनरुम सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पातकमक्कु [।।] ओम् [।।]

सामान्योऽय धर्म्मसेतुं नृपाणाम्
कालेकाले पालनीयो भवद्भिस्-
सर्व्वानेतान् भाविनः पार्त्थिवेन्द्रान्
भूयो-भूयो याचते रामभद्रः । (।।)
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टि-र्वर्ष-सहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ।।
न विषं विषमित्याहुः देवस्वं विषमुच्यते
विषमेकाकिन हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ।।
वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।।

ॐ [।।]

[कल्भावी बम्बई प्रान्तके बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकेके मुख्य-शहर सम्पगाँव (Sampgaum) से दक्षिण-पूर्व करीब ९ मीलदूर एक गाँव है । इसका पुराना नाम इसी शिलालेखकी पंक्ति ८, १५, और २१ में 'कुम्मुदवाड' दिया हुआ है । लिपिकी लिखावटसे यह लेख ई० ११ वीं शताब्दिका मालूम पडता है ।

लेख प्रकट करता है कि किसी अमोघवर्ष नामके राजाने मैलाप अन्वय और कारेय गणके देवकीर्ति नामके जैन गुरुके पादों (चरणों) का प्रक्षालन किया था । उस अमोघवर्षके सामन्त, गङ्ग महामण्डलेश्वर सैगोट्ट-पेर्मानडि था सैगोट्ट-गङ्ग-पेर्म्मानडिने, जिनका दूसरा नाम शिवमार था,

कुम्मुडवाड (कल्मावीका ही पुराना नाम) गाँवमें एक जै...
मन्दिर बनवाया और इसके लिये गाँव दानमें दे दिया। इस...
काल शक संवत् २६१, विभव संवत्सर दिया हुआ है। लेकिन, जे० एफ
फ्लीटकी रायमें, यह काल जाली है और वास्तविक उल्लेख लेखके उ...
में सन्निहित है (ॐ स्वस्तिसे लेकर), जिससे मालूम होता है कि उपर्युक्त
दान बीचमें या तो जब्त कर लिया गया था या असावधानीके कारण बन्द
कर दिया गया था और उसे कच्चरस नामके किसी दूसरे गङ्ग महामण्डलेश्वरने
फिरसे चालू किया। भले ही तमाम लेख बनावटी हो, पर, जे० एफ०
फ्लीटकी मान्यतानुसार, इसका उत्तरार्ध तो सच्चा है। मौलिक दानपत्रके
खो जानेसे ही स्वयं लेखगत दानकी बनावटी तिथि देनी पड़ी है। लेखमें
खाली 'अमोघवर्ष' ऐसा नाम देनेसे यह पता नहीं चलता कि 'अमोघवर्ष'
नामके राष्ट्रकूट राजाओंमेंसे कौन-सा अमोघवर्ष इस समय शासन कर रहा
था। मौलिक दानका काल मैलाप अन्वय तथा कारेय गणके आचार्य
गुणकीर्ति, नागचन्द्र, जिनचन्द्र, शुभकीर्ति और देवकीर्तिके वर्णनसे निकाला
जा सकता है। प्रथम दान देनेके समयका काल शक सं० २६१ गलत है,
क्योंकि विभव संवत्सर चालू शक सं० २३१ पड़ता है।]

[Ind. Ant., Vol. XVIII, pp 309-13.]

१८३

नल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, लगभग १०५० ई० (लूई राइस)]

[नल्लूर (हुनगुंदनाडु) में, तीतरमाडके घरके पास सर्वे (Survey) ११७ नं. के तालाबके बाँधपर एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥

स्वस्ति श्री

प····धनं परत्र-हित-कारणकं परमोपकारकम् ।
कुडे त····ताब्दि····य तिग····मतिग····भया····दन्तम····।

तडेयदे मुक्तियं पडेवेनेन्दु विचारिसि वन्धु-वर्गम····।
बिडिसि समाधियं पडेदुदेल्लियुमच्चरि जकियब्बेय ॥

कस्तूरि-भट्टारर्गे अवर श्रावकि चन्दियब्बे-गावुण्डि····यर मन्त्रकि जकियब्बे सन्यसनं गेय्दु मुडिपिदळ् ॥ आकेय गण्ड परम-श्रावक एडय्य मङ्गळम्

[जिनशासनके लिये कल्याण-कामना। स्वस्ति। भयके साथ यह सुनकर कि दाय-तिगमति परलोककी इच्छासे मृत्युको प्राप्त हुई—तथा इस बातको न सहन कर, अपने सम्बन्धियोंकी सम्मति लेकर जकियब्बेने, जो चन्दियब्बे-गावुण्डकी 'मन्त्रकि' और कस्तूरी भट्टारकी 'श्राविका' थी, संन्यसन विधि की और स्वर्गगत हुई। उसका पति श्रावक एडय्य था।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 31]

१८४

नल्लूर्—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; लगभग १०५० ई० ? (लूई राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टुनाद) में, तीतरमाड्डु मादय्यके घरके पश्चिमकी तरफ हित्तलमें]

····················कोडङ्गाळ···ए मग·········दिळे आळ्दडे मेन्दु यति-वरर्गेल्ल सादरदि बीळि···पा [द]दोळेरगि ताळ्दनी-सुर-कीर्त्ति भद्रमस्तु जिन-शासनाय श्रीम मद्दुवङ्गनाड् दोर किविरि-यय्यङ्गळ् चाङ्गळद वसदियोळ् पन्नेरड नोन्तु मुडिपि नवर मकळ् बाकियु बुकिय निरिसिदर्

[...जब कोडङ्गाळुवका पुत्र शासन कर रहा था, बीळिय-सेट्टिने देवोंके यशका लाभ किया। जिनशासनका कल्याण हो।

मद्दुवङ्गनाड्का स्वामी, किविरिके अय्यने १२ दिन तक चाङ्गल वसदिमें व्रत रक्खा और स्वर्गगत हुआ। उसके पुत्र बाकि और बुकिने इसकी स्थापना की।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 30]

१८५

अङ्गडि—कन्नड़

[शंक ९२४, वर्ष जय (ठीक शक ९७६=१०५४ ई०) लुईस राइस]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष ९२४ नेय जय-संवत्सरद चैत्र-मासद सुद्ध-दशमी··········वार पुष्य नक्षत्रदन्दु विनयादित्य-पोय्सळन राज्यं प्रवर्त्तिसे सूरस्त-गणद श्री-वज्रपाणि-पण्डित-देवर····गन्तियरप्प जाकियब्बे-गन्तियर् (पीछे) सोसवूरोळे नाडे पोपणद दिसेयनरसग्गें चोक्कल पोन्नरे कोट्टु मण्णरेकोण्डु सोसवूर-बसदिगे बिट्टर् निसिदिगे यडेवळ्ळेय···· ·· ण्ण आरतारगे····एरडु-हळ्ळद मेगण गण्ण नाल्कु मकर-जिनालयके बिट्टर् (हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय विनयादित्य पोय्सलका राज्य प्रवर्तमान था—सूरस्त-गणके वज्रपाणि पण्डितकी शिष्या जाकियब्बे-गन्तिने सोस-वूरमें नाडकी ओर जानेवाली दिशामें निवासस्थानके लिये पूरा रुपया राजाको देकर और पूरी जमीन लेकर उसे स्मारकरूप सोसवूरकी 'बसदि' के लिये छोड़ दिया। और यडेवळ्ळे की···ण्णने दो खड्डों (ravines) के ऊपर चार गण्ण मकर-जिनालयके लिये दिये।]

[EC. VI, Mūdgere tl, n° 9]

१८६

होन्वाड—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९७६=१०५४ ई० सन्]

ॐ [॥] भद्रमस्तु जिनशासनाय संभद्रता प्रतिविधानहेतवे [।]
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसि [॥]

---

१ शक ९२४ जय वर्ष दिया हुआ है। लेकिन शक ९२४ प्लव संवत्सर है; जय शक ९७६ है, और यही ठीक मिति मालूम पड़ती है।

ओं स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कतारं वरं सलुत्तमिरे [।] तद्विशालोरःस्थलनिवासिनियरप्प श्रीमत्-केतलदेवियर् तर्द्दवाडि-सासिर-दोळगणरुनूरुं-वाडद खम्पण वागेयव्वत्तर वळियमुत्तम-मग्रहारं पोन्नवाडमं त्रिभोगाभ्यन्तरसिद्धियिन्दाळुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवी गणकचूडामणियु [म्] वाणसकुलाम्बरभानुवुं अर्हच्छासन-मूलस्तम्भवुं कलिकाल-श्रेयासनुं सम्यक्त्व-रत्नाकरनुमप्प ॥

वानसवंशकूर्म्मनिभकोम्मजगद्विनुताचिकाम्बिका-सूनुरुदात्तकीर्त्तिधवलीकृतदिग्जिनयोगिराणमहासेनमुनीन्द्रपादकमलभ्रमरं

परिपूर्ण्णचारुविद्यानिधिचाङ्किराजविभुराश्रितशिष्टजनेष्टतुष्टिदः ॥

गम्भीरो बहुशङ्खमत्स्यमकरश्रीमत्तलं सात्त्विके

लक्ष्मीजन्मगृहस्समस्तवसुधाव्यावेष्टनोद्यद्यशः

अन्तर्ज्योतितचारुरत्ननिवहो निर्द्धूतकल्मापको

जीवानन्दरसाकरो विजयते सम्यक्त्वरत्नाकरः ॥

आहाराभयभैपज्यशास्त्रदाने तथा परं ।

चाङ्कणार्य्यस्समो (आर्य्यसमो) नास्ति न भूतो न भविष्यति [॥]

ओम् [॥] श्रीमूलसंघे जिनधर्म्ममूले गणाभिधाने वरसेननाम्नि

गच्छेषु तुच्छेऽपि पोगर्य्यभिख्ये संस्तूयमानो मुनिरार्य्यसेनः ॥

अनेकभूपालकमौलिरत्नशोणांशुबालातपजालकेन ।

प्रोज्जृम्भितश्रीचरणारविन्द-श्रीब्रह्मसेनप्र(व्र)तिनायशिष्यः ॥

तस्यार्यसेनस्य मुनीश्वरस्य

शिष्यो महासेनमहामुनीन्द्रः ।

सम्यक्त्वरत्नोज्ज्वलितान्तरङ्गः
संसारनीराकरसेतुभूत[ः] ॥
तज्जैनयोगीन्द्रपदाब्जभृङ्गः
श्रीवानसाम्नायवियत्पतङ्गः ।
श्रीकोम्मराजात्मभवस्सुतेज-
स्सम्यक्त्वरत्नाकरचाङ्किराज[ः] ॥
कलङ्कमुक्तस्सततैकरूपो
दोषेतरश्रीनिलयस्समस्त-
भव्याब्जसंदोहविकासहेतु[ः]
विराजते नूतनचाङ्किराजः ॥
तन्निर्मितं भुवनवुम्बुकमत्युदात्त
लोकप्रसिद्धविभवोन्नत-पोन्नवाडे
रंरम्यते परमशान्तिजिनेन्द्रगेह
पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववासम् ॥
महासेनमुनेच्छात्र[1] चाङ्किराजेन निर्म्मितं
द्रष्टुकामाघसंहारि शान्तिनाथस्य बिम्बकम् ॥
महासेनमुनीन्द्रस्य च्छात्रेण जिनवर्म्मणा
छत्रीकृतमहानागं रचित पार्श्वदैवतम् ॥
जनकस्य कोम्मराजस्य[2] धर्म्मोद्देशाद्विनिर्म्मिता
राजते चाङ्किराजेन सुपार्श्वप्रतिमोत्तमा [॥]

ॐ ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जयसंवत्सरद वैशाखदमा-
वास्ये सोमवारदन्दिन सूर्य्यग्रहणनिमित्तदिं भीमनदिय तडिय

---

१ "मुनिच्छात्रचाङ्कि" पढ़ो। २ 'जनककोम्म' पढ़ो।

मणियूर-अप्पयणवीडिनोळ् पोन्नवाडदोळ् चाङ्किमय्यन माडिसिद श्रीशान्तिनाथदेवर त्रिभुवनतिलक-चैत्यालयदलिर्प्प ऋषियरजियराहारदानक्के सर्व्वनमस्यवागि श्रीमत्त्रैलोक्यमल्लदेवर् श्रीकेतलदेवियर बिन्नपर्दि मूवत्तुगेण गळेयोळ् बिट्ट नेल मत्त [र्] ३५ तोण्ट मत्त [र्] १ निवेसणदगलमा गळेयोळ् गळे ४ गेणु १७ नीळं गळे ९ बळम्बेनिवेसण मूडण बेळदोळा गळेयोळगलं गळे ३ नीळं गळे ७ गोपुरद मूडण अङ्गडिगं गाण १ अल्लि वेस-गेय्व कल्कुटिगर मने १ सावगरिर्प्प पोलेमने १ [॥] ॐ अल्लिय सुपार्श्वदेवर बसदिगे आ गळेयोळ् मत्तर सलिके अरुवणद लेक्कदे बिट्ट नेलं मत्त[र्] ३५५ आ गळेयोळ् तोण्ट मत्त [र्] १ गाण १ [॥] ओ तम्मं जिनवर्म्मय्यन माडिसिद पार्श्वदेवर बसदिगे करहड-नाल्छासिरदोळगण कळम्बडि-३००रर बळिय कन्नडिगेय सङ्करसन मगं मन्नेयं वजरसन गुड्डे-मान्य ५०० मत्तर्केयोळगे मूवत्तु-गेण गळेयोळ्सर्व्वनमस्यमागि चाङ्किमय्यं मारुगोण्डु बिट्ट नेलं मत्त[र्] ३५ [॥]

[यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर प्रथमका, जो यहाँ अपने विरुद 'त्रैलोक्यमल्लदेव' से वर्णित हुए हैं, उल्लेख करता है और उसकी रानी केतलदेवीका भी जो पोन्नवाड 'अग्रहार' पर शासन कर रही थी। यह एक जैन शिलालेख है; इसका उद्देश यह बताना है कि किस तरह चाङ्किराज, चाङ्कणार्य, या चाङ्किमय्यने, जो कि बानस या बाणस वंशके तथा केतलदेवीके ऑफीसर थे, शान्तिनाथ, पार्श्व, और सुपार्श्वकी वेदियोंको पोन्नवाडमें त्रिभुवन-तिलक नामके चैत्यालयमें बनवाया और किस तरह उन वेदियोंके लिये कुछ जमीन और मकानात दान किये गये।]

[IA 19, p 268-275, n° 190]

---

१ लेखमें वर्णित पोन्नवाड, वास्तवमें, वर्त्तमान होन्वाड ही है।

१८७

बङ्कापुर—कन्नड

[मन्मथ संवत्सर=शक ९७७=१०५५ ई०]

[इस लेखका परिचयमात्र मिलता है, लेख नहीं । बङ्कापुर धार जिलेके वर्तमान शिग्गौम या बङ्कापुर तालुकेसे दक्षिण-पश्चिम छह पर है ।

यहाँके सारे लेख किलेमें हैं । यह लेख एक दीवालके सहारे है जो कि पूर्वकी तरफ़से किलेमें घुसते समय दाहिने हाथकी तरफ़ है । एक विशाल चिकने पत्थरपर ५९ पंक्तियोंका यह एक लेख है, हर एक पंक्तिमें करीब ३७ अक्षर पुरानी कनडी लिपि और भाषामें हैं । शिलालेखका अधिकांश अच्छी स्थितिमें है; लेकिन चौथी पंक्ति जानबूझकर मिटा दी गई है और उस शिलापर दरारें पड़ी हुई हैं जिनसे ऐसा मालूम पड़ता है कि यदि इस शिलाको किसी सुरक्षित स्थानपर ले जानेका प्रयत्न किया जायगा तो वह टूट जायगी । शिलाके अग्रभागके चिह्न चालाकीसे मिटा दिये गये हैं; लेकिन निम्नलिखित फिर भी कुछ चिह्न मिलते हैं:—मध्यमें लिङ्ग है; इसके दाईं ओर एक बैठी हुई या घुटने टेकी हुई मूर्ति; उसके ऊपर सूर्य है और इसके बाहरकी ओर एक गाय और बछड़ा है; और इसके बाईं ओर एक स्थानापन्न पुरोहित या पुजारी, उसके ऊपर चन्द्रमा और उसके बाहर बसवकी मूर्ति बनी हुई है । लेखका काल शकवर्ष ९७७ (१०५५–६ ई०), मन्मथ 'सवत्सर' दिया हुआ है, जब कि चालुक्य राजा गङ्गपेर्म्मानडि-विक्रमादित्यदेव,—जो कि त्रैलोक्यमल्लका पुत्र; कुवलाल-पुरका अधीश्वर; नन्दगिरिका स्वामी, और जिसके मुकुटमें क्रुद्ध हाथीका चिह्न था,—गङ्गवाडि ९६००० और बनवासि १२००० पर शासन कर रहा था, तथा जब कि महाप्रधान हरिकेसरीदेव, जो कादम्ब-सम्राट् मयूरवर्म्माका कुलतिलक था, उसके अधीन बनवासि १२००० पर शासन कर रहा था । हरिकेसरीदेवकी उपाधियाँ अधिकतर उसी तरहकी हैं जैसी कि अन्य कादम्ब राजाओंकी । लेखमें कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । यह भूमि निडगुन्दगे बारह, की थी जो पानुङ्गल ५०० का एक 'कम्पण' था । यह भूमि-दान एक

जैनमन्दिरको हरिकेसरीदेव और उसकी पत्नी लच्चलदेवी तथा बङ्कापुरके पाँच मतोंको आश्रय देनेवाली जनता, नगरमहाजनोंकी गिल्ड (कम्पनी) तथा 'सोलह' वर्गोंने किया था।[1]]

[IA, IV, p 203, n° 1, a; ASI, XVI, p 133, a.]

१८८

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विनाकाल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ वस्तिकी उत्तरी दीवालपर]

स्वस्ति श्री-राजाधिराज कोङ्गाल्वनव्वे पोचब्बरसियर् द्रविळ-गणद नन्दि-संघद अरुङ्गळान्वयद गुणसेन-पण्डितदेवर गुड्डि माडिसिद बसदि मङ्गळ महा।

[स्वस्ति। द्रविळ-गण, नन्दिसंघ, तथा इरुङ्गलान्वयके गुणसेन पण्डित-देवकी गृहस्थ-शिष्या, राजाधिराज-कोङ्गाल्वकी माँ पोचब्बरसिने इस बस्तिको बनवाया। महा मङ्गल।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 37]

१८९

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८०=१०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें दूसरे पाषाणपर]

धर्म्म-सेट्टि बरेद स्वस्ति शक-वर्ष ९८० नेनेय विलम्बि-संवत्सरद उत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्री-राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वं तम्मय्य माडिसिद बसदिगे कोट्ट हारुवनहळ्ळि अरकनहळ्ळि निडुवद गोडल खण्डुगम् ३ के (दूसरे गावोंमें ऐसे ही दान) श्रीराजाधिराज-कोङ्गाळ्वनव्वे पोचब्बरसियर् तम्म गुरुगळु द्रविळ-गणद नन्दि-

---

[1] 'बङ्कापुरद पञ्चमत(ठ)स्थानमुं नगरमहाजनमुं पदिनरुवरम्'।

संघदरुङ्गलान्वयद गुणसेन-पण्डित-देवर्गे माडिसि धारा कोट्टरु ॥ (वही अन्तिम श्लोक) ।

[धर्म्म-सेट्टिके द्वारा लिखित ।

स्वस्ति । (उक्त मितिको), राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वने, अपने पिता द्वारा ... बसदिके लिये हेरुवनहळ्ळि, अरकनहळ्ळि, तथा निडुत गोकलुमें तीन गका दान दिया, और इसी तरह दूसरे गाँवोंमें (जिनके नाम दिये हैं) ।

और राजाधिराज कोङ्गाळ्वकी माँ पोचब्बरसिने अपने गुरु द्रविळ-गण नन्दि-संघ, तथा अरुङ्गलान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी प्रतिमा बनवाकर जलधारापूर्व्वक इसे समर्पित की । शाप ।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 35]

१९०

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई० का]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिके नीचे देहलीमें]

स्वस्ति श्री राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळ्वन पुत्र श्री—रा....कोङ्गाळ्व.... वास-स्थानम तम्म गुरुगळ् तिवुळ-गणदरुङ्गलान्वयद नन्दि-संघद गुण-सेन-पण्डित-देवर्गे धारा-पूर्व्वक कोट्ट मङ्गळ महा श्री श्री ।

[स्वस्ति । राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळ्वके पुत्र रा...कोङ्गाळ्वने तिवुळ-गण, अरुङ्गलान्वय और नन्दि-संघके अपने गुरु गुणसेन-पण्डित-देवको रहनेके स्थानके रूपमें...दिया ।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 38]

१९१

मुल्लूर—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५० ई०]

[उसी बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री गुणसेन-पण्डित-देवर् अगळिसिद नागवावि नकरद धर्म्म

[स्वस्ति । नाग-कुआँ जिसको गुणसेन-पण्डित देवने नकर याने व्यापारी संघके धर्मके रूपमें खुदवाया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 42]

१९२

सोमवार—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; लेकिन संभवतः लगभग १०६० ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) में, बसवण्ण मन्दिरकी बाहरी दीवाल के पाषाणपर]

घरेयोळगेचल-देविगे ।

गुरुगळ् गुणसेन-पण्डितर्द्रविळ-गणम् ।

वर- नन्दि-संघमन्वय-।

मरुङ्ग······नगदेन्द्वेम्बण्णिपुदो ॥

भद्रमस्तु ।

[एचलदेविके गुरु,—द्रविळ गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गल-अन्वयके, गुणसेन-पण्डित, जो इतने प्रसिद्ध हैं, उनका वर्णन इस संसारमें कैसे हो सकता है? कल्याण हो ।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 98.]

१९३

कडवन्ति—कन्नड़-भग्न ।

[विना काल-निर्देशका पर संभवतः लगभग १०६० ई०]

[कडवन्तिमें, मेलु-कडवन्तिकी चट्टानपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय श्रीमत्-दान····खचर-कन्दर्प्प सेनमार पृथुवी-राज्य गेय्युत्तमिरे देव-गणद पाषाणान्वयद महेन्द्र-चोळळं पडेद अङ्कदेव-भटारर शिष्यमहीदेव-भटारर गुड्डं निरवद्यय्यं मेळसरय मेगे निरवद्य-जिनालयमं माडि खचर-कन्दर्प-सेनमारन दयगेये निरवद्यय्यं मानियं पडेदु जक्कि-मानियेन्दु पेसरनिट्टु निरवद्य-जिनालयके कोट्ट

एडेमलेय सासिर्व्वरुं गळ्देय मेक्कळ तम्म तम्म गळ्देय मेगे एळ्ळा-का॥
पलं दप्पदे जक्कि-गोळ्गमेन्दित्तर्कडमन्तियोम् मादेर ...
एक्कलिग सिरिपुरसनुमित्तुवु मूगण्डग-भत्तं पोकुळि-मक्किय पलिसिन त॥
नित्तरुजेनियोळ नाल्-गण्डग भगमनित्तर्ईवाडियोळपिन्दगर ६
मूगण्डुग मित्तमुळ्ळि-भागदोळ्.....................मूगण्डुगमित्तं २॥७. दे
त्थर कप्पिगमिर्कण्डुग........मुळियर कुन्द कोप्टार्प्पेन्दियो सार.......
.... मेदुकप्यं किरगादण्ण मू-गण्डुग मण्ग'''म् डकुळ-भत्तमुमन''''
''''न्ददणिकिग देपण्ण मूगण्डु ....मित्तर्.......योळ श्री-व''''

[जिस समय खचर-कन्दर्प सेनमार पृथ्वीपर राज्य कर रहे थेः— निरवद्यने, जो देवगण और पाषाणान्वयके अक्कदेव-भटारके शिष्य मही-देव भटारका गृहस्थ-शिष्य था और जिसने महेन्द्र-योळलुको पाया था,— मेलस चट्टानपर निरवद्य जिनालय खड़ा किया; और खचरकन्दर्प सेनमारकी कृपा प्राप्तकर निरवद्यको एक 'मान्य' मिला, जिसे उसने जक्कि-मान्यका नाम देकर निरवद्य-जिनालयको भेंट कर दिया ।

और एडेमले हजारने अपनी हरएक धान्यके खेतोंकी फसलसे कुछ धान्य (चावल) दानरूपमें हमेशा के लिये दिया ।

और भी जिन लोगोंने अनाजका दान किया उनके नाम दिये हैं ।]

[EC, VI, Chikmagalur tl, n° 75]

१९४

अङ्गडि—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ईसवी]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना] में, छठे पाषाणपर]

(ऊपरका हिस्सा टूट गया है) सोसवूर सेट्टिगळ लोकजितनिगे निषिधिय कल्लु नखर-समूह नट्टरु

[सोसवूरके व्यापारी लोकजितके इस स्मारकको उस नगरके व्यापारी लोगोंने खड़ा किया ।]

[EC, VI, Mudgere tl, n° 16]

१९५

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ई० का]

[चिक्क-हनसोगे (हनसोगे परगना) में जिन-बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्री-वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्म्माडिसिद पुस्तक-गच्छद बसदि

[वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळ्व-देवने पुस्तकगच्छकी बसदि बनवाई]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 22.]

१९६

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०६० ई०]

[जिन-बस्तिमें, दरवाजेपर पड़े हुए पत्थरोंपर]

दशाशिर-प्रहारियप्प रामस्वामि बिट्ट परमेश्वर-दत्तियं शकनोड विक्रमादित्यं पडिसलिसि-तान·········मुन्निनन्ते बडगण-तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु नेलनं ख··········· ·····ताम्र-शासन-पूर्व्वक कोट्टरदं मारसिंह-देव पडिसलिसलेन्ता-परमेश्वर-दत्तिय बडगण तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु·········मुन्निनन्ते कादना-रामर दत्तिय ताम्र-शासन पडिय ········मडि ईयक्कं बरेदवद नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्प्पुनर्ण्णव माडिसिद बसदिय तूम्बिनलक्करवु प्रतिमेयु माडिद तप्पिदर्गे कविलेगे तप्पिद पाप

[पहलेकी ही तरह, उत्तरीय नहरसे, सींची गई सारी जमीन,-दशशिर (रावण) के वधक रामस्वामीके द्वारा जो छोड़ दी गई थी, परमेश्वरने जिसे दिया था, और जिसे इनामके तौर पर शक तथा विक्रमादित्यने भी दिया था,—ताम्रके शासन (लेख) पूर्वक·······दी। परमेश्वर-प्रदत्त तथा उत्तरीय नहरसे सींची गई सारी जमीनका दान मारसिंह-देवने किया और पहलेकी ही तरह उसका रक्षण भी किया।

.........मडिने रामके दिये हुए इस ताम्बेके शासनपर दानके अक्षर और बसदिके पानीकी राहके फाटकपर मूर्त्तियाँ और अक्षर खोदे। बसदिको नन्नि-चङ्गाळ-देवने फिरसे बनवाया।]

[EC,/IV, Yedotore tl., n° 25]

१९७

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[सूळे बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-सुरासुर-

मस्तक-मुक्तांशु-जाल-जल-धौत-पदम्।

प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासन-

मस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम्॥

स्वस्ति श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवरराज्य सलुत्तमिरे॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महामण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरा-धीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्चे-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्ब्भ-त्रयाधिक-दानं वान-रध्वज-विराजित-राजमानं मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-कीर्णं शान्तरादित्य सकळ-जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायण सौर्य्य-पारायण जिन-पादाराधक रिपु-बल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-वीर-शान्तर-देवं सान्तलिगे-सायिरमुमनेकच्छत्र-च्छा-येयिन्दमाळुत्तमिरे॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि स्वस्त्यनेकगुण-गणाभिमण्डन नखर-मुख-मण्डनं शान्तर-राज्या-भ्युदय-कारणं कलि-युग-दोस(ष)-निवारण आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-कानीनं विशद-यशो-निधानरप्प

श्रीमत्-पट्टण-स्वामि-नोकय-सेट्टि स (श) क-वर्ष ९८४ शुभकृत्-संवत्सरद कार्त्तिक-सुद्ध ५ आदित्यवारदन्दु तन्न माडिसिद पट्टुण-स्वामि-जिनालयके वीर-सान्तर-देवङ्गे (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) सर्व्व-बाधा-परिहार-मागि माडि तन्न सहधर्म्मिगळ् सकलचन्द्र-पण्डितदेवर्ग्गे कोट्टम् (यहाँ वे ही हमेशाके अन्तिम वाक्याव-यव आते हैं)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।
दुष्टनोर्व्वनदर फलवं सले तिन्दवम् ।
सिट्टि-मेले परमात्मने वन्देङेगोत्रदम् ।
कट्टिकोण्ड विदिरन्ते कुल-क्षयमागुगुम् ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक ।)

अक्कर ॥ ईवरेन्दत्ति पळिरिदेरदप ···तागि वेळ्दपर् छेञ्जेगेट्टु काव-रेन्दल्····सरणेन्दु वन्दपर् त्तावञ्जि मरेवक्कुं वाल्वेमेन्दु साम-वन्नदा मरेवक्कु वन्·······विडियुं निद्दे पट्टियदन्दु

जीवम्जीवके तूकके वारदे किळ्वट्टु वरवेके वीर-देव ॥
धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदड् ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कीळ् ।
तरतरदिनुळ्चिदवु निज- ।
कर-खळ्गमवर्के कीले शान्तर-नृपति ॥
वीरुगन दोरेगे दोरे पेर- ।
रारुं बन्दवरी-कृत-युगं त्रेते द्वा- ।
परं कलि-युगदोळगण ।
वीररुदार-प्रतापिगाळ् धर्म्म-परर् ॥

वृत्त ॥ परम-श्री-जैन-धर्म्मक्कतिशय-विभवं माप्पं विद्वज्जनक्का-
दरदिन्दं सन्तोसं (ष) माडुत्र मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।
स्तरदिन्दं चिन्ते-गेय्युन्नत-गुण-[....] युतं पट्टण-स्वामिनोकं-
वरमाद्भव्यर्कळन्ता-पुरुष-रतुनदिं वीरदेवं कृतार्थम् ॥
पुदिद तमस्-तमः-पटल ओन्दिद चिन्ते तगुळ्दु तळ्तु प- ।
त्तिद रुजे पेर्च्चि सार्चिद दरिद्रते बट्टेयोळाद सेदे बड्-
गिदपुदु कण्ड काण्केयोळे तप्पदु पट्टण-सावि नोक्कनि- ।
ळ्ळदडे वळल्दु वन्द बुध-मण्डलिगी-मले सू (शू) न्यमागदे ॥
वल्ललनप्प पेर्व्वुसिय वर्य्पिगे भाजनमाद दोळ्गे बी- ।
ळल् वरिवन्ते नेल्द नरे-गड्डद दोड्डर वेळ्ळुवातुगळ् ।
कोल्लुमवार्के केम्मनेडेयाडदिरोवेले शिष्ट वेडिको- ।
ळ्ळोल्वडे नम्म धर्म्मद तवर्म्मने पट्टण-सामि नोक्कनम् ॥
जिननं बण्णिप पूजिप ।
जिनागमोक्तियाडे नेगळ्त्र जिन-पदमं भा- ।
वनेय निब्बं ताळ्दुवन् ।
एने पट्ट[ण]-सावि ये जिनागम-निधियो ॥

वचनम् ॥ सम्यक्त्व-चारासियुमेनिसिद पट्टण-स्वामि नोक्कय्यं....
हुरदोळु देवर वल्लभरनेरगिसि रत्नङ्गळम् खचियिसि । पोन्न बेळ्ळिय पवळद महा-मणिय पञ्च-लोहदोळ प्रतिमेगळं माडिसिद । (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है ।), सकळचन्द्र-पण्डितदेवर गुड्ड मल्लिनाथं बरेदम् ॥

सुजन-जन-कुमुद-चन्द्रन ।
सुजन-जनानन-विळोक-मणिमुकुरनना- ।

सुजन-जन-वनज-हंसन ।
सुजनजन पोगळे मल्लिनाथं नेगळ्दम् ॥

गुडिवयल्लुम विट्ट (सिरेयर) पट्टण-स्वामिय परि नेम-व्रतवेरेदन्दे
तुरवनिन्तिदु···गेय्यद·········येत्तिद य····सा····सन्तोस(ष)-दान-
विनोद·······॥ श्री-पट्टण-सामिय गुरुगळ् श्रीमद्-दिवाकरणन्दि-सि
द्धान्त-रत्नाकर-देवरु श्री-विरुद-सर्व्वज्ञ वीर-सान्तर-देवम् ॥

पुसियदिरारोळंब-नदिं पर-नारिय चपोगे तम्प् ।
एसगदिराव-जीवदेळमेवडेयेम्बुदनेन्तुमोल्लदिर् ।
कुसियदिरायदिं पोणर्दु तळ्तेडेयोळ् व्रतमेन्दु कोण्डुदम् ।
विसडदिरेम्बुदी-वरेद····सने सान्तर-वीर-देवनम् ॥
नेगर्दुग्रान्वय-पद्मिनी-दिनकरं श्री-शान्तरोर्व्वीशनु- ॥
दूघ-गुणाम्भोनिधि वीरुग विरुद-सर्व्वज्ञं धरा-मण्डळम् ।
पोग[ळ]ळ् कूर्म्मियिनीये निर्म्मळ-यशं धर्म्माधिकं ताव्दिदम् ।
जगदोल् पट्टण-सामि-वट्टमनिदेम् नोक्कं यशो-भागियो ॥

पट्टणस्वामि-जिनालयद शासनम्

[जिनेन्द्रकी प्रशंसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य-पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देवका राज्य प्रवर्त्त-मान था—जब, (उन्हीं पदों सहित जिनसे अलङ्कृत नन्नि-शान्तर शि० ले० नं० २१३ में हैं), त्रैलोक्य-मल्ल-वीर-शान्तर-देव शान्तलिगे हज़ार-पर एकछत्र राज्य कर रहा था;—

तत्पादपद्मोपजीवी (उन्हीं पदों सहित जैसे कि पद शि० ले० नं० २११ में हैं) । पट्टण-स्वामि नोक्कय्य सेट्टिको (उक्तमितिको) अपने बनवाये हुए पट्टण-स्वामि जिनालयके लिये वीर-शान्तर-देवको सोने के १०० गद्याण भेंट करने पर, मोलकेरेका दान मिला; इस गाँवकी सीमायें । इसने

(नोक्कय्य-सेट्टिने) अपना गाँव कुकुडवळ्ळि भी दानमें दे दिया, इसको (उक्त) सब करोंसे मुक्त कर दिया, और अपने सह-धर्म्मी चन्द्र-पण्डितदेवको सौंप दिया।

शापात्मक और वे ही अन्तिम श्लोक।

राजा बीर शान्तर और 'सम्यक्त्व वारासि' नामसे प्रसिद्ध पट्टण-स्वामि नोक्ककी प्रशंसामें श्लोक। माहुरमें प्रतिमाको रत्नोंसे मढ़ दिया और उसके पास सोना, चांदी, मूंगा (Coral), रत्नों और पञ्चधातुकी प्रतिमायें थीं। शान्तगेरे, मोळ्केरे, पट्टण-स्वामिगेरे और कुकुडवळ्ळिके तळेविण्डेगेरे—ये सब तालाब उसने बनवाये थे। और सौ सुवर्ण गद्याण देकरके उसने ढगुरे नदीका सोळंगके पाणिमगल तालावमें प्रवेश कराया।

सकलचन्द्र-पण्डित-देवके गृहस्थ-शिष्य मल्लिनाथने इसे लिखा, उसने गुडिवयल्का दान किया। पट्टण-स्वामिके गुरु दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देव और सर्व्वज्ञ-पदलाञ्छित वीर-शान्तर-देवकी प्रशंसा]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 58]

१९८

हुम्मच;—कन्नड़

शक ९८४=१०६२ ई०

[पार्श्वनाथवस्तिमें मुखमण्डपके खम्भोंपर]

(दक्षिण-खम्भ)

(पूर्व-मुख)....पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतु-स्समुद्र-पर्य्यन्तं पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधि-गत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुला-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज-विराजित-राजमान-मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्ण्णं सान्तरादित्य सक-

ल-जन-स्तुत्य कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधक रिपु-बळ-साधक नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-वीर-सान्तर-देवं सान्तळिगे-सासिरमं निर्-द्वायादम निष्कण्टकम निराकुळमुं माडि निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळ् सुख-संकथा-विनोददिनरसु-गेय्युत्तिल्दु स(श)क वर्ष ९८४ नेय शुभकृत्संवत्सरं प्र............

(उत्तर-मुख) जिनदत्तं तनगन्दु देव्रतेय कारुण्यं पोदळ्दिर्प्पिनम् ।
दनु-पत्रगतिभीतिय निज-भुजावष्टम्भर्दिं माडि कों-।
ड निजाम्नायद् पेम्पु-वेत्त पोळलोळ् पोम्बुर्च्चदोळ् माडिदम् ।
जिन-गेहङ्गळनर्त्तियिं पलवुमं श्रीवीर-भूपाळकम् ॥
सुरसैलेन्द्रमो मेण् कुवेरगिरियो मेण् तुङ्ग-ताराद्रियो ।
दोरेयेम्बन्तिरे तन्न भक्ति मनदिं पोण्मुत्तमिर्प्पन्नेगम् ।
परमोत्साहदे नोक्कियब्बेय जिन-श्री-गेहमं माडिदम् ।
धरेयेल्लं पोगळन्नेगं विरुद-सर्व्वज्ञावनीपाळकम् ॥

वचन ॥ अन्तु नेगळ्द वीर-शान्तरन मनो-
नयन-वल्लभेयेनिसिद चागलदेवि ॥

वृत्त ॥ गुणदोळ् रूपिनोळोळ्पिनोळ्
सुबगिनोळ् शृङ्गारदोळ् सौम्यल-।
क्षणदोळ् मैमेयोळोजेयोळ्
विभवदोळ् शीलङ्गळोळ् मृत्य-पो-।
षणदोळ् भोगदोळार्प्पिनोळ्
विभुतेयोळ् कारुण्यदोळ् पोलिसल्क-।
.एणेयाद् ग्गोल्व वेडङ्गिगोन्दनुदिनं

हुम्मचका लेख

विद्वज्जनं वण्णिकुम् ॥

(उत्तरस्तंभ)

(दक्षिणमुख) कन्द ॥ जयदङ्ककात्ति दान—।
प्रिये शान्तर-देवनोप्पुवर्द्धाङ्गद-ल—।
क्ष्मियेनिप्प पुण्यवतियम् ।
जय-देवतेयन्नदुन्ते पेरतेनेम्बर् ॥

श्री-वनितेगे वीरन वाक्—।
श्री-वनितेगे कीर्त्ति-वधुगे सान्तर-विजय—।
श्री-वनितेगधिके चागल—।
देविये भाविसुवदखिल-विश्वम्भरेयोळ् ॥

सलुगेगे साम्यकेक्केगे ।
पलरक्कम सतियरहितरं गेल्वेडेय्....।
गेल्व वेडङ्गिये वीरन ।
बलद भुजा-दण्डदछि केलदोळ् निल्वळ् ॥

पतियं वञ्चिसि सले निज—।
कृतकदिनर्द्धावलोकनाक्षिगाळें भ्रु—।
लतेयोळमोळपोय्वी-दुरु—।
व्रतेयर् प्पोल्तपरे चागियब्बरसियरम् ॥

सङ्गत गुणनमळ-लसत्—।
तुङ्गाखिळ-कीर्त्ति-वीर-सान्तर-नृपन—।
र्द्धाङ्ग-स्थित-लक्ष्मियेनल्क् ।
एङ्गळ पोल्तपरे चागियब्बरसियरम् ॥

नेत्रावळि-दोर्च्छर्दि-वि—।

चित्राम्बर-कनक-रजत-मणि-मौक्तिकमम् ।
पात्रमरिदीव-गुणकति–।
मात्रेयरेष्दिपरे चागियब्बरसियरम् ॥

(पूर्वमुख) वृ ॥ अतिशयमप्प रूपिनोळुदारतेयोळ् विनयोपचारदोळ् ।
पतिगतिभक्तिनोळ् विपुळ-भोगदोळिं पेरतेननेम्बे माण् ।
रतिगनुसारि पार्व्वतिगे तोडु कुजातेगे पाटि नोडरुन्–।
धतिगेणे वासवाङ्गनेगे पासटि चागल-देवि धात्रियोळ् ॥

येनिसिद चागल-देवि निज-वल्लभं वीर-शान्तरन कुल-देवते नोक्कि-यब्बेय बसदिय मुन्दे मकर-तोरणम माडिसि ॥ मत्तं बळ्ळिगावेयले चागेश्वरमेम्ब देगुलमं माडिसि पलवरुं ब्राह्मणर कन्ने-दानमं माडिसि महादानङ्गेय्दु वन्दि-वृन्दकनाश्रितर्गं पोन्नुं बुट्टिगेयुमं बेय्पन्नेगमित्तु चागमं मेरेदळ् ॥ अन्तु नेगर्द चागल-देविय तायेनिप अरसिकब्बे प्रसिद्धकेसेदळ् सान्तरन मनेय सर्व्व-प्रधानं ब्रह्माधिराज काळिदासय्यं-बगेदं (पश्चिम मुख) श्री-लोक्किय बसदिगे देकरसं जम्बहळ्ळिय विट्ट श्री-माधवसेन-देवर्ग्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् ॥

[जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देव समुद्र-पर्यन्त दुनियाके राज्यपर शासन करनेमें लगे हुए थेः—

तत्पादपद्मोपजीवी (नं० २१३ वाले लेखमें जो नन्नि-शान्तरके पद हैं उन्ही पदों सहित) त्रैलोक्यमल्ल वीर-शान्तर-देव, सान्तलिगे हजारको भुक्त करके, अपने वंशकी राजधानी पोम्बुर्चमें शासन कर रहा थाः— (उक्त मितिको),– अपने वंशके प्रसिद्ध नगर पोम्बुर्चमें वीर-भूपालकने बहुतसे जिनमन्दिर बनवाये। इसी पोम्बुर्चमें जिनदत्तने देवी (संभवतः पद्मावती देवी) के प्रसादको प्राप्त करके एक राक्षसके पुत्रको अपने भुजबलसे भयभीत कर दिया था। वीर-भूपालने नोक्कियब्बे जिनमन्दिर बड़ी शोभाके साथ खड़ा किया था।

वीर-शान्तरकी पत्नी चागल-देवी थी। उसकी प्रशंसामें बहुत से ... दिये हैं। अपने पति वीर-शान्तरके कुल-देवतारूप नोकियब्बेकी ... सामने उसने 'मकर-तोरण' बनवाया था और बळ्ळिगावेमें चागेश्वर ... मन्दिर बनवाया था और बहुत-से ब्राह्मणोंको कुमारिकायें भेंटकर ... 'महादान' पूर्ण किया था, तथा प्रशंसकों और आश्रितोंकी भीड़को ... च्छक दान देकर अपनेको दानी प्रसिद्ध किया था। (तथा) चागल-देवी की माँ अरसिकब्बेकी भी बहुत प्रसिद्धि हुई। (और) शान्तरके घरका 'सर्व्व-प्रधानं' ब्रह्माधिराज कालिदास विख्यात हुआ था।

लोक्किय बसदिके लिये, देकररसने जम्बहळ्ळि प्रदान की, इसका दान माधवसेन-देवको किया था।]

[EC, VIII, Nagar, tl., n° 47]

१९९

श्रवण-बेल्गोला;—संस्कृत—भग्न

[सं० १११९=१०६२ ई०]

(जैन शि० ले० सं०, भा० १.)

२००

अङ्गडि—कन्नड़—भग्न

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, ७ वें पाषाणपर]

.................विनयादित्य............पोय्सळ........ भट्टार गुरुगळं...

सक-कालं गति-नाग-रन्ध्र-शुभकृत्-संवत्सराषाढदोळ् ।
सुकरं पौर्ण्णमि-भौमवार मोसेदिळ्दा-श्रावण....
....कदिन्दं बरे शान्तिदेवरमळर् सन्यासनं गेय्दु भक्- ।
ति करं कैन्त्रशमागे गेय्दु पडेदर् निर्व्वाण-साम्राज्यमम् ॥

(पीछे)······शान्ति-देवर् श्रीमत् सो[सेवू]र···नकर-समूह तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनयं गेय्दु निषिदिगे मङ्गळमहा

[······विनयादित्य······पोय्सळके गुरु············(उक्त मितिको) शान्तिदेवने, अपने धर्मके फल-स्वरूप निर्व्वाणको प्राप्त किया।

नगर(व्यापारी संघ)के लोगोंने अपने गुरु शान्ति-देवकी मृत्युके उपलक्ष्यमें यह स्मारक खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 17.]

२०१

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़–भग्न

[शक ९८४=१०६३ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, वसदिके पासके पाषाणपर]

······················तन्त्र-प············ ····व्वरसिय ········ ············साम्पराय······························ (७ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) पोय्सळन विद्यावन्तं पोय्सळाचारि आतन मग माणिक-पोय्सळाचारि आतं माडिद वसदि उळि-बळ्ळि-पिडिवर चट्ट (पीछे) इन्तिनितुं भूमीयुमं कोट्टु शक-वर्ष ९८४ नेय शुभकृत्-संवत्सरद फाल्गुन-सुद्ध-पञ्चमी-बुधवारं रोहिणी-नक्षत्रदन्दु प्रतिष्ठे-गेय्दु पूजेयं माडि तिरु-नन्दीश्वरदन्दु दान-माडेयुं पोय्सळन गुरुगळ् मूलूर श्री-गुणसेन-पण्डित-देवर्ग्गे धारा-पूर्व्वकदिं स्थानमं कोट्टर् ॥

श्री-वनितेगे धरणिगे वाग्-देविगे रुग्मिणिगे रतिगे रम्भगे सीता-। देविगे कोन्तिगे परियल- । देवियिमिछ्छि गुणके वप्परुमुण्टे ॥
श्रीमदभिमानपिण्डः । पर-गण्ड-प्रलय-काल-यम-दण्डः ।
सद्गुणरत्नकरण्डः । स जयतु भुवि मलेपरोळ् गण्डः ॥
रक्कस-पोय्सलनेम्बा- । ई-अक्करवं बरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोळ् ।

लकद् सव-लेक्कद मरु- । वर्क निन्दपुवे समर-संघट्टनदोळ् ॥

(इसेशाके अन्तिम श्लोक)

[प्रथम भाग बहुत घिसा हुआ है और अन्तिम पंक्तियोंमें ८ विशेष चर्चा है ।

छेनी और बसिको पकड़नेवालोंमें प्रधान, अर्थात् ... प्रधान विद्यावान पोय्सळाचारिके पुत्र माणिक-पोय्सळाचारिने यह बसदि बनवाई ।

इतनी भूमि देकरके, उन्होंने (उक्त मितिको) भगवान्की प्रतिष्ठा की, और पूजाकर तिरु-नन्दीश्वरके कालमें दान देकर मन्दिर पोय्सळके गुरु मुल्लूरके गुणसेन पण्डितदेवको सौंप दिया ।

परियल-देवी और मलेपरोळ्-गण्डकी प्रशंसा । "रक्कस-होय्सळ" इन ६ अक्षरोंको अपने झण्डेपर लिखकर यदि वह उसे उड़ाता है, तो लक्षावधि शत्रु भी क्या उसका युद्धमें सामना कर सकते हैं ? (इसेशाके अन्तिम श्लोक)]

[EC, VI, Müdgere tl., n° 13.]

२०२

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८६=१०६४ ई०]

मुल्लूर (निडुत परगना) में, बस्ति मन्दिरमें पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें प्रथम पाषाणपर]

(पहली ओर) स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतङ्गळ् ९८६ नेय क्रोधि-संवत्सरं परिवर्त्तिसुत्तिरे तच्-चैत्र-बहुल-नवमी मङ्गळवारं पूर्व्वाभाद्रपद-नक्षत्रम्मिनोदयदल्‌ ॥

स्वस्ति समस्त-सुरासुरेन्द्र-मकुट-तट-घटित-मणि-मयूख-रेखालङ्कृत-चा (दूसरी ओर) रु-चरणारविन्द-युगलं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गतागमामृत-गम्भीराम्भोराशि-पारगरप्प श्रीमद्-गुणसेन-पण्डित-देवरम्मोक्ष-लक्ष्मी-निवासके सन्दद् (तीसरी ओर)

गुरुगळ् सिद्धान्त-तत्त्व-प्रवचन-पटुगळ् पुष्पसेन-व्रतीन्द्रर् ।
वर-सङ्घं नन्दि-सङ्घं द्रविळ-गण-महारुङ्गळाम्नाय-नाथम् ।
परमार्हन्त्यादि-रत्न-त्रय-सकल-महा-शब्द-शास्त्रागमादि- ।
स्थिर-षट्-तर्क-प्रवीणर् व्रति-पति-गुणसेनार्य्यरार्य्य-प्रणूतर् ॥

[(उक्त मितिको), आगमरूपी अमृतके गहरे समुद्रके पार जाने वाले श्रीमद् गुणसेन-पण्डित-देवने मोक्ष-लक्ष्मीका निवास प्राप्त किया। उनके गुरु पुष्पसेन-व्रतीन्द्र थे। गुणसेन-पण्डित-देव द्रविळ-गणके नन्दिसंघके तथा महा अरुङ्गलाम्नायके नाथ थे। ये सब विद्याओं—व्याकरण, आगम, तर्क—में प्रवीण थे।]

[EC, IX, Coorg tl n° 34]

२०३

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मचमें, चन्द्रप्रभ बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

भद्रमस्तु जिन सा (शा)·······स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथिवी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळति-ळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतुस्समुद्र-पर्य्यन्त-पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्चे-पुर-वरेश्वर महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्ब्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज- विराजित-राजमानं मृग-राज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्ण्ण सान्तरादित्यं सकळ-जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-परायणं जिन-पदाराधकं रिपु-बळ-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं बिरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-भुजबळ-शान्तर-देवं शान्तळिगे-सासिरमं निर्द्दायादवुं निरा-

कुळं माडि राज्यं गेय्युत्तिळ्दु स(श)क-वर्ष ९८७ नेय ॱ .
संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळ् भुजबळ-२
न्तर-जिनालयक्के माघ-मासद सुद्ध-पञ्चमी-सोमवारमुमुत्तरायण-संक्रम ।
दन्दु तम्म गुरुगळ् कलकणन्दि-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि हरवरियं बिट्टम्
(यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है) ।

जिनशासनके कल्याणकी कामना । स्वस्ति । जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) चतुस्समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके राज्यपर त्रैलोक्यमल्लदेव शासन कर रहे थेः—

तत्पादपद्मोपजीवी,—जिस समय, (उन शान्तरके पदों सहित जो कि शि० ले० नं० १९७ में दिखाये गये हैं), त्रैलोक्यमल्ल भुजबल-शान्तर-देव, शान्तलिगे हजारको उपद्रवों और कष्टोंसे मुक्तकर शासन कर रहे थे;—(उक्त मितिको), अपनी राजधानी पोम्बुर्चमें भुजबल-शान्तर जिना-लयके लिये अपने गुरु कनकनन्दि-देवको हरवरिका दान किया थाः इसकी सीमायें । बसदिका ऐसा शासन (लेख) है ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 59]

२०४

बलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ९९०=१०६८ ई०]

[बलगाम्बेमें, बडगियर-होण्डके पासके आंगनमें पाषाण-खण्डोंपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर ....भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रैलोक्य-मल्लनाहवम.........सुख-संकथा-विनोदर्दि राज्यं गेय्युत्तमिरेयिरे ॥

वृत्त ॥ मलेपर् म्मारास्परिळुक्कमदि....तराटर्प्परिळुर्कि दर्कुन्- ।
दले-वाय्दुद्व्वत्तरिळोट्टजि-वेरसु कुळम्बर्त्तरुम्बिर्प्परिळे- ।

त्तलु····बर्प्प दळेन्दुरिव रिपुगळिळेम्बिनं कुन्तळोर्व्वी- ।
तिळक त्रैलोक्यमल्ल-क्षितिपतिगे धरा-चक्रदो····क-चक्र ॥

लाट-कलिंग-गंग-करहाट-तुरुष्क-वराळ-चोळ-क- ।
र्ण्णाट-सुराष्ट्र-माळव-दशार्ण्ण-सुकोशल-केरळादि-दे- ।
शाटविकाधिपर्ग्गळ म्मलेदु निल्लदे कम्पमनित्तु निर्म्मिता- ।
घाटदोळिर्प्प····अळवी-दोरेताहवमल्ल-देवन ॥

कन्द ॥ इन्तु चतुरन्त-धात्री- । कान्तेयनळवडिसि चक्रवर्त्ति-श्रियम् ।
तां तळेदु सुखदे पल-का- । लन्तव तत्र-निधिगधीशनाहव-मल्लम् ॥

वृत्त ॥ म ···ध्रावन्ति-वंग-द्रविळ-कुरु-खसाभीर-पाश्चाळ-लाळा
दिगळं पेसेळे कोन्दु कवर्दुमसदळं कोट्टजं गोण्डुमाळो- ।
ळ्गे दण्डुं तोळ-तीनु मनद तवकमुं पोगदेन्दिन्द्रनं का- ।
डि गेलल् कप्पं गोडल् वरिसि तळ्र्दनेकांगर्दि सार्व्वभौमम् ॥

गगन-नवाङ्क-संख्ये शक-काळदोळागिरे कीळकाव्दकम् ।
नेगळे तदीय-चित्र-बहुळाष्टमियोळ् रविवारदोळ् जसम् ।
मिगे कुरुवर्त्तियोळ् परम-योग-नियोगदे तुम्········द्रेयोळ् ।
जगदधिपं त्रिविष्टपमनेरिदनाहवमल्ल-वल्लभम् ॥

कन्द ॥ आ-चालुक्य-ललाम-म- । हा-चक्रिय पेर्म्मग धरा-तळमं गो-
त्राचळ-जळधि-परीतमन् । आ-चन्द्र-स्थायि यागळाव्व महात्मं ॥

····दित-व्योम-नवाङ्क-संख्ये सक-काळं वर्त्तिसल् कीळका-
ब्दद वैशाखद सुद्ध-सप्तमियोळ् इज्य-ज्योतियोळ् शुक्रवा- ।
वृत्तं ॥ रदोळत्यन्त-कुळीर-लग्नदोळिभाश्व-व्रात-रत्नातप- ।
च्छद-सिंहासन-पूज्य-राज्य-पदम सो[मे]श्वरं ताळ्दिदम् ॥

वृत्तं ॥ जयमं धर्म्मके धर्म्मान्वयमनसदळ साधु-वर्ग्गके वर्ग्ग- ।
त्रयमं तन्नन्तरङ्गक्कोडरिसि धरेय कूडे सन्मान-दान- ।
त्रयदिं सन्तय्से काळं कृत-युग-मयमादेम्बिन तन्न राज्यो- ।
दयदोळ् लोकक्के रागोदयमोदविदुदेम् धन्यनो सार्व्वभौमम् ॥

आ-प्रस्तावदोळ् ॥

वृत्तं ॥

नव-राज्यं वीर-भोज्यं पुगलिदवसरं सुत्तुवें गुत्तियं मु- ।
त्तुवेनेम्बी-गर्व्वदिं चोळिकनधिक-बळं मुत्ति मार्‌-ग्गुत्तिय प- ।
ण्णुवुदं केळ्देत्तेनुत्तेत्तिद तुरग-धळन् तागे सत्तागदग्रा- ।
हवदोळ् बेङ्कोड्डु सोमेश्वर-नृपन बळक्कोडिदं वीर-चोळम् ॥
पेसरं केळ्दक्कि बेळ्कुत्तुदु पर-धरणी-मण्डलं गण्ड-गेट्टाळ्- ।
वेसनं पूण्दत्तु शौर्य्योन्नतिगगिदसुहृन्मण्डळं मेल्पनावर्- ।
ज्जिसिदोन्दाज्ञा-विसेषक्केळसिदुदु सुहृन्मण्डळं सन्तमिन्ता- ।
देसकं कैगण्मे सोमेश्वर-नृपति मही-चक्रमं पाळिसुत्तम् ॥
अन्तःकण्टकरं पडल्वडिसि दुर्ग्गाधीशरं दुष्ट-सा- ।
मन्त-द्रोहरनुद्धताटविकरं निर्म्मूळनं गेय्दु वि- ।
क्रान्ताराातिगळं कळल्चि धरेयं निष्कण्टकं माडि नि- ।
श्चिन्तं श्री-भुवनैकमल्ल-महिपं राज्यं गेयुत्तिर्प्पिनम् ॥

वचन ॥

तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वरनुदार-
महेश्वरं चलक्के बलगण्ड शौर्य्य-मार्त्तण्डं पतिगेक-दाशं संग्राम-गरुडं मनुज-
मान्धातं कीर्त्ति-विख्यातं गोत्र-माणिक्यं विवेक-चाणिक्यं पर-नारी-सहोदरं

वीर-वृकोदरं कोदण्डपार्त्थं सौजन्य-तीर्त्थं मण्डलिक-कण्ठीरवं परचक्र-भैरवं राय-दण्ड-गोपाळं मलय-मण्डलिक-मृग-शार्दूळं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देव-पाद-पङ्कज-भ्रमरं श्री-भुवनैकमल्ल-वल्लभराज्य-समुद्धरणं पति-हिता-भरणं मण्डलिक-मकरध्वजं विजय-कीर्ति-ध्वजं मण्डलिक-त्रिनेत्रं रिपु-राय-मण्डलिक-यम-दण्डं जयाङ्गनालिङ्गित-दोर्-दण्डं विसुळर-गण्डं गण्ड-भूरि-श्रवनेम्बिव मोदलागे पलवुमन्वर्त्थाङ्क-मालेगळिनलङ्करिसि ॥

कं ॥ त्रैलोक्यमल्ल-वल्लभन् - । आळेनिसिदरोळगे मिक्क पसयितनुं मि-क्काळुं मिक्कणूमिन ब- । ल्लाळु लक्ष्मणने पेररनरिवरुमोळरे ॥

भुवनैकमल्ल-देवन । भवनदोळं ताने मानसं ताने महा- । व्यवसायि ताने विजय- । प्रवर्द्धकन् ताने पसयितं लक्ष्म-नृपम् ॥

अन्तेनिसि ॥

वृत्त ॥ अणुगाळ् कार्य्यद शौर्य्यदाळ् विजयदाळ् चालुक्य-राज्यके का-
रणमादाळ् तुळिलाळ्तनक्के नेरेदाळ् कट्टायदाळ् मिक्क म- ।
न्नणेयाळ् मान्तनदाळ् नेगळ्ते-वडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेळ्दाळ्
रणदाळाळ्दन नच्चुवावेडेयोळं विश्वासदाळ् लक्ष्मणम् ॥
एरडुं राज्यदोळं प्रजा-परिजनं कोण्डाडे चक्रेशरि- ।
ब्बेरु मोरन्दद कूर्म्मेयिन्दे बनवासी-देशम शासनम् ।
बरेदश्व-द्विप-पट्टसाधन-समेत कोट्ट कारुण्यदिम् ।
पोरेयल्मण्डलिक-त्रिणेत्रनेसेदं भू-भागदोळ् लक्ष्मणम् ॥
किरियं विक्रम-गङ्ग-भूपनेनगा-पेर्म्माडि-देवङ्गे ने-
गिरियं वीर-नोणम्ब-देवनेनगं पेर्म्माडिगं सिङ्गिगम् ।
किरियै नी निनगेल्लरु किरियरेन्दग्गप्पिस कारुण्यदिम् ।
नेरे कोट्टं प्रतिपत्ति-वृत्ति-पदमं लक्ष्मङ्गे सोमेश्वरम् ॥

मिगे बनवासे-नाल्के विभु लक्ष्मणनागे नोळम्ब-सिन्दवा-।
डिगे विभुवागे विक्रम-नोळम्बनळंपुरमादियाद भू-।
मिगे विभु गङ्ग-मण्डलिकनागे यमाशेगे नीळ्द लाड-वि-।
ण्डिगेयेने कण्डु कोट्टनवर्गा-नेलनं भुवनैक-वल्लभम् ॥

मदवद्वैरि-नरेन्द्र-मण्डलिक-सेना-भञ्जन वीर-नी-।
रद-दुर्व्वार-समीरण वितरण-क्रीडा-विनोदं प्रता-।
प-दिलीपं रिपु-पुञ्ज-कञ्ज-वन-केळी-कुञ्जरं लञ्जिका-।
मदनाख्य चलदङ्क-राम नृप-लक्ष्मी-लक्ष्मन लक्ष्मणं ॥

क ॥ बलिवलेव मलेव केलेवद-टलेव पळञ्चलेव मलेपरेल्वं मुरिदं ।
मलेयद केलेयद वलियद । मलेपरनिसुवेसके वेससिदं लक्ष्म-नृपम् ॥

वृ ॥ धाळियनिट्टु कोङ्कणमनङ्कणियोकिदप तगुळ्दु कोम्ब-।
एळुमनट्टि मुट्टि मले-येळुमना····मुर्च्चि मुक्कि नि-।
र्म्मूळिसिदप्पनेन्दु मलेपर्त्तले दोरदे रायदण्ड-गो-।
पाळ-नृपङ्गे मुन्दुवरिदेन्दुदनेन्दपरेम् प्रतापियो ॥

आळवलमुळ्ळडश्व-बलमिल्ल भटाश्व-बलङ्गळुळ्ळडम् ।
तोळ्वलमिल्ल भृत्य-हय-दोर्-ब्बलमुळ्ळडमेर्व्वलङ्गळिल्ल् ।
आळ् वेसगेय्यदेके वलिवर् मलेपर् म्मलेयेम्बुदेनदम् ।
वेळ्वलमागे मुन्तुळिदनल्लने लक्ष्मणनेम्ब कावणम् ॥

कवि दुग्ग चातुरङ्ग ववसे दव्वुळं धाळि सूळेरेनिप्पा-।
हवदोळ् चालुक्य-रामं वेससे रिपु-बलक्केत्तनिन्दारियन्नम् ।
भवनन्नं भद्रनन्न सिडिल बळगदन्न ज्वळ-ज्वालियन्नम् ।
जवनन्नम्मारियन्न समर-समयदोळ् लक्ष्मणं रामनन्नम् ॥

कुदुरेय मेले विल् परसु शूलिगे तीरिके भिण्डिवाळमे-।

त्तिद करवाळमाटिड्डुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्त् ।
ओदरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुम्बुवरेन्तु निल्परेन्त् ।
ओदवुवरेन्तु लक्ष्मणनोळान्तु बर्दुङ्कुवरन्य-भूमुजर् ॥
ईयल् बन्दडे कल्प-वृक्षमिदिरं बन्दान्त विद्विष्टरम् ।
सोयल् बन्दडकाळ-मृत्यु शरणायातावनीपाळरम् ।
कायल् बन्दडे वज्र-शैल-कृत-दुर्ग्गं लौल्य-भावं पर-।
खियल् बन्दडे रावणात्मज-चमू-विद्रावणं लक्ष्मणम् ॥
बिसुपळिदर्क्कनुर्क्कुडिगुमिन्दुव कान्ति कळल्गुमागसम् ।
कुसिगुमिळा-तळं तळर्गुमम्बुधि बत्तुगुमिल्लि लक्ष्मणम् ।
पुसिदोडमार्ग्गे टेप्परमनोड्डिदोडं मनमोल्दु कूडि छि-।
द्रिसिदोडमन्य-नारिगे मरुळदोडमाहवदोळ् मरल्दडम् ॥
शत्रघ्न हरि-शौर्य्यनङ्गद-भुजं सुग्रीवनात्मेश-सौ-।
मित्र रामनपामरं नर-वरं दुर्य्योधनं भीम-गा-।
त्रं भीष्म युधिष्ठिरं गुरु कृपं सत्-कर्ण्णनेन्दन्दे दल् ।
चित्रं भाविसे लक्ष्म-भूप-चरितं रामायणं भारत ॥
कलितनमिल्ल चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्- ।
गलियेनिपङ्गे शौच-गुणमिल्ल करं कलि-चागि-शौचिगम् ।
निले-नुडि-वोजे यिल्ल कलि चागि महा-शुचि सत्य-वादि मं-
डलिकरोळीतनेन्दु पोगळ्गुं बुध-मण्डलि लक्ष्म-भूपन ॥
कं ॥ मुनियिं किसुकख्खवरोसे- । दु नगुवरिन्तिनिते पेरर मुनिसुं मेन्चुं ।
मुनियिसे मुनिद जवं ह- । र्षनागे हर्षं गवृषभ-लक्ष्मं लक्ष्मम् ॥
एने नेगळ्द लक्ष्म-भूपं । विनमित-रिपु नृपति-मकुट-घट्टितचरणम् ।
बनवसे-पन्निर्च्छासिर- । मनाळुतुं सुखदिनरसु-गेय्युत्तिळ्दम् ॥

इरे वनवसे-पन्निर्च्छ्रा- । सिरक्कमत्थधिकारियुं कार्य्य-धुर- ।
न्धरनुं तद्-राज्य-समु- । द्धरणनुमेने नेगळ्द मन्त्रि मन्त्रि-निधानं

वृ ॥ कविता-चूताङ्कुर-श्री-मद-कळ-कळकण्ठोपम काव्य-सौधा- ।
र्ण्णव-वेळा-पूर्ण्ण-चन्द्रं सम-विषम-महा-काव्य-वल्ली-लतान्तो-
त्सव-चञ्चच्चञ्चरीकं वसुधेगेसेदनुर्व्वी-नुतं दण्डनाथ- ।
प्रवरं श्री-शान्तिनाथं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंसम् ॥
कुनयङ्गळ् जैन-मार्गामृत दोळिरे जल-क्षीरदन्तल्लि सद्-वा- ।
क्य-निशातोच्चञ्चुविन्द कुमत-कलुष-पानीयमं तूळ्दि जैना- ।
नन-निर्य्यत्-तत्त्व-दुग्धामृतमनखिळ-भव्योत्करं मेच्चलास्वा- ।
दने-गेय्वोळ्पिन्दमादं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंस ॥
परमात्म निष्ठितात्मं जिनपति परम-स्वामि तद्-धर्म्ममार्म्मम् ।
गुरु-वन्द्यं वर्द्धमान-व्रति-पति जनकं सन्द गोविन्द-राजम् ।
पिरियण्णं कन्नपार्य्यं तनगधिपति लक्ष्म-क्षमापालनात्मा- ।
वरजं वाग्भूषणं रेवणनेने नेगळ्दं धात्रियोळ् शान्तिनाथम् ॥

कं ॥ सहज-कवि चतुर-कवि निस्- । सहाय-कवि सुकवि सुकर-कवि मिथ्यात्वा-
पह-कवि सुभग-कवि नुत-महा-कवीन्द्रं सरस्वती-मुख-मुकुरम् ॥
सुकर-रसभावदिं व- । र्ण्णकदिं तत्त्वार्थ-निचयदिं सूक्तमेनल् ।
सुकुमार-चरितमं पेळ्- । द कवीन्द्राग्रणि सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
असहायनागियुं सुज- । न-सहायं मद-विहीननागियुमर्थि- ।
प्रसरोत्कट-दानाधिक- । नसदृश-विभवं सरस्वती-मुख-मुकुर ॥

वृ ॥ हरहासाकाश-गङ्गा-जळ-जळरुह-नीहार-नीहार-धात्री- ।
धर-नीहारांशु-तारावनीधर-शरदम्भोधर-क्षीर-नीरा- ।

कर-तारा-भारती-दिग्-रदनि-रदन-पीयूष-डिण्डीर-मुक्ता- ।
कर-कुन्देन्द्रेभ-हंसोज्वळ-विशद-यशो-वल्लभं शान्तिनाथ ॥
ओडवेयनोळिपार्नें पडेदु पुञ्जिसि पूजिसि कोण-ताणदोळ् ।
मडगदे शिष्टरिट्टडेगे बन्धुगळिल्ल मेगप्पुदेन्दुमे- ।
न्नोडमे शरीरमेन्नदु नियोगद पर्व्वमिदेन्नदेन्दु मे- ।
ळ्पडदिरिमेन्दु गोसने तोळल्वुदु:··········शान्तिनाथन ॥
कं ॥ एने नेगळ्द शान्तिनाथं । जिन-शासन-सत्-सरोजिनी-कलहंसम् ।
विनयदे निजाधिपति-ल- । क्ष्म-नृपङ्गे सु-धर्म्म-कार्य्यमं बिन्नविकुं ॥
चञ्चच्चामीकर-र । ता:ञ्चित-जिन-रुद्र-बुद्ध-हरि-विप्र-कुलो-
·······ह-सङ्कुळर्दि । पञ्चमठ-स्थानमेनिसुगुं बळि-नगर ॥
व ॥ अन्तु समस्त-देवता-निवास-पवित्रीभूतमप्प राजधानियोळाद जिनधर्म्म-प्रभावमं पेळ्वडे ॥
वृ ॥ सले जम्बू-द्वीपमोप्पं तळेदुदु पलवुं····भारतोर्व्वी-।
वळयं तद्-द्वीपदोळ् रञ्जिसुगुमेसेगुमा-क्षेत्रदोळ् कुन्तळं कु-
न्तळदोळ् सन्तं बसन्तं बनवसे वनवासोर्व्वियोळ् भव्य-सेव्यम् ॥
बळि-नाम-ग्राममा-ग्रामदोळमर-नुतं शान्ति-तीर्त्थेश-वासम् ॥
कं ॥ अ ···र्म्म-निर्म्मित-। मदं शिला-कर्म्ममागे माडिसु कोळ्वो-।
दुदु निनगे धर्ममेम्बुदम् । अदर्क्के बगेदन्दु धर्म्म-निर्म्मळ-चित्तम् ॥
वृ ॥ जिननाथावासमं वासव-कृतमेने मुन्नं शिला-कर्म्मदिं शा-।
सनमप्पन्तागिरल् माडिसि बळिके शि·······स्तम्भमं तज्-।
जिनगेह-द्वारदोळ् निर्म्मिसि विलिखित-नामाङ्क-मालावळी-शा-
सनमं चन्द्रार्क्क-तारं निले निलिसिदनेम् घन्यनो लक्ष्म-भूपम् ॥
कं ॥ मिगे मूल-संघदोळ् दे-। सिग-गणदोळ् मन्द कोण्डकुन्दा-
न्दान्वयमं ।

जगती-त·····न्तु । इरे नेगळ्चिदर् नेगळ्द-वर्द्धमानमुनीन्द्रर्
वृ ॥ पडेदडे पेम्पनेय्दे वडेयर् श्रुतमं श्रुतदोन्दु मय्येयम् ।
पडेदडे दिव्यमप्प तपमं पडेयर् त्तपमं निरन्तरम् ।
पडेदडे कीर्त्तियं पडेयरी ·······गुणङ्गळम् ।
पडेवडे वर्द्धमान-मुनिपुङ्गवरन्तिरे मुन्ने नोन्तु···॥
सन्ततमोन्दि निन्द तपदोळ् श्रुतदोळ् गुणदोळ् विशेषरि-।
न्नेन्तिवरेल्लरिं पिरियरिन्तिवर् अगळ्दग्रगण्यरोर्-।
अन्तिवरेन्दु कीर्त्तिपुदु कूर्त्तु······देव-सि-।
द्धान्त-मुनीन्द्ररं नत-नरेन्द्ररनब्धि-परीत-भूतळम् ॥
मुनिसणमागलाग मुनिसिं मुनियुं मुनि-वन्द्यनागना-।
मुनिसु ममत्वदिं ममते मायेयिनन्तदु लोभदिं प्रव-।
र्द्धनकरमेन्दु ···········वीत-कषायराद स-।
न्मुनि मुनिचन्द्र-देवरे धरित्रिगे देव·····देवरल्लरे ॥
सार-कळा-प्रबोधित-सुदारकरूर्जित-साधु-संघ-नि-।
स्तारकर ···जात-महीजात-विदारकरुग्र-कर्म्म-सम्-।
हारकरत्युदार······सर्व्वणन्दि-भ-।
ट्टारकरल्ते भव्य-सुकुमारक-कैरव·····धिपर् ॥
उरग-पिशाच-भूत-विहगोग्र-नव-ग्रह-शाकिनी-निशा-।
चर-भय·····चरदोळ्द्भुतदिं विपरीतमाडदम् ।
बरेदुदे यन्त्रमो·········तन्त्रम्·············।
···· · ························· ··· ······· ···॥
जित-कुसुमास्त्ररूर्ज्जित-यशो-धनराज्जित-पुण्य-कर्म्मर-।
न्वित-बहु-शास्त्रराद्भुत-सुशीळरधःकृत-किल्बिसर् प्रबो-।

धित-बुध···।

···॥

····अभिविनुतर् श्री-माघनन्दि-देवर् प्पलवु जिन-निळयङ्गळम-खिळा-
वनि बण्णिसे बळ्गिगा··जिन-पूजाभि
····र्च्चना-निरतनाहारादि-दान-प्रवर्द्धन-शीलं नुत-भव्य·············हा-
मण्डलेश्वरं लक्ष्मरसं श्रीमल्लिकामोद शान्तिनाथ-जि ·····कीलक-
संवत्सरद भाद्रपदद पुण्णमे-सोमवारद्···· ····देसिगगणद
ताळकोलान्वयद माघनन्दि-भट्टार··············र्गे मुन्न श्रीमज्जगदे-
कमल्ल-देवर् ब्बळ्गिगावेय······ .. ··········· ··········ळ्दे
मत्तर् प्पन्नेरडु अळिय गोळपय्यन वसदिगे ·····················
श्रीमच्चालुक्य-गङ्ग-पेर्म्मानडि-विक्रमादित्य- देवर ·· ······· ···
·········मुम नन्दन-वनद् बसदिगे पूर्व्वदिन्नडेव················भूपं
समुचित-विनयं बिन्नप गेय्ये········ ···············दर्प्प-देवम् ॥ अनघ-
श्री-शान्तितीर्त्थेश्वर-पद················विधि-सहितं शासन माडि कोट्ट
···· ···(हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक)········जिड्डुळिगे
गुळिद नाल्कारु पोम्मानिगर्द्दम्········ एरडकु कृष्ण-भूमक्कदरे
किसु ·······अदररेयुं नोडि सिद्धायमक्कुम् ॥····· ग दासोजं खण्ड-
रिसिदं मंगळ महा श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

जिस समय (चालुक्य उपाधियों सहित) त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल-देव शान्ति और बुद्धिमानीसे राज्य कर रहे थेः—उन्हें लाट, कलिंग, गंग, करहाट, तुरुष्क, वराड, चोळ, कर्ण्णाट, सुराष्ट्र, मालव, दशार्ण्ण, कोशल, केरल ये सब राजा भेंट देते थे। मगध, आन्ध्र, अवन्ति, वंग, द्रविळ, कुरु, खस, आभीर, पाञ्चाल, लाळ और दूसरे देशोंका उन्होंने नाश कर

दिया था। शक सं. ९९० में उक्त मितिको उन्होंने प्रधान योगका ... किया और वे तुंगभद्रामे स्वर्गवासको सिधार गये।

इनका ज्येष्ठ पुत्र सोमेश्वर था। उसका दूसरा नाम 'भुवनैकमल्ल' था वह अब राज्य कर रहा था।—

तत्पादपद्मोपजीवी लक्ष्मण था। उसकी बहुत-सी प्रशसा। जिस यह बनवसे १२००० पर राज्य कर रहा था:—

उसका दण्डनाथ शान्तिनाथ था। उसकी प्रशसा। बलिनगर, या बलिग्राम (वलगाम्वे)मे सभी धर्मोंके मन्दिरोंके होनेकी बात। राजा लक्ष्मणने भी वहाँ मन्दिर (जिन भगवान्‌का) बनवाया।

मूल संघ, देसिग गण और कोण्डकुन्दान्वयके वर्द्धमान मुनीन्द्र। मुनिचन्द्र-देव सिद्धान्त। इन दोनोंकी प्रशसा। इन्होंने भी जैनमन्दिर बनवाये। महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसने, मल्लिकामोद शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको) देसिग-गण तालकोलान्वयके माघनन्दि-भट्टारको कुछ जमीन दानमें दी। दासोजने इस लेखको उत्कीर्ण किया।]

[EC, VII, shikarpur tl., n° 136.]

२०५

सौंदत्ति—कन्नड—भग्न

[काल लुप्त ?]

भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं [।] जीयात्त्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं [॥] स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारकं सत्याश्रय-कुळतिलकं चाळुक्याभरण श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरा-भिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सल्लुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि [।] समधिगतपञ्च-महा-शब्द-महामण्डलेश्वरं लत्तलूर्प्पुरवरेश्वरं त्रिवळीतूर्य्य निर्घोषणं वैरिकुळविलयान्तकविभीषणं सिन्दूरलाञ्छनं समस्तविद्या-विरिंचनं सुवर्णगरुड़ध्वजं विदग्धमुग्धाङ्गनामकरध्वजं रट्टकुळवनज-

वनमार्त्तण्डं कदनप्रचण्डं रिपुसमरवीरवृकोदरं परनारीसहोदरं साह-
सोत्तुंग सेननर्सिग नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामंडलेश्वरं
कार्त्यवीर्यरसर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥ श्रीरमणनतुळविजयश्रीरमणं विपुळ
विमळ समुदित कीर्ति श्रीरमणं चतुरवचःश्रीरमणं नन्नभूपनलु-
परूप ॥ आतन तनय । स्थिरनुडिवं कलितनदोळ्पोरेदाळि
मुन्नमिरिवनेन्दडे सकळोर्व्वरेयोळ् कत्तन सत्यद दोरेगं शौर्यद
पोगळ्केगं समनोरे ॥ अन्तेनिसिद वीरकत्तरसर्निं पिरिय ॥ वृ ॥
वसुधा चक्रदोळेन्तु बण्णिसुवदं तन्न(न्ना) [ळ्के] तन्नेळ्गे
तन्नेसकं तन्न पोगर्त्ते तन्न विभवं तन्नोजे तन्नुद्धसाहससंपन्नतेयिं
धरावळयमं नानाविध (धं) कूडे मुद्रिसिदं रट्टर मेरु डायिम महीपाळं
नृपाळोत्तमं ॥ तदनुज ॥ सुरकुजमं पळंचल्वु[दी]नगुणं सले संद वज्र
पंजरमननागतं पळिवुत्तिर्प्पुद्दु [का]वगुणं परीक्षिसल् सरधियनेय्दे रेग-
पुदु तन्न गभीरगुणं समस्तदिक्परिवृड(ढ)देळ्गेयं नगुवुदुद्धगुण(णं)
कलिकन्नभूपन । तत्सुत ॥ क ॥ निरुपम समस्त कडेयोळ्रसिन
स
भव्रनेसेव वाद्यविद्याधरनोळ्ळरसंकसंकरं कप्परवर्षनेरेगे नेगर्ददेनेरेग
महीश ॥ तदनुज ॥ वृ ॥ कदनदोळान्तरातिगहि[यछ]द राहुवि-
जाति रूपनल्लद विनतासु [ह्रगेयु]र्व्वे(र्वे) दव्लुरियल्लद देहिकालन-
ल्लद जवन ॥···म (?) वे गतनल्लद बादव(न)न्त मानविल्लघ (द)
रवियेन्दोडांपदटरा[रु रणा]ग्रदोळंकभूपन ॥ तदग्रजनप्पेरगभूपा-
त्मज ॥ असुहृद्भूपकिरीटताडितपद वीरांगनालिंग(लिं)गनोल्लसि[ता]
ग हरहासकाशशिकान्ताकाशगंगाजळप्रसरामोघदिगंतकीर्ति तपनप्र-
द्योतसन्मूर्ति सन्द सु(सा)जद्गुणदीपवर्ति नेग[र्दे] श्री सेन-
भूपाळक ॥ तत्तनय ॥ अरिभूपाळ कृशान्तनुद्धतरिपुक्ष्मापाळसंदोह

शीकर कालानलनु (ने)............तदप्प (?) भयंकरवि[द्विं]ड्मा।६५
मेघलयकालोत्पातवातं क्षितीश्वर-चूडाम[णि]............[।।]
तेशं कीर्तिश्रीवनिताधीशनुदित संशुद्धवच(चः)श्रीरमणीशं वीर (?.
............[।। जिन] नाराधिपदेवनुद्धचरितर्न्विवात्रन.........
टासनधर्म्मा (?) रुगळ्विरो........जनकनुर्व्विजाते प्रत्यक्ष गोमिनि ता।
मैळलदेवियेन्दधिक.................नोळ्दमतक्कित्रर्प्पे (?) री क्षितिपति
सैनि (?) र वधूप्रकर........दिति........आतन कुळांगने [।।] श्री
वनिते ताने बन्दु मही वनितेगे तिळकमेनिसि कत्तन वक्ष (क्षः) श्रीव-
निते नेगई [भाग]लदेवी जगज्जननि सज्जनाप्रणियेनिकु ।। आ दंपति-
गळ्गे गिरिसुतेगं हरंगमनुरागदे षण्मुखनेन्तु पुट्टुवंत(वि)रे नेगई रुग्मि-
णिगमा ह[रिगं] स्मरनेन्तु पुट्टुवन्तिरे सले कान्तिगं रविगमर्क्कतनूभव नेंतु-
पुट्टुवन्तिरलत्रगोंल्दु पुट्टिदनु रगु कलि सेनभूभुज ।। अवनीपालानत
श्री[पद]कमलयुग तत्वनिर्ण्णिक्तराद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमळ-
वच(चः)श्रीवधूकान्तनं गोद्भवदर्प्पारण्यदावानळनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं
रविचन्द्रस्वामि भव्याम्बुजदिनपनघौघाद्रिसद्वज्रपात ।। क ।। कंडू-
र्गणाब्धिचन्द्रन खण्डितसुतपोविभासिखण्डितमदनं डिंडीरपिंड धुर-
वेदण (ण्ड)[य]शश्रपिण्डनर्हणंदि मुनीन्द्र ।। मल्लिकामाले ।। कन्तु-
राजगजेन्द्रकेसरि भ[व्यलोकसुखाकरं कान्तवाग्वनितामनोरमनुप्रवी-
रतपो]मयं शान्तमूर्ति दिगन्तकीर्तिविराजि द्ढा (ढाभिमानी रणभू-
सेनानि रट्टान्वयश्रीनेत्र बुधमित्र नुज्व (ज्ज्व) ळयशश्पात्रं नृपं रंजिपं
आ सेनावनिपंगमप्रतिमलक्ष्मीदेविगं पुट्टिदं । भूसंरक्षणदक्षदक्षिणभुजं
विध्वस्तशत्रुव्र (व्र) जं त्रासानम्रनृपालपाळितजयश्रीस(श)त्वान्विता

भासं सूनृतवाग्विळासनवनीनाथोत्तमं कत्तमं ॥ आ विभुविन वधु पद्मलदेवी कळारूपविभवजिनमतदोळ्वाग्देवी रतिदेवी लक्ष्मीदेवी शचीदेवियेनिसि मिगे सोगयिसुवळ् ॥ श्रीपति ना विष्णुः पृथुवीपति येने लक्ष्मीदेवनो-गेदु वसुदेवोपमकत्तमविभुगं श्रीपद्मलदेवियेम्ब मुतदेवकिग ॥ प्रकटि-ततेजनन्वयसरोजसमूहविकासि(शि) सज्जनप्रकररथाग सम्मदकर (रं) नियताभ्युदयप्रशोभिताधिकनिजमण्डळं जितकळंक पवित्रचरित्रनागि चन्द्रिकेगधिनाथनादनिदु विस्मयन्त प्रभुलक्ष्मीभूभुजं ॥ श्रीयुवतीशहेम-गरुडध्वजमडितमण्डलेश्वरनारायणलक्ष्मणंगे तनुजम्भुजदन्ते धरोरु-भारधौरेयरनून दानजयधर्मधरर्व्विभुकार्त्तवीर्यलक्ष्मीयुतमल्लिकार्जुन महीश्वररादरतर्क्यविक्रमर् ॥ परचक्रं निजविक्रमक्कगिदु तेजःच (जश्ज) क्रमं विट्टु कोवर चक्रक्केणे र्यप्पनन्तिरेविनं दिक्चक्रमं व्यापिसुत्तिरे

[यह लेख भी एक टुकड़ा है और उस पाषाण-तलसे लिया गया है जो मि० फ्लीटको उस मन्दिरके आँगनमें आधा गड़ा हुआ मिला था जिसमें कि पूर्वके दो लेख (नं. १३० और १६०) मिले थे। इसमें नन्नसे ले कर कार्त्तवीर्य द्वितीय तककी वंशावली मिलती है। का० द्वि० को चालुक्य राजा भुवनैकमल्लदेव या सोमेश्वर द्वितीय बतलाया गया है। इसका काल सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९९१ ? (१०६९-७० ई०) से लेकर शक ९९८ (१०७६-७ ई०) तक बताया है। इसमें उसके पुत्र सेन द्वितीयका नाम भी आता है, लेकिन लेखकी वंशावलिके भागका मुख्य उद्देश्य स्पष्टतः ७ वी पंक्तिमें है जिसमें कार्त्तवीर्यकी सन्तान-परम्पराका उल्लेख है। यही कार्त्तवीर्य उस समय अपने कुटुम्बका प्रतिनिधि था, उसका पुत्र सेन नहीं, क्योंकि वह उस समय निरा बच्चा रहा होगा। दानगत लेखका भाग लुप्त है।]

[JB, X, p. 172, a, p. 213-216, t, p 217-219, tr. (ins. n° 4)]

२०६

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[काल लुप्त पर लगभग १०७० ई०]

[मुल्लूर (निड्डुत परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें तीसरे पाषाणपर

..................यानिधि सत्या.... ....ळ-देवि ॥ ..

............विनिर्गत.............लोक्यविख्याते ....यण मोक्षदे

.............वर्ण...............द्यामुलं.........पनिद....माळि............

तुर्व्वीपाळ-मूत....वरसिद कारुणियोदव.......... न वचन काय वद्दिग

........तुळ्ळिन........यम्वन्तिरे स...... ....त दिविजलोक ॥ खं

.............पृथुविकोङ्गाळवनरसि....

[यह समस्त लेख बहुत बिगड़ा हुआ है। किसी मरे हुएका स्मारक है। और पृथुविकोङ्गाळवकी रानी.........]

[EC, IX, Coorg tl, n° 36]

२०७

चन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[शक ९९६=१०७४ ई०]

[चन्दलिकेमें, उसी बस्तिके उत्तरकी ओरके एक दूसरे पाषाणपर]

भद्रं समन्तभद्रस्य पूज्यपादस्य सन्मतेः ।
अकलंक-गुरोर्ब्भूयात् शासनाय जिनेशिनः ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
स्वस्ति श्री-प्रमदा-प्रमोद-जनकं यस्योरु-वक्ष-स्थलम्
यद्दोर्द्दण्ड-कृतान्त-वक्त्र-विवरे मग्नं द्विपट्-पार्थिवैः ।

यस्येयं वसुधा चतुर्ज्जलनिधिर्व्यावेष्टिता प्रेयसी
जीयाच्छ्री-**भुवनैकमल्ल-नृपतिः** सोऽयं नतानन्दनः ॥

तेनेदं नरपाल-मौलि-विळसन्माणिक्य-लीढाङ्घ्रिणा
श्रीमद्-मल्ल-सुतेन शासनमहो दत्तं द्विषणमाथिना ।
आहारादि-चतुर्विधं मुनिगणे दानं च यस्य प्रियम्
तेनाप्तं **कुलचन्द्र-देव-मुनिना** शुभ्राभ्र-सत्-कीर्त्तिना(म्) ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चाळुक्याभरणं श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-देवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे **बङ्कापुरद** नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समस्त-भुवन-प्रस्तुत-ब्रह्म-क्षत्र-वीरान्वय श्री-**पृथ्वी-वल्लभ** महाराजाधिराज परमेश्वरं **कोळाळ-पुरवरेश्वरं** विक्रम-गङ्ग जयदुत्तरङ्ग..........मणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि श्रीमच्चा........ पेर्म्माडि भुवनैक-वीरनुदयादित्यनुं चाळु........ल-स्तम्भं नर-वैद्यं कुमार-मण्डलिकं बुद्धर........गेय्यलु श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-देवरु** भर ....कवर्त्ति-नवीकृतमप्प **बन्दणिके-**य तीर्त्थ ....शान्ति-नाथ-देव.........त-नवीकार..... ....लाप्रवर्त्तन..........कालान्तरित-पु ....नव.........द कम्पणं **नागरखण्ड**.........बाड......... **शक-वर्ष ९९६** रनेय आ ......द पुष्य-मासदुत्तरायण-संक्रमण.... .... **श्री-मूल-संघान्वय-क्राणूर्-ग्गण**.........च्छद श्रीमदुभय-सिद्धान्त-वार्द्धि-चू..............प्प **राम(परमा)नन्दि-सिद्धान्त-देवर** शिष्यरु **कुळ**........**देवर** कालं कर्चि सर्व्व-नमस्यं धारा-पूर्व्वं......... ब्रशासनमुं शिला-शासनमुं माडि.........(इससे आगे अन्तिम वाक्यावयव

और श्लोक)·········त रितोक्ति-सहितं····· ·······खं मुखाब्ज-७।
·········मतोदयं सद·········मदनेम्बिनं नेगळ्द्··············(॰ .
अन्तिम श्लोक)।

[जिनशासनके कल्याणकी कामना । श्रीमद् मल्लके पुत्रद्वारा शासन (दान) कुलचन्द्र-देव-मुनिको मिला था। जिस समय (· पदों सहित) भुवनैकमल्ल-देवका विजय-राज्य प्रवर्द्धमान था और वे · पुरमें रहते थेः—तत्पादपद्मोपजीवी चालुक्य पेर्म्माडि भुवनैकवीर ·८ शासन कर रहे थे;—भुवनैकमल्ल-देवने शान्तिनाथ मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको), मूलसंघान्वय तथा काणूर-गणके परमानन्द-सिद्धान्त-देवके शिष्य कुलचन्द्र-देवको नागरखण्डमें भूमिदान किया ।]

[EC, VII, Shikarpur tl , n° 221.]

२०८

वलगाम्वे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०७५ ई० ?]

[वलगाम्वेमें, चन्न-वसवप्पके खेतमें भग्न जिन-मूर्तिपर]

(नागरी अक्षर)

स्वस्ति श्री चित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शान्तिनाथ-देव-सम्वन्ध श्री-वलात्कार-गण मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिसिनु अनन्त-कीर्ति-देवरु हेग्गडे केसव-देवङ्गे धारा-पूर्वकं माडि कोटेवु प्रथिष्टे पुण्य सान्ति (यहाँ दानकी विगत दी हुई है)।

[वलात्कार-गणके, मालवके शान्ति-नाथ-देवसे सम्वन्धित चित्रकूटाम्नायके मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य अनन्तकीर्त्ति-देवने हेग्गडे केशव-देवको दान दिया (यहाँ उसकी विगत है)।]

[EC, VII, shikapur tl., n° 134.]

२०९

कुप्पुटूरु—कन्नड़

[शक ९९७=१०७५ ई०]

श्रीमज्जयत्यनेकान्त-वाद-सम्पादितोदयम् ।
निष्प्रत्यूह-नमपाकशासनं जिन-शासनम् ॥
पदिनाल्कु ·················आस्पदमा- ।
दुदशेष-लोकमल्लिर्प्पुदु मध्यम-····एक-रज्जु-प्रमितम् ॥

आ-मध्यम-लोकद

················नडुवण ।
पोम्बेट्टद तेङ्कलेसेव भरतावनि·······॥
·······बुजवदनेय कुन्तळव् ।
एम्बन्ते सेदत्तु ललित·········· ॥
कुन्तळ-भूतळक्के तोडवादुदु तां वनवासि-देशमो- ।
रन्तेसेवग्रहार-पुर-पल्लिगळिन्दुरु-नन्दनाळियिन्- ।
दं तुरुगिर्द्द शाळि-वनदिन्द् ·········।
क्रान्त-विरोधियिर्द्दु वनवासियोळन्वय-राजधानियोळ् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डळेश्वर वनवासि-पुर-वराधीश्वर···········लब्ध-वर-प्रसाद कादम्ब-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डने-निसिद कीर्त्ति-देवन वश-वीर्य्य-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

विनुतानन्द-जिन-व्रतीन्द्र-भगिनी······· ।
वन-जैनाङ्घ्रि-सरोज-भृङ्गनधिकाभ्यस्तास्त्र-शास्त्र····।
····नुतोर्व्वीज-तळ-प्रसूति-वर-वानप्रस्थ-तद्-योगि-पू- ।
जन-शीलं वनवासियागि·······इन्द्रोत्तमम् ॥

शासन-देवियिं कुडिसि राज्यमना·······तद्-वनम् ।
देशमदागि निर्मिसि नोसलिगडे पट्टमिदेन्दु पीलियम् ।
वास्············वळिका-विभुनिह्नने नाममादुवुद्- ।
भासि मयू ···वर्म्मनभिवन्द्य-कदम्ब-कुळ त्रिलोचनम् ॥
नयदा मयूरवर्म्मा-न्वय··········अलर्च्चिदं कुवळयमम् ।
जय-लक्ष्मी-रमणं···जय-भुज-बळनमळकीर्त्ति कीर्त्ति-नृपाळ ॥
असम-वितरण····स-मीमं कीर्त्ति-देवनेम्बी-पेसरम् ।
वसुधे कुडे पडेदनेण्टु-देसेयानेगे कीर्त्ति कीर्त्ति-मुख्यवादुदरिम् ॥
किं कर्ण्णः किं··········विज-पतिष् किं स्मरः कि विधाता
दानी नून प्रतापी पृथु···र-विभवश्चारु-रूपष् कला-वित् ।
य····यस्येति नित्य वितरण-विजय········न्दर्य्य-विद्या- ।
वार्द्धिस् संस्तूयतेऽसौ सकळ-रिपु-कुलो·······नः कीर्त्ति-देवः ॥
चलर्दि साधिसि सप्त-कोङ्कणमनाटन्दिक्कि विद्विष्ट-मण्—।
·············उब्बरा-बळयमङ् केयूरमं पेत्तल् ।
तळे····दक्षिण-बाहु-दण्डदोळुदात्तं कीर्त्ति-देवं यशो—।
मळ-मुक्ता-फळ्·······णोचित-लसद्-दिक्-कामिनी-सङ्कुळम् ॥

आ-कीर्त्ति-देवनग्रमहिषी ॥

परिवार-सुरभि जिनमत-। शरधि-सुधाकिरण-लेखे सुचरि···।
भरणेयेने नेगळ्द नृप- सौन्-। दरि माळल-देवियेणेगे राणिय-रेणेये ।
पुरु-जिन-पति कुल-देव्यं । गुरु वेद्द ···मुनि कीर्त्ति-नृपेश्वरम् ।
आत्म-कान्तनेने बा-। प्पुरे माळल-देवि-राणियेणेयार् स्सतियर् ॥
सिरि गिरिजाते सीते रति भा····रुक्मिणि-देवि रूप-सौन्द-
रतेगे पेर्म्मेगुद्ध·······कधिकं सुवगिङ्गे सत्कळा-।

करतेगण जिनेन्द्र-पद-भक्तिगे पासटि·········।
सरि कलि-कीर्त्ति-देवन कुळाङ्गने माळल-देवि-राणियोळ् ॥
मिळिर्व पताकेगळ् मकर-तोरण-मण्डलि मान-गम्बमग्-।
गळिसिरे·········चैत्य-गृहावळि लेक्किपड्ङ सङ्-।
गलिपडें लक्कँग मिगिलशेष-जनं तणिवन्तु कोळ्व पू-।
मळेयोळे नोम्प नोम्पि सतकोटिये माळल··········॥

व ॥ आ-बनवासे नाडोळु ॥

बळेद सुगन्धि-शालि-वनदिन्दोळगोप्पुव नारिकेळ-का-।
दळ-नव-पूग-नागलतिका-वनदिं परि·········ळदिम् ।
वळयितमागि विप्र-सुर-चित्र-निकेतन-माळेयिन्दे कण्-।
गोळिपुदु कुप्पटूर् एसकळ-विधेगे तानेने जन्म-भूतलम् ॥
नेगळ्दखिवळ····ति-पुराण-कळा-बहु-तर्क-तन्त्र-पा-।
रगरुचिताध्वरावभृथ-संस्नपनाति पवित्र-गात्रर-।
स्सगणित-सत्य-शौच·········तिथि-पूजन-देव-पूजेयिम् ।
सोगयिप कुप्पटूर विभु-विप्ररिदेम् भुवन-प्रसिद्धरो ॥
धरेगे चतुस्समय-समु ।······शरणागतैक-रक्षामणिगळ् ।
निरवद्य-चरितराज्ञा-। धरारी-कुप्पटूर सासिर्वरवोल् ॥
ब्रह्मैकश्चतुरा·····थ विबुधा देवाः कविर्भार्गवो
येषामग्रत एव नान्य इति ये प्रस्तुत्य-विद्यार्ण्णवाः ।
उत्तङ्गाः कुळशैलवत्तरणिवत्तेजस्विनो वार्द्धिवत्
गम्भीरा भुवि कुप्पटूर्-व्विभु-वरा विप्रा जयन्ति स्थिरम् ॥
प्राणुतं बन्दणिका-सु·····कृत-सम्बन्धं जगक्केय्दे भू-।
षणमी-ब्रह्म-जिनालयं दलेने पेळ्दी-कुप्पटूरोळ् गुणो-।

ळ्वने मुं मा·······दी-स्थलकदेडे-नाडोळ् चल्तु-वेतिर्द - सिद्दु ।
डणियं माळल-देवि तां विडिसिदळ् श्री-कीर्ति-भूपाळनिम् ॥

अन्ता-बन्दणिका-तीर्थादि-सकळ-चैत्यालयकाचार्य्यरुं ५०॥ ५
र्य्यरुमेनिसिद पद्मनन्दि-सिद्धान्त-देवर गुरु-कु·····न्वय ५
न्दोडे ॥

दुरित-कुलान्तकं चरम-तीर्थकरं विभु वीरनाथनी- ।
धरे तिळिवन्तु हेयमिद·······समस्त-तत्त्वमम् ॥
परिविडियिन्दे पेळ्दु जनमं वर-मोक्ष-पथक्के तिर्द्दि वित्- ।
तरिसिद मुक्ति-कान्तेय लताङ्गमनप्पिदनिन्द्र-वन्दि -॥
आ-नेगळ्दन्व्य-कश्यपनिनादुदु काश्यप-गोत्रमी-जनम् ।
ज्ञान-निधानना-जिनन सद्गण-नायकरप्रिमावधि- ।
ज्ञानिगळप्प गौतम-मुनि······ मु····रे श्रुतकेवळ-प्रभा- ।
भानुगळप्प विष्णु-मुनि-मुख्यरुमा-पथमं निमिर्च्चिदर् ॥
यतिगळवरिन्दे पलवरुन् । अतीतवा····वळिक्कमवतरिसि वहु-।
श्रुतनागियुं वलं वि- । श्रुतनाद भद्रवाहु-यतियिदुचित्रम् ॥

अवरिं वळिक्के ॥

श्रुत-पारगरनवद्यर् । चतुरङ्गुळ-चारणर्द्धि-सम्पन्नर् स्सं- ।
हृत-कु-मत-तत्त्वरेनिसिदर् । अतर्क्य-गुण-जलधिकुण्डकुन्दाचार्य्यर् ॥

आ-कोण्डकुन्दान्वयदोळु ॥

श्री-कुण्डकुन्दान्वय-मूलसंघे क्काणूर्-गणे गच्छ-सु-तिन्त्रिणीके (य्)
अम्भोनिधाविन्दुरिवोदपादि सिद्धान्ति-चक्रेश्वर-पद्मनन्दी ॥
शान्त-रसं पोनल्-वरिदु संयमवल्लि मडल्तु पर्व्वि तो- ।

........चराचर-व्रजमनात्म-वचोऽमृतदिं विनेयर ।
स्वान्त-रजो-मळं तोळेदु पोय्तेने पेळ् बुध-पद्मनन्दि-सि- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्तियनदाद् पोगळल् ग्गुण-शील-मूर्त्तियम् ॥

आ-प्रतिष्ठाचार्य्यरेनिसिद श्री-पद्मनन्दि-सिद्धान्ति-देवरिं सु-प्रति-ष्ठितमाद कुप्पटूर श्री-पार्श्वदेवर चैत्यालयमं पट्ट-मा-देवि माळल-देवि नेरेये माडिसि स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्रीमदनादियग्रहारं कुप्पटूरशेष-महा-जनङ्गळं यथोक्त-विधियिं पूजिसियवरिं ब्रह्म-जिनालयमेन्दु पेसरिट्टुयल्लिय कोटी वर-मूलस्थान-प्रमुख-पदिनेण्टु-स्थानदाचार्य्यरुं बेरसु बनवसेय मधुकेश्वर-देवराचार्य्यरं बरिसि पूजेयं कोट्टु जोग-वट्टिगेय-निक्किसिया-महाजनङ्गळिगेयनूरु-होन्न कोट्टु स्त (स्थ) ल-वृत्ति (आगेकी ३ पंक्तियोंमें दानकी विस्तृत चर्चा है) शक-नृप-वर्षद ९९७ य पिङ्गल-संवत्सर दक्षय-तदिगेयमावास्ये-आदित्यवार-संक्रमण-व्यतीपातवोन्दिद दिनदोळु देवर नित्य-नैमित्त-पूजेग ऋषियराहार-दानक्कवेन्दु पद्मणन्दि-सिद्धान्तिचक्रवर्त्तिगळ् कालं तोळेदु धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टळु (हमेशा के अन्तिम वाक्यात्रयव) आरुवणव नमस्यवागि बिट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक) बम्मरहरियण्ण हेळ्द शासन मङ्गळ महाश्री ॥

[मेरु पर्वत, भरत क्षेत्र, कुन्तल-देश, और वनवासिके उल्लेखपूर्वकः—कादम्ब-कुल-कमल-मार्त्तण्ड कीर्त्ति-देव राज्य करते थे, जिनका वंशावतार निम्न प्रकार हैः—मयूरवर्म्मा नामके एक राजा या युवराज थे। शासन-देवीकी कृपासे इनको राज्य मिला था, और एक वनको राज्यके रूपमें रूपान्तरित किया गया था। एक मयूरके पङ्खोंका बनाया हुआ पट्ट उनके सिरपर रक्खा गया था, इसलिए उनका नाम मयूरवर्म्मा था। ये कदम्ब-कुलके अभिवन्द्य थे। उन्हींकी साक्षात् सन्तान कीर्त्ति-देव थे; उनकी

प्रशंसा। उन्होंने सप्त कोंकणोंको, लीलामात्रमें ही वश कर लिया था। उनकी ज्येष्ठ रानी माळल-देवी थी; उसकी प्रशंसा।

उस बनवासे-नाड्में, (अनेक आकर्षणों सहित) कुप्पटूर था, ... हजार ब्राह्मण अपनी विद्या और भक्तिके लिये विख्यात थे। प्रसिद्ध ... णिकेसे सम्बन्ध रखनेवाली चीज़ोंमेंसे कुप्पटूरका ब्रह्म-जिनालय ... आगे था; इसके लिये माळल-देवीने राजा कीर्त्तिसे सिड्डणि, जो ए... सर्व-सुन्दर स्थान था, प्राप्त किया था।

बन्दणिके तीर्थ तथा दूसरे चैत्यालयोंके मुख्य पुरोहित मण्डलाचार्य पद्मनन्दिसिद्धान्तदेवके आध्यात्मिक वंशका अवतार वर्णन.—भगवान वीरनाथ, गणधर गौतम (इन्द्रभूति) मुनि, तथा श्रुत-केवली विष्णुमुनि ये तीन ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जिन-मार्गका विशेष रूपसे विस्तार किया। उनके बाद कई मुनियोंके गुजर जानेके बाद भद्रबाहु यति हुए। उनके बाद, जैनपरम्परामें परिपूर्णरूपसे निष्णात, चार अङ्गुल ऊपर जमीनसे चलनेवाले (चारणऋद्धिधारक) कुन्दकुन्दाचार्य हुए। उसी कुन्दकुन्दान्वयमें मूल-संघ, क्राणूर्-गण तथा तिन्त्रिणीक-गच्छके सिद्धान्ति-चक्रेश्वर पद्मनन्दि हुए; उनकी प्रशंसा।

उस पट्ट-महिषी माळल-देवीने कुप्पटूरके पार्श्व-देवचैत्यालयको उन पद्मनन्दिसिद्धान्त देवसे सुसंस्कृत कराके और उसका नाम वहाँके ब्राह्मणों (जिनमें साधुओं-मुनियोंके गुण थे) से 'ब्रह्म जिनालय' रखवाकर कोटी श्वर-मूलस्थान तथा वहाँके सभी अन्य १८ मन्दिरोंके पुरोहितोंके साथ, तथा बनवासि-मधुकेश्वरको भी बुलवा कर उनकी पूजा करके और उन्हें ५०० 'होनु' देकर, और उनसे (उक्त) भूमियाँ प्राप्त करके,—इन सबको तथा कीर्ति-देवसे प्राप्त सिड्डणिवल्लिको (उक्त मितिको) प्राप्तकर, पद्मनन्दि सिद्धान्त-चक्रवर्तिके पाद-प्रक्षाल-पूर्वक दैनिक पूजा और ऋषियोंके आहारके लिये दान कर दिया।]

[EC, VIII, sorab tl, n° 262.]

२१०

गुडिगेरी—कन्नड़-भग्न

[शक सं० ९९८=१०७६ ई०]

१ ˘ – ˘ – ˘ – ळवर बसदि [म्] ॥ वृ ॥ सर ˘ ˘ – ˘ – ˘ ˘ ˘ –
˘ ˘ – ˘ ˘ – ˘ – ˘ – ˘ ˘ ˘ ˘ – ˘ – नय-मूकरनन्तदु माणे
वाग्र—

२ याकरनभयाकरं द्विज-दिवाकरन्— ˘ ˘ – ˘ – ˘ – ˘ ˘ ˘ ˘
मीकरं बुध-निशाकरनुद्घयशं **प्रभाकरम्** ॥ अन्तेनिसिद
पेर्ग्गडे

३ **प्रभाकरय्यननुभवणेयल्लु** ॥ ॐ स्वस्ति समस्त-भुवनवलय-
निलय-निरतिशय-केवलज्ञान-नेत्रतृतीय-विराजमान-
भगवदर्हत्सर्व्वज्ञवीतरागेपरमेश्वरपरमभट्टारकमुखकमलविनिर्ग-
तानेक-सदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणसिद्धा-

५ न्तादि-समस्तशास्त्रामृतपारावारपारगरुमनेकनृपतिमकुटतटघटि-
तमणिगणकिरणजलधाराधौतावदातपूतचर-

६ णारविन्दरुं बुधजनमनःपुण्डरीकवनमार्त्तण्डरुं षट्तर्क्कषणमुखरुं
परमतपश्चरणनिरतरु **परवादिशरभभेरुण्डापर-**

७ नामधेयरप्प श्रीमत् **श्रीनन्दिपण्डितदेवरा**चार्य्यरागि तपो-
राज्यं-गेय्युत्तमिरे ॥ वृ ॥ जिनसमयागमाम्बुनिधिपारगरु-

८ ग्रतपोनिवासिगळ् मनसिज-वैरिगळ् शम-दमाम्बुधिगळ् बुध-
सज्जनस्तुतरुव्विनतनरेन्द्ररुन्द्रमकुटार्च्चितपादपयोज-

९ युग्मरेम्बिननितु महत्त्वदिं **सिरियनन्दि-मुनीन्द्ररे** देवरुर्व्वि-
योळ् ॥ अवर शिष्यितियर् ॥ शम-दम-यम-नियमयुतर्व्वि-

१० मल-चरित्रर् जिनेन्द्रधर्म्मोद्धरणक्रमनिरतरेळेळे ....

पवासिगन्तियरेळेयोळ् ॥ वृ ॥ अन्तवरेळु

११ मत्तरने पण्डितरीये नमस्यमागि कल्पान्तदिनं वरं पडेदु

जिनेश्वर-पूजेग श्रुतात्यन्तसदान्नदान-

१२ विधिग सले कोट्टरिदं नितान्तवोरन्तिरे रक्षिप[६] ध्वज-

तटाकद् पन्नेरडुं-गवुण्डुगळ् ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

१३ ॐ समस्तगुणसम्पन्ननप्प श्रीमत्सेनबोव सिङ्गण्णङ्गे ॥

अरुहने नम्बिद देव्व गुरुगळु परवादि-शरभ-मेरुण्ड-

१४ बुधर्प्पर-हितमे तनगे चरितं दोरे-वेत्तुदु सिङ्गनेम् कृतार्त्थनो

जगदोळ् ॥ परमश्रीजैनधर्म्मकनवरतविशेषान्नदानक्के

१५ मुन्न भरत श्रेयांसनीगळु निजकुलतिलक जैनधर्म्माब्धिचन्द्र

स्फुरदुद्यत्तेजनत्युन्नतनमलयशं शिष्टरत्नाकरं-

१६ वाप्पुरे सिङ्गं भव्यसेव्यं शुचि-शुभचरितं धात्रियोळु पुण्य-

पुञ्जम् ॥ कन्द ॥ परहितचरित्रननुपमवरगुणनिल-

१७ य प्रियम्वदं धर्मदनक्षरपक्षपाति यतिपति-सिरिणन्दिव्र(व्र)ति-

पदाब्जभृङ्गं सिङ्गम् ॥ अमलचरित्र बुधहृत्क-

१८ मलाकरदिनकरं कृतार्त्थं जैनक्रमनलिनेष्ट श्रीनन्दिमुनीन्द्रर

सेनवोवसिङ्गं धरेयोळ् ॥ अन्तेनिसिद ॥ ॐ ॥

१९ शकवर्ष ९९८ नेय नल-संवत्सरद आहेयोळु स्वस्ति

श्रीमत् परवादि-शरभमेरुण्डापरनामधेयरप्प

२० श्रीनन्दिपण्डितदेवर्म्मुनं श्रीमत् चालुक्य-चक्रवर्त्तिविजया-

दित्यवल्लभानुजेयप्प श्रीमत् कुङ्कुम-महा-

२१ देवि पुरिगेरेयलु माडिसिदानेसेज्जेय-बसदिगे ताम्र (ताम्र) शासन-मर्य्यादेयिन्दाळ्व गुडिगेरेय भूमियोळगे प-

२२ डुवण पोलनोत्तु-वोगिळ्दडे कालदिय-नायिम्मरसंगे शासनम तोरि पडेद भूमियोळगे तम्म गुड्ड सिङ्गय्यंगे कारु-

२३ ण्यर्दि सर्व्वनमस्यमागि पदिनाल्कु मत्तरं दये-गेय्दु कोट्टदा-यय्यना पदिनाल्कु मत्तरुमं ऋषियर्ग्गे गुडि-

२४ गेरेयोळ् आहारदान नडेवन्तागि विटनी केय्योळ् पुट्टिदर्त्थ-मन्निल्लियाहारदानकल्लदे पेरतोन्दु धर्म्मक्कं

२५ पेरनोन्देडेगसुप्यलागदिन्ती मर्य्यादियनरसुं पण्डितरु पन्निर्व्व-गर्गावुण्डुगळु धर्म्मत्ररिववरेल्ल-

२६ रुवोडेयरागि परिरक्षे-गेय्दु स्वधर्म्मदिं नडसुवुदु ॥ कन्द ॥ गुडिगेरेयोळु धर्म्मंगळिगोडरिसुववरेल्ल

२७ वोडेयरी धर्म्मं कावोडेयरेमोर्व्वरे वेनवेदुडुपति रवि जलधि धात्रि निल्वन्नेवरं ॥ अन्तु सिङ्गण्णं विट्ट

२८ केय्गे चतुस्सीमेयेन्तेने मूड वन्दिं-गावुण्डन केयि तेङ्क पुल्लुङ्गूर वट्टे पडुव वसदिय केय्यु [मू]

२९ नाकय्यन केयि वडग गावुण्डुगळ पसुगेय पोलनन्तु मत्तर्प्प-दिनाल्कु ॥ मत्तमष्टोपवासि-कन्तियर

३० विट्ट केय्गे चतुस्सीमेयेन्तेने मूड वङ्कगेरिय केयि तेङ्क ग्रामचै-त्यालयद केयि पडुव पेर्ग्गडे

३१ प्रभाकरय्यन केयि वडग पुल्लुङ्गूर वट्टेयन्तु मत्तरेळुमनिन्ती येरडुं पर्य्यायद मत्तरिर्प्पत्तो

३२ न्दुमं प्रतिपालिसुववर्गे वारणासि कुरुक्षेत्रं प्रयागेयर्घ्यतीर्थ्थ मोदलागि पुण्यतीर्त्थङ्गलो-

३३ ळु सूर्य्यग्रहणदोळु सासिर कविलेयनलङ्कारसहितं चतुर्व्वेदपार-गरप्प सासिर्व्वर्ब्राह्म-

३४ णर्गेयुभयसुखिगोट्ट प(फ)लमक्कुवी धर्म्ममनळियल्वु मनदं-दवर्गेयिन्ती पुण्य-तीर्त्थङ्गळोळु सासि-

३५ रकविलेयुम [म्] सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कु ॥ ॐ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभ-भे-

३६ रुण्डापरनामधेयरप्प श्रीनन्दिपण्डितदेवर्म्मत्तमा पडुववोल-दोळगे पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळो दयेगेय्दुम्बळियागि

३७ कोट्ट मत्तर्न्नूर पन्नोन्दु पेर्ग्गडे प्रभाकरय्यन मग रुद्रय्यङ्गे दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्प्पदि-

३८ नाल्कु । सेनबोव हव्वणंगे दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्त-र्प्पदिनाल्कु भूकियर-कावण्णंगे दये-गेय्दुम्बळि-

३९ यागि कोट्ट मत्तरेळु कन्तियर-नाकय्यङ्गे दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्न्नाल्कु कम्मनरुनूरु श्रीमद्भुवनै-

४० कमल्ल-शान्तिनाथ-देवर्गे सर्व्वनमस्यमागि पडेद मत्तरिर्प्पत्तु ॥ बहुभिर्व्वसुधा भुंक्ता राजभिस्सगरादिभिः य-

४१ स्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा प(फ)लम् ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् षष्टिर्व्वर्षसहस्रा-

४२ या (णि) मि (वि) ष्ठाया जायते कृमिः ॥

[प्रभाकर (पंक्ति २) या प्रभाकरय्य (पंक्ति ३) नामके 'पेर्ग्गडे' की जगहपर काम करनेवाले एक अधिकारीके वर्णनके साथ यह लेख शुरू होता है। उसके समयमें श्रीनन्दि पण्डितदेव (पं. ७) सिरियनन्दि

मुनीन्द्र (पं. ९), या सिरिणन्दि (पं. १७) नामके गुरु थे जो सर्व पदार्थोंके व्याख्यान करनेमें चतुर थे, जिनकी पदवी 'परवादि-शरभ-भेरुण्ड' (पं. ६) थी । जब ये आचार्य, श्रीनन्दिपण्डित, तपश्चर्यामें संलग्न थे, उनके शिष्य 'अष्टोपवासिगन्ति' (पं. १०), या अष्टोपवास-कन्ति (पं. २९) थे, जो जिनधर्मके उद्धार करनेमें बहुत प्रसन्न थे। और इनको श्रीनन्दि पण्डितसे सात 'मत्तर' भूमिका 'नमस्य' दान मिला था और इस दानका उपयोग ध्वजतटाक (पं० १२) (गाँवके) १२ 'गवुण्ड' सरदारोंकी छत्रछायाके नीचे, पार्श्वजिनेश्वरकी पूजा तथा शास्त्र लिखनेवालोंके भोजनके प्रबंधके लिये किया । इसके बाद लेखमें एक 'सेनबोव' या पटवारी सिङ्गण्ण (पं. १३), सिङ्ग (प. १४), या सिङ्गय्य (पं. २२) का उल्लेख आता है जो जिनधर्मभक्त था। यह सिङ्ग श्रीनन्दिका पटवारी था।

इसके बाद कथन है कि अनल संवत्सर, जो व्यतीत शक सं. ९९८ था, की आही या आश्वहीमें श्रीनन्दिपण्डितको गुडिगेरीकी भूमिमें पश्चिम दिशाके खेतोंका अधिकार मिल गया था। ये खेत, एक ताम्रपत्रके अनुसार, उस आनेसेज्जेय बसदिके जैनमन्दिरके अधिकारमें थे, जिसको श्रीमत् चालुक्यचक्रवर्ती विजयादित्यवल्लभकी छोटी बहिन कुङ्कुममहादेवीने पहले पुरिगेरीमें बनवाया था। श्रीनन्दि पण्डितने इन खेतोंमेंसे अपने शिष्य सिङ्गय्य (पं. २२) को, 'सर्वनमस्य' दानके तौर पर, १५ मत्तर भूमि दी। सिङ्गय्यने यह भूमि गुडिगेरीके मुनियोंके आहारके प्रबन्धके लिये दे दी, और इस बातका ध्यान रखते हुए कि इसकी उत्पन्न इसी कार्यमें खर्च होती है, किसी दूसरे धर्म या कार्यमें खर्च नहीं होती, यह काम राजा, पण्डितों, १२ 'गावुण्ड' लोग, और शेष सभी धार्मिक लोगोंको (पं. २५) सौंप दिया। जबतक चन्द्र, सूर्य और समुद्र तथा पृथ्वी हैं तबतक यह दान जारी रहे, यह बात भी निगाहमें रखनेके लिये इन लोगोंको कहा। इसके पश्चात् इस भूमिकी सीमायें दी हुई हैं।

उन्हीं पश्चिम दिशाके खेतोंमेंसे श्रीनन्दि पण्डितने, लगान-मुक्त जमीनके रूपमें, १२ गावुण्डोंको १११ मत्तर (पं. ३६); 'पेर्गडे' प्रभाकरय्यके पुत्र रुद्रय्यको १५ मत्तर; सेनबोव हब्बणको १५ मत्तर (पं. ३८);

मूकियर-कावणको ७ मत्तर; कन्तियर-नाकय्यको ४ मत्तर और ६०० 'कम्म' (पं. ३९); और 'सर्वनमस्य'-दानके रूपमें श्रीमद्भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेवको २० मत्तर (पं. ४०) दिये। भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव नामका मन्दिर 'भुवनैकमल्ल' विरुदवाले पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीयने बनवाया था या उसमें शान्तिनाथकी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी।]

[ई० ए०, १८, पृ० ३५-४०, न० १७३]

२११

मथुरा—संस्कृत

सं० ११३४=१०७७ ई०

[पद्मासनस्थ तीर्थंकरकी विशाल मूर्तिका लेख]

[इस मूर्तिका लेख साफ-साफ पढ़नेमें नहीं आता। कुछ भाग पढा जाता है, कुछ नहीं। परन्तु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है। इस मूर्तिका लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यान देने योग्य है। डा० फूहरर् (Dr, Fuhrer) के मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर सम्प्रदायकी तरफ़से हुआ था। शेष लेख नं० १६१ के अनुसार जानना।]

[Antiquities of Mathura, (ASI, XX), p. 53, t.]

२१२

हुम्मच—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, सूळे बस्तिके सामनेके मानस्तम्भपर]

(पश्चिम मुख) श्री-वीर-सान्तरन पिरिय-मगं तैलह-देवं भुजबळशान्तरनेन्दु पट्टमं कट्टिसि कोण्डु पट्टण-स्वामि मांडिसिद तीर्थद-बसदिगे बीजकन-बयलं बिट्टन् (वे ही शापात्मक वाक्यावयव) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-कल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य्य-चतुर्स्त्रिंशदतिशय-

1 "Progress Report" for 1890–91, p 16

विराजमानं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सद-सदादिवस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवीणरु सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धौत-विशुद्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुभय-सिद्धान्त- रत्नाकररप्प श्रीमद्-**दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-देवर** गुड्ड स्वस्त्यनेक-गुण-गणाभिमण्डन नरवर-मुख-मण्डनं **शान्तर**-राज्याभ्युदय-कारण कलि-युग-दोष-निवारण **शान्तळि**-देश-कान्तारान्तर-जङ्गम-तीर्त्थं कलि-युग-पार्त्थं **पोम्बुर्च्च**-कुलोद्भव-दिवाकरं जिन-पाद-शेखरं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-कानीनं विशद-यशो-निधानं सम्यक्त्व-वाराशियुमप्प श्रीमत्**पट्टण-स्वामि-नोक्कय्य-सेट्टियर** वृत्त ॥ जिन-तत्त्व व्याप्त-चित्तं जिन-मत-तिळक जैन-कल्पावनीजं ।

जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्र जिन-समय-सरोजाकरोत्तंस-हसम् ।
जिन-राज-स्तोत्र-माळाविळ-मुख-कमलोद्भासि **सिद्धान्त-रत्ना-** ।
कर-देव-श्री-पदाम्भोरुह-मधुपनेनल् **पट्टण**-स्वामि सन्दम् ॥

(उत्तरमुख) गुणिगळ् सिद्धान्त-रत्नाकररमळ-चरित्रर्म्महा-योगि-वृन्दा- ।
ग्रणिगळ् श्री-शान्तिनाथ-क्रम-कमळ-युगाराधकर् भारती-भू-।
षणबुद्धर् ज्ञानिगळ् देशिग-गण-तिळकर् जैन-सिद्धान्तचूडा-।
मणिगळ् श्री-**पट्टण**-स्वामिगे गुरुगळेनल् नोक्कनन्तार् कृतार्त्थर् ॥

परम-श्री-जैन-धर्म्मक्कतिशय-विभव मार्प्प विद्वज्जनक्का- ।
दरदिन्द सन्तोसं माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यम वि- ।
स्तरदिन्द चिन्ते-गेय्युन्नत-गुण-युतं **पट्टण**-स्वामि नोक्कम् ।
बरमार् भव्यर्कळ् अन्ता पुरुष-रतुनर्दि **वीर-देवं** कृतार्त्थम् ॥

हरि-संघातदे कट्टु-पेत्त बडव-ज्वाळाळियिं वेन्द मी- ।
कर-पाठीन-तिमिङ्गिळाळियिनतिक्षोभक्के सन्दिळदग- ।
स्त्यरिनप्-प्राशनकेय्दे वारदति-तीक्ष्ण-क्षार-वारि-प्रभं- ।

गुरु-वाराशियोळन्तु पोल्पुदो पेळ् सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
सिरिगावासमनेक-रत्न-निचयोत्पत्त्याश्रय मीरु-र- ।
क्ष-रत चन्द्र-कळा-प्रवर्द्धन-मुद पीयूप-पिण्डास्पदम् ।
वर-वेळा-वळ्यामृतं समतेयिं वारासि पोल्तुं मनो- ।
हर-दानत्वदिनेय्दे पोलदे वलं सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
पट्टण-स्वामिय मग मल्लं वरेदम् ।
(पूर्वमुख) जडरुं वाळ्करु वुध-प्रकरमुं तत्त्वार्थमं कल्तघम् ।
किडे सम्यक्त्वमनेय्दि सत्त-परम-स्ता(स्था)नातियं निश्चयम् ।
पडेयल् माडिदरोप्पे..........तत्त्वार्थसूत्रक्के क- ।
न्नडदिं वृत्तियनेल्लिग नेगळ्पिन सिद्धान्त-रत्नाकरर् ॥
कन्तु-दर्प्प-हरं जिन तनगाप्तनाव्दनवार्य्ये-वि- ।
क्रान्तनोळ्गलि वीर-शान्तरनम्मणं गुणि तन्दे दिग्- ।
दन्ति-वर्त्तित-कीर्त्तिगळ् गुरुगळ् दिवाकरणन्दि-सि- ।
द्धान्त-देवरेनल्के पट्टण-सामिनोक्कने सन्नुतम् ॥
स्नानं पञ्चामृताख्यं पटु-पटह-रणं झल्लरी-शब्द-रम्यम्
पूजा पुष्पाभिरामं मळयज-पयसा लेपनं दिव्य-धूपम् ।
नित्य कृत्वा जिनाना सकळ-जन-दया-जीव-रक्षान्न-दानम्
पोम्बुर्च्चार्हत्-प्रतिष्ठा तव भवति परं लोक-विद्या-विवेकः ॥
दारिद्र्य-लोभ-मद-भय-नाशकरं एकमेव तत्क्षणतः ।
पञ्चाक्षरमिदं मन्त्र पट्टण-सामि ते जप-विबुधम् ॥
पुसि नुडिव चपल-वित्तियोळ् ।
असदळमेसगुव पराङ्गना-सङ्गतिगा- ।
टिसुव तवगिल्लदोळपम् ।

. पसरिप नररणम-नोक्कंनं पोल्तपरे ।

(दक्षिण मुख) चारु-चरित्ररी-दोरेयरारेनिपोळिपन चन्द्रकीर्ति-भ- ।

ट्टारकरग्र-शिष्यरघ-हारिगळार्हत-तत्त्व-वस्तु-वि- ।

स्तारिगळङ्गजारिगळशेष-विशेष-गुणावली-मनो- ।

हारिगळेम्बिन नेगळ्दरल्ते दिवाकरणन्दि-सूरिगळ् ॥

वचन ॥ उभयसिद्धान्त-चूडामणिगळुं त्रैविद्य-देवरुमेनिसिद श्री-दिवाकर-णन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवर शिष्यर् ॥

सकलचन्द्र-मुनि-नाथरुर्व्वरा- ।

सकलदोळ् परम-योग्यरेम्बुदम् ।

ककुभ-दन्तिगळ दन्तदोळ् करम् ।

प्रकटमागे बरेदं पितामहम् ॥

वचन ॥ सम्यक्त्व-वाराशियुमेनिसिद पट्टण-स्वामिनोकय्य-सेट्टियर मगम् ॥

सुन्दर-रूपदिं विनयदिन्दभिमानदिनोळिपनिं जना- ।

नन्द-परोपकार-गुणदिं सुजनत्वदिनोजेयिं जगद्- ।

वन्दित-कीर्ति पुण्य-निधि तन्देयोळच्चिनोळोत्तिदन्ननेन्द्- ।

अन्देले वैश्य-वंश-तिलकं नेगळ्दिन्दिरनेम् कृतार्थनो ॥

[वीर-शान्तरके ज्येष्ठ पुत्र तैलह देवने, जो भुजबल-शान्तर नामसे भी ज्ञात था, राजा होकर, पट्टण-स्वामिके द्वारा निर्मित तीर्थद-बसदिके लिये मन्दिरके दानके रूपमें, बीजकन बयल्का, दान किया । (शाप)

भगवदर्हत्के द्वारा प्रतिपादित सत्य और असत्यकी प्रकृतिके प्रतिपादन करनेमें निपुण दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, जिनके गृहस्थ-शिष्य पट्टणा स्वामी नोकय्यसेट्टि थे। उनकी और उनके गुरुकी प्रशंसा । उसके द्वार-

वीरदेव भी सफल हैं। आगेके श्लोकोंमें उनकी समुद्रसे तुलना की गई है। पट्टण-स्वामीके पुत्र मल्लने इसे लिखा।

सिद्धान्त-रत्नाकरदिवाकरनन्दिने मूर्खों या बच्चों तथा विद्वानोंके सबके अवबोधार्थ कन्नडमें तत्त्वार्थसूत्रकी वृत्ति लिखी। पट्टणस्वामीके इष्ट देव जिन थे; उसके शासक वीर-शान्तर थे, उनके पिता अम्मण, गुरु दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे। (जिनकी पूजाके लिये दैनिक सामग्री तथा लोगोंके कल्याणका वर्णन करनेके बाद),—नोक्कको प्रशंसा।

चन्द्रकीर्ति-भट्टारकके मुख्य शिष्य दिवाकरनन्दिसूरिकी प्रशंसा। उन्हींका अपर नाम सिद्धान्त-रत्नाकर था। उनके शिष्य सकलचन्द्र-मुनिनाथ थे।

पट्टण-स्वामीनोक्कय्य-सेट्टिके पुत्र वैश्य-वंश-तिलक इन्दरकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 57]

२१३

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मच में, पञ्चबस्तिके आँगनके एक पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

शक-वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चाळुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्धमानमा-चन्द्रार्कतार सल्लुत्तमिरे । तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ समधिगतपञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्धवर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानरध्वज

मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं वहु-कळा-सम्पन्नं सान्तर-कुल-कुमुदिनीशशांक-मयूखाङ्कुरं रिपु-मण्डलिक-पतङ्ग-दीपाङ्कुरं तोण्ड-मण्डलिक-कुळाचळ-वज्र-दण्डं विरुद्-मेरुण्ड कन्दुकाचार्य्यं मन्दर-धैर्य्यं कीर्त्ति-नारायण सौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं पर-बल-साधकं सान्तरादित्यं सकळजन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं नन्नि-सान्तरदेव ॥

वृत्त ॥ चरण-विनम्ननागि तोदळेम्बिडि मुन्ने ललाट-पट्टदल् ॥
वरेद दुरक्षरावळिगळं तोळेदप्पुवु तामे निन्न सच्-।
चरण-रजङ्गणेन्दोडुळिदर्निनगार्द्दोरे देव मण्डळे- ।
श्वर-कळभेक-केसरि नरेन्द्र-शिखामणि नन्नि-सान्तरा ॥
प्रतिविम्बं रूपिनोळ् पोल्केम गुणदोळदार् पोल्तपर्न्निन्ननेम्बी-।
स्तुतियं निश्चयिसि गोविन्दर वेसेयदिरेन्तेम्ब निन्नन्ते नोडु-।
न्नतियोळ् हेमाचळ क्षान्तियोळवनि-तळं मेरेयोळ् वार्धि शौच-।
व्रतदोळ् सिन्धूद्भवं सत्यदोळिन-तनेय सौर्य्यदोळ् भीमसेनम् ॥

अन्तेनिसिद नन्नि-सान्तर-देवरन्वयमदेन्तेने । उत्तर-मधुराधीश्वरनु मुग्रवंशोद्भवनुमेनिसिद शाहनेम्ब मण्डलेश्वरं कुरुक्षेत्रदोळ् भारतदल् कादि गेल्वडे नारायणं मेच्चि एक-संखमुमं वानर-ध्वजमुमं कोट्ट ॥ आतनिं पलबरुं राज्य गेय्दु पोगे । सहकारनातं नर-मास-व्रतनागे आतङ्ग श्रिया-देविगं पुट्टिद जिनदत्तनातन चरितके पेसि दक्षिणाभि-मुखनागि बरुत सिंहरथनेम्बसुरनं कोन्दडे जक्कियब्बे मेच्चि सिंहलाञ्छनं कोट्टळ् ॥ अन्धकासुरनेम्बसुरन कोन्दु अन्धासुरमेन्दु माडिद । कनकपुरके वन्दल्लि कनकासुरन कोन्द । कुन्दद कोटि-

योळिई करनुं करदूषणनुमं कादि योडिसिदडे पद्मावती-देवी मेच्चि कनकपुरं एनिसिद पोम्बुर्च्चद लोक्किय मरदल् नेलसि लोक्कियब्बेये- म्बेरडनेय पेसरं ताळ्दि पोम्बुर्च्चमातङ्गे राज्यस्थानमेन्दु पोळलं माडिदळ् ॥ अक्षि जिनदत्तनु पलवरुमरसु-गेय्दु सले श्री-केशियु जयकेशियुमा- दरा-श्रीकेशिगं मुददि महादेविगं रणकेसि पुत्रनादनातर्नि पलवररसु- गेय्ये । हिरण्यगर्ब्भमिर्दु महादानं माडियधिवासद पलवररसुगळं कोन्दुं ओडिसियुं तेङ्क सूलद-होळे पडुव तवनसि वडगं बन्दगे मेरेयागे सान्तलिगे-सायिर-नाडुमुमनेकायत्तं माडि कन्दुकाचार्यनु दान- विनोदनुं विक्रमसान्तरनुमेनिसिदम् । आतङ्ग बनवासियरसं काम- देवन मगळु लक्ष्मी-देविगं चागि-सान्तरं तनेयमादनातं चागिस- मुद्रमं माडिसिदन् । आतङ्ग (म्) आळ्वर नन्नयन मगळेज्जल- देविगं वीर-सान्तरं सुतनादन् । आतङ्गमदेयूर शान्ति-वर्म्मन सुते जाकल-देविगं कन्नर-सान्तरं तनूभवनादन् । आतनिं किरिय काव- देवङ्गं वीर-वयल्नाथन मगळ् चन्दलदेविगं त्यागि-सान्तरनात्मजना- दन् । आतग कदम्बर हरिवर्म्मनात्मजे नागल-देविगं नन्नि-सान्तरं तनूजनादम् । आतग पलसिगे-नाडरिकेसरिय नन्दने सिरिया-देविगं राय-शान्तरं पुत्रनादन् । आतगमक्का-देविगं चिक्क-वीर-शान्तरं नन्दन नादन् । आतग बिज्जल-देविग मम्मण-देवनात्मजनादन् । आतङ्गं होचल-देविग मगळ् बीरब्बरसियु मग तैलपदेवनुं पुट्टिदरु ॥ आ-बीरल- देवि बङ्कियाळ्वरङ्गे महादेवियादळ् । या-बङ्कियाळ्वरनिं किरिय माङ्क- ब्बरसियुं गङ्गवंश-तिलक पालय-देवन सुते केळेयब्बरसियुं तैलप- देवङ्गे वल्लभेयरादरल्लि मादेवि-केळयब्बरसिगे ।

वृ ॥ वर-लक्ष्मी-लक्ष्मणं सान्तर-कुल-तिळकं सूर्य-तेजःप्रभावं ।
पर-नारी-दूरमावर्ज्जित-गुण-निळयं वैरि-कालानलं मन्- ।
दर-धैर्य्यं नीति-पारायणनमळ-लसत्-कीर्त्ति-मूर्त्ती-वितानम् ।
धरेयं कायल् समर्त्थं सुरपति-विभवं पुट्टिदं वीर-देवम् ॥

क ॥ धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदोड् ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील्- ।
तरतरदिनुच्चिदवु निज- ।
कर-खड्गमवर्क्के कीले शान्तर-नृपति ॥

वीरुगन दोरेगे दोरे पेरर् ।
आरुं बन्दपरे कृत-युगं त्रेता-द्वा- ।
पार-कलि-युगदोळगण वी- ।
ररुदारर् प्रतापिगळ् धर्म्म-परर् ॥
आतननुजर् जगद्वि- ।
ख्यातर् श्री-सिङ्गि-देवनुं रिपु-बळ-निर्- ।
ग्घातनेने बर्म्म-देवनुम् ।
आतत-कीर्त्ति-वितानरवनी-तळदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद वीर-देवङ्गे काडव-मादेवियेनिसिद चट्टल-देवियिं किरिय वीरल-मादेवियं विवाहोत्सवदिं कूडेया-वीर-मादेवियु नोळम्ब नारसिंग-देवन सुते बिज्जल-देवियुमाळ्वर मगळचलदेवियु कुल-वधुगळवरोळगे वीर-महादेवियन्वय-क्रममदेन्तेने ॥ स्वस्ति समस्त-भुव-नाधीश्वरेक्ष्वाकु-कुल-गगन-गभस्तिमालिनीपराक्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जा-धीश्वर-शिरो-विलग्न-निशित-शिळीमुख पार्थिव-पार्थस् समर-केली-धनञ्जयो धनञ्जयः तद्-वल्लभा गान्धारी-देवी तत्सुतो हरिश्चन्द्रस्तदग्र-महिषी

रोहिणी-देवी तत्सुतौ **राम-लक्ष्मणौ** तौ **दडिग-माधवापर-नामधेयौ** तदन्वयो **गङ्गान्वयः** ॥

कं ॥ माधवन जय-श्री-रा- ।
मा-धवन भुजावलेपमं बण्णिसला- ।
माधवनु त्रि-भुवनदोळु- ।
माधवनुं नेरेयरुळिदवर् नेरेदपरे ॥

आ-नृपनग्रजनातन- ।
मानुष-शौर्य्यावलेप-मत्स्य-महीभृत्- ।
सेनेगे नेट्टने कौरव- ।
सेनेयनाटङ्कु बडिद दडिगं दडिग ॥

व ॥ आतन नन्दनं **किरिय-माधवं** माधन-पराक्रमनेनिसि नेगळे ॥

क ॥ तत्-तनयं **हरिवर्म्मनु-** ।
पात्त-नयं **विष्णुगोपनातन** सुतनु- ।
दूवृत्त-रिपु-नृपति-सैन्यो- ।
न्मत्त-द्विप-सिंहना-नृ-सिंहन तनयम् ॥

व ॥ अन्ततिबळ-पराक्रमं **तडङ्गाल-माधवनातनात्मजर्** ॥

क ॥ अविनीत-रिपु-बळाटविग् ।
अविनीतरमोघमेनिसि विस्मयमुग्रा- ।
ह्वदोळ-विनीतरेनिसिदर् ।
अवनियोळविनीत-दुर्व्विनीत-नरेन्द्रर् ॥

वसुधेगे रावण-प्रतिमनेम्ब नेगर्त्तेय काडुवेट्टियम् ।
विससन-रङ्गदोळ् पिडिदु तन्न तनूजेय पुत्रनं प्रति-।
ष्ठिसि जयसिंह-वल्लभननन्वय-राज्यदोळुर्व्वियोळ् विगुर्-

विसिदनिदेनगुर्ब्बो निज-दोर्-बळदुन्नतिदुर्व्विनीतन ॥

व ॥ अन्तातानें मुष्करनति-मुष्करनागि राज्यं गेय्ये तन्-नन्दनम् ॥

क ॥ ताविय तडि-बरेगं धर-।

णी-वळयमनाळ्दु बाहु-विक्रमदिम् ।

श्रीविक्रम-भूविक्रम-।

भूवल्लभरधिक-कीर्त्ति-वल्लभरादर् ॥

व ॥ अन्नातननुज नृप-कामं गज-दानन अर्त्थिगित्तुचागियेम्ब पेसर पडेदनातन मर्म्म श्रीपुरुषं श्रीवल्लभनेनिपन्वर्त्थ-नाममं ताल्दि गज-शास्त्र-कर्त्तृवेनिसि ॥

वृ ॥ शात्रव-सङ्कुळ-प्रळय-भैरवनेम्ब यशं पोदळ्दु लो-।

क-त्रय-मध्यदोळ् परेये वीरद कच्चिय काडुवेट्टियम् ।

चित्रविदं चिळर्दयोळ्सुगोळे कादि तदीय-पल्लव-।

च्छत्रमनिर्दुकोण्डु मेरेद भुज-गर्व्वमना-महीभुज ॥

क ॥ आ-नृप-चूडामणि कान्-।

ची-नाथन कय्योळिर्दुकोण्डं गड पेर्-।

म्मानडियेम्बी-पेतरुमन् ।

एनेम्बुदो गङ्ग-नृपर शौर्य्योन्नतियम् ॥

व ॥ अन्तु वीरमार्त्तण्ड-देवनेनिसिदातन मगं शिवमार-देवं सैगोट्टनेम्बेरडनेय पेसरं ताळिद सित्रमार-मतमेन्दु गज-शास्त्रमं माडि मत्तम् ॥

कं ॥ एवेळवुदो शिवमार-म-।

ही-वळयाधिपन सुभग-कविता-गुणमं ।

भू-वळेयदोळ् गजाष्टक ।

मोवनिगेयुमोनके-ताडुमादुदे पेळ्गु ॥

वृ ॥ विजयादित्य-नरेन्द्रनातननुज तन्नन्दनं चागि भू- ।
भुजरोळ् मिक्केरेगङ्ग-नातन मगं श्री-राजमल्लं तदा- ।
त्मजनातं मरुळं तदीय-तनेयं श्री-बूतुंग तत्-सुतम् ।
विजिगीषुत्वमनाळ्दु निन्देरेयपं ताना-महेन्द्रान्तकम् ॥

क ॥ एनिप भुवनैकवीरन ।
तनयं नरसिंगनवने वीर-वेडेङ्गम् ।
मनुजपति राजमल्लाङ्- ।
कनातनिं किरियनवने कच्चेय-गङ्गम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गनुजनुं सकळ-शास्त्रज्ञानुमेनिप बूडुग-वेम्मानडि कृष्ण-राजङ्गे भावनेनिसि ॥

वृ ॥ तानिरदन्दु कोन्दपुदु मण्डलमं पेररोळ् समानमेम्ब् ।
ई-नुडि वेड कोळ्कोडेगे वल्लहनातन सन्निवारदुद्- ।
दानिगे रायनापेडेगे चोळनिवर् दोरेयेन्दोडिन्न भू ।
तो न भविष्यमेन्नदवरारळवं जगदुत्तरङ्गन ॥

त्रि ॥ जाह्नवि साक्षी मध्याह्नार्क-सम-कोप- ।
वह्नि लल्लयन अक्रूरे बूतगं राज्य- ।
चिह्नमं-तदन्तुळिगङ्गे ॥

अक्कर ॥ बलव पेळवडे धाळियोळ् कोण्डना-चित्रकूटमुमेळुमाळ्वम- । तलेयं कोण्डना-रायतम्मनं दहळेयं कोण्डनन्तोन्दे मेय्योळ् पलवु कलाळनेळियुं निरिसिद गङ्ग-मालवमेन्दु पेसरनिट्टुकलियपेळेन्दोडेयम्ब कलियनिन्तचलित-गङ्गन पोल्वनावम् ॥

क ॥ रेवक निम्मडिग वि- ।

च्चा-वैळभनप्प बूतुगेन्द्रगसुमा- ।
देविगमिन्दुधरग पाव- ।
किवोल् मरुळ-देवनग्र- तनूजम् ॥
स-स्नेहात् सकल-महीश कृष्ण-भूपो
भूनाथः खलु मदनावतार-संज्ञा ।
छत्रं तन्-नरपतिर्भिन कैश्चिदाप्तस्
संप्राप्तो मरुळ इति प्रतीत-नामा ॥

व ॥ अन्ता-कृष्ण-राजङ्गळिय्यनेनिसिद ॥

क ॥ आ-मरुळ-देवननुजम् ।
भीमानुज-सन्निभ पराक्रम-सिंहम् ।
श्री-मारसिंह-देवम् ।
हेमाद्रि-शिरो-विलग्न-कीर्त्ति-पताकम् ॥

वं ॥ अन्तातं नोळम्ब-कुळान्तकनु पल्लवमल्लनुं गुन्तिय-गङ्गनुमे-
निसिदनातननुज ॥

क ॥ श्री-राजमल्ल-देवम् ।
*भारवि-केयूर राजशेखरनातम् ।
भारवि साक्षाद् बाण म- ।
यूरं वाल्मीकि कालिदासं व्यासम् ॥

आतन तम्म ॥ श्री-नीतिमार्ग्ग-भूपति ।
कानीनं बलि दधीचि गुर्व्वं साक्षाद्
दीनानाथ- जनक्के नि- ।
धानं गोविन्दाभिधान- नरेन्द्र ॥

---

* शायद 'भारति' की जगह गल्ती हो गई है ।

व ॥ आतर्नि किरिय वासव-महीभुजङ्गं त्रैलोक्यमल्लनेनिसिदाहवमल्लदेवन मावनय्यण रेवरसन ताय् सावि निम्मडियिं किरियक्कुब्बल-देविगं पुट्टिद गोविन्दरदेव ॥

क ॥ निरवद्य-चरितनन्वय- ।

धुरन्धरं सत्यवाक्य निर्व्वैर-गण्डम् ।

परचक्र-कर्क्कशं ग- ।

ण्डरमूकुति गण्ड-दल्लळं नृप-तिळकम् ॥

वृ ॥ वसुधालंकारनारोहकर मोगद कै वल्कणि ब्रह्मलुगा- ।

रि-समूहोत्साह-शक्ति-प्रलय-कर-करामीळ-खळ्गं यशश्री-

प्रसर-प्रच्छन्न-दिङ्मण्डलनधिक-बळं गङ्ग-नारायणं र- ।

कस-गङ्गं गङ्ग-चूडामणि निरूप (नृप)-तिळकं वीर-मार्त्तण्डदेव ॥

क ॥ तळिय दाटुव करियम् ।

घळिलेने पिडिदुगियें निज-शिरं पेचकमम् ।

कळिदुदु करि-सिरमुरमम् ।

पळिलेने तागिदुदु कदन-कण्ठीरवन ॥

आतननुजं जगद्-वि- ।

ख्यातं कोमरङ्क-भीमनरुमुळि-देवम् ।

नीतिज्ञनधिक-तेजन- ।

राति-बळ-प्रलय-काळनाहव-धीरम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गे कदम्ब-मयूरवर्मनात्मजे जाकल-देविग पब्बल-देवङ्गम् पुट्टिद सान्तियब्बरसिगं गुडिय-दडिगेगे पट्टं गट्टि राज्यं गेय्सिदनन्वयद बलवर्म्म-देवगं पुट्टिदब्बल-देविगं सहस्रबाहु-प्रतापनुं

महो-हय-वशोद्भवनुं ज्योतिष्मती-पुरवरेश्वरनुं मध्य-देशाधिपतियु एनिसि-
दय्यण-चन्दरसङ्गं पुट्टिद गावब्बरसिग अरुमुळि-देवङ्गम् ॥

क ॥ सरसतियुं सिरियुं दिन- ।
क्करनु पुट्टिर्दुवेम्बिनं चट्टलेयुम् ।
वर-वधु कञ्चलेयुं सत्- ।
पुरुषोत्तमनेनिप राज-विद्याधरनुम् ॥
पुट्टे तनगन्दु राज्यद ।
पट्टं कै-साईदेन्दु रकस-गङ्गम् ।
निट्टिसि तन्नरमनेयोळ् ।
नेट्टने तन्दिरिसिदं महोत्सवदिन्दम् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिं बळेयुत्तिर्द्द कन्या-रत्नङ्गळिर्व्वरिं पिरिय-चट्टल-
देवियं तोण्डे-नाडु नाल्वत्तेण्छासिरक्कधिपतियुं कञ्ची-नाथनुवीश्वर-वर-
प्रसादनुं वृषभ-लाञ्छननुमेनिसिद काडुवेट्टिगे रकस-गङ्ग-पेर्म्मानडि
विवाहोत्सवमं माडि चट्टल-देविगे काडव-महादेवि-वट्टमं कट्टि सुखदि
निरिसिदन् । आं-वीर-देवङ्गं कञ्चल-देवियेनिसियुं वेरडनेय पेसरं
ताळ्दिद वीर-महादेविगम् ॥

क ॥ दसरथन तनयरन्दमन् ।
एसेदिरे पोळ्तिर्द्द तैलनुं गोग्गिगनुम् ।
कुसुमास्त्रनेनिसिदोङ्गुग- ।
वसुधेसनुमन्तु बर्म्मनुं तनयरवर् ॥
पुट्टलोडमात्म-गृहदोळ् ।
पुट्टिदुदैश्वर्य्यमोळ्पुमाप्पुं कूर्प्पुम् ।

नेट्टनरि-नृपर गृहदोळ् ।
पुट्टिदुवुत्पात-भीति चेतो-विकळम् ॥

व ॥ अन्ता-कुमारर् सुखदिं बळेयुत्तिरे यत्ररोळप्रजं तैलप-देव-नसहायसिंहनेंनिसियुं तन्न बाहा-बळमे चतुरङ्ग-बळमागे दायिगरुमनाट-विकरुमं राज्य-कण्टकरुमं निःकण्टकं माडि तन्न दोर्ब्बळ-विक्रमदि सान्तर-वट्टमनवटम्पिसि भुजबळ-शान्तरनेंनिसि सुखदिं राज्यं गेय्द ॥

भुजबळ-शान्तर-नृपतिय ।
भुजबळदळवु प्रतापमुं शौर्य्यतेयुम् ।
विजिगीषु-वृत्तियुं निज- ।
विजयमुमी-लोकदोळगे भुम्मुकमेनिकुम् ॥

अन्तातननुज गोविन्दर-देवम् ॥

गोविन्दरन पराक्रमम् ।
आवगमवु तन्नोळेय्दे तोरिरे धरेय ।
काव पर-नृपरनळ्करे ।
सोव महा-गुणमे तनगे निज-गुणमेनिकुम् ॥

वृ ॥ देव समुद्र-मुद्रित-वसुन्धरेयोळ् नृपरादरेल्लरम् ।
भाविसि कण्डेनान्त रिपु-सन्ततिय नेलेगेट्टु पोपिनम् ।
सोव बुधाळिगार्त्तु पिरिदीव शरण्-बुगे काव सद्-गुणक् ।
आवनो निन्नवोल् नेरेद मण्डलिकर् कलि-नन्नि-शान्तर ॥
पिरिदेत्तं मेरुगं सागरमे जगदोळा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रं करं भाविसुवडे पिरिदा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रक्कमाशालियि कडुविरिदा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रक्कमाशालिगमेले पिरियं शान्तरादित्य-देव ॥

ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।
बूतुग-वेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीतं चक्रि कुडल पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्गे वोन्दु तद्
अर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सम्- ।
वर्द्धित-शान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

व ॥ इन्तेनिसिदुनतिय ताळ्दि तन्न मण्डळदोळगण राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि तनगे नन्नियेनिज-गुणमप्प कारणदिं नन्नि-शान्तरने-म्ब पट्टमं ताळ्दि पल-कालदिं परायत्तमाद भूमिय स्वायत्तं माडि जग-देक-दानियेनिसि लोकदर्थि-जनक्के पिरिदनित्तु सम्यक्त्व-रत्नाकरनु जिन-पादाराधकनुमेनिसियुमेल्ला-समयगळं स्व-धर्मदिं नडयिसुतुं परा-ङ्गना-सहोदरनेनिसि वीरदोळं वितरणदोळ धर्मदोळं शौचदोळं लोकदोळ् पेररिल्लेनिसि नडेदु बन्धु-जनमुम स्व-देशमुमं रक्षिसि चट्टल-देवियुं कुमारर् ओड्डमरसनुं बर्म-देवनुं तामु पोम्बुर्च्चदोळ् सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यात्थमुमं भाविसियुरुम्बुळि-देवन गावब्बरसिगं वीरल-देविगं राजादित्य-देवङ्गं परोक्ष-विनयमं माडले-न्दुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिय मार्प्युद्योगमनेतिकोण्डु ॥

कं ॥ 'श्रीविजय-देवरुमन्त- ।
पो-विभवर् ग्गुरुगळखिळ-शास्त्रागम-सं- ।
भावितरेनिसल् चट्टल- ।
देवियें कृत-पुण्यवन्ते विश्वम्भरेयोळ् ॥

वृ ॥ जनकं रक्कस-गङ्ग-भूमिपति काञ्चीनाथनात्म-प्रियम्
विनुतर् श्री-विजयर् सुशिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं- ।
हृण-विक्रान्त-यशो-विलास-भुज-खड्गोल्लासि ता गोग्गि-
नन्दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥
क ॥ केरे भावि बसदि देगुलम् ।
अरवण्टगे तीर्त्थ शत्रमारवे-मोदलाग् ।
अरिकेय धर्म्मादिगळम् ।
नेरे माडिसि नोन्तलेसेके चट्टल-देवि ॥
उत्तुंग-प्रासादमन् ।
उत्तर-मधुरेशनप्प गोग्गिय ताय् लो- ।
कोत्तरमेने माडिसिदळ् ।
वित्तरदिं पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमम् ॥
देसेयागसमेम्बेरडुमन् ।
असदळमेय्दिर्द्देवेम्बिन पोस-गेरेयम् ।
बसदियुमं माडिसि तन्न् ।
एसमं शान्तरन ताय् निमिर्च्चिदळेत्त ॥
वृ ॥ इन्तु समस्त-दान-गुणदुन्नतिग पेरारो मुन्नमेम् ।
नोन्तवरेम्बिन नेगर्द चट्टल-देवि चतुस्-समुद्र-प- ।
र्य्यन्तमनेक-विप्र-मुनि-सन्ततिगन्न-हिरण्य-वस्त्रमम् ।
सन्ततमित्तु शान्तरन ताय् पडेदळ् पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥
व ॥ अन्तु पोगर्त्तेगं नेगर्त्तेगं नेलेयेनिसि चट्टल-देवियुं नन्नि-शान्तरनु
वोडेय-देवर गुड्डगळप्प-कारणदिं श्रीमद्-तियङ्गुडिय निडुम्बरे-ती-
र्त्थदरुङ्गुळान्वयद सम्बन्धद नन्दिगणाधीश्वररेनिसिद श्रीविजय-भ-

ट्टारकर नामोच्चारणदिं शुभ-करण-तिथि-मुहूर्त्तदलवर शिष्यर् श्रेयांस-पण्डितरुर्व्वी-तिळकमेनिसिदं पञ्च-वसदिगुत्ततमप्पेडेयल् काल्वेनिसे केसर्क-ळिक्किदरवराचार्य्यावळियदेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे गौतमर् गन(ण)धररेने त्रि-ज्ञानिगळप्प मुनिगळ् सले यवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद कोण्डकुन्दाचार्य्यरिं केलव-कालं पोगे भद्रबाहु-स्वामिगळिन्दित्त कलिकाल-वर्त्तनेयिं गण-भेदं पुट्टिदुदवर अन्वय-क्रमदिं कलि-कालगणधररुं शास्त्र-कर्त्तुगळुमेनिसिद समन्तभद्र-स्वामिगळवर शिष्य-सन्तानं शिवकोट्याचार्य्यरवरिं वरदत्ताचार्य्यरवरिं तत्त्वार्थ-सूत्रकर्त्तुगळेनिसिदार्य्य-देवरवरिं गङ्ग-राज्यमं माडिद सिंहनन्द्या-चार्य्यरवरिन्देकसन्धि-सुमति-भट्टारकरवरिम् ।

वृ ॥ राजन् बुद्धोप्यबुद्धस्सुरगुरुरगुरुः पूरणोऽपूरणेच्छः
स्थाणुः स्थाणुस्त्वजोजोर्व्वैरविरळधुर्म्माधवो माधवस्तु ।
व्यासोप्यव्यास-युक्तः कणभुगकणभुग् वागवागेव देवी
स्यादूवादामोघ-जिह्वे मयि विशति सति मण्डपं वादिसिंहे ॥

व ॥ एनिसिदकलङ्क-देवरवरिं वज्रणन्द्याचार्य्यरवरिं पूज्यपाद-स्वामिगळवरिं श्रीपाल-भट्टारकरवरिं अभिनन्दनाचार्य्यरवरिं कवि-परमेष्ठिस्वामिगळवरिं त्रैविद्यदेवरवरिनकळङ्क-सूत्रके वृत्तियं बरेदनन्त-वीर्य्य भट्टारकरवरिं कुमारसेन-देवरवरिं मौनि-देवरवरिं विमळचन्द्र-भट्टारकरवरशिष्यर् ॥

क ॥ आदित्यन केळदोळ् चन्- ।
द्रोदयमेसेयदवोली-धरा-मण्डळदोळ् ।
वादिगळेम्बी-टुण्डुक- ।
वाडिगळेसेदपरे वादिराजन केळदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसि राय-राचमल्ल-देवङ्गे गुरुगळेनिसिद कनकसेन-भट्टारकरवर शिष्यर् शब्दानुशासनक्के प्रक्रियेयेन्दु रूपसिद्धियं माडिद दयापाळदेवरुं पुष्पषेण-सिद्धान्त-देवरुम् ॥

वृ ॥ अळवे दिग्-दन्ति-दन्तं वरमेसेदुदु सद्-गद्य-पद्योक्तिविद्या-
वलवे सर्व्वज्ञ-कल्पं विरुदनुळिवुदिन्नन्य-वादीन्द्ररिं चा-
वळिसल् वेडोहो पत्र गुडदिरेदळिर् वेन्दप पेळ्वोडिन्निन् ।
अळवल्ल वादिराज पर-मत-कुभृत् आभीळ-वाग्-वज्र-पातम् ॥

व ॥ इन्तेनिसिद षट्-तर्क-षण्मुखनु जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद वादिराज-देवरं ॥ रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडिगळ चट्टल-देविय वीरदेवन नन्नि-शान्तरन गुरुगळेनिसिद ॥

व ॥ यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तमुभयं श्री-हेमसेने मुनौ
प्रा·········चिराभियोग-विधिना नीत परामुन्नतिम् ।
प्रायश्श्रीविजयेश-देव सकलं तत्त्वाधिकायां स्थिते
संक्रान्ते कथमन्यथा···· ·······दक् तपः ॥
शास्त्रं बुधानामुपसेव्····
यं दातुकाम यत एव दाता ।
ततोपि हि श्रीविजयेति-नाम्ना
पारेण वा पण्डित-पारिजातः ॥

व ॥ एनिसिद श्री-विजय-भट्टारकरुमवर शिष्यर् चोळ········ शान्तादेवर् गुणसेन-देवर् दयापाल-देवर् कमळभद्र-देवरजितसेनपण्डित-देवर् श्रेयांस-पण्डितरन्तवरायुर्ब्बी-तिळकमेनिसिद पञ्चकूट-बसदिय शक-वर्ष ९३९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद जेष्ठ शुद्ध-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्टेय माडिया-बसदिय खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारण-

कमल्लिर्द ऋषि-समुदायदाहार-दानक पूजा-विधानकमागे नन्नि-सान्तर-देवनुमोड्डमरसनुं बम्म-देवनुं चट्टल-देवियुमाचार्य्यर् कमळ-भद्र-देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे माडि कोट्ट श्रा········ (यहाँ दान और सीमाओंकी विस्तृत चर्चा है।)

[जिन-शासनकी प्रशंसा। (उक्त मितिको), जब (हमेशाके चालुक्य पदों सहित) त्रिभुवनमल्लदेवका राज्य सब ओर प्रवर्द्धमान था—तत्पादपद्मोपजीवी, महामण्डलेश्वर, उत्तर-मधुराधीश्वर, पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर, महोग्र-वंशललाम, जिसने पद्मावती देवीके प्रसादसे 'तुलापुरुष,' 'महादान,' और 'हिरण्यगर्भ' ये तीन दान पूरे किये थे, सान्तर-कुल-कुमुदिनीके लिये प्रदीप्त किरणोंवाला चन्द्रमा, जिनपादाराधक, सान्तरादित्य, नीतिशास्त्रज्ञ,—महामण्डलेश्वर नन्नि-सान्तर देव था। इसकी प्रशंसा। नन्नि-सान्तर-देवकी वंश-परम्परा इसप्रकार थीः—

उत्तर-मधुराका अधीश, उग्र-वंशोत्पन्न राहु राजा था, जो [महा] भारतके युद्धमें कुरुक्षेत्रमें लड़ा था और जीतनेपर जिसे नारायणने प्रसन्न होकर एक शंख और वानर-ध्वज दिया था। इसके बाद बहुत-से राजा हुए, उन सबके बाद,—एक सहकार नामका राजा हुआ, जो अन्तमें नर-मांस-भक्षी हो गया। उससे और श्रियादेवीसे जिनदत्त उत्पन्न हुआ, जो अपने पिताके आचरणसे ग्लानि-प्राप्त होकर दक्षिणमें आया और जिसके सिंहरथ नामके असुरके मारनेसे जक्कियब्बे (देवी) प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने उसे सिंहका लाञ्छन (मुद्रा) दिया। अन्धकासुर नामके असुरको मारनेसे उसने अन्धासुर नामका नगर बसाया। कनकपुरमें आकर उसने कनकासुरका वध किया; तथा कुन्दके किलेमें रहनेवाले कर और करदूषणके भगा देनेसे पद्मावती देवी प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने वहाँ कनकपुरमें, जो कि पोम्बुर्च्च (हुम्मच) का ही नामान्तर है, एक 'लोक्कि' वृक्षपर वास करना शुरू किया तथा लोक्कियब्बेका नाम धारणकर उसके लिये एक राजधानीके रूपमें शहर बसा दिया। जिनदत्त तथा दूसरे और भी राजाओंके राज्य करनेके बाद श्रीकेसि और जयकेसि हुए। श्रीकेसि

और उसकी रानीसे रणकेसी पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद अनेकोंके शासन करनेके बाद हिरण्यगर्भ हुआ, जिसने 'महादान' नामका दान किया और जिसने सान्तलिगे-हजार-नाड्का एक भिन्न राज्य स्थापित किया,—इससे वह कन्दुकाचार्य्य, दान-विनोद, विक्रम-सान्तर, इन तीन नामोंसे प्रसिद्ध हुआ। उस और लक्ष्मीदेवीसे चागि-सान्तर उत्पन्न हुआ, जिसने चागि-समुद्रका निर्माण कराया। उस और जाकल-देवीसे कन्नर-सान्तर उत्पन्न हुआ। उसके छोटे भाई काव-देव और चन्दल देवीसे त्यागिसान्तरने जन्म लिया। उस और नागल-देवीसे नन्नि-सान्तरका जन्म हुआ। उस और सिरिया-देवीसे राय-सान्तरने जन्म धारण किया। उस और अक्का-देवीका पुत्र चिक-वीर सान्तर हुआ। उस और बिज्जलदेवीका पुत्र अम्मण-देव हुआ। उस और होचल-देवीसे एक पुत्री बीरवरसि तथा एक पुत्र तैलप-देव हुआ। वह बीरल-देवी बङ्कियाळ्वकी रानी हो गई। उस बङ्कियाळ्वकी छोटी बहिन माङ्कब्बरसि, और गङ्गवंशललाम पालय देवकी पुत्री केलय-ब्बरसि तैलपदेवकी पत्नियाँ हो गईं। इनमेंसे, मादेवि केलयब्बरसिके बीर-देव उत्पन्न हुआ। उसकी प्रशंसा। उसके छोटे भाई विश्व-विख्यात सिङ्गि-देव और बर्म्म-देव थे। उस बीरदेवसे जब काडवकी रानी चट्टल-देवीकी छोटी बहिन बीरल-मादेवीसे विवाह हो गया, तब उसके बीर-मादेवी, बिजल-देवी और अचल-देवी ये तीन स्त्रियाँ और थीं। इनमेंसे, बीर-महा-देवीकी उत्पत्तिका वर्णन करते हैं।

इक्ष्वाकु कुलके सूर्य, कान्यकुब्ज (कन्नौज) के अधीश्वर धनञ्जय नामके राजा थे, जिनकी पत्नी गान्धारी-देवी थी। उनका पुत्र हरिश्चन्द्र हुआ, जिनकी ज्येष्ठ रानी रोहिणी देवी थी। उनके दो पुत्र राम और लक्ष्मण थे, जिनके अपर नाम दडिग और माधव थे। उनका वंश गङ्ग-वंश था। माधवकी प्रशंसा। उसके बड़े भाई दडिगकी प्रशंसा। माधवका पुत्र किरिय-माधव;

उसका	पुत्र	हरिवर्म्म;
"	"	विष्णुगोप;
"	"	तडङ्गालमाधव;

,, ,, अविनीत;

,, ,, दुर्विनीत;

,, ,, मुष्कर

,, ,, श्रीविक्रम

,, ,, भूविक्रम

उसका छोटा भाई राजा काम (या नृप-काम) था जिसने एक अर्थी (याचक) को गजका दान दिया था और इस कारणसे 'चागि'का नाम प्राप्त किया था।

उस नृप-कामका प्रपौत्र श्रीपुरुष था, इसका 'श्रीवल्लभ' अन्वर्थक नाम प्रसिद्ध था तथा यह गज-शास्त्रका प्रणेता था। इसने विळर्दे (या चिवर्दे) की लड़ाईमें काञ्चीके युद्धप्रिय राजा काडुवेट्टिसे उसका पल्लव-छत्र छीन लिया था तथा उसके हाथसे 'पेर्म्मानडि' का नाम भी छीन लिया था। तब उसका पुत्र शिवमार-देव (सैगोट्ट) हुआ, वह वीरमार्तण्ड-देव नामसे भी प्रसिद्ध था। उसने 'शिवमारमत' नामसे एक गज-शास्त्रका भी प्रणयन किया था। राजा विजयादित्य उसका छोटा भाई था। उसका पुत्र एरेयङ्ग था। उसका पुत्र राजमल्ल; उसका पुत्र मरुळ; उसका पुत्र बूतुग; उसका पुत्र एरेयप; उसका पुत्र नरसिंग; उसके तीन नाम और भी प्रसिद्ध थे—वीर वेङेग, मनुजपति तथा राजमल्ल। उसका (नरसिंगका) छोटा भाई कच्चिय-गङ्ग था। उसका छोटा भाई बूतुग-पेर्म्मानडि था। यह कृष्ण-राजाकी बहिनका पति था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। इसका ज्येष्ठ पुत्र मरुळ-देव था। उसका छोटा भाई मारसिंह देव था। इसका छोटा भाई राजमल्ल देव था, जिसे नोळम्बकुलान्तक, पल्लव-मल्ल, और गुत्तिय-गङ्ग भी कहते थे। इसकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई नीति-मार्ग था। उसके छोटे भाई राजा वासव और कञ्चल-देवीसे गोविन्दर-देव उत्पन्न हुआ था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई अरुमुळि-देव था।

अरुमुळि-देव और गावब्बरसिसे चट्टल, कञ्चल और राजविद्याधर उत्पन्न हुए थे। इनमेंसे चट्टल-देवी की शादी काडुवेट्टिसे,—जो तोण्डे-नाड् ४८००० का शासक तथा काञ्चीका अधिपति था—कर दी थी। कञ्चल

देवी, (जिसका दूसरा नाम वीर-महादेवी था) और वीर-देवसे ये पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोग्गिग, राजा ओड्डुग, और बम्मी।

इनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र तैलप-देवने अपने भुज-बलसे शान्तरका मुकुट प्राप्त किया और भुजबल शान्तरके नामसे शान्तिसे राज्य किया। उसका नाम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया था। उसका छोटा भाई गोविन्दर-देव था। इसका अपर नाम नन्नि-शान्तर था। नन्नि-शान्तरके नामसे ही इसने मुकुट धारण किया था। वह जिन-पादाराधक था, तथा चट्टल-देवि और राजकुमार ओड्डुयरस और बम्म देवके साथ शान्तिसे राज्य करता हुआ पोम्बुर्चमें था।

चट्टल-देवीने अरुमुळि-देव, गावब्बरसि, वीरल देवी और राजादित्य-देव-की स्वर्गयात्राके स्मारकके उपलक्ष्यमें उर्व्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चवसदिके बनानेका काम अपने हाथमें लिया।

सर्व शास्त्रों और आगमोंमें पारङ्गत होनेसे सम्मानित, तपस्वी श्रीविजय-देव चट्टल-देवीके गुरु थे। उसका पिता राजा रक्कसगंग था। काञ्ची-अधिपति (काडुवेट्टि) उसका पति था। गोग्गि उसका पुत्र था। तालाब, कुआँ, वसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र स्नानागार, श (स) त्र, कुञ्ज इत्यादि प्रसिद्ध धर्म एव पुण्यके कार्योंको चट्टल-देवीने सम्पन्न किया था।

उत्तर-मधुराके अधिपति गोग्गिकी माँने बहुत उत्सुकतासे दुनियामें अग्रगण्य स्थान प्राप्त करनेवाले पञ्चकूट जिनमन्दिरको बनवाया। क्षितिज और आकाश दोनोंसे बात करनेवाले ऐसे एक नये तालाब और मन्दिरका उसने निर्माण किया। इस तरह शान्तरकी माँ प्रसिद्ध चट्टलदेवीने बहुत यश प्राप्त किया।

श्रीविजय भट्टारक तियङ्गुडिके निदुम्बरे-तीर्थके अरुङ्गलान्वयके नन्दि-गणके अध्यक्ष थे। इनके गृहस्थ शिष्य चट्टल-देवी और नन्नि शान्तर थे। किसी शुभदिन, उनके शिष्य श्रेयान्सपण्डितने पञ्च-वसदिके नींवका पत्थर डाला।

श्रेयांसके आचार्योंकी परम्पराका वर्णनः—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें त्रिकालज्ञ गौतम-गणधर हुए। उनके बाद कोण्डकुन्दाचार्य हुए, जो जमीनसे चार इञ्च ऊँचे चलते थे। कुछ समय बाद भद्रबाहु-स्वामी हुए, जिनके

बाद कलि-कालका अवतार (उत्पत्ति) हुआ और विभिन्न गणोंकी उत्पत्ति हुई।

उनमेंसे कलिकालगणधर, शास्त्र-प्रणेता समन्तभद्र-स्वामी हुए। उनकी शिष्य-परम्परामें शिवकोट्याचार्य हुए; उनके बाद वरदत्ताचार्य्य; उनके बाद तत्त्वार्थसूत्रके प्रणेता आर्य्य-देव; उनके बाद सिंहनन्द्याचार्य्य जो गङ्ग-राज्यके स्थापक थे। उनके बाद एकसन्धि सुमति-भट्टारक हुए। इसके बाद अकलङ्क-देव (वादिसिंह) हुए। पुनः क्रमशः वज्रनन्द्याचार्य्य, पूज्यपाद-स्वामी, श्रीपाल-भट्टारक; पुन. अभिनन्दनाचार्य्य; कवि परमेष्ठि-स्वामी; त्रैविद्य देव; अनन्तवीर्य भट्टारक, जिन्होंने अकलङ्क-सूत्रकी वृत्ति लिखी थी। इनके बाद कुमारसेन-देव; उनके बाद मौनि देव; उनके बाद विमलचन्द्र-भट्टारक; उनके शिष्य कनकसेन-भट्टारक थे जो राजा राजमल्लके गुरु थे। उनके शिष्य थे दयापाल जिन्होंने 'शब्दानुशासन' की 'प्रक्रिया' रूप-सिद्धि लिखी है—तथा पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव। वादिराज-देव 'षट्-तर्क-षण्मुख,' 'जगदेकमल्ल-वादी' थे। श्रीविजय-देव रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडि, चट्टल-देवि, वीर-देव तथा नन्नि-शान्तरके गुरु थे। विद्वानोंको वे शास्त्र देते थे तथा जो शास्त्रका महत्त्व नहीं समझते थे उन्हें उनका महत्त्व समझाते थे, इसी कारणसे उनका नाम श्रीविजय था तथा उन्हें 'पण्डित-पारिजात' भी कहते थे।

उपर्युक्त श्रीविजय-भट्टारक और उनके शिष्य चोल्लट..., शान्त-देव, गुणसेन-देव, दयापाल-देव, कमलभद्र देव, अजितसेन-पण्डित-देव तथा श्रेयान्स-पण्डित-देव। इनने (उक्त मितिको) उर्व्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चकूट-बसदिकी स्थापना की। बसदिकी मरम्मत, ऋषि-वर्गके आहार तथा पूजाके प्रबन्धके लिये, नन्नि-शान्तरदेव, ओड्डमरस, बम्म-देव, तथा चट्टल-देवीने,—आचार्य कमलभद्र-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक (उक्त) गाँव दिये।

शेष भाग बहुत घिसा हुआ है।]

[EC, VIII, Nagar tl. n° 35]

२१४

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मचमें, तोरण-बागिलके दक्षिणी खम्भेपर]

(पूर्वमुख) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

('स्वस्ति' से लेकर पाँचवी पंक्तिके 'महा मण्डलेश्वरं' तक का लेख पूर्वके शि० ले० नं० २१३ की पंक्ति १ से ६ तक से मिलता है ।)

एलगे चेन्नने वीरुगं वपुविनिं भावोद्भवं तक्कनेन्त् ।

एलगे वीरने वीरुगं विरुदिनिं भीमोपमं बाप्पु मत्त् ।

एलगे दानिये वीरुगं पिरियना-कर्ण्णाख्यनिन्दकुमेन्त् ।

एलगे वीरल-देवि नोन्तळवनोळ् कूडिर्प्प सौभाग्यमम् ॥

अन्तेनिसिद वीर-शान्तर-देवगं वीरल-महादेविगं ॥

दशरथन तनेयरन्दमन् ।

एशेदिरे पोत्तिर्द तैलनुं गोग्गिगनुम् ।

कुसुमास्त्रनेनिसु वोड्डुग-

वसुधेशनुमन्तु वोम्मनुं तनयरदार् ॥

अवरोळग्रजनराति-सैन्य-शोषण-वाडवानळनुमाश्रित-कल्प-वृक्षनु-मेनिसि परायत्तमाद देशमं तनगेकायत्तं माडि सान्तर-वहमं ताळ्दि ।

निज-भुज-वळदिन्दरि-भू- ।

भुजरं कोन्दोत्तिकोण्डु देशमनन्ता- ।

विजिगीषु तैल-भूपम् ।

भुजबळ-शान्तरनेनिप्प पेसरं पडेदम् ॥

आतननुजं गोविन्दर-देवननेक-राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि

सम्यक्त्व-चूडामणियुं जगदेक-दानियुं एनिसि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-छत्र-च्छायेयिन्दमाळ्दु **नन्नि-सान्तरनेम्बेरडनेय** पेसरं पडेदम् ॥

(दक्षिणमुख) ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।

बूतुग-पेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीत चक्रि कुडल् पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्ग्गे वन्दु त- ।
दर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सं- ।
वर्द्धित-सान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

अन्तातन तम्मनोड्डुगनशेष-धरा-वळयम कर-वळयमं ताळ्दुवन्ते लीलेयिं ताळ्दि **विक्रम-सान्तरनेम्ब** पेसरं पडेद ॥

स्वस्ति श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।
सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिक्-भित्तिकः
श्रीमान् **विक्रम-शान्तरो** विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥

आतननुज ॥

पर-नरप-शिरः-कुड्मो- ।
त्कर-कारि-कमळा-पयोधर-द्वय-हारम् ।
स्मर-मूर्त्ति निखिळ-दिग्-मुख- ।
परिचुम्बित-कीर्ति **बर्म्म-देव** कुमार ॥

अन्तेनिसिदवर तायि ॥

जनकं **रक्कस-गङ्ग**-भूमिपति **काञ्ची-नाथ**नात्म-प्रियम् ।

विनुतर् श्रीविजयर् सु-सि (शि) क्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळसं-।
हन-विक्रान्त-यशो-विळास-भुज-खळ्गोल्लासि ता गोग्गि नन्-।
दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

अन्तु समस्त-गुण-सन्दोहक्क धर्म्मक्के जन्म-भूमियेनिसिद चट्टल-देवियुं **भुजबळ-शान्तर-देवनु नन्नि-शान्तर-देवनुं विक्रम-शान्तर-देवनु बर्म्म-देवनुं पोम्बुर्च्चदोळ्** सुखर्दि राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्त्थमं भाविसि तमगे श्रेयो-निबन्धनार्त्थं उर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-वसदियं मार्प्पुदोगमनेन्त्ति कोण्डु तामेल्लरु **मोडेयदेवर गुरु**गळप्प कारणदिन्द द्रविळ-संघद नन्दि-गणद रुङ्गुळान्वयद **श्रीविजय-देवर** नामोच्चारणं गेय्दवर शिष्यरु **श्रेयान्स-पण्डित**रिन्दुर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-वसदिगे सु (शु) भ-मुहूर्तदोळाचन्द्रार्क्क-स्थायियप्पन्तुन्नत-मप्पेडेयोळ् केसर्कल्लिक्किसिदरु अवराचार्यावळियेन्तेने। **श्री-वर्द्धमान-स्वामि**गळ तीर्त्थं प्रवर्त्तिसे ससर्द्धिसम्पन्नरप्प **गौतमर् गणधररेने** त्रिज्ञानिगळप्प मुनिगळ् पलंबरुं सले अवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद **कोण्डकुन्दाचार्यरुं** श्रुतकेवळिगळेनिसिद **भद्रबाहुस्वामिगळ्** मोद-लागि पलम्बराचार्य्यर् पोदिम्बळियं **समन्तभद्र-स्वामि**गळुदयिसिदरवर-न्वयदोळ् गङ्ग-राज्यम माडिद **सिंहनन्द्याचार्य्यरवरिं अकलङ्कदेवरवरिं** रायराचमल्लन गुरुगळप्प वादिराज-देवरेनिसिद **कनकसेन-देवरु**मवर-शिष्यरोडेय-देवरु रूपसिद्धियं माडिद **दयापाळ-देवरुं पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरुं** षट्-तर्क्क-षण्मुखरु जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद **वादि-राज-देवरवरिं कमळभद्र-देवरवरिम्**

एकास्यः चतुराननो गणपतिर्न्नेभाननो भारती
न स्त्री सर्व्व-कलाधरोऽशशधरः कामान्तको नेश्वरः।

विद्याना परिनिष्ठित-क्षिति-तळं तन्मूळमाळम्बनम्
चित्ते तेऽजितसेन-देव विदुषां वृत्तं विचित्रीयते ॥

अन्तेनिसिद शब्द-चतुर्म्मुखनुं तार्किक-चक्रवर्त्तियुं वादीभसिंह-नुमेनिसिद जितसेन-देवर सह-धर्म्मिगळु

दुरित-कुळ-प्रध्वसं ।
स्मर-मादत्-कुम्भि-कुम्भदळन-मृगेन्द्रम् ।
वर-वाग्-वनिता-कान्तम् ।
धरेयोळ् नेगर्द्दी-कुमारसेन-देव-मुनीन्द्रम् ॥

अन्तेनिसिद कुमारसेन-देवरिं वैद्य-गज-केसरियेनिसिद श्रेयान्स-देवरन्तवरायुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदियना- शक-वर्षद ९९९नेय पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेय माडिया-चसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कमल्लिर्द ऋषि-समुदाय-दाहार-दानक्कं पूजा-विधानक्कमागे समस्त-गुण-मणि-गणविराजमानेयरप्प श्रीमतु-चट्टल-देवियरुमन्तु तम्मं नाल्वरुमिर्द्दु कमळभद्र-देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे भुजबळशान्तरदेवं कोट्ट ग्रामङ्गळ् (जैसाकि कहा गया है) मत्तमातननुजं नन्निशान्तर-देवं सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हादिगारु अदर कालुहळ्ळि हल्लवनहळ्ळियुं बिडेयुम कोट्ट अन्तातन तम्म विक्रम शान्तर-देवं राज्यं गेयुत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हालन्दूरु कल्लूरु-नाडोळगण केरेगोड समीपद मडम्बळ्ळियुम कोट्टरिन्ती-वसदिय वृत्ति-एल्लवक्कं देवि-देरे अडे-गर्व्वु काणिक्के सेसे विर्द्दु बीय-मोदलागे कुमार-गद्याण किरु-देरे किरु-कुळायं साम्यं सलगे मोदलागि पेरवुं तेरेगळेम्ब सर्व्व-बाधा-परिहारवं माडिदरु । (यहाँ सीमाएँ तथा इमेशाके अन्तिम वाक्यावयव आते हैं)।

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था—और तत्पादप-द्मोपजीवी (ऊपरके शिलालेख नं० २१३ में जो उपाधियाँ नन्निशान्तरकी हैं, उन्हींके सहित) महामण्डलेश्वर वीरुग या वीर शान्तर-देव था। उसकी प्रशसा। उसकी रानी वीरल-महादेवी थी। उनके चार लड़के—, तैल, गोग्गिक, ओड्डुग, और बम्म—थे। इनमेंसे तैलका नाम भुजबल-शान्तर, गोग्गिक या गोविन्दर-देवका नन्नि शान्तर तथा ओड्डुगका विक्रम-शान्तर प्रसिद्ध हुआ। सबसे छोटे भाईका नाम कुमार बम्मे-देव ही रहा। इनकी माँ चट्टल देवी (वीरल महादेवी) थी। उसके पिता राजा रक्कस-गङ्ग, पति काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, और पुत्र गोग्गि (नन्नि-शान्तर) थे।

इस प्रकार, जिस समय सब धार्मिक गुणों और पवित्रताकी जन्मभूमि चट्टलदेवी, भुजबल-शान्तर-देव, नन्नि-शान्तर-देव, विक्रम-शान्तर-देव और बम्मेदेव पोम्बुर्चमें थे और शान्तिसे राज्य कर रहे थे 'धर्म सर्व प्रथम चिन्तनीय है', इसका खयाल करके, धर्म उपार्जन करनेके लिये, उन्होने 'उर्वी तिलक' नामकी पञ्च बसदिके निर्माणका कार्य अपने हाथमें लिया। ये सब ओडेय-देवके (श्रेयांस-पण्डितके शब्दोंमें जो श्रीविजय-देवका नामान्तर है) गृहस्थशिष्य थे। उन सबने किसी शुभ दिन पञ्चबसदिकी नींव डाली।

श्रेयान्सदेवके आचार्योंकी परम्परा—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम गणधर हुए। उनके पश्चात् बहुतसे त्रिकालज्ञ मुनियोंके होनेके बाद क्रमशः कोण्डकुन्दाचार्य, 'श्रुतकेवली' भद्रबाहु स्वामी, बहुत-से आचार्योंके व्यतीत होनेके बाद, समन्तभद्र स्वामी, सिंहनन्द्याचार्य, अकलङ्क-देव, कनकसेन देव (जो वादिराज नामसे भी प्रसिद्ध थे), ओडेयदेव (श्रीविजयदेव जिनका ऊपर नाम दिया है), दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, वादिराज-देव (जो 'षट्-तर्क षण्मुख' तथा 'जगदेकमल्ल-वादि' नामसे भी प्रसिद्ध थे), कमलभद्र-देव, अजितसेन देव (प्रशंसासहित) हुए। और अजितसेन देवके सहधर्मी शब्द-चतुर्मुख, तार्किक-चक्रवर्त्ती वादीभसिंह हुए। तत्पश्चात् कुमारसेनदेव मुनीन्द्र। इनके बाद श्रेयान्सदेव हुए।

(उक्त मितिको) पञ्चबसदिकी नींव डालकर, चट्टल-देवी और चारों भाइयोंकी उपस्थितिमें, कमलभद्रदेवके पैर धोकर, भुजबल-शान्तर-देवने (जैसा कि ऊपर कहा गया है) गाँव और भूमियाँ दीं। इसीतरह उसके छोटे भाई नन्नि-शान्तर देवने तथा इसके छोटे भाई विक्रम शान्तरदेवने (जैसा कि लेखमें बताया गया है) गाँव और भूमियाँ दानमें दीं और बसदिके इन दानोंको (जिसकी सूची लेख में दी हुई है) उन्होंने सभी करोंसे मुक्त कर दिया। सीमायें, शाप और आशीर्वचन।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 36]

२१८

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, मानस्तम्भके ऊपर, दक्षिणकी तरफ़]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन शासनम् ॥

नमो अर्हते ॥

स्वस्ति-श्री रमणी-विनोद-भवनं यस्योद्ध(द्ध)-वक्षः-स्थलम्
वाग्-देवी-वनिता-विलास-निळयो यस्याननाम्भोरुहम् ।
वीर-श्री-युवतेरभूत् कुळ-गृह यद्-बाहु-दण्ड-द्वयम्
यत्कीर्त्तिश्शरदिन्दु-कान्ति-विमला पारेदिशं वर्त्तते ॥

साक्षादुग्र-कुळ-प्रभुर्निज-भुज-प्रोद्भासि-कौक्षेयक-
प्रध्वस्तीकृत-भूरि-गर्व्व-बळवद्विद्वेषि-भूपाळकः ।
दीनानाथ-जना यदीय-सु-महा-दानात् परेष्टप्रदस्
स श्रीमान् भुवि नन्नि-शान्तर इति ख्यातो भृशं भ्राजते ॥

विभाति यस्याप्रतिमः प्रतापः मानोगतो (?) वैरि-महीपतीनाम् ।

सन्तापयत्येव तदन्तरङ्गम् श्रीमानसावोड्डुग-मण्डलेशः ॥
कुमार-चूडामणिरेष माति श्री-ब्रह्म-देवो गुणवाननिन्धः ।
श्री-जैन-पादाम्बुज-युग्म-भृङ्गः यशोऽभिवेष्टचाखिल-भूमि-भागः॥
श्रीमद्-राक्षस-गङ्ग-मण्डलपतिः श्री-गङ्ग-नारायणः
दोर-दण्ड-द्वय-वीर्य्य-भीषित-रिपुः श्री-गङ्ग-पेर्म्मानडिः ।
स्याद् यस्या जनको मनो निरुपमो विख्यात-कीर्त्ति-ध्वजः
श्रीमच्चट्टल-देवि अत्र भुवने ख्याता वरीवृत्यते ॥
दृष्टे यत्र महोत्सवैक-निलये पश्यज्जनानां मनः
पुण्यं सञ्चिनुते-तरामतितरामंहो हरत्यप्यलम् ।
पूजाभिः पृथुभिः पुनः प्रतिदिनं वाभाति योऽयं सदा
श्रीमत्पञ्च-जिनालयो निरुपमो भक्त्या यया निर्म्मितः ॥
संसाराम्भोधिमध्यान् निरुपम-गुण-सद्-रत्न-भेदाधिवासम्
निर्व्वाण-द्वीपमाप्तुं प्रतियत-मनसा पण्डितानां मुनीनां ।
कृत्वा श्रीमज्जिनेन्द्रालय-विलसित-नावं व्यधाद् यक्षिणामन्-
मानस्तम्भोल्लसत्-कूबरमपि च धनान्यर्थि-सार्थाय दत्वा ॥
आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दानैरनिरन्तरैः ।
श्रीमच्चट्टल-देवीयं वाभाति भुवन-स्तुता ॥
रोहिणी चेलिनी सीता देवता च प्रभावती ।
श्रूयन्ते वार्त्तया सेयं दृश्यन्ते विमलैर्ग्गुणैः ॥
श्रीमद्द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
यद्-वाग्-वज्राभिघातेन प्रवादि-मद-भूभृतः ।
सञ्चूर्ण्णितास्तु भाति स्म हेमसेनो महामुनिः ॥

शब्दानुशासनस्योच्चैर् रूपसिद्धिर्म्महात्मना ।
कृता येन स वाभाति दयापालो मुनीश्वरः ॥
श्री-पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव-चक्रेन्दु-सङ्गमात् ॥
जातावभाति जैनीयं सर्व्व-शुक्ला सरस्वती ॥
नम्रावनीश-मौळीद्ध-माला-मणि-गणार्च्चितम् ।
यस्य पादाम्बुजं भातं भातः श्रीविजयो गुरुः ॥
सदसि यदकलङ्कः कीर्त्तने धर्म्मकीर्त्तिः
वचसि सुरपुरोधा न्यायवादेऽक्षपादः ।
इति समय-गुरूणामेकतस्संगतानाम्
प्रतिनिधिरिव देवो राजते वादिराजः ॥
सांख्यागमाम्बुधर-धूनन-चण्ड-वायुः
बौद्धागमाम्बुनिधि-शोषण-वाडवाग्निः ।
जैनागमाम्बुनिधि-वर्द्धन-चन्द्र-रोचिः
जीयादसावजितसेन-मुनीन्द्र-मुख्यः ॥
श्रेयांस-पण्डितर् ग्गत- ।
मायादि-कषायरमळ-जिन-मत-सारर् ।
न्याय-परर् रिसत-कमळ- ।
श्री-युत-द-न-कुन्द-रुन्द्र-कीर्त्ति-पताकर् ॥
नमो जिनाय ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा । नन्नि-शान्तरके यशकी प्रशंसा । राजा ओड्डुग, ब्रह्म(बम्म-)देव, और चट्टल-देवीकी प्रशंसा ।

हेमसेन-मुनि, शब्दानुशासनके लिये 'रूपसिद्धि' बनानेवाले दयापाल मुनीश्वर, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, श्रीविजय, इन सबका प्रशंसापूर्वक उल्लेख ।

वादिराजदेवकी प्रशंसा। अजितसेन मुनींद्रकी प्रशंसा। श्रेयांसपण्डित-की प्रशंसा।]

नोटः—इस शिलालेखमें समय (काल) का कोई निर्देश नहीं है और न किसी कार्य या दानका इसमें उल्लेख है। यह लेख शुद्ध प्रशंसात्मक है।

[EC, VIII, Nagar,tl., n°.39.]

२१६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

[तीसरी पंक्तिमें 'स्वस्ति'से लेकर १७ वीं पंक्तिमें "कूडिप्पे-संभाव्यसं" तक शि० ले० नं. २१४ की ११ से ३१ की पंक्तितक मिलता है।]

एनिसिद वीर-देवनग्र-तनयम्॥]
अरि-विरुद-भूभुजर्कळ।
विरुदं वेरिन्दे किर्त्तु वीर-श्रीयोळ्।
नेरेददटुपमातीतम्।
धरेगेने भुजवळने शान्तरान्वय-तिळकम्॥
विरुद-रिपु-नृपर शिरमम्।
भरदिं सेण्डाडि वीर-लक्ष्मि यमोलिसल्।
नरपतिगळारो धुरदोळ्।
निरुतं निन्नन्ते नन्नि-शान्तर-नृपति॥
उत्तर-मधुरावीश्वरम्।
उत्तम-गुणनुग्रवंश-तिळकं विबुध-।

स्तुत्य-यशोम्बुधि विरुद-नृ- ।
पोत्तम भुजबळन तम्मनेनिपं गोग्गि ॥
आतन तम्मं ॥
ओड्डिदरि-नरपरोड्डम् ।
काडि कडिदण्णनङ्कार-वेसर्केळ् ।
ओड्डुगनोळेसेये जगदोळग् ।
ओड्डुगनरसङ्कार-वेसरं तळेदम् ॥

आ-कु-वळय-चन्द्रमननुजम् ॥
कुरि-दरि-दरिदम् पगेयेम्ब् ।
अरिकेय काननमनदटरदटं मुरिदम् ।
नेरेददटि वर्म्मुगनेम्ब् ।
अरितद कणि विरुद-कोमर-चूडारत्नम् ॥
तैलन गोग्गियोड्डुगन बोम्मन ताय् जिन-राज-धर्म्म-सल्-
लीलेय वीर-देव-नृपनत्तिगे कन्नेगे वीर-लक्ष्मिगिर्- ।
प्पालयमाद मण्डलिक-रक्कस-गङ्गन पुत्रि काणि शी- ।
ळालिगेनिप्पडेनवळे नोन्तळे चट्टल-देवि नोन्तुदम् ॥
वेरिनहीन्द्रनं नडुविनागसमं कुडियिं दिवाग्रमम् ।
तार-नगङ्गळं कवलिनोळ्ळेलेयि देसेयं मुगुळ्गाळिम् ।
तारकियं सिताब्जमनं पुष्पदे पोल्वुदु पणिण (उत्तरमुख) निन्दुवम् ।
नीरेरेदन्ते दुग्धमने चट्टल-देविय सद्-यशो-द्रुमम् ॥

इन्तेनिसिदिवरु सन्तळिगे-सासिरमं सुख-संकथा-विनोदर्दि राज्यं गेय्युत्तिर्दु तन्न राज्याभिवृद्धि-निबन्धनमप्प श्री-जैन-धर्म्मानुरागर्दि शक-

वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध बिदिगे-बृहस्पति-वारदन्दु पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमं प्रतिष्ठिसि आ-बसदिय खण्ड-स्फुटित-नव-कर्म्म-पूजा-विधानकमल्लिर्प्प ऋषिसमुदायकाहार-दानार्त्थमुमागे द्रमिळगणद नन्दि-संघदरुङ्गळान्वयद श्रीवादिराजापर-नामधेय-श्रीमत्-कनकसेन-पण्डितदेवर शिष्यरोडेय-देवरेनिसिद श्रीविजय-पण्डितदेवरन्तेवासिगळप्प श्रीमत्-कमळभद्र-पण्डित-देवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वं तत्-समुदाय मुख्यमागे कोट्ट ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानों और उनकी सीमाओं की विस्तृत चर्चा आती है)।

[जिन शासनकी प्रशंसा। (जैसा कि लेख नं. २१४ में वीर देव और वीरल-देवीके पद और श्लोक हैं वैसे ही यहाँ हैं), वीर देवके ज्येष्ठ पुत्र भुजबळ शान्तर, उससे छोटे पुत्र गोग्गि, जिसका दूसरा नाम नन्नि शान्तर है, उसके छोटे भाई ओड्डुग, तथा उसके भी छोटे भाई (चौथे पुत्र) बम्मुगकी प्रशंसा। तैल, गोग्गि, ओड्डुग, तथा बोम्मकी माँ चट्टल-देवी बहुत भक्त थी। उसके कीर्तिरूपी वृक्षकी कल्पनोक्ति।

इन लोगोंने, जब कि ये सान्तळिगे-हजारका शान्ति और बुद्धिमत्तासे शासन कर रहे थे (उक्त) गाँवोंका दान किया। उन्होने जैनधर्मके प्रेमवश पञ्च-कूट-जिनमन्दिर स्थापित किया। तथा उस बसदिकी मरम्मतके लिये, नये कामोंके लिये, पूजा और ऋषिगणके आहारके लिये,—द्रमिळ-गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गळान्वयके कनकसेन-पण्डित देवके, जिनका दूसरा नाम वादिराज था, शिष्य श्रीविजयदेवके, जिन्हें ओडेय-देव भी कहते थे, शिष्य कमलभद्र-पण्डित-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक यह सब दान किया गया था।)

[EC, VIII, Nagar tl, n° 40 (1st part).]

२१७

बलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड़

[विक्रमादित्य चालुक्यका २ रा वर्ष=१०७७ ई०]

[बलगाम्वेमें, बडगियर-होण्डके पास एक पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-सुरासुर-मस्तक-मकुटांश-जाळ-जळ-धौत-पदम् ।
प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासनमस्तु चिरं भद्रमखिळ-भव्य-जनानाम् ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्ल-देवर् ॥

वृ ॥ अळगं चोळावणीशङ्गेणसनणियरं लाळ-भूपङ्गे वाहा- ।
वळदिन्दं तोरि मीरुत्तडसिदुभय-चक्रेश-सामन्त-भूभृत्- ।
कुळमं तन्नेरिदुग्रेभदिनुरदरे बेङ्कोण्डु चालुक्य-राज्यो- ।
ज्वळ-लक्ष्मी-नाथनाव्दं भुवन-जन-नुतं विक्रमादित्य-देवम् ॥
धारा-नाथ-महा-भय-ज्वरकरं चोळोग्र-कालान्तकम् ।
सौराष्ट्रांग-कलिंग-वङ्ग-मगधान्ध्रावन्ति-पाञ्चाळ-.... ।
....राजावळि-मौळि-लाळित-पदं पूर्व्वापराम्भोधि-वे-ई
ळारामान्तर-शैळ केळि-विभवं चालुक्य दिक्-कुञ्जरम् ॥
नरसिंहाकारदिं दानव-पति-युरमं सीळ्दनण्मण्मु रुद्रं- ।
बेरसा-कैलासमं तूगिदनळवळवार्त्तर्त्तियिं चर्म्ममं ने- ।
ट्टेरदिन्द्रङ्गित्तनार्प्पार्प्पखिळ-धरे गत-क्षत्रमप्पन्ते धात्री- ।
शरनिर्प्पच्चोन्दु-सूळ् कोन्दन चलमे चलं विक्रमादित्य निन्न ॥
पुदुवेकन्यर्ग्गमानोर्व्वने तळेयलिदं साल्वेनेन्दा-महा- कूर- ।
म्मद बेन्निन्दा-भुजङ्गाधिपन पेडेगळिन्दा-दिशा-कुञ्जर-स्कन्- ।
धदिना-भूभृद्दरी-मूळदिनखिल-धरा-भारमं तन्दु विक्रा-
न्तद बल्पि नन्न तोळोळ् पदुळमिरिसिदं विक्रमादित्य-देवम् ॥

अन्तु धरेयं निष्कण्टकं माडि सुख-संकथा-विनोददिन्देतगिरिय नेलेवी-डिनोळ् राज्यं गय्युत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्डदण्डनायकं दुर्ज्जन-भय-दायकं बन्धु-जन-बन्धुर-कुमुद-सुधाकरं विप्र-दिवाकरं सरस्वती-समय-समुद्धरणं गुण-गणाभरणं चतुर-चतुरानन विक्रम-पञ्चाननं प्रताप-सहाय पति-हितवैनतेय पिसुणर गण्डनहित-कुळ-कमळ-वन-वेदण्डं विनयावलोकं कीर्त्ति-पताकं साहसोत्तुङ्ग श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवचरण-सरसीरुह-भृङ्ग-नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमद्दण्डनायकं बर्म्म-देवम् ॥

वृत्त ॥ धरेगेल्लं तन्न वहा-बळद नेरवु तन्नण्मु तनुग्र-तेजस्- ।
स्फुरित तन्नाप्पु तन्नोर्ग्गुडिय निलवु तन्नूर्ज्जित-ख्यातियोळप-
च्चरियागुत्तिर्प्पिन रञ्जिसि सकळ-गुणानर्घ्य-रत्नक्के रत्ना- ।
करनादं दण्डनाथाग्रणि सकळ-जगन्मण्डन बर्म्म-देवम् ॥
जनकेल्लं ताने कण्णुं गतिमुमेनिसि तन्नि रिपु-क्षत्र-नक्ष-
त्र-निकाय निल्लदेल्लं मसुळे कळिमळ-ध्वान्तमर्क्काडियिन्दा- ।
वनियं मिक्केळ्गेयिन्दं बेळपेसकमनान्तिर्द्दप विक्रमादि- ।
त्यन तेजश्चक्रमिर्प्पन्तेवोलनवधि-सत्वोदयं बर्म्म-देवम् ॥
हरियिं चाळितमादुदक्कुदचळेन्द्रं देव्यर्निं साहुँदुद- ।
व्वि रसा-गर्व्वमना-ल्यानिळन पोर्व्वि पारिताशा-गजोत्- ।
करमेन्दन्दिवरल्लि धीर-गुणमेल्लिर्त्तेन्दिवं नक्कु धि- ।
करिपं निश्चळमाद धैर्य्य-गुणदोळ्पिं बर्म्म-दण्डाधिपम् ॥
कुडुवेडेगादुदेम्मडगलादुदे वित्तमरातियं पडल्- ।
वडिपेडेगादुदेम्बरिदे पोत्तिरलादुदे कन्दु सत्यमम् ।

नुडिवेडेगादुदेम् पुसियलादुदे नालिगे यिन्दु कीर्त्तिं दाम्- ।
गुडिवडे ब्रम्मदेवननितु क्षणदुन्नतियं नेगर्च्चिदम् ॥

अन्तु पोगर्त्तेग नेगर्त्तेग नेल्याद श्रीमन्महा-सेनाधिपति महा-प्रधानं दण्डनायकं ब्रम्म-देवरसर् ब्बनवसे-पन्निर्च्छासिरमु सान्तळिगे-सासिरमुं पदिनेण्टग्रहारगळम दुष्ट-निग्रह-विशिष्ट-प्रतिपाळनम् गेय्दनु-भविसुत्त राजधानि-बळ्ळिगावेयोळिरे ॥

वृत्त ॥ जिननाथ-स्वामि देव्व निज-गुरु गुणभद्र-व्रतीन्द्रं जगत्-पा-
वने ताय् जक्कब्बे सोमं जनकनवरजं मेचि भागब्बे पुण्याद्
गने मावं लोक-पूज्य गुण-निधि कलि-देवं बुधाधारनेन्दन्दु ।
अनवद्यं सिङ्गनेन् केवळमे हितकरोत्तुङ्ग-धर्म्म-प्रसङ्गम् ॥
विनेयद सीमे धर्म्मद तवर्-म्मने सत्यद जन्म-भूमि मान्- ।
तनदेरुवट्टु पेम्पिनदगुन्ति विवेकद वीडु-दाणवार- ।
ण्पिनकणियेन्दु वणिपुद्दु भू-वळयं प्रतिकण्ठ-सिंगनम् ।
जिन-पति-पाद-पङ्करुह-भृङ्गनतुद्य-गुण-प्रसङ्गनम् ॥
वरेपद वन्मे वाजनेय विन्नणमोप्पुव लेक्कदोजे सं- ।
कर-सुतनोळ् सरस्वतियोळम्बुरुहासननोळ् विचारिसल् ।
दोरे सरि पाटियेन्दु निखिळोर्व्वरे वणिसुतिर्प्पुदेन्दोडेम् ।
पिरियनो सिङ्गनुज्वळ-यशो-विभवं प्रतिपन्न-मन्दरम् ॥
शुचि सुर-सिन्धुजं सुर-सरिद्ववनिन्दनिल-प्रियात्मजम् ।
शुचि गगनापगा-तनयनिं पवमान-तनूजनिं सुकम् ।
शुचि नेगळ्दा-नदीसुतनिना-कपि-राजनिना-सुकर्षियिम् ।
शुचियेने सन्दने-दोरेतो शौच-गुणं प्रतिकण्ठ-सिंगन ॥
फळ-भरिताम्र-भूरुहके पक्षिगणं भ्रमराळि पुष्प-सं- ।

कुळ-नव-सौरभक्केरगुवन्ते बुधाळि नियोगमेम्ब दी- ।
वळिगेय पर्व्वदोळ् वरे यथोचितदिं तणिपिं बळिक्के सन्- ।
चळतरमा-नियोगमेनुतिर्प्पुदु गोसने सिङ्ग-राजनम् ॥
पर-हितमं कडङ्गि नेरे माडले कल्तनशेष-सद्-बुधोत्- ।
करमनोरल्दु मनिसले कल्तनेडर्प्पिरिदेम्ब शिष्टरम् ।
पोरेयले कल्तनुत्तम-गुणाधिकरोळ् दोरे यप्पनेन्दु म- ।
चरिसले कल्तनिन्तुटिदु कल्त-गुणं प्रतिकण्ठ-सिंगन ॥

कन्द ॥ जिनधर्म्माम्बर-दिनपं ।
जिन-धर्म्मसुधाम्बुरासिवर्द्धन-चन्द्रम् ।
जिन-धर्म्म-प्राकारम् ।
जिन-पति-चरणाम्बुजात-भृङ्ग सिङ्ग ॥

इन्तेनिसिद गुणङ्गळ् तनगे सहजमागे नेगळ्द श्रीमत्-प्रतिकण्ठ-सिङ्गय्यं धर्म्म-कथा-कथन-प्रसङ्गम पुट्टिसि श्रीमत्-पेर्म्माडिय बसदि-गोन्दु-वाडमं श्री-चल्लवरसरळ्ळि पडेदु कुडिमेन्दु तन्नाळ्दङ्गे बिन्नप गेय्यल् श्रीमद्-दण्डनायकं बम्मदेव तत्-सम्बन्ध-मेल्लुमं निज-स्वामिगे बिन्नपं गेय्ये ॥ श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर् श्रीमच्चाळुक्य-विक्रम-वर्ष २ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद पुष्य-सुद्द ७ आदित्यवारदन्दिनुत्तरायण-संक्रान्तिय पर्व्व-निमित्तं राजधानि-बळ्ळिगावेयोळ् तम्म कुमार-गालदन्दु माडिसिद श्रीमच्चाळुक्य-गङ्ग-पेर्म्मानडि-जिनालयद देवर्ग्गर्च्चन-पूजनाभिषेकक्कं भोगक्कं ऋषियराहार-दानक्कं मेले बसदिय खण्ड-स्फुटित-नव-कर्म्मद वेसक्कमागि ।

वृत्त ॥ जसमेम्बुज्वळ-दीप्ति पज्वळिसे भव्याम्भोजिनी-राजि रा- ।
जिसे दुष्कर्म्म-तमो-बलं बेदरे लोक-स्तुत्य-जैनागम- ।

प्रसर-व्योम-विभागदोळ् सोगयिकुं रत्न-त्रय-श्री-गुणा- ।
वसथ-श्री-**गुणभद्र-देव**-मुनिपाम्भोजात-मित्रोदयम् ॥

कन्द ॥ एनो-दूरं परम-त- । पो-निधि तन्मुनि-गणेश-सद्धर्म्मि लसद्- ।
ज्ञान-परं नेगळ्द **महा- । सेन-व्रति** तद्-व्रतीश-शिष्यर्-नेगळ्दर् ॥

वृत्त ॥ ओदविद शब्द-शास्त्रदेडेयोळ् भुवन-स्तुत-**पूज्यपाद**रेम्- ।
बुदु नेरे तर्क्क-शास्त्रद विवेकदोळिन्त**कळङ्क-देव**रेम्- ।
बुदु कविता-गुणोत्कर-महत्त्वदोळेय्दे **समन्तभद्र**रेम्- ।
बुदु सले **रामसेन**-विबुधोत्तमरं निखिळोर्व्वरा-जनम् ॥

अन्तु समस्तशास्त्र-पारावार-पारग परमतपश्चरणनिरतरप्प **श्रीमूल-संघद सेनगणद पोगरि-गच्छद श्रीमत्-रामसेन-पण्डितर्गे** धारा-पूर्व्वक सर्व्व-नमस्यं माडि कोट्ट **बनवसे-पन्निच्छासिरद** कम्पण **जिड्डुळिगे** ७० र वळिय बाडं **मनेवने** १ । (इसके आगेके अन्तिम वाक्यावयव)। श्रीमद्-**गुणभद्र-देव**र गुड्डं **चावुण्डमय्यं** बरेदं मङ्गळ महाश्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । त्रिभुवनमल्ल देवका प्रवर्धमान राज्य । विक्रमादित्य-देवकी प्रशसा । जिस समय वे एतगिरिके निवासस्थानमें रहते हुए राज्य कर रहे थे उस समय तत्पादपद्मोपजीवी (बहुत उपाधियोंसे युक्त) दण्डनायक बर्म्मदेव थे (उसकी प्रशंसामें श्लोक) । जिससमय दण्डनायक बर्म्मदेवरस बनवसे १२०००, सान्तलिगे १००० और १८ अग्रहारोंकी रक्षा करते हुए राजधानी बल्लिगाम्वेमें थेः—

सिंगके गुरुका नाम गुणभद्र-व्रतीन्द्र, माँ जक्कब्बे, पिता सोम, छोटा भाई मेचि, पत्नीका नाम भागब्बे, ससुरका नाम कलि-देव था। (उसकी प्रशंसामें श्लोक, जो उसे 'प्रतिकण्ठ-सिंग' कहते हैं)

प्रतिकण्ठ सिंगय्यने अपने शासक बर्म्मदेवको प्रार्थनापत्र देकर त्रिभुवनमल्लदेवसे, चालुक्य विक्रम वर्ष २ में चालुक्य-गंग पेर्म्मानडि जिनालयको

बनवसे १२००० के जिड्डुलिगे ७० का मनेवने गाँव दिलवाया। यह दान गुणभद्रके शिष्य रामसेनको किया गया था। वे मूल-संघ, सेन-गण, और पोगरिगच्छके थे।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 124]

२१८

हट्टण—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०००=१०७८ ई०]

[हट्टण (कब्बनहळ्ळि परगना) में, वस्तिके चन्द्रशालेमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं। श्री-पृथ्वी-वल्लभं। महाराजाधिराजम्। परमेश्वरं परम-भट्टारकम्। सत्याश्रय-कुळ-तिलकम्। चालुक्याभरणम्। श्रीमतु **भूलोकमल्ल-सोमेश्वर**............देवरु। विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चन्द्रार्क-तारं-बरं सलिसुतमिरे॥ श्रीमतु त्रिभुवनमल्ल **एरेयङ्[ग]**-होय्सळ-देवर्गम्। **येचल-देवि**गमुदितोदितमागलु बन्द वशावतारमेन्तेन्दडे॥ स्वस्ति श्रीमनु-महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुरवराधीश्वरम्**। यादव-कुलाम्बर-द्युमणि। सम्यक्त्व-चूडामणि। मलपरोळु गण्ड। कदन-प्रचण्डम्। असहाय-सूर गिरिदुर्ग-मल्ल निश्शङ्क-प्रताप भुजबळ-चक्रवर्त्ति श्री-वीर-बल्लाळ-देवरु। पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे। तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महा-सामन्तं **गण्डरादित्यङ्गम् हुग्गियवे-नायकिति**ग सु-पुत्रं कुळ-दीपकरेनिसि पुट्टिदरु सामन्त-सुब्बयनु सामन्त-सातय्यनुं सामन्त-बूवय्यनुं श्रीमनु-महा-सामन्त **माचय्यन** प्रतापवेन्तेन्दडे। स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्द-महा-सामन्त वीर-लक्ष्मी-कान्त। तुरेय रेवन्त

पर-बळ-कृतान्त । बिरद-गण्डर वदिसुत्र सामन्तर गण्ड । ············गण्ड । समर-प्रचण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । ········पराङ्गना-पुत्रं । दायिगमुरारि विनेयोपकारि । ········वल्लभं दुष्टाश्व-मल्लं भीतर कोल्लं हडिय मार्कोळुवं दळुव बेङ्कोळुवं । इडगूर-देवी-लब्धवर-प्रसाद । मृगमदामोद । यत्तिल-वन-विकासचन्द्र सदानन्दभोग-नागेन्द्र होय्सळ-देव-पादाराधकम् । पर-बळ-साधकम् । नीति-चाणुक्यं एक-वाक्य वैरि-मनो-भङ्ग । अय्यन सिङ्ग दायिग-दुङ्कर गण्ड । तप्पे तप्पुव । धीरदिन्दो-प्पुव । सामन्तजगदळ । मलेय······दुळिव । मलेगे····आने । येत्तिद मोनेगे मुन्तु केट्ट काळगके पिन्तु ळट्टिद ·······ळम् । चतुस्समयसमुद्ध-रणनप्प श्रीमन् महा-सामन्त-माचाय्यनन्वयवेन्तेन्दडे ।

बेळुगेरेय माचेय-नायक- ।
ननुपम-गुण-रत्ने माकल-देविय दान- ।
व्रतमेसेये चैत्य-गेहमु- ।
मनर्त्तियोळोप्पे साळ्कुमा-पट्टणदोळ् ॥

[स]रसतिगे रतिगे सीतेगे ।
सरि दोरेयेनिसिद मारेय-नायकन ।
सतियं धरेयं बण्णिसुवुदु ।
निरन्तरं नेगळ्द बम्मियक्वेय पेम्पम् ॥

सरणेने कायल्व वल्लम् ।
नेरेदर्त्तियोळीय-वल्लनाश्रित-जनकम् ।
पर-बळ वैरि-भूपर ।
कोल बल्लं बेळुगेरेय बल्लनिम्मडि-बल्ल ॥

रुगुमिणि बेळगिदरुन्धति ।

मिगिलेनिसिद सीतेयेम्ब सतियरोळीगळ् ।
समनेनिप सतियेनिसिद ।
सति यल्लरे वल्लयनर्द्धाङ्गि केतवे देवियकं वरेयोळ् ॥

श्रीमतु सावन्त-बल्लि-देवनर्द्धाङ्गि केनवे-नायकितियरु देवियक-नायकितियरुमवर सुपुत्र सुय्य-देव पेरुमाळु-देव सावन्त-मारय्य माचि-देवनु सुख-सङ्कता(था)-विनोददि राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

सादिसिद मोक्ष-लक्ष्मिय- ।
नादरदिन्द् भयरत्न-दान-विनोदम् ।
मेदिनियोळोप्पे माडुव ।
सासल-बम्मय्य भव्य-तिळक धरेयोळ्
भव्य-कुल-तिळकनोप्पुव ।
अग्रज माणिक्य चाकि-सेट्टियरनुजन् ।
एरकाट्टि-सेट्टियेन्ती- ।
त्रै-पुरुषरु नेगळ्द दान-चिन्तामणिगळ् ॥

तर्क-व्याकरणदोळम् । वखाणगे वल्ल सकल-····त्तिगळिन् ।
मिक्कदतिजाणं धर- । मनर्कथिग नेगळ्दिर्द्द माचि-सेट्टिये धन्यन् ॥
आ-माचि-सेट्टियनुजं । भाविसे श्री-जैन-धर्म्म-सुर-कुजदङ्कुरु
समनेनिसल्कारु परि । यीव-गुणं काळि-सेट्टियोसेग दोरेगम् ॥
कलि-काल-कल्प-वृक्षमन् । अलसदे नी वेडु काळि-सेट्टिय सुतनं
पलवु पोनुं वखम । सले यीयल्लु वल्ल मान्यना-बम्मय्यम् ॥
आश्रित-जन-चिन्तामणि । विश्रुत-कीर्त्तीशनमळ-बोधावीसं(श)
श्री-श्रेयांस-जिनेशं । वैश्रावण-सेट्टिगीगे सुख-सम्पदमन् ॥
नुडिदेरडु-नुडिववनल्लं । कडु·········इल्ल आश्रित-जनकन्- ।

तेंडेयुडुगदीव-दान- । व्रतियं कर्प्पूर-सेट्टियं वेडु वुदा ॥
कीर्त्ति-श्री-रमणन-वोल्ल ।
मूर्त्तियोळमिनव-मनोजन ···नम् ।
कूर्त्तीव मसण-सेट्टिगे ।
मार्त्तण्डन मग नळ- ··· ···नृप ळवे ॥
················मनुजर्गम् ।
मरे-वोक्करनेय्दि काव वन्धु-जनक्कम् ।
नेरे पोल्त कल्प-तरुवम् ।
नेरे वण्णिपुदेय्दे काचि-सेट्टियम्······॥
गणधर-भूपनन्वय-शिखामणि गोत्र-पवित्रन-द्विषम्
गुण-गण-नाथ गुणिपन····पेम्बिन मेरु वोन्द् ।
अगणित-चाव सत्वद तवर्म्मने मानव-वन्धनेन्दोडिन्ल् ।
एणे····हट्टणदोळेप्पुव माणिक्कनन्दि-देवरोळ् ॥

स्वस्ति स(श)क-वरिस-सायिरद कालयुक्त-संवत्सरं प्रवर्त्तिसे नखरजिनालयके विट्ट भूमि-(यहाँ दानकी विगत आती है) आ-पट्टण-दल्लु नडव देव-दाय हत्तु हेरिङ्गे हाग देवरिगे सोडरेण्गेगे गाण १ (हसेशाके शापात्मक वाक्य) श्री-मूळ-संघदे सेय-गणपोस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयद श्रीनतु नागचन्द्र-चान्द्रायण-देवर-शिष्य रुणि-कच्छगोण्डि-देवरु मदवळिगे वोप्पवे मगळु काचवे मल्लवे मादवे माचवे बाळचन्द्र-देवरु । सेट्टिय हल्लिय मल्लि-सेट्टि चिकसेट्टि तम्म " सेट्टिगे विट्ट भूमि जकसमुद्रदल्लि सलगे ५

* रोद्द हलोजन मग वीरोज ई-शासनव होयिद ॥

* यह पंक्ति पत्थरके सिरेपर है ।

[जिनशासनकी प्रशंसा।

जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) भूलोकमल्ल सोमेश्वर-देव-का विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था.—

त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग-होय्सळ-देव और एचल-देवीके कुलमें उत्पन्न,—स्वस्ति। जब (अपने पदों सहित) वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीका शासन कर रहे थे;—

तत्पादपद्मोपजीवी, महा-सामन्त गण्डरादित्य और हुरिगयव्वे नायकित्तिके सामन्त सुव्वय, सातय्य, और वूवय्य उत्पन्न हुए थे।

महा-सामन्त माचय्यकी प्रशंसा। उसकी कुछ उपाधियाँ। माचय्यकी उत्पत्तिका वर्णन। जिस समय सामन्त बल्लि-देव (माचय्य) अपनी दोनों स्त्रियों और चार लड़कों सहित शान्ति और सुखसे राज्य कर रहा था;—सासल वम्मय्य और उसके दो लड़कों माणिक्य और जाकि-सेट्टिका उल्लेख। माचि-सेट्टि और उसके लड़के कालि-सेट्टि, फिर उसके लड़के वम्मय्यका वर्णन। माणिकनन्दि-देवका उल्लेख। (उक्त मिति को) नखर जिनालय-के लिये (उक्त) भूमियाँ, दस गट्टोंका दाम, एक कोल्हू दानमें दिये गये थे।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकुन्दान्वयके नाग-चन्द्र-चान्द्रायणदेवके शिष्य रुणिकच्छगोण्डिदेव थे; उनकी पत्नी बोप्पवे, बच्चे कावचे, मल्लवे, मादवे, माचवे और बालचन्द्रदेव थे। कुछ सेट्टियोंने और भी कुछ भूमियाँ दीं। रोद हलोजके पुत्र बीरोजने यह शासन लिखा।]

[EC, XII, Tiptur tl., n° 101]

---

१ ऊपर जो १०७८ ई० काल दिया हुआ है, वह विनयादित्यके कालका है। उसके लड़के बल्लालदेवका (११०१–११०४ ई०) नहीं, और न भूलोकमल्ल (११२६–११३८ ई०) का।

२१९

तट्टेकेरे—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न

[शक १००१=१०७९ ई०]

[तट्टेकेरे (शिमोगा परगना)मे, रामेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष १००१ नेय क्रोधन-संवत्सरद ज्येष्ठ-बहुल-चड्डि-बड्डवार शासन निन्दुदु

श्रीमत्-परम-गभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन-शासनम् ॥

नमो वीतरागाय स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय ···तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् कल्याणद-नेलवीडिनोळ् सुखदिं राज्य गेय्युत्तमि ...

जीयात् समस्त-ककुभान्तर-वर्त्ति-कीर्त्तिर्
इक्ष्वाकु-वंश-कुल-वारिधि-वर्द्धनेन्दुः ।
कैळाश-शैल-जिन-धर्म्म-सु-रक्षणार्त्थम्
भागीरथी-वि ·· ···· ·······तो द्वितीयः ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाधीश्वरेक्ष्वाकु-वंश-कुल-गगन-गभस्तिमालिनी परा-क्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जाधीश्वर-शिरो······ ·······ळि-मुखो पार्त्थिव-पार्त्थः । समर-केलि-धनंजयो धनञ्जयः । तस्य वल्लभा गान्धारि-देवी तत्सुतो हरिश्चन्द्रः । रोहि ···दडिग-माधवापरनामधेयः । आ-गङ्गान्वयदरसुगळेल्लवेळोपाडिवद चन्द्रनन्तुदितोदितवागि पल······ ज्यं गेय्युत्तिरे तदन्वयाम्बर-द्युमणियुं गङ्ग-चूडामणियुमेनिसिद भुज-बळ गंग-पेर्म्माडि········ · ·

गुणि वेळवर्त्थि-जनक्कें दान-मणि दोर्-गर्व्वोद्धताध्मात-निर्-
घृण-वैरिप्रकरक्के वल्-कणि कळा-विन्यास-वारासि सत्-

प········वेष्टित-यशं विक्रान्त-तुङ्गं नृपा- ।
प्रणियाद कलि-गंग-देवन सुतं श्री-धर्म्म-भूपाळकम् ॥

कन्द ॥····· ···········र्व्वि वाह्ा- ।
परिघदिनरि-नृपरनलेद्दु सेले-योळ् व्रोब्दुर्
व्वॆरे वण्णिसलेसेदं गं- । गर-भीमं लोकदोळगे भुज-बळ-....ग ॥

····ळियेनिसिद पेम्र्माडि-धर्म्म-देवङ्गं पाण्ड्य-कुळोद्भवेयेनिसिद गङ्ग-महा-देवियग्गॆं रत्नत्रयं पुट्टवन्ते········

वृ ॥ श्री-मारसिंग-नवनी-तळ-रक्ष-पाळम् ।
कामोपमं भगीरथान्वय-रत्न-दीपम् ।
भीम-प्रतापनहिता ···················· ।
सामान्यनल्लुदितोदितनेकवाक्यम् ॥

आतनण्मुमार्प्पुं लोक-विख्यातमाद तदनन्तरदोळ् । स्वस्ति सत्य ········वर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं कुवळाल-पुर-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं राज-मान्धातम् । पद्मावती-लब्ध-वर-प्र·············चक्रि-ळामोदन् । असती-सहोदरं वीर-वृकोदरम् । सम्यक्त्व-रत्नाकरं जिनपाद-शेखरम् । मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-वि·········ग-गाङ्गेयं शौचाञ्जनेयं । गङ्ग-कुल-कमळ-मार्त्तण्डम् दुट्टर-गण्डम् । मन्निय-गङ्गम् जयदुत्तरंगं । श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम् त्रिभुवन-मल्ल-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवरगङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरम वाम्केळिसि तदाभ्यन्तरद मण्डलिसासिरमं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् दये-गेय्ये निधिनिधानमोळगागि त्रि-भागा-भ्यन्तर-सिद्धियिन्दे सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ।

कन्द ॥ श्रीगे नेलेयागि वचन- । श्रीगागरमागि निज-भुजार्जितविजय- ।

श्रीगरुहनागिकीर्त्ति- । श्रीगधिपतियागि सुखदिनिरे **गङ्ग-नृपं** ॥

वृ ॥ नुडिदुदे नन्नि माडिदुद्दे शासनं इत्तुदे रामरेसु मार्- ।
प्पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिर्द्दुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
नडेदुदे बट्टे षड् गुणमे मेय्येने धर्म्मदोळोन्दि निन्नवोल् ।
नडेव नृपेन्द्रनावनखिळावनियोळ् **कलि-गङ्ग-भूपति** ॥
स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदोळ् सेणसुवं गंमीरने वार्द्धियोळ् ।
पुरुडिप्प कलिये सुरेन्द्र-सुतन मेच्चं महा-दानिये ।
सुर-भूजक्कोरेगट्टवं चदुरने पाञ्चाळनिं मिक्कनेन्- ।
दिरदीगळ् धरे बण्णिकु रण-जय-प्रोत्तुङ्गनं **गङ्गनम्** ॥

क ॥ अमळ-चरित्रं पुरुषो- । त्तमनेनिसिद **गङ्ग**-भूपनातन तम्मम् ।
विमळ-यशं **गोविन्दर**- । नमोघ-वाक्य कुमार-चूडा-रत्नम् ॥

अन्तिर्व्वरुं सुखदिं राज्य गेय्युत्तिरे ।

क ॥ धर्म्मकार्म्मं दयेगे त- । वर्म्मने शिष्टेष्ट-कल्प-भूजं गोत्रा-
शर्म्मम् कुलोत्तमं पोले- । यम्मनेनल् नल्-गुणके मच्चरसुण्टे ॥

आ-गुणोत्तमनेनिसिद **पोलेयम्मङ्गं** रमणी-रत्नमेनिसिद **केळेयब्बेगं** सु-पुत्रः कुळ-दीपक एनिसि **नोकय्यं** पुट्टि समर्त्थनागि **मण्डलिय केञ्च-गावुण्डन** मक्कळु **काळेयब्बेयुम्मल्लियब्बेयुमं** मदुवेयागि काळब्बे-गानि-तिगे **गुज्जणं** पुट्टि तन्देगे पदिर्म्मडियागि **पेर्म्माडि-गावुण्ड**नेम्ब पेसरं पडे-दम् । मल्लियब्बे **जिनदास**नेम्ब मगनं पडेदळन्तिर्व्वर्म्मकळ् वेरसु नोकय्यं सुखदिनिर्प्पुदुं गङ्ग-पेर्म्माडि-देवर् **तट्टकेरे**गे विजयं गेय्दु समस्ताधिकारं म-कुडे देवेन्द्रङ्गे बृहस्पतियन्तु बळीन्द्रङ्गे भार्ग्गवनेन्तन्ते समस्तराज्य-भर-निरू-पितमहामात्य-पदवी-विराजमान-मानोन्नत-प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-सम्पन्न महा-महिमोत्पन्नम् । सुजन-जनाधारं बान्धव-प्राकारम् । पुरुष-रत्नाकरं

पर-बळ-मीकरम् । पति-कार्य्य-भार क्षमनसहाय-विक्रमम् । उपार्जना-चार्य्यम् अचलित-धैर्य्यम्""क्षार-समुद्रं लङ्घकार-मुख-मुद्रं । पतिगे कळापम् जय-लक्ष्मी-निक्षेपम् । कोदण्ड-पार्त्थं सौजन्य-तीर्त्थम् । जिन-पादाराधकम् । कलि-युग-साधकम् । गङ्गन हनुमन्तम् । जय-लक्ष्मी-कान्तम् । श्रीमन्महाप्रधानम् । पिरिय-पेर्ग्गडे नोक्कय्यम् ।

वृ ॥ पार्त्थिवरं निराकरिप दान-गुणोक्तियिनर्त्थिगर्त्थमम् ।
प्रार्त्थिसदीव-कारणदे पेर्ग्गडे नोक्कणनी-परोपका-।
रार्त्थमिद शरीरमेनिपोन्दु पुराण-नरोक्तियिन्दम-।
प्रार्त्थित-दानदिन्दे नेगळ्वुन्नति सन्दुदिळा-तळाग्रदोळ् ॥
मार्ग्गदोळोळिपनोळ् गुणदोळण्मिनोळार्प्पिनोळादुदोन्दु पेम्-।
पार्ग्गमसाध्यमिन्तिरिव-काव-गुणङ्गळे साजमेन्दु केळ्-।
दर्ग्गेदेगोण्डु जेङ्करिसे राज-गुणक्कळवट्ट नोक्कणम् ।
पेर्ग्गडेयेम्बुदे धुरके मार्ग्गडेयं पतिगेक-साधनम् ॥

क ॥ पेर्ग्गडेतनमं बल्लर् । खळगमनणमरियरुळिदमात्यर् नोक्कं ।
पेर्ग्गडे-गंगन मनेयोळ् । मार्ग्गडे संगरद मोनेयोळेने मेच्चदरार् ॥
किरिदरोळळवडद मनं । नेरे पिरिदक्कासे-गेय्व बुद्धियिनातम् ।
तेरे-विडिदु जोन्नदिन्दन । पेरेयन्ददे नोक्कनुत्तरोत्तरमादं ॥
अगळिसिद केरेगे माडिसि-।द गळदेगेच्चिसिद देवता-गृहकरवण्-।
टगेगन्न-दानदेडेगी-।जगदोळ् पवणिल्लदेम् कृतार्त्थनो नोक्कम् ॥
सरनिधि बळसिदुदेम्बन्- । तिरलित्ता-तङ्केरेय पेर्ग्गेरे सुत्तल् ।
पलिय नडुवमरसैळद । दोरेयेनिसिद तेरदे बसदि सोगयिसि तोर्कुम् ॥

पिरिय-भग गुज्जणनन्- । तरायवर्गिळ्दनातनेय्दुगे सर्ग्गम् ।
वरलिन्दु नोक्क-पेर्ग्गडे । हरिगेयलेत्तिसिदनेरडु जिन-मन्दिरम् ॥
तनगेपर-हितमे हितमेन् । दनुमानिसि नोक्कनोल्दु माडिसे
विश्वा-। वनियोळगे नेल्लवत्तिय-।
जिन-भवन ऋभु-विमानमं पोल्तिर्कुम् ॥ आ-नेल्लवत्तिय तट्टेके-रेयेरडुं बसदियुमं जिनदासङ्गे परोक्ष-विनयमागे माडिसिद पेर्ग्गडे-नोक्कय्यन परोपकारात्र्थक्क वीरक्कं वितरणक्कं श्री-गंग-पेम्र्माडि-देवर् म्मेच्चिरु-गळे-गुडि-चामर-मेघाडम्बरादि-राज्य-चिह्नङ्गळ-नित्तदक्के तेल्लन्ति-येन्दु मोदलमूल-धन तट्टेकेरे कीळूरु अरेयूरु हेरिगे कडवूरु सीमोगे तरिकेरि हेल-बुरद-गावुण्ड-वृत्तियुमनिर्प्पत्तु-कुदुरेग-वरनूरा-ळ्गळनित्तुर्ग्गळ सिद्धायवनित्तु चन्द्रार्क-तारं-बरं सर्व्व-नमस्यमागे पनसवाडियं बिट्टनितु महा-महिमेयं ताळ्दिद पेर्ग्गडे-नोक्कय्यं मूल-संघद् क्राणूर्-ग्गणद् मेषपाषाण-गच्छद् श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्ति-गर गुड्डनागि नाल्कु बसदिय माडिसि तट्टेकेरेय बसदिय पूजिसुवरा-गण-गच्छदस्थान-पतिगळ्गे तम्म बळियल् तट्टेकेरेय केळगे गळदे गळेय मत्तरोन्दु ओळ-गेरेयल्लु बेळ्दले मत्तरोन्दु अल्लि परेकारर्ग्गे गळ्दे गुणिगण मत्तरु मूरु बेळ्दलेगळेय मत्तरोन्दु। कुम्बारर्ग्गे गळ्दे गुणिगन मत्तरोन्दु बेळ्दले गुणिगन मत्तरोन्दु तट्टेकेरेय अङ्गडिय तेरेयुं सुङ्कमं बसदिगे गंग-पेम्र्माडि-देवंबिट्ट यी-धर्म्ममं रक्षिसिदात सासिर-कपिलेयं दानं गेय्दं किडिसिदं गङ्गेयोळ् सासिर-कपिलेयं तिन्दम् । सन्धि-विग्रहि दाम-राजं सासन-गद्यमं पेळ्दु बरेदं पोय्दं सान्तोजनुं पद्मनुं मङ्गळ श्री ।

[(उक्त मितिको) यह शासन लिखा गया था । जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय त्रिभुवनमल्ल-देव कल्याणमें रहते हुए शान्तिसे राज्य कर रहे थे: एक धनञ्जय नामका राजा हुआ, जिसने अपने पराक्रमसे कान्यकुब्जको

अधीनकर उसके राजाका सिर बाणोंसे छेद दिया। उसकी पत्नी गान्धारिदेवी और पुत्र हरिश्चन्द्र था। तदनन्तर दडिग-माधव इत्यादि जिस समय गंगवंशके राजा राज्य कर रहे थे, उसके वंशका सूर्य, गङ्ग-चूडामणि भुजबल-गंग-पेर्म्माडि··· ··हुआ।

राजाके रूपमें प्रसिद्ध (अन्य प्रशंसाओं सहित) कलिगंग-देवका पुत्र वर्म्मभूपालक था। भुजबल-गंग, गङ्गर-भीमकी प्रशंसा।

पेर्म्माडि-वर्म्मदेव और गंग-महादेवीसे मारसिंग नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। (तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे, लेकिन औरोंका नाम नहीं गिनाया है।)

तदनन्तर जब गङ्ग-पेर्म्माडि-देव शान्तिसे राज्य कर रहे थेः गङ्ग और कलि-गङ्ग राजाओंकी प्रशंसा। गंग-भूपालका छोटा भाई गोविन्दर था। जब ये दोनो शान्तिसे राज्य कर रहे थे—पोलेयम्म हुआ। उसकी पत्नी केलेयब्बे थी, उनका पुत्र नोकय्य था, जिसने मण्डलिके केञ्च गावुण्डकी पुत्री कालेयब्बे और मल्लियब्बेसे विवाह किया। पहली स्त्रीसे गुज्जण नामका लडका हुआ, जो 'पेर्म्माडि-गावुण्ड' रूपसे विख्यात हुआ। दूसरी स्त्रीसे जिनदास हुआ। जब नोकय्य इन दोनो पुत्रोंके साथ सुखसे रहता था, तब एक दिन गङ्ग-पेर्म्माडि-देवने तट्टेकेरे आकर तमाम राज्य-शासनका भार उसे सौंप दिया। उसने तट्टेकेरेमे एक जिनमन्दिर और एक विशाल तालाब खुदवाया। उसने और भी दो मन्दिर हरिगे और नेल्लवत्तिमें बनवाये। नेल्लवत्ति और तट्टेकेरेकी वसदियोंके लिये गङ्ग-पेर्म्माडिदेवने उसे दो भेरी, एक मण्डप, चामर, तथा बडे-नगाडे राज्यकी तरफसे दिये, तथा बदलेकी भेंटमे ८ गावोंकी गावुण्ड-वृत्ति, २० घोड़े, ५०० दास तथा पनसवाड़ी दी। वह प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तीका शिष्य था तथा ४ मन्दिर उसने और बनवाये।]

[EC, VII, Shimoga tl. n° 10]

२२०

सोमवार—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००१=१०७९ ई०]

(देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग)

[EC, V, Arkalgud tl., n° 99, t. and tr.]

२२१

इसूर—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल-निर्देश लुप्त, पर संभवतः लगभग १०८० ई० ?]

[इसूर (शिकारपुर परगना)में, कोटे रामेश्वर मन्दिरकी दीवालके पाषाणपर]

·········धार्मिक-पुण्डरीक-षण्ड-मोदन-कराय गुणोत्तराय ।
संसार-सागर-निम········हस्तावलम्बनव्रते जिन-शासनाय ॥

आदि-ब्रह्मन्···जिनं तावेनुत सासिर्व्वरु ब्रह्म-जिन-निळयकर्त्तरु ब्रह्म-जिना ···सरं मुददिम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महा····राज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळ·······त्रिभुवनमल्ल-देवर वि········ प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारं········अनवरत-परमकल्या······ लक्ष्मी-सम ·····अनवरत-वित्त ······मुख-दर्पण·········भ्युदय-सूचन········मृदु-मधुर···············त्रिभुवनमल्ल ···················संकथा वि···· गेय्युत्तं बनवासि ··········कुत्तमिरलु·······नियम-स्वाध्याय········ ···· ··········कुळ-तिळक··················सक शिष्ट·········· वळ-परा················ळोन्नत ·········मतद्················महाप्र ············म-भट्टा········ · ····शास्त्र-पारा············न्दान्वयद···· परम···········अपास्त············ ···जैन-शा···देवर·······निज-कीर्त्ति····नर मास················दिगन्तर ······· ···विणिय-व··· ···· ·······समू···············पुर·········हत्तु गद्याणकयेन्दु···· ········वडगण······ विणिय-व····सेट्टि तन्न वसदिगे बिडिसिद गळ्दे गुणि········वडगण-जवळिय तन्न वसदिगे बिडिसिद····गुणिगन मत्तरोन्दु रायि·······गळ्दे गुणिगन मत्त···ओन्दु मत्त विणिय····

···गुणिगन मत्तलोन्दु इन्ती-नाल्कु मत्तलु गळदे देवर···अङ्ग-भोगकं पूजारिग्····आहारन्दानकं जीर्णोद्धार····कर्म्म··वेसकं यिन्तीनाल्कु···· गळदेय········सासिर्व्वरा-चन्द्रार्कन्स्थायिवरं···(इसमेंशाके अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक)

जाणनदेम् धरित्रि··········ईय्···· ।
क्षीण··· ······ ओप्पि नोर्प्प गीर्- ।
व्वाण-पु········उळ्ळं नेगळ्दग्रहारदोळ् ।
वीणेय···············उत्सवोदयम् ॥
····निर्म्मिसिदोन्द-कृत्रिम-जिनेन्द्रागारमं··· ।
····सज्जनित-पुण्यर्············ ।
········त्तम-सद्धर्म्म न···सन्देस········ ।
·············सुखोदयं··············· ॥

····व्यानमागल्के···राजान्वित·········द्रागारम माडि········ माडल्के सासिर्व्वरु तम्म···त्रं विणेय-बम्मि-सेट्टि माडिसिद········ दोण्ट वेळुवेन्दु कारुण्यं गेय्दु·········इप्पत्तनाल्कु २४····· जनसालेयं·······वढगलु सासिरर्व्वर वेसदि समस्त········यी-जिनालयङ्गळ धमङ्गळनारय्दु पुरो-वृद्धिगे············मंगळ महा श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्लदेवका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और त्रिभुवनमल्ल······ बनवासेपर शासन कर रहा था,-विणेय बम्मि-सेट्टिने एक जिनालय बनवाकर उसे दान दिया और··· · अग्रहारके हजारों ब्राह्मणोंके लिये एक सत्र खोल दिया । (शिला-लेखका अधिकांश घिसा हुआ है) ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 8.]

२२२

हरकेरे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १०६० ई०]

[हरकेरे (शिमोगा परगना)में, रामेश्वर मन्दिरके रंग-मण्डपमें उत्तर-पश्चिम स्तम्भपर]

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर भुज-बळ-गंग पेर्माडि-**बर्म्मदेव** मण्डलिय-तीर्थद पट्टद-बसदिगे बिट्ट दत्ति (आगेकी दो पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) मत्तमातन-पट्टदरसि **गङ्ग-महादेवी** बिट्ट वृत्ति सूळेयबयलु । मत्तमातन मग **मारसिंग-देव** बिट्ट वृत्ति आर्द्रवळ्ळि । मत्तमातन बिट्ट तळ-वृत्ति बसदियाग्नेय कोणरेयिं मूडलु गद्देगळेय मत्तलोन्दु बेद्दलेगळेय मत्तले-रडु । मत्तमातन तम्म **सत्य-गंग** बिट्ट वृत्ति सिरियूरु । मत्तमा-गद्देयिं तेङ्कलु बिट्ट तळ-वृत्ति गद्देगळेय मत्तलोन्दु बेद्दलेगळेय मत्तलेरडु । मत्तमातन तम्म **रक्कस-गंग हुलियकेरेय** गद्देयुमदर सुत्तण बेद्दलेयम बिट्ट । मत्तं **हरकेरेय** सीमे-पर्य्यन्त बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु बेद्दले-गळेय मत्तलेरडु । मत्तमातन तम्म **भुजबळ-गंग** हेग्गणलेय बिट्ट । हर-**केरिय** वृत्तिय केरेयोळगे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु । मत्तमाकेरेयिं हडुवण कोळद केळगे बिट्ट साल-केयिगळेय मत्तलोन्दु मत्तमा-कोळदिं बडगलु बिट्ट बेद्दलेगळेय मत्तलोन्दु । मत्तमातन मग **मारसिंग-देव नन्निय-गङ्ग-पेर्म्माडि** बसदिय मुन्दे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु । मत्तं बसदिय बडगण हेग्गेरेगे परिद काल-केळगे बिट्ट बेद्दलेगळेय मत्तलेरडुमदके सीमे मूडण कोळ हडुवळु मोरसर-कोळ । मत्तं बसदिय-हळ्ळिय सुंकमं बिट्ट । मत्तं तन्नाळ्वनाड्-ऊर्गोळोळु पद्मावति-देविगे काणिकेयं कोट्ट शर ५ मित पणमना-चन्द्रार्क्क-तारं-बरं ॥ मत्तं **वीर गङ्ग**

पट्टके हिरियकेरेय केळगे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु (आगेकी ३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

[महामण्डलेश्वर भुजबल-गंग पेर्म्मांडि-वर्म्मदेवने मण्डलि-तीर्थकी पट्टद् बसदिके लिये (उक्त) भूमिका दान किया और उसकी रानी गग-महादेवी, उसका पुत्र मारसिंग-देव, उसका छोटा भाई सत्य (नन्निय) गंग, उसका छोटा भाई रक्कस-गङ्ग, उसका छोटा भाई भुजबल-गंग, उसका पुत्र मारसिंग-देव नन्निय-गङ्ग-पेर्म्मांडि, इन सबने (उक्त) भूमि-दान किये।

और अपनेद्वारा शासित नाड्के गाँवोसे पद्मावती देवीको ५ पणका उपहार दिया। यह उपहार तबतकके लिये जारी रहेगा जबतक आकाशमें सूर्य, चन्द्रमा और तारे चमकते हैं।]

[EC, VII, Shimoga tl n° 6]

२२३

चिक्कहनसोगे—कन्नड

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०८० ई०]

[जिन-बस्तिमें, नवरङ्ग-मण्टपके दरवाजेके ऊपर]

श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण पुस्तक-गच्छद श्री-दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-देवर ज्येष्ठ-गुरुगळप्प (भट्टार) दामनन्दि-भट्टार सम्बन्दि ई-पनसोगेय चङ्गाळ्व-तीर्थदेल्ला बसदि-गळुमव्वेय बसदियु तोरें-नाड बेळ्विनेय बसदियुं तत्समुदाय-मुख्यम्

[कोण्डकुन्दान्वय, देशि-गण तथा पुस्तक-गच्छके, दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-देवके ज्येष्ठ गुरु—दामनन्दि भट्टारक-के अधिकारमें इस पनसोगेके चङ्गाळ्व-तीर्थकी सारी बसदियाँ (मंदिर) हैं। अव्वेय बसदि तथा तोरेनाड्की बसदि भी उनके प्रधान शिष्य-गणके अधिकार-क्षेत्रमें हैं।

आगेका शिलालेख।

[हनसोगेमें, आदीश्वर-बस्तिके दाहिनी ओरके दरवाजेके ऊपर)

नोटः—यह लेख ऊपरके ही लेख-जैसा है। उसमें कुछ फेरफार नहीं है।

[EC, IV, Yedatore tl n° 23 and 27]

२२४

मदलापुर—कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त,—पर संभवतः लगभग १०८० ई०]

[मदलापुर (मल्लिपट्टण परगना)में, गोणि वृक्षके नीचे एक पाषाणपर]

(सामने) स्वस्ति श्रीमनु····वर्य-नल्लरस·······अरकेरेय बसदि माडितु इदके····ल्वदु-गद्दे········मण्णु अय्-गण्डुग पिरिय····दोळ्य्-गण्डुग-मण्णु बिसवूर-मण्णु अय्-गण्डुग कोटेय मण्णु मू-गण्डुग इनितु बसदिगे सल्व-भूमि अदा-पदके अदटरादित्य अधिरत-पाण्ड्यय बेळ्तु ···············अरसर-काळदोळ् श्रीम····मन्न-ग····सित्र्य····गुड्डेय···········मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-भट्टारर शिष्यर्····अमळचन्द्र-भट्टारकर्गे·······बसदिय माडि·········सल्सिद्ध········ (हमेशाका अन्तिम श्लोक)।

सेनबोव दे···············

[·······नल्लरसने अरकेरेकी वसदि बनाई। (उक्त) भूमिका दान उसके लिये किया। जो कोई इसे नष्ट करेगा, वह अदटरादित्यके क्रोधका पात्र होगा।

······अरसके समयमें, ·····रमण्डल कलाचन्द्र-सिद्धान्तदेव-भट्टारके शिष्य अमलचन्द्र-भट्टारकने इस बसदिको बनवाया। हमेशाका अन्तिम श्लोक। सेनबोव दे······]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 102]

२२५

खजुराहो—संस्कृत

[सं० ११४२=१०८५ ई०]

[इस प्रतिमा-लेखके लेखका पता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक खण्डित प्रतिमापरसे ए. कनिंघमने लिया है, जो कि प्रतिष्ठाकाल और प्रतिमाके नामके सिवा और कुछ नहीं बताता। इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा या स्थापना

श्रेष्ठी श्री भीवतसाह और उसकी पत्नी सेठानी पद्मावतीने की थी। इस लेखके ऊपरसे ए. कनिंघमने फलितार्थ यह निकाला है कि प्राचीन बौद्ध मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दिके जैनोंद्वारा अपने काममें लाया गया था। संभव है बौद्धमतकी हीनताके समय खजुराहामें जैनोंकी संख्या अधिक होनेसे उन्होंने उस प्राचीन बौद्ध मन्दिरको अपना बना लिया हो; या हो सकता है कि कनिंघमका यह अनुमान ही गलत हो कि गन्थरई-भग्नावशेष जैनोंका न होकर बौद्धोंका था। अस्तु, जो कुछ हो। इन खण्डित दि० जैन मूर्तियोंसे उस समय खजुराहोमें जैनधर्मकी प्रधानता द्योतित होती है।]

[A. Cunningham, Reports, II, p. 431, a.]

२२६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००९=१०८७ ई०]

(उत्तरमुख)

स्वस्ति-श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः।
सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिग्-भित्तिकः
श्रीमान् विक्रमशान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः॥
ओदेदु तटत्तटेम्ब पद-ताटनेयिन्दे दिशा-गजादिगळ्।
मदमुडुगिळ्दुवल्लि पुगुविर्प्पेडे गाणने नागराजनुम्।
कदळद गम्पदिन्दमेळे कम्पिसे कूडे कलङ्क सागरम्।
विदिर्दलगिन्दे तारकि कळल्द् तरलोड्डुगनार्दडोडुगुम्॥
अदिरदे वर्प्प चप्परिप कप्परे पार्दलगोत्ति शाळमम्।
विदिर्दु भरल्द भरल्वेनुते कुत्तुव कुत्तिदोडान्तु कद्दिदा-।
पददोळे सुत्ति मुत्तिदवोलेरने तोरुव गेण विन्नणक्।
ओदवुव विन्नण नेगळ्लोड्डुग नीनरसङ्क-गाळनै॥

परिदुदराग्रियं मरेदु तिन्द पेणङ्गळिनादजीर्ण्णदिम् ।
मरुळ बळाळि वैद्य-मरुळं वेसगोण्डडे दन्ति मद्देनल् ।
करियने नुङ्गि सूङ्गुकोळे वैद्य-मरुळ् नगे वीर-लक्ष्मि नो-।
डरि-हर निन्निनाश्रितदेने विक्रम-शान्तरनादनोड्डुगम् ॥

अन्तेनिसिद विक्रम-शान्तर-देवर् स्स(श)क-वर्ष १००९ नेय प्रभव-संवत्सरद् शुद्ध-पाडिवदन्दु पञ्च-वसदिय पूजा-विधान-जीर्णोद्धरणक्कमल्लिर्प्प ऋषि-समुदायक्काहार-दानार्त्थमुमागि ॥

सरसति निनगिनितु कला-।
परिणति नेगर्द्दजितसेन-पण्डितरिन्दम् ।
दोरेवेत्तु देवियादी-।
पिरियतनं निन्नदन्तिदत्वर महत्त्वम् ॥ -

एनिसिद परवादीभसिंहापर-नामधेय-श्रीमत्-अजितसेन-पण्डित-देवर काल कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमा-सम्बन्धद समुदाय मुख्यमागे कोट्ट ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा ये ही अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक आते हैं) द्रमिळ-गणो लसतितरा निरुपम-धी-गुण-महितैः ॥

श्रीमत्-सेनबोवं शोभनय्यं दिगम्बर-दासि बरेदम् ॥

[स्वस्ति । वीर-देवके पुत्र विक्रम शान्तरकी प्रशंसा । उसका मूल नाम ओड्डुग था । उसकी प्रशंसाके श्लोक । ओड्डुग 'विक्रम-शान्तर' हो गया ।

विक्रम-शान्तर-देवने (उक्त मितिको) पञ्चवसदिमें पूजाके लिये, मरम्मत तथा ऋषियोंके आहारके लिये, वादीभसिंह इस द्वितीय नामसे प्रसिद्ध अजितसेन-पण्डित-देवके पैरोंके प्रक्षालनपूर्व्वक (उक्त) गाँवोंका दान, संपूर्ण करोंसे मुक्ति दिलाकर, किया । ये ही अन्तिम श्लोक ।

द्रमिळ-गणकी अत्यन्त शोभा है । सेनबोव शोभनय्य दिगम्बर-दासिने इसे लिखा है ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 40 (Part II).]

२२७

कोणूर (जिला बेलगाँव)—कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका १२ वा वर्ष=१०८७ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीनारिप्रिये(य) कण्डु तन्न नयनद्वन्द्वाळ्कव्रातमं जैनान्घ्रिद्व(द्वि)नखाळियोळमधुकरव्रात सरोजाळियं तानेंतिर्ळ्गे तन्दुदेन्दु बगेदळ्मुग्धत्वदिन्दा जिन भूनाथेशधरेश मोक्षुनिधिगेंगी गायुमं श्रीयुमं ॥

स्वस्ति श्री त्रैभुवनाश्रयं पृथुधराश्रीवल्लभं शूकरन्यस्तेद्धध्वजलाञ्छनं नुतमहाराजाधिराजं यशोविस्तारं परमेश्वराकपरम भट्टारकं शात्रवोन्मस्तन्यस्तपदाब्जनूर्जितयशं चालुक्यकण्ठीरवं ॥

सत्याश्रय-कुळतिळक सत्य युधिष्ठिरननेकविद्यानिपुण प्रत्यक्षविक्रमादित्यात्संतयशोविळासि त्रिभुवनमल्लं ॥

तद्राज्यमुत्तरोत्तरवृद्धिप्रभुचन्द्रसूर्य्यरुळ्ळन्नेवरं भद्रं सल्वुत्तमिरे रिपुविद्रावणतत्प्रियात्मजं जयकर्ण्णं ॥

जयकर्ण्णावनिपाळभासुरलसल्लाळाटिकं श्रीवधूनयनाळंकृतरूपनूर्ज्जितयशःश्रीकामिनीवल्लभं जयकान्ताभुजदण्डनाहवगदादण्ड गुणोन्मण्डित नयदिं कूडिधराधिपत्यदोळिरल् चामण्डदडाधिप ॥

स्वस्ति समधिगतपंचमहास्तुत्यविराजमानशब्द महाश्रीविस्तारं पृथुविमळगुणस्तोमं मण्डळेश्वरं सेननृपं ॥

वदन निर्म्मळवाग्वधूसदनवात्मीयोरुवक्षं लसत्सदळंकाररमाविळासविळसल्लक्ष्म स्वदोर्द्दण्डवुन्मदवीरारिगिरःप्रकन्दुकहतिक्रीडोद्धदण्ड निजाभ्युदयं सर्वजनानुरागदुदय श्रीसेनभूपाळन ॥

इभपतियंतिरे दक्षिणशुभदोर्बल्करविळासि भासुरतेज सुभटमदकरट-विघटनविभवं चामण्डरायनिरे निज सभेयोळ् ॥

शुभमति योगंधरनवोलभयप्रदनय्यणय्यनार्ज्जितसुयशोविभवं निजसभे-योळ्विरलप्रभुमन्त्रोत्साहशक्तिगुणसंपन्न ॥ दुष्टोग्रविनिग्रहर्दि शिष्टप्रतिपाळ-नदि निळेयनाळुत्तुं शिष्टेष्टप्रदम्नत्युत्कृष्टदे राज्यंगेयुत्तमिरे सेननृपं ॥

श्रीरमणीभासि बळत्कारगणाम्भोधिकोण्डनूरोळ् निधिग भूरमणी-मकुटाळंकारदि नेसेदोप्पि तोर्प्प जिनमन्दिरमं ॥ एसेदिरे माडिसि वृत्तियन सदळमेनलोसेदु बिडिसुतं निधिगं पेळिसिदनदेन्तेन्दडे निजलसदाचार्य्यान्वयोद्भवप्रक्रममं ॥

श्रीलीलोभनयाक्षि निर्म्मळदयादेहं गुणोन्मल्लिकामालाकुन्तळभासि भासुरतरश्रीजैनधर्मोद्भवं त्रैलोक्योदरवर्त्तिकीर्त्तिविळसत्स्याद्वादनामाकितं भूलोकक्के निरन्तरं सोगयिकुं श्रीमूलसंघान्वयं ॥

जिनसमयमेम्ब सरसिज वनदोळगलर्द्दोप्पि तोर्प्प हेमाम्बुजदन्तनुप-ममेने करमेसेवुदवनियोळ् सद्गुणगणं बळात्कारगणं ॥

वारिधिवेष्टिताखिळधरातळशोभितकीर्त्तितद्बळात्कारगणाम्बुजाकरवना-न्तरदल्लि मराळलीलेयिं चारुचरित्रमार्गद जिनेशमुनीश्वरदुर्द्धपापहर्म्या-रमदेभकुभविलुठोत्कटशूररनेकरोप्पिदरु ॥

उदयगिरीन्द्रदोळेसेवभ्युदितोदयवागि बळेप चन्द्रन तेरदन्तुदियिसिदं कुवळयकभ्युदयकरं तद्गणाद्रियोळ्गणचन्द्रं । पक्षोपवासि देवनघक्षय-तन्मुनिपदाब्जमधुकरशीळं रक्षितगुणगणनिळयमुमुक्षुजनानंदियप्प नयनन्दिबुधं ॥

आ नयनन्दिय शिष्यं नानाविद्याविळासनूर्ज्जिततेजं श्रीनारीनाथ-नवोल् भूनुतना श्रीधरार्य्ययतिपतितिळकं । तन्मुनिपदाब्जमधुकरनुम-

दमिथ्याकथाविमथनं मुनिपं सन्मार्ग्गि **चन्द्रकीर्त्ति** वियन्मार्ग्गद चन्द्रनन्ते कुवळयपूज्यं ॥

अतिचतुरकविचकोरप्रतति दरस्मेरनयनमीँटिदपुदु दंबित कर्ण्ण-चंचुपुटदिं **श्रुतिकीर्त्तिमुनीन्द्र**चन्द्रवाक्चन्द्रिकेय ॥

श्रीधरदेवं सुयशःश्रीधरनघिगतसमस्तजिनपतितत्व श्रीधरनेसेदं सद्वाक्श्रीधरना **चन्द्रकीर्त्तिदेव**न तनयं ॥

आ मुनिमुख्यन शिष्यं श्रीमच्चारित्रचक्रि सुजनविळासं भूमिपकिरीट-ताडितकोमळनखरश्मि **नेमिचन्द्रमुनीन्द्रं** ॥

श्रीवरवनजद सिरियं साधिपेनेम्बन्तिरेसेव मधुपन तेरनं **श्रीधर**पद-सरसिजदोळ् साधिप चोल्सेदु **वासुपूज्यं** पोल्तं ॥

त्रैविद्यास्पदवासुपूज्यमुनिपं स्याद्वादविद्यावचःप्रावीण्यप्रविभासि-नोडनुडियल्-मन्याळिगाम्तुद्भवं नोत्राग्तु प्रतिवादिगळिगे पिरिदुं भ्रान्ताग्तु मिथ्यामदोद्रीत्रर्ग्गेन्तु निजैकवाक्यदिननेकान्ततत्वमं तोरिदं ॥

श्रीवाणीवदनांबुजातरसमं तनक्किरिं पीरुतुं लावण्यांगितपःप्रकृष्टवधुवं व्यालिंगनंगेय्युतु जीवानन्ददयावधूवदनम कूर्त्तिर्र्पियिं नोडुतुं त्रैविद्यास्प-**दवासुपूज्यमुनिपं** तानिप्पनी धात्रियोळ् ॥

वृहितपरमतमदकरिसिंहं त्रैविद्यवासुपूज्यानुजनुद्वांहस् संहरनेसेदं संहृतकाम यशस्विमलयाळबुधं ॥

अतिचतुरकविकदम्बकनुतपद्मप्रभमुनीश राद्धान्तेशं श्रुतकीर्त्तिप्रियनेसेदं यतिप्रत्रैविद्यवासुपूज्यतनूजं ॥

श्रीरमणीभासि बळात्कारगणाम्भोजमधुपरिरिंतिरे सततं चारुतरं हिळ्ळेयरवतारं तद्गणसरोजगुणद चोल्सेगुं ॥

तत्कुल राजान्वयदोळ् सत्कविराज-प्रियावलोकनलीलोद्यत्कनकाम्बुजदन्ते बृहत् किरणं **सोरिगांकविभु** धरेगेसेद ॥

तत्सुत रमळिनसकळजनोत्सवकर रुचिवचनरचनाळापमीत्सर्व्वप्रसुसुभटमरुत्सुतरा वल्लकल्लगामण्डबुधर् ॥ श्रीवधुगे भवतियन्ता भूविदितमेनल्केमानकांगियनन्ता श्रीविभुकलिदेवं वलदेवानुजनेम्व कीर्त्तिगास्पदनादं ॥ अळिकुळकुन्तळे कुवळयदळलोचने चक्रवाककुचे कनकलतोज्ज्वळमध्ये कनकिगामण्डल सत्तप्रभुमनोजसति रतियन्तळ् ॥

वरचूतद्रुमवेषनोज्ज्वळलतापुष्पांकुरोत्पत्तियन्तिरे तद्दंपतिगळिगे पुट्टिदज्जुरुश्रीजैनधर्मोत्सवं वरभव्याळिमनोनुरागविळसद्धाशीर्व्वचोविस्तरं परमानंदयशोधिकं निधियमं सत्पात्रदानोद्यमं ॥

श्रीधरदेवपदाब्जश्रीधरनादोळिपर्नि हृदब्जदोळीत श्रीधरनादं निधिगं साधितगुरुचरणनप्पवं पडेयुदुर्दें ॥ तत्पुत्रर् श्रीरमणीकनत्कनककुण्डळ रावनिताविळाससस्मेरकटाक्षवीक्षणपरर्प्पुरुपोत्तम मरुद्धकीर्त्तिगळ् श्रीरम वासुपूज्यमुनिपादपयोरुहभृंगरोंप्पुवर्च्चारुगुणाधरागि कलिदेवलसद्बल देवरीर्व्वरुं ॥

स्वस्ति श्रीमच्चालुक्यविक्रमकालद १२ नेय प्रभवसंवत्सरद पौषकृष्णचतुर्दशीवड्डवारदुत्तरायणसक्रान्तियन्दु श्रीमन्महाप्रभु **निधियमगामण्डं** तन्न मान्यदोळगे हिडादिय होलदोळ् सर्व्वबाधापरिहारवागि कूण्डिय कोललिम्मंत्तर्क्केय्युमं पन्नेरडु मनेयु मनोन्दु गाणमुमोन्दु तोण्टमुमं तळवृत्तियागि माडि कोट्टना देवसं श्रीमन्महाप्रधा········ण········ णेर्यि········तज्जिनालयवन्दनार्थं वन्दु श्रीमन्महामण्डळेश्वर········ कन्ननृपं देवरंगभोगरंगभोगकं खण्डस्फटितजीर्णोद्धारक्क तन्न सीवटदोळगण त········वणनागि माडि········श्रीधर-पंडितदेवर श्रीपा-

दप्रक्षालनं माडि·········पाळिसुत्तं तत्काळद् ४६ नेय प्लवसंवत्सरद् पौषशुक्लत्रयोदशी······द्ध·········श्रीमद्विक्रमचक्रिय प्रियात्मजं जयकर्ण्णं······वसदिय भोगक्क रि [षिजना] हार] कं····धिगो······प्प करंजगोहूरद········यसाम्य······रुडु गद्यान·········
+ + +·······[श्री] मद्वासुपूज्य [मुनि] देवर पा (दप्रक्षाळन)म(मं) मा(डि)·········धर्म्मरक्षणा (फ)ळं········ [गगप्र]-यागाकुरु-[रुक्षेत्र]·········दान्त महा (?) (र) कित्त फळंगळ पडगुम् [॥] तद्धर्म्म तत्तीर्यंगाघातक श्रीमूळसंघद्बुग्घाव्धोग्गुणोजनिवाळक्कारगणं वसदिय स्तभस्थापनेयन्दु निधियमगामण्डं सर्वबाधापरिहारवागि कोट्ट ··············केय्य मने १ कूण्डिय कोल कम्म० १५० [॥]

[इस शिलालेखके प्रथम अंशका ऐतिहासिक भाग चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्ल या विक्रमादित्य द्वितीयके वर्णनसे शुरू होता है, और दूसरा नाम उसके पुत्र जयकर्ण्णका दिया है। फिर लेखमें जयकर्णके अधीनस्थ दो शासकोका उल्लेख आता है,—

दण्डाधिप (सेनापति) चामण्ड, जो कुण्डी देशका शासक था, और मण्डलेश्वर सेन, जिसका शासन-क्षेत्र नहीं दिया हुआ है।

यह सेन संभवतः रट्टोकी सूचीमेंका द्वितीय नाम है। तत्पश्चात् बलात्कारगणके व्यक्तियोंकी गणना आती है। ये कोरके उच्च-गुरु थे। बादमें 'हिलेयरु' खान्दानका परिचय, जिसके घरके लोग सेनके राज्यकालमें गाँवके चौकीदार थे। हिलेयरुको तो बलात्कारगणका ही बतलाया गया है, पर सोरिगाक्कके विपयमें कुछ नहीं बतलाया गया। इस खान्दानके लोगोंके ये नाम दिये गये हैं:—
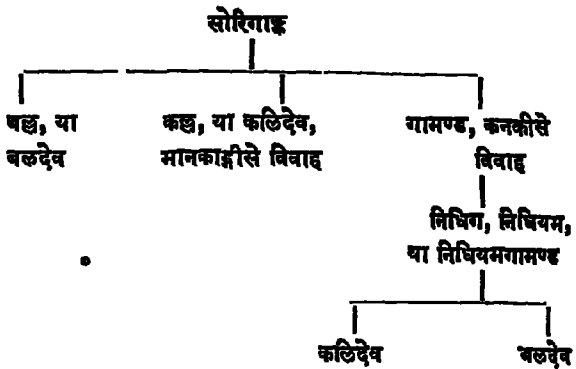
प्रथम दान निधियमगामण्डने अपने बनाये हुए कोण्डनूरुके मन्दिरको शक वर्ष १००९ (१०८७–८ ई०) में, जो कि प्रभव संवत्सर था, किया था। उसी समय एक दान कल्ल नामको धारण करनेवाले दूसरे राजाने, जो इसी मन्दिरके दर्शन करनेके लिये आया था, दिया था। दूसरा दान शक सं. १०४३ (११२१–२ ई०) प्लवसंवत्सरमें, सम्राट् विक्रमके प्रिय पुत्र जयकर्णने अपने पिताके राज्यमें किया था। तीसरा दान निधियमगामण्डका ही है। इस दानमें उसने कुण्डी-वृत्तमें एक मकान और १५० 'कम्म' भूमि दी थी।]

[JB, X, p. 179–181, p. 287–292, t., p. 293–298, tr; ins. n° 8, (*1st part*).]

२२८

दुवकुण्ड—संस्कृत

सं० ११४५=१०८८ ई०

[दुवकुण्ड ग्राममें स्थित जिनमन्दिरका शासनपत्र ।]

पं. १ ओं॥ [ओ] न [मो] वीतरागाय ॥ आ --द्र [. ट-

४ ५ टना- [घत्पा] दपीठं लुठन्मं[दा]रस्रगमं[द]गुंज[द्]

लि[म]न्निष्ठ्यूत सांराविणम् । [त]-

२ [त्पा]॑ ४ ४वद्व[च]ः ४रमु---४[तां]सं४ – हे[ग]-
मिवाकरोत्स ऋषभस्वामी श्रिये स्तात्सता[म्]॥नि (वि) भा-
३ [णो] गुण[सं]ह[तिं] हततमस्तापो निजज्योतिषा [शु] क्ता-
त्मापि जगंति संगतजय [श्च]क्रे सरागाणि यः। उन्माद्यन्म-
४ कर[ध्व]जोर्जितगजग्रासोल्लसत्केसरी संसारोग्रगदच्छिदेस्तु
स मम श्री सा(शां)तिनाथो जिनः॥ जा[ड्यं]सस्वदखंडित-
५ क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष[यं]साक्षादीक्षितमक्षिभिर्दधदपि प्रौढं
कलंकं तथा। चिह्नत्वाद्यदुपातमाप्य सतत [जात]-
६ [स्तया॰]नदकृच्चंद्रः सर्व्वजनस्य पातु विपदश्चंद्रप्रभोर्हन्स
नः॥ सो(शो)कानोकहसंकुल रतितृणश्रेणि प्रणश्य [द्रुम]-
७ - - [त्मा]ध्वगपूगमुद्गतमहामिथ्यात्ववातध्वनि। यो
रागादिमृगोपघातकृतधीर्ध्यानाग्निना भस्मसाद्भावं कर्म्म-
८ वन निनाय जयतात्सोयं जिनः सन्मतिः॥ प्रसाधितार्थ-
गुर्भव्यपंकजाकर[भा]स्करः। अतस्तमोपहो वोस्तु गो-
९ तमो मुनिसत्तमः॥ श्रीमज्जिनाधिपतिसद्वदनारविंदमुद्गच्छ-
दच्छतरवो(बो)धसमृद्धगधम्। अध्यास्य या जगति पं-
कजवासिनी-
१० ति ख्या[तिं]जगाम जयतु श्रु[श्रु]त देवता सा॥ आसीत्क-
च्छपघातवंशतिलकस्त्रैलोक्यनिर्यद्यशःपांडुश्रीयुवराजसूनुर-
११ समयद्भीमसेनानुगः। श्रीमा[न]र्जुनभूपतिः पतिरपाम्-
प्याप यत्तुल्यता नो गांभीर्यगुणेन निर्जितजग[द्व]न्वी धनु-
१२ र्विद्यया॥ श्रीविद्याधरदेवकार्यनिरतः श्रीराज्यपालं
हठात्कंठास्थिच्छिदनेकबाणनिवहैर्हत्वा महत्याहवे।

१३ [डिंडीरा]वलिचंद्रमंडल[मि]लन्मुक्ताकलापोज्व(ज्ज्व)लैस्त्रैलोक्यं सकल यशोभिरचलैर्योजस्रमापूरयत् ॥ यस्य

१४ प्रस्थानकालोत्थितजलधिरवाकारवादित्रशब्दा(ब्दा)वेगान्नि-र्गच्छदद्रिप्रतिमगजघटाकोटिघंटारवाश्च । संस-

१५ र्पन्तः समतादहमहमिकया पूरयंतो विरेमुर्नो रोदोरंध्रभागं गिरिविवरगुरूद्यत्प्रतिध्वानमिश्राः ॥ दिक्च-

१६ क्राक्रमयो [ग्य] मार्ग्गणगणाधारानानेकान् गुणानच्छिन्ना-ननिशं दधद्विधुकलासंस्पर्द्धमानद्युतीन् । [सू] नु-

१७ [च्छि]न्नधनुर्ग्गुणं विजयिनोप्याजौ विजित्यो [र्जि] तं जातोस्मादभिमन्युरन्यनृपतीनामन्यमानस्तृणम् ॥ यस्या-स्य [द्भुत]-

१८ वाहवाहनमहाशस्त्रप्रयोगादिषु प्रावीण्यं प्रविकत्थितं पृथु-मतिश्रीभोजपृथ्वीभुजा । च्छत्रालोकनमात्रजात-

१९ भयतो दत्तारिभंगप्रदस्यास्य स्याद्गुणवर्ण्णने त्रिभुव[ने] को लब्ध(ब्ध)वर्ण्णः प्रभुः ॥ तुरगखरखुराग्रोत्खात-[धात्री]-

२० समुत्थं स्थगयदहिमरस्से(श्मे)र्मंडलं यत्प्रयाणे । प्रचुरतर-रजोन्याशेषतेजस्वितेजोहृतिमचिरत

२१ एवा[शं]सतीवानिवारम् ॥ शरदमृतमयूखप्रेखदंशु-प्रकाशप्रसरदमितकीर्त्तिव्याप्तदिक्चक्रवालः । अजनि विजय-

२२ पालः श्रीमतोस्मान्महीशः शमितसकलधात्रीमंडलक्लेशलेस (शः) ॥ भयं यच्छत्रूणां त्रिदशतरुणीवीक्षितरणे

२३ क्रमेणाशेषाणां व्यतरदसदप्यात्मनि सदा। सतोप्यंशन्ना-
दादव-[नि]वलयस्याधिकमतो बु(बु)धानामाश्चर्यं व्यत-
नुत

२४ नरेंद्रो हृदि च यः ॥ तस्माद्विक्र[म]कारिविक्रमभर-
प्रारंभनिर्भेदितप्रोत्तुंगाखिलवैरिवारणघटोद्यन्मा[स]कुंभ-

२५ स्थलः। श्रीमान्विक्रमसिंहभूपतिरभूदन्वर्थनामा समं
सर्व्वासा(शा)प्रसरद्विभासुरयशःस्फारस्फुरत्केसरः ॥

२६ बा(बा)लस्यापि विलोक्य यस्य परिघाकारं भुजं दक्षिणं
क्षीणाशेषपराश्रयस्थितिधिया वीरश्रिया संश्रितम्। सर्वांगेष्व-

२७ वगूहनाग्रहमहंकारादहपूर्व्विका राज्यश्रीरक्त[ता]धिगस्य
विमुखी सर्व्वान्यपुवर्गतः ॥ अत्यंतोद्धतविद्विट्तिमि-

२८ रभरमिदि च्छादितानी[ति]ताराचक्रे विश्वक् प्रकाशं सकल-
जगदमदात्रकाशं दधाने। निःपर्याय दिगास्यप्रसरदुरु-

२९ क[राक्रा]तधात्रीधरेंद्रे यस्मिन् राजांशु(शु)मालिन्यहह सति
वृथैवैषकोन्योंशुमाली ॥ यद्दिग्जयेवरतुरंगखुराग्रसं-

३० गक्षुण्णावनीवलयजन्यरजोभिसर्प्पत्। विद्वेषिणा पुरवरेषु
तिरोहितान्यवस्त्वत्करं प्रलयकालमिवादिदे-

३१ श ॥ तस्य क्षितीश्वरवरस्य पुरं समस्ति विस्तीर्ण्णशोभम-
भितोपि चडोभसंज्ञम्। प्राप्तेप्सितक्रयसमग्रदिगागतागि-

३२ व्यावर्ण्यमानविपणिव्यवहारसारम् ॥ ० ॥ आसीज्जायस-
पूर्व्विनिर्गतवणिग्वंशाव(व)रामीशुमान् जासूकः प्रक-
[टाक्षता]-

३३ र्थनिकरः श्रेष्ठी[1] प्रभाधिष्ठितः । सम्यग्दृष्टिरभीष्टजैन[च]
रणद्वंद्वार्चने यो ददौ पात्रौघाय[चतु]र्व्विधं[त्रि]विवु(बु)-
३४ घो दानं युतः श्रद्धया । श्रीमज्जिने[श्वर]पदांवु(बु)रुह-
द्विरेफो विस्फारकीर्त्ति[ध]वलीकृतदिग्विभागः । पुत्रोस्य
वैभवपदं
३५ जयदेवनामा सीमायमानचरितोजनि सज्जनानाम्॥ रूपेण
सी(शी)लेन कुलेन सर्व्वस्त्रीणां गुणैरप्यपरैः
३६ शिरस्सु । पदं दधानास्य व(ब)भूव भार्या यशोमतीति
प्रथिता पृथिव्याम् ॥ तस्यामजीजनदसावृपिदाहडाख्यौ
पुत्रौ प-
३७ वित्रवसुराजितचारुमूर्त्ती । प्राच्यामिवार्कस(श)शिनौ समयः
समस्तसंपत्प्रसाधकजनव्यवहार हे[तू] ॥ प्रोन्माद्यत्सकला-
३८ रिकुंजरशिरोनिर्द्दारणोद्यद्यशोमुक्ताभूषितभूरभूरपि भियान्नो-
न्मार्ग्गगामी च यः । सोदाद्विक्रमसिंहभूप-
३९ तिरतिप्रीतो यकाभ्यां युगश्रेष्ठः श्रेष्ठिपदं पुरेत्र परम [2]प्राकार-
सौधापणे ॥ ० ॥ आसीद्विशुद्धतरवो(बो)धचरित्रदृ-
४० ष्टिनिःशेषशू(सू)रिनतमस्तकधारि[ता]ज्ञः । श्रीलाटवागट-
गणोन्नतरोहणाद्रिमाणिक्यभूतचरितो गुरुदेवसे-
४१ नः ॥ सिद्धांतो द्विविधोप्यवाधितधिया येन प्रमाणध्व[नि]
ग्रंथेषु प्रभवः श्रियामवगतो हस्तस्थमुक्तोपमः ।
४२ जातः श्रीकुलभूषणोखिलवियद्वासोगणग्रामणीः सम्यग्द-
र्शनशुद्धवो(बो)धचरणालंकारधारी ततः ॥ रत्नत्रया[भ]रण-

---

१ शायद "श्रेष्ठिप्रभा" में परिवर्तित । २ "परमप्राकार" पढ़ो ।

४३ घारणजातशोभस्तस्मादजायत स दुर्लभसेनसूरिः। सर्व्वं श्रुतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूपनिरतो भवदिद्ध-

४४ [धी]र्यः ॥ आस्थानाधिपतौ बु(बु)धा[द्वि]गुणे श्रीभोजदेवे नृपे सभ्येष्वंव(ब)रसेनपंडितशिरोरत्नादिषूद्यन्मदान्। योने-

४५ कान् शतशो व्यजेष्ट पटुतामीष्टोद्यमो वादिनः शास्त्रांभोनिधिपारगोभवदतः श्रीशांतिषेणो गुरुः ॥ गुरुचर-

४६ णसरोजाराधनावाप्तपुण्यप्रभवदमलवु(बु)द्धिः शुद्धरत्नत्रयोस्मात्। अजनि विजयकीर्त्तिः सूक्तरत्नाव-

४७ कीर्ण्णां ज[लधि]भुवमिवैता यः प्रस(श)स्तिं व्यधत्त ॥ तस्मादवाप्य परमागमसारभूतं धर्मोपदेशमधिकाधिगत-

४८ प्रवो(बो)धाः। लक्ष्म्याश्च वं (बं)धुसुहृदां च समागमस्य मत्वायुषश्च वपुषश्च विनश्वरत्वं ॥ प्रारव्धा (ब्धा) धर्मकांतारविदाहः

४९ साधु दाहडः। सद्विवेकश्च[कू]केकः सूर्पटः सुकृते पटुः ॥ तथा देवधरः शुद्धः धर्मकर्मधुरंधरः। चं[द्रा]लिखि-

५० तनाकश्च महीचंद्रः शुभार्जनात् ॥ गुणिनः क्षणनाशिश्रीकलादानविचक्षणाः। अन्येपि श्रावकाः केचिद्-

५१ दृतं[घन]पावकाः ॥ किं च लक्ष्मणसंज्ञोभूद् हरदेवस्य मातुलः। गोष्ठिको जिनभक्तश्च सर्व्वशास्त्र-

५२ विचक्षणः ॥ शृंगाग्रोल्लिखितांव(ब)रं वरसुधासान्द्रद्रवापांडुरं सार्धं श्रीजिनमन्दिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुं-

५३ दरम् । संभूयेदमकारयन्गुरुशिरःसंचारिकेत्वंव(ब)रप्रांतेनो-
च्छलतेव वायुविहतेर्व्यामादिश[त्पश्य-]

५४ ताम् ॥ ० ॥ अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूजन-
संस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-

५५ रार्थं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहः स्वपुण्यरासे(शे)
रप्रतिहतप्रसरं परमोपचय चेतसि [नि] धाय

५६ गोणीं प्रति विंशोपकं गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यक्षेत्रं
च महा[चक्र]ग्रामभूमौ रजकद्रहपू-

५७ र्व्वदिग्भागवाटिका वापीसमन्वितां । प्रदीपमुनिजनशरीरा-
भ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान् । तच्चाचं-

५८ द्रार्कं महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहोपरोधेन । "व (ब) हु-
भिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य य-

५९ स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल"मिति स्मृतिवचना-
न्निजमपि श्रेयः प्रयोजन मन्यमानैः सकलैरपि

६० भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपालनीयमिति ॥ ० ॥ लिलेखो-
दयराजो या प्रस(श)स्तिं शुद्धधीरिमाम् । उत्कीर्ण्णवा-

६१ न् शिलाकूटस्तील्हणस्तां सदक्षराम् ॥ संवत् ११४५
भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

[यह शिलालेख सन् १८६६ में कप्तान डब्ल्यू. आर. मैलविलीको दुबकुण्डके एक मन्दिरके भग्नावशेषमें मिला था । इस लेखमें कुल ६१ पंक्तियाँ हैं । ५४-६१ की पंक्तियोंको छोड़कर शेष लेख श्लोकोंमें हैं । इसको प्रशस्ति (पंक्तियाँ ४७ और ६०) कहा है । इसको विजयकीर्ति (पं. ४६) ने बनाया, उदयराजने (पं. ६०) लिखा और उत्कीर्ण करनेवाला

शिल्पी तिल्हण (पं. ६१) था। इस सारे लेखमें 'ब' 'व' अक्षरसे लिखा गया है।

इस लेखका उद्देश्य एक जैनमन्दिरकी—जिसके कि पास यह शिलालेख मिला है—स्थापनाका उल्लेख करना है। इसकी स्थापना कुछ निजी आदमियोंने की थी और इस मन्दिरको कुछ दान महाराजाधिराज विक्रमसिंह (पं. ५४–५८) ने दिया था। इस शिलालेखके लिखनेके समय, विक्रम सं. ११४५ में, वे दुबकुण्डके आसपासके प्रदेशपर शासन करते थे। इस लेखके स्पष्टतः दो विभाग हो जाते हैं: पहले विभागमें (पंक्तियाँ १०–३२) युवराज विक्रमसिंह और उनके पूर्वजोंका वर्णन है; दूसरे में (पंक्तियाँ ३२–५१) मन्दिरके संस्थापकों (या प्रतिष्ठापकों) तथा उनसे सम्बद्ध कुछ मुनियोंका वर्णन है। प्रारम्भके छह श्लोकों (पं. १–१०) में कवि ऋषभस्वामी, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर इन तीर्थंकरोंकी, तथा गणधर गौतम, श्रुतदेवताकी जो पंकजवासिनीके नामसे जगत्में प्रसिद्ध है, स्तुति करते हैं।

युवराज विक्रमसिंहके वर्णन (पं. १०–३२) में ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है:—

कच्छपघात (कछवाहा) वंशमें—

१ पोडु श्रीयुवराज (?) हुए। उनके बाद उनके लड़के—

२ अर्जुन हुए, जिन्होंने विद्याधरदेवके कार्यसे, युद्धमें राज्यपालको मारा। उनके पुत्र—

३ अभिमन्यु हुए, जिनके पराक्रमकी प्रशंसा राजा भोजने की थी। उनके पुत्र—

४ विजयपाल हुए; और फिर उनके पुत्र—

५ विक्रमसिंह हुए, जिनके कालकी तिथि यह शिलालेख संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार बतलाता है।

दूसरे विभागके लेखका सार यह है कि विक्रमसिंहके नगरका नाम चदोभा था। यह चंदोभा वर्तमान दुबकुण्ड ही होना चाहिये और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारका केन्द्र रहा होगा। ३२–३९ की पंक्तियोंके श्लोकोंमें उस समयके दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियोंका नाम—ऋषि और दाहड

दिया हुआ है। विक्रमसिंहने उनको 'श्रेष्ठि' की पदवी दी थी और इन्हींमें से एक—साधु दाहड़-मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे हैं। ऋषि और दाहड़ दोनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमतीके पुत्र, तथा श्रेष्ठी जासूकके नाती थे। जासूक जायसवाल वंशके थे जो 'जायस' (एक शहर) से निकला था।

३९-४५ की पक्तियोंमें कुछ जैन मुनियोंका वर्णन है। उनमेंसे अन्तिम विजयकीर्ति थे। उन्होंने न केवल इस शिलालेखका लेख ही तैयार किया था, बल्कि अपने धार्मिक उपदेशसे लोगोंको इस मन्दिरके निर्माणके लिये भी, जिसका कि यह शिलालेख है, प्रेरणा की थी। उल्लेखित मुनियोंमेंसे सर्वप्रथम गुरु देवसेन हैं। ये लाट-बागट गणके तिलक थे। उनके शिष्य कुलभूषण, उनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि हुए। उनके बाद गुरु शान्तिषेण हुए, जिन्होंने राजा भोजदेवकी सभामें पंडित शिरोरत्न अंबरसेन आदिके समक्ष सैकड़ों वादियोंको हराया था। उनके शिष्य विजयकीर्ति थे।

मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे पंक्तियाँ ४८-५१ उनका -नामोल्लेख इस प्रकार करती हैं:—साधु दाहड़, कूकेक, सूर्पट, देवधर, महीचन्द्र, और लक्ष्मण। इनके अलावा दूसरोंने भी जिनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है, इस मन्दिरकी स्थापनामें मदद दी थी।

गद्यभागमें (५४ वीं पंक्तिसे शुरू होनेवाला) कथन है कि महाराजाधिराज विक्रमसिंहने मन्दिर तथा इसकी मरम्मतके लिये तथा पूजाके प्रबन्धके लिये प्रत्येक गोणी (अनाजकी ?) पर एक 'विंशोपक' कर लगा दिया था तथा महाचक्र गाँवमें कुछ जमीन भी दी थी तथा रजकद्रहमें कुँआसहित बगीचा भी दिया था। दिए जलानेके लिये तथा मुनिजनोंके शरीरमें लगानेके लिये उन्होंने कितने ही परिमाणमें (ठीक ठीक परिमाण जाना नहीं जा सका, शिलालेखके शब्द हैं 'करघटिकाद्वयं') तेल भी दिया।

अन्तमें आगामी राजाओंको भी उपर्युक्त दानको चालू रखनेकी प्रार्थना करनेके बाद, ६०-६१ पंक्तियोंमें इस प्रशस्तिके लिखनेवाले और इसको खोदनेवाले दोनोंका नाम दिया है। लिखी जानेकी तिथिका उल्लेख करके यह शिलालेख समाप्त हो जाता है।]

[F. Kielhorn; EI, II, n° XVIII. (p. 237-240).]

२२९

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत

[बिना कालनिर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

२३०

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष शुक्ल. १०९० ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, कल्लु-बसिमें एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

साहस………………महिमं जित-शत्रु धि………होय्सळ……… निळेयं सम्यक्त्व-चूडामणियने नेगळदं भण्डारि-चन्दिमय्यन प्रियेयुं जिन-पादाम्बुजमं स्मरियसुत दिवकेय्-दिदरेन्दोडे कृतात्र्थरिन्नाऱ् विसावनि-योळु ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गनु भव्य-रत्नाकरन सरस्वती-देवी-कर्ण्ण-कुण्डलाभरणनप्प श्रीमन्महा-प्रधान होय्सळ-देवन भण्डारि चन्दिमय्यन हेण्डति बोप्पव्वेयु शुक्ल-संवत्सरद पौष्य-मासदल्लु सन्यासन गेय्दु समाधि-सहित सोमवारदेरडनेय-जावदल्लु स्वर्ग्ग-प्रापितरादरु

[जिनशासनकी प्रशंसा । प्रधान मंत्री होय्सळ-देवके खजाञ्ची चन्दिमय्यकी पत्नी बोप्पव्वेने (उक्त मितिको), संन्यसन करते हुए, समाधिपूर्वक 'स्वर्ग' प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 198.]

२३१

बाळहोन्नूर—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका;—पर संभवतः लगभग १०९० ई० का]

[बाळहोन्नूरमें, दूसरी चट्टानपर]

श्रीमद्वादीभसिंहस्याजितसेन-महा-मुनेः ।
अग्रशिष्येण मारेण कृता सेयं निशीधिका ॥
अगणितगुणगणनिलयो जैनागम-वार्धि-वर्द्धन-शशाङ्कः ।
····त्यूर्जित-मण्डलि·········र-गणे नत-गणाधीशः ॥

[वादीभसिंह अजितसेन महामुनिका यह स्मारक उनके प्रधान शिष्य मारके द्वारा बनवाया गया था । ये गणाधीश अगणित गुणोंके निलय (स्थान) थे, जैनागमरूपी समुद्रके पानीको बढ़ानेके लिये चन्द्रमा थे ।]

[EC. VI, Koppa tl, n° 3.]

२३२

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड

[वर्ष आङ्गिरस, १०९३ ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री-मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छ लोकियब्बे बसदिय प्र···· ·······तळताळ बसदि

बळ····रं बळल्चुव लतान्त-सङ्गि····दि सन्- ।
चळिसि पळञ्चि तू····रन नडिसि मेय्यगेयाद-दूसरिं ।
कळयदे निन्द कब्बुनद कग्गिद विट्टिनमरकेवेत्त क- ।
त्तळमेनिसित्तु पुत्तडर्द मेय्य मलं मलधारि-देवर ॥

स्वस्ति श्रीमदाङ्गिरस-संवत्सर-पौष्य-मास-बहुळ-सप्तमियादित्यवारदन्दु अवर शिष्यरु शुभचन्द्र-देवर् समाधिविधियिं स्वर्गस्थरादरु ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । श्री मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशिय गण और पुस्तक-गच्छ,—लोकियब्बे बसदिकी तलताल बसदिके मलधारि-देव थे, कठोर तपस्यासे जिनका सारा शरीर धूल-धूसरित हो रहा था, लोहेके समान बहुत समयतक जिसपर जङ्ग-सी चढ़ी हुई थी, और वल्मीक (चींटियोंकी खोदी हुई मिट्टीका ढेर) के समान हो गया था । (उक्त मितिको), उनके शिष्य शुभचन्द्र-देवने समाधिके बलसे स्वर्ग प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 199.]

२३३

हळे-बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०१५=१०९३ ई०]

(जैन शिलालेखसंग्रह, प्र० भाग)

२३४

सोमवार—कन्नड़-भग्न

[शक १०१७=१०९५ ई०]

[सोमवार (सद्दिपट्टण परगने)में, बसव मन्दिरकी एक सोटपर]

स्वस्ति······भद्रमस्तु जिनशासनाय स्वस्ति शक-वर्षं १०१७ नेय युवसंवत्सरद भाद्रपद-मासद सुद्ध-सप्तमी-गुरुवारदन्दु मकर-लग्नं गुरूदयदल् श्रीमत्-सुराष्ट्र-गणद कल्नेलेय रामचन्द्र-देवर शिष्यन्तियरप्प अरसब्बे-गन्तियर् (यहाँ खत्म हो जाता है) ।

[(उक्त मिति को) सुराष्ट्र-गणके कल्नेलेके रामचन्द्र-देवकी शिष्या अरसब्बे-गन्ति······]

[EC, V; Arkalgud tl., n° 96.]

२३५

दुबकुण्ड—स्तम्भपर-संस्कृत

[संवत् ११५२=१०९५ ई०]

संवत् ११५२—वैशाखसुदिपञ्चम्यां ॥
श्रीकाष्ठासंघमहाचार्यवर्यश्रीदेव-
सेनपादुकायुगलम् ।

[स्पष्ट है]

[A. Cunningham, Reports, XX, p. 102.]

२३६

सोमवार—कन्नड

[बिना कालनिर्देशका,—लेकिन संभवतः लगभग १०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) में, बसवण्ण मन्दिरके मुख-मण्डपके सामनेके पाषाणपर]

पतिय सन्ततिय पति पेळद-मार्ग्गदिम् ।
पति-हितनागि निस्तरिसि तत्पति माडिप जैनगेहमुन- ।
नति-वेरसिर्....यनन्तदर्कहर्- ।
प्पति-शशियुळ्ळिनं निरिसि जक्कनिदेम् सुकृतार्थनादनो ॥
दुद्दमल्ल-देवन बाणसि जक्कय्यं माडिसिदम् ॥

[अपने स्वामीके कुटुम्बमेंसे, उसी पद्धतिसे जिसे उसके स्वामीने बतलाया था, स्वामीके प्रति रहे हुए प्रेमसे उसने उसी मन्दिरको खड़ा किया जिसे उसका स्वामी बना रहा था। उसे आशा थी कि यह मन्दिर तब तक खड़ा रहेगा जब तक आकाशमें सूर्य और चन्द्र चमकते हैं। जक्क कितना भाग्यशाली था? दुद्दमल्ल-देवके रसोइये जक्कय्यने इसे बनवाया।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 97.]

२३७

सौंदत्ति — संस्कृत तथा कन्नड़

[विक्रमादित्य चालुक्यका २१ वाँ वर्ष=१०९६ ई०]

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय (य) श्रीपृथ्वीवल्लभ (भ) महाराजाधिराज(जं) परमेश्वर (रं) परमभट्टारकं । सत्याश्रयकुळतिलक (कं) चालुक्याभरणं श्री[म]त्रिभुवनमल्लदेवविजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं । लत्तलूर्पुरवराधीश्वरं त्रिवळीतूर्यनिर्घोषणं । रट्टकुळभूषण । सिन्धुरलाञ्छनं । विवेकविरिञ्चनं । सुवर्णगरुडध्वजं सहजमकरद्व(ध्व)ज नामादिसमस्तप्रस(श)स्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरः कार्तवीर्यनृपः ।

रट्टवंशोद्भवः ख्यातो नन्नभूपस्य नन्दनः । श्रीमदाहवमल्लस्य पादपद्मोपसेवकः ॥ सहस्रबाहुरिव ख्यातः कार्त्तवीर्य्यः प्रतापवान् । कुहुण्डिदेशाया(स्या)धाटं सादि(धि)त तेन भूभुजा ॥ राजन्वत्यः प्रजा जाता दावरिनाम भूभुजा । तस्यानुजः प्रतापी स्यात् कन्नकैरो महीपतिः ॥ तस्याग्रनन्दनो भाति बाद्या विद्याविदो भुवि । एरगाख्यमहीपः स्यादनुजोस्याङ्कभूपतिः ॥ बाद्या विद्याधरस्याग्रसूनुः श्रीसेनभूपतिस्तस्याग्रमहिषी जाता मैळलादेविरूर्जिता ॥ श्रीकाळसेनभूपस्य तस्यासीदग्रनन्दनः [।] कन्नकैरनृपः ख्यातो नृत्यगीतादिकोविदः ॥ तस्य गुरवः ॥ त्रैविद्यो राजते भूमौ सर्वशास्त्रविशारदः । कनकप्र(भ)सिद्धान्तदेवो गणधरोपमः ॥ कनकप्रभदेवेभ्यः संक्रान्तो (न्तौ) सत्तिथौ तदा । निवर्त्तनं द्वादशं (श) दत्त नमस्यं (स्य) नन्नभूभुजा ॥ तस्यानुजः ॥ गम्भीरेण समुद्रोसि

गौरवेणासि मन्दरः । श्रीकार्तवीर्य लोका(नां) कल्पवृक्षोसि दानतः ॥ तस्याग्रनन्दनः ॥ वृत्त ॥ श्रीरागतामळयशो वनिता सुयाता तत्र स्थिता जयवधू तव मण्डलाग्र (ग्रे) ॥ धारापथे सुभटमण्डलिकाग्रगण्य श्रीसेन-भूपकथमस्खळनेन चित्रं ॥

श्लोक ॥ सुगन्धवर्त्याह्वके ग्रामे धर्मज्ञजनतावृते । श्रीकाळसेनभूपेन कारितं जिनमन्दिरं ॥ निवर्त्तन द्वादशं(श) तस्मै । जिनगेहाय भक्तितः । बृहद्दण्डेन संदत्त । नमश्यं(स्य)सेनभूभुजा ॥ वचन ॥ वीरविक्रम 'काळ'नामधेयसंवत्सरैकविंशतिप्रमितेष्वतीतेषु । वर्त्तमानधातुसंवत्सरे पुण्यबहुळत्रयोदश्यामादित्वारोत्तरायणसंक्रान्तो (न्तौ) । श्रीवीरपेर्माडि-देवेन कारेयबागुनामधेयस्वसीत्रटे द्वादशनिवर्त्तनं सर्वनमश्यं (स्यं) दत्तं ॥ तस्मिन्नेव सीवटे श्रीकन्नकैरेण स्वगुरवे द्वादशनिवर्त्तनं नमश्यं (स्यं) दत्त ॥ तस्य सीमा । पूर्वस्या दिसि (शि) हलसय्यसीवटाद(दा) रम्य पुलिगेरेवळ्ळिग्रामस्य सीमा । दक्षिणदिग्भागे सुगन्धवर्त्तिग्रा-मस्य सीमा । पश्चिमदिग्निळये कुकुम्बाळु ग्रामस्य सीमा । उत्तरस्या दिशि मळ्हारी नदी सीमा । सामान्योय धर्म्मसेतुर्नृपाणां काळे काळे पाळनीयो भवद्भिः । सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः ॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिर्यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फळ ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा । षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठांया जायते कृमिः ॥ वृत्त ॥ इदनानन्ददे (दि) नोदि पाळिसिदवंगकुं शुभं मंगळं । मुदमुत्साहमशेषसौख्यमेसेवायुं श्रीयुमन्तळ्ळदिन्तिदे तोनकेग······न्द पूण्दु किडिसल्केन्दिर्प्प कष्टं क्रिगोद (दि) दोडकेन्द (न्दु) गळुळ्ळिनं विषमदुःखावासम पोर्दुगु ॥····
····न्त ॥ गंगासागरयमुनासंगमदोळ् वारणासि गयेयेम्बी तीर्थंगळोळो

[तु] कुळद्विजपुगवगोकुळमनलि दरिन्तिदनळिदर् ॥ वीरपेर्माडिदेवस्य जिनालयं ॥

[इस लेखमें चालुक्य राजा पेर्माडिदेवके द्वारा शकवर्ष १०१९ में †जो धातु 'संवत्सर' था, १२ 'निवर्तन' भूमिके दानका उल्लेख है। तत्पश्चात् कन्न-केरके दानका उल्लेख है। यह दान उक्त दानसे पहलेका होना चाहिये। यह कन्नकेर, प्रथम या द्वितीय है, यह इस लेखपरसे कुछ पता नहीं चलता। अन्तमें यह लेख अपने साधारण तरीकेसे भूमिदान करनेके तथा पूर्ववर्ती राजाओंके दानोंकी रक्षा करनेके फायदोंके बतानेवाल श्लोकोंसे समाप्त होता है।]

[JB, X, p 170-171 a, p. 194-198, t, p 199, tr, ins n° 2, (II part)]

२३८

हुम्मच—कन्नड़—भग्न

[काल लुप्त, पर संभवतः १०९८ ई० ? (लुई राइस)]

[पंचबस्तीके प्राङ्गणमें, दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री-मूल-संघद········पुस्तकगच्छदोळे प्रसिद्धि-वडेद श्री ········भट्टारक-शिष्यरप्प लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवरु चिरकाल तपं गेय्दु·············॥ विदित-बहुधान्य ·······कार्त्तिकशुक्ल तृतीयार्कज-वार-सूर्य्योदय····लक्ष्मीसेन-मुनिपरमरास्पदम ॥········ ············ देवसेन-भट्टारक ············चारित्र-गुणोल्लसित-श्री-पार्श्वसेन-भट्टा-रक···एने जसं वडे···॥

विदित-बहुधान्य-नामा ।
ब्ददोळोप्पुव-चैत्र-बहुळ-नवमी-कुजवा-।

---

† मूल लेखके अनुसार शक काल १०१८ बीतनेके बाद जो कि चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयके राज्य प्रारम्भ होनेका २१ वाँ वर्ष था।

रदोळोङ्गि समाधियि····।
य्दिदरनुपम-पार्श्वसेन-मुनिपर् दिव्रमम् ॥

[स्वस्ति । श्री-मूलसंघ और पुस्तक-गच्छमें प्रसिद्ध·······भट्टारकके शिष्य लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवने बहुत समयतक तप किया। (उक्त मितिको), सूर्य्योदयके समय लक्ष्मीसेन मुनिने अमरपद प्राप्त किया।

पार्श्वसेन-भट्टारककी प्रशंसा, जिन्होंने उसी वर्षमें, समाधि-विधिके द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 42]

२३९

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़-भग्न

[शक १०२१=१०९९ ई०]

[जिन-बस्तिमें, अन्दरके दरवाजेके दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥

वननिधि-परिवृत-सीमा-वनियोळ् सले नेगळ्द **कोण्डकुन्दान्वयदोळ्**।
पनसोगे-निवासि-महा-मुनि-वरश्री-कर-[वि]मुक्तरागम-युक्तर् ॥

यमि-नाथाग्रणि **पूर्णचन्द्र-मुनिपर्च**········**दामणंदि-मुनीन्द्रर्** तदपत्यरन्तवर शिष्य-**श्रीधराचार्य्यर्** आयमि-शिष्यर् **म्मलधारि-देव**-रवर्गीदर् **चन्द्रकीर्त्तिव्रति**-प्रमुखर्त्तत्तनुजाततराततयशर् स्सिद्धान्त-चक्रेश्वरर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौन·······परायणरप्प श्री-मूल-सङ्घद देशि-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-**दिवाकरनन्दि-सिद्धान्ति-देवर** ····न्तिर्ब्बसववे-शान्तियर् सक-वरिष सायिरद इ १०२१ नेय

प्रमादि-संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-पञ्चमी-आदिवारदन्दु............य पालि
मूळपरिग्रहं चरियल्लु ३० गद्याण..............चन..................

[जिनशासनकी प्रशंसा। कोण्डकुन्दान्वयमें पनसोगे-निवासी मुनियोंमें प्रधान पूर्णचन्द्र मुनि थे। उनके शिष्य दामनन्दि-मुनीन्द्र थे; उनके शिष्य श्रीधराचार्य्य थे; उनके शिष्य मलधारी-देव थे; उनके पुत्र चन्द्रकीर्त्ति-व्रती थे।

मूलसंघ, देशिगण तथा पुस्तकगच्छकी, दिवाकरनन्दि सिद्धान्त-देवकी शिष्या, बेसववे-गन्तिने...............के करनेके लिये ३० गद्याण दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 24]

२४०

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई०]

[चिक्क-हनसोगेमें, शान्तीश्वर बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद समुदाय मुख्यते राम-स्वामि बिट्टीपरमेश्वर-दत्तिगे ॥

उपवास-प्रोन्नत-विधि- । युपवासानेक-वार-चान्द्रायणदिन्-
न्दप-मद-जयकीर्त्ति-मुनि- । प्रवरं श्री-पुस्तकान्वयाम्बुजसूर्य्यं ।

दशरथसुतनुं लक्ष्मणाग्रजनुं सीता-वल्लभनुं इक्ष्वाकु-कुलजनुमप्प रामन प्रतिष्ठे देसिग-गणद बसदि इल्लि ६४

रामम्माडि गङ्गर्प्पडि सलिसे बन्द-तीर्त्थद-बसदियं यादवरप्प चक्र-वत्तरोळगे श्री-राजेन्द्र-चोळ-नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर् पुनर्न्नवं माडिदरी-पनसोगेयल् देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद बसदि ४ के तले-कावेरिय बसदिगळ्गुं तत्समुदायमुख्यं

[रामस्वामीके छोड़े हुए (?) परमेश्वर-प्रदत्त (?) दानका प्रधान मूलसङ्घके देशी गणके होत्तगे गच्छका समुदाय है। पुस्तकान्वयरूपी कमलके लिये

जयकीर्त्ति-मुनि सूर्यके समान थे । ये अनेक उपवास और 'चान्द्रायण' व्रत करनेमें विख्यात थे ।

यहाँ दशरथके पुत्र, लक्ष्मणके बडे भाई, सीताके पति, इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न रामके द्वारा प्रतिष्ठित देसिग-गणकी ६४ बसदियाँ हैं ।

बन्द-तीर्थकी बसदिको जिसे पहले रामने बनवाया था और जिसको गङ्गोंने दान किया था, चङ्गाळ्ववंशी यादवीय राजेन्द्रचोळ-नन्नि-चङ्गाळ्व-देवने फिरसे बनवाया ।

इस पनसोगेमें देसिग-गणके होत्तगे गच्छकी ४ बसदियों, और तल-कावेरीकी बसदियोंका वही समुदाय मालिक है ।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 26]

२४१

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई० ?]

[चिक्क-हनसोगेमें, नेमीश्वर बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमद्-देसिग-गण पुस्तक-गच्छद श्रीधर-देवर शिष्यरेळाचार्य्य-रवर शिष्यद्दामनन्दि-भट्टारकरवर साधर्म्मिगळ् चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक-रवर शिष्यर्द्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यर्च्चान्द्रायणी-देवापर-नामधेयरप्प श्रीमज्जयकीर्त्ति-देवरादियागा-समुदाय-मुख्यमी-बसदिगळे-ल्लवक्कमासमुदायद वशमल्लदवरना-समुदायमिर्द्दु निर्दोडिसि पोरमडिसि कळेवुदु । रामस्वामि बिट्ट परमेश्वर-दत्तिगे तोल्लडियिन्द बडगण तुम्बिन नीर् वरिद नेलन विक्रमादित्यं बिट्टं १८ गेण कोलिन्दं १५०० कम्म मोदलेरियल्लु बेजिरिगट्टद केळगे आ-कोलि(न्दं) २५० कम्म मण्णं तोण्टके चङ्गाळ्वं मदुरनहळ्ळियुमनळ्ळि ५०० कम्म मण्णं····

[देसिग-गण और पुस्तक-गच्छके श्रीधरदेव थे, जिनके शिष्य एलाचार्य थे, उनके शिष्य दामनन्दिभट्टारक थे, उनके साथी चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक थे, उनके शिष्य दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, उनके शिष्य जयकीर्त्ति-देव थे जिनका दूसरा नाम चान्द्रायणी देव भी था; इन सबका समुदाय इन बसदियोंका मालिक है। जो इस समुदायके अधीन नहीं हैं उन्हें यह समुदाय भगा देगा, बाहर भेज देगा।

चङ्गाल्वने, १८ बिलस्तके दण्डेके नापसे, विक्रमादित्यकी छोड़ी हुई और चोलुडिकी उत्तरीय नहर या मोरीसे सींची गई तथा परमेश्वरकी दी हुई और रामस्वामीकी छोड़ी हुई १५०० 'कम्म' (एक नापविशेष) जमीन दानमें दी, उसी नापसे बेजिरिगहकी २५० 'कम्म' जमीन बगीचेके लिये, और ५०० 'कम्म' मदुरनहल्लिमें दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 28]

२४२

अङ्गडि—कन्नड़—ध्वस्त।

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० (?) ई० का]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, बसदिके पासके पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिनशासनस्य श्री····ण गङ्गदासि-सेट्टि सोमर्दि····
·········धिय मुडिहिद प·····क्षके मग चटयं निलिसिद सासन

[जिन-शासनका कल्याण हो। गङ्गदास-सेट्टिके मर जानेपर, उसके पुत्र चटयने यह स्मारक उसके लिये खड़ा किया।]

[EC, VI, Müdgere tl., n° 10]

२४३

सण्ड—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० ई० का]

[सण्डमें, तालाबके प्रवेश-द्वारपरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळतिळक चाळुक्याभरण श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलु-त्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायक विबुधवर-दायक सुजन-प्रसन्न नुडिदु मत्तेन्नं गोत्र-पवित्र पराङ्गना-पुत्र............सोत्तुङ्गनय्यन-सिङ्ग नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्री........वेर्ग्गडे **मने-वेर्ग्गडे-दण्डना-यकननन्तपाळय्यं गजगण्ड-अरुनूरुमं वनवासे**...........**भुम सप्तार्द्ध-लक्ष्म(क्ष)यच्छ-पन्नाय-मुमं** पडेदु सुख-संकथा-विनोददिं... तत्पादपद्मोपजीवि ॥

श्री-वनिता-कुच-सम्भृत-।
पीवर-वक्ष-स्थळं लसद्गुण-मणी....।
..................................।
......सकळ-विबु (बु) ध-जनता........॥

आ-समस्त-गुण-गणाभरणनु विबुध-जन-पर.............विळसित-जगद्-वळय....वनु रण-रङ्ग भैरवन सकळ-सु-कवि-जन-क............ वीर-लक्ष्मी-विळासनुमनन्तपाळ-प्रसादनुदिताधिकार-लक्ष्मी-विळासनुं.... ....[गो]विन्दरसं वनवासे-पन्निच्छासिरमुमं **मेलपट्टेय** वड्ड-**रावुळमु**...............नोददिं प्रतिपाळिसुत्तमिरे ॥

श्रियं निज-भुज-बळदिम् ।
दायाद बळ.........................।

..............................न-|

जेयं रिपु-नृप-पयोज-सोमं **सोमम्** ॥

आनेग............गळ महा... बेयोगेववोलानत-रिपु-वोगेद......
महीपति-प्रतिम-प्रताप-निळयं निज-सन्ततिगोळुगे पुट्टे रिपु............
पुट्टिदं **सोवरस** ॥....जमदनणिमनार्प्पेने कट्टायदे चलदोळोदविदुन्नति-
नभम............रेम् पुट्टिदर् ॥

शरणेमगेन्नदेवुदेमगे-बेसनावुदु बुद्धियेन्नदुम् ।
बरिसि नितान्तमेरिसिद विल्लवोलुद्धत-वृत्तियन्-ने पेण्-।
डिर् केलदोळ् केळ्दु वीरुव विडे वीरुवधिक-वैरि-मू-।
परनातनच्चर मरुळ तण्डम नोडने **सोम**-भूमिपम् ॥

किं कल्पद्रुम-वल्लरी किमु रतिः शृङ्गार-भङ्गी-गुरोः
किं वा चान्द्रमसी कला विगलिता लावण्य-पुण्या दिवः ।
सम्यग्दर्शन-रेवती किमु परा **सोमाम्बिका** राजते
राज्ञी सा वनवासि-**सोम**-नृपतेर्ज्जाता मनोवल्लभा ॥

श्लोक ॥ क्षीर-सिन्धोर्य्यथा लक्ष्मीर्हिमागोरिव दीधितिः ।
तथा तयोस्सुते जाते जिन-शासन-देवते ॥

पूर्व्वं **वीराम्बिका** जाता ततोऽजन्युदय**ाम्बिका** ।
इति भेद तयोर्म्मन्ये सद्-गुणैस्समता द्वयोः ॥

किं देवेन्द्र-विमान एष किमुत श्री-नागराजाश्रयः
किं हेमाचल-शैल इत्यनुदिनं शङ्का दधानं जने ।
निश्शेषावनिपाल-मौलि-विलसन्-माणिक्य-मालाञ्चितम् ।
भात्यत्युन्नतिमज्जिनेन्द्र-भवन ताभ्या विनिर्म्मापितम् ॥

तोडरे तोडङ्कु मच्चरिसे गण्टल सिल्किद-गाळ बुंकें मार्- ।

नुडिदडे जिह्वम पिडिदु किळ्प तोडर्प्पिन पाशवेन्देडेन्त् ।
एडरुव (व) रेन्तु मच्चरिपरेन्तु करं कडि केय्दु दप्पम [म्] ।
नुडिदपरण्ण वार्प्पु मुळिदम्बद जूजिनोळन्य-भूभुजर् ॥
विडदेडरे सेणसि चुन्न ।
नुडिन्नरी-मन्नेयर बेन्न वारं मिडियिम् ।
पेडेतले-वरम्माळ्पोत्तुन्न ।
कडु-गलि शसि-विशद-कीर्ति जूज-कुमार ॥
जवनेरे बन्चितेम्बिनेगमान्तरि-भूपरनट्टि कोन्दु कू- ।
गुव तवे तिन्दु तेगुव तडगडिदि....व बेन्न-वारनेत्- ।
तुव पिडिदच्चि मुक्कुन्न पसुगरिर्डि वडगिन्दियादुवा- ।
हव-भुज-शौर्य्यमं•••लि-वीरदनेन्दोड् इन्नार्गेर पोगळ्र् न्नेगळ्द
कुमार-गजकेसरियं ॥

अरमनेयोळे.................... ।
.........................न्दु निगिदु संगरमादन्दे ।
शिरलेय मुन्नाल्गोणेयनि- ।
परसद् प्पोल्तपरे कु........................ ॥
.............डे मोगमं तिरिपुवरिन्.....दडे नगुवरन्यरम्बद जूजं
मुनि............... यं रिपु-जनक्कमर्थि-जनकम् ॥ अनुपममे-
निसिद गुण.....................वारितमेनिप दान-गुणदोळ्कु मत्त-
वण दोरेय.....................तळदोळ् ॥ आतनळिय ॥ खण्डदोळि
...............................नेद्दु मूळेगाळम्मूरि..................
....

[जिन-शासनकी प्रशंसा। जिस समय, (चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और तत्पादपद्मोपजीवी मने-वेर्गडे दण्डनायक अनन्तपालय्य, गजगण्ड ६००, वनवासे १२०००, और सप्तार्द्ध-लक्ष (देश) अच्छ-पन्नायको प्राप्त करके उनके ऊपर शासन कर रहा था; तत्पादपद्मोपजीवी, जिस समय (अनेक उपाधियों सहित) गोविन्दरस वनवासे १२००० तथा सेल्पट्टे 'वड्ड-रावुळ'की शान्तिसे रक्षा कर रहा था;—उसका पुत्र (प्रशंसासहित) सोम या सोवरस था, जिसकी पत्नी सोमाम्बिका थी। उनकी चीराम्बिका और उदयाम्बिका, ये दो पुत्री थीं। इन दोनोंने एक जिनमन्दिर बनवाया। अम्य जूज-कुमारके, जिसे कुमार गजकेसरी भी कहते थे, पराक्रमकी प्रशंसा। उसका दामाद,··· (लेख बहुत घिसा हुआ है)।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 311]

२४४

गुब्बी—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका]

(देखो, जै० शि० सं०, प्र० भाग)

२४५

उदयगिरि (कटकके पास)—संस्कृत

[लगभग ईसाकी ११ वीं शताब्दि]

उद्योतकेसरीके समयका शिलालेख

नोटः—इस शिलालेखके लेखका कुछ पता नहीं है। इसका उल्लेख मात्र टी. ब्लॉक (T. Bloch) के Archaeological Survey of India, Annual Report 1902–1903, पृ० ४० के उल्लेख परसे हुआ है।

[उद्योतकेसरीके समयका यह शिलालेख, जो कि ई० ११ वीं शताब्दिका है, शुभचन्द्रके कुल और गणका उल्लेख करता है। शुभचन्द्रके शिष्यका

नाम कुलचन्द्र था। ये (कुलचन्द्र) यहाँकी किसी गुफामें रहते थे और अपने गुरुकी तरह, अवश्य जैन रहे होंगे]

[T. Bloch, A S I, Annual Report 1902-1903, p 40]

२४६

नेसर्गी (जिला बेलगाँव);—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिका (फ्लीट)]

बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकामें नेसर्गीके एक छोटेसे तथा अर्द्ध-ध्वस्त जैनमन्दिरकी एक खड्गासनस्थ बुद्ध-प्रतिमाके चरणपाषाणपर निम्न-लिखित अभिलेख पुरानी कन्नडके ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिके अक्षरोंमें है:—

श्रीमूलसंघद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड बाडिगसात्ति-सेट्टियरु मुख्यवागि नख (ग?) रङ्गलु माडिसिद नख (ग?)रजिनालय ॥

[श्रीमूलसंघ बलात्कारगणके, श्रीपार्श्वनाथदेवके श्री कुमुदचन्द्र-भट्टारक-देवके शिष्य या अनुयायी बाडिगसात्ति-सेट्टि जिनमें मुख्य था ऐसे नगरके (व्यापारी लोगों) द्वारा 'नगरका जिनालय' बनवाया गया।]

[IA, X, p. 189, n° 16, t. & tr.]

२४७

ऐहोले—कन्नड़—भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका २६ वाँ वर्ष; शक १०२३=११०१ ई०
(फ्लीट)]

[ऐहोले गाँवके दक्षिण-पश्चिम दरवाजेके बाहर ही हनुमन्तकी आधुनिक कालकी वेदी है। इसके सामने 'ध्वजस्तम्भ' नामका एक पाषाण है। इस ध्वजस्तम्भके पादुकातलमें एक वीरगल् या स्मारक पत्थर बनाया गया है जिसपर पुरानी कर्णाटकभाषामें एक शिलालेख है। इस लेखकी नकल भाग १ Elliot MS. Collection पृ० ४१० पर दी हुई है।

पत्थरका ऊपरी हिस्सा दृष्टिसे ओझल हो गया है। लेकिन लेखकी तीन पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं। इनमें सोमवार दिन तथा विषु संवत्सरके, जो कि चालुक्य विक्रम-कालका २६ वाँ वर्ष अर्थात्, शक १०२३ (=११०१ ई०) होता है, श्रावणमासके शुक्लपक्षकी एकादशीका काल निर्दिष्ट है। पाषाणके दूसरे हिस्सेमें भगवान् जिनेन्द्रकी मूर्त्ति है जो कि पद्मासन है और जिसके दोनों तरफ़ यक्षिणियाँ चँवर ढोर रही हैं। पाषाणका शेष हिस्सा दृष्टिमें नहीं आता है; लेकिन उसमें अय्यावोळे (ऐहोले) के पाँचसौ महाजनोंद्वारा दिये गये दानका उल्लेख है।]

[इं० ए०, ९, पृ० ९६, नं० ६९]

२४८

दानसाले—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०२५=ई० ११०३]

[दानसालेमें, दक्षिणकी ओर, बस्तिके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाजाराधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्चपुर-वरेश्वरम्महोग्र-वंशललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळा-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-सम्पन्न शान्तर-कुल-कुमुदिनी-शशाङ्क-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतंग-दीपाङ्कुरं तोण्ड-मण्डळिक-कुळाचळ-वज्रदण्डं विरुद्-मेरुण्ड कन्दुकाचार्य्ये मन्दर-धैर्य्यं कीर्त्ति-नारायणं शौर्य्य-पारायण जिन-पादाराधकं परबळ-

साधक शान्तरादित्यं सकल-जन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञ नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **त्रिभुवनमल्ल-सान्तर-देव** ॥

॥ वृत्त ॥

कनकाद्रीन्द्रकमम्भोनिधिगमत्रनिगं पेम्पिनोळ् गुणिपनोळ् तिण्-।
पिनोळेन्तु लाने पोपासटि सरि समनेन्दन्ददाव सम-स्कन्-।
धनदात्रं पोल्वनावं पडिय्ये निमुत्रवं राज-सर्व्वज्ञनोळ् तै-।
ळनोळर्त्थि-स्तोम-चिन्तामणियोळखिळ-भू-भागदोळ् नोर्प्पडेन्तुम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद कलि-काल-कल्पावनिजङ्गा-महानुभावङ्गे जन्म-निळयमेनिसिद अखिळ-क्षत्रिय-कुलोत्तममुमद्वितीय मुमेनिसिदुर्गान्वयावतारमेन्तेन्दडे **पार्श्वनाथ**-सन्तानदोळनेकसमर-सम्मर्दित-रिपु-व्यूह-राहनेन्वनुत्तर-मधुरा-पुरी-भुजङ्गनु प्रतिपाळिन-चतुस्समुद्र-मुद्रित-रुद्धवरी-रंगनु-मेनिसि राज्यं गेय्दनातनिन्दनन्तरमर्थि-जन-कल्पभूरुहाकार-सहकारं राज्यभर-धुरन्धरनादनातन तनय ॥

क ॥ जगदोळगण नृपरेल्लम् ।
मृगदन्तिरलात्म-विक्रम-प्राभवदिम् ।
मृग-रिपुविनंतिरेसेदम् ।
नेगळ्दुग्रान्वय-नगेन्द्रदोळ् **जिनदत्तम्** ॥

व ॥ आ-नृपेन्द्रचूडामणि दुर्व्वार-भारत-समर-समय-समुदीर्ण्ण-सौर्य्यातिरथ-समरथ-महारथार्द्धरथ-समूह-सम्मर्द्दन-लब्ध-विजयलक्ष्मीविवाहोत्सवनुं त्रिविक्रम-कारुण्य-लब्ध-लसदेकशङ्खनुं धनञ्जय-दत्त-शाखामृग-ध्वजनुमतर्क्य-विक्रमोपात्त-कण्ठीरव-ध्वजनुमागि दिग्-विजय-यात्रा-निमित्त दक्षिण-दिशाभिमुखनागि विजय गेय्दु समस्त-दैत्य-वंशध्वंसनं माडि पद्मावती-

पदाराधना-लब्ध-सप्ताङ्ग-राज्य-राजधानी-पोम्बुर्च्चदोळु सान्तर-पट्टम ताळ्दि सान्तळिगेशायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छाय-यिन्दाळ्दु शान्तरमेम्बे-रडनेय पेसरं पडेदनन्दि वळिक्कमुग्रान्वयं शान्तरान्वयाभिधानमं पडेदुदातनिं वळिक्कमनेक-राज-सन्तानकमतिक्रान्तमागे तदन्वयदोळु ॥

वृ ॥ विरुदर मृत्यु वीरद तवर्मने चागद जन्म-भूमि शा- ।
न्तर-कुळ-वार्धि-वर्द्धन-शरत्-समयेन्दु समस्त-सत्-कळा-परिणत-
नङ्गना-जन-मनोभवनेन्दोसेदर्त्थियिं वुधो-
त्करमभिवर्णिसल्के नेगळ्दं धरेयोळ् विभु शान्तर-ओड्डुग ॥

क ॥ नव-जळददळि मिम्नुम्-मुवुदुवदं शान्तरोड्डुगं वाळ् गित्तन्- ।
तेवोलादुदेन्दु पोगळ्व । भुवनाधिपनात्म-समेयोळा-भूपतिय ॥

आतननुज ॥

क ॥ अदटिनिदिरान्त-भूपर- । नदटलदेरदर्त्थि-निकरमं तणिपि जगद्- ।
विदित-यशं नेगळ्दं भू- । प दिळीप वैरि-वीर-काळं तैल ॥

तत्पुत्र ॥

क ॥ आयद कट्टळे मदवद्- ।
दायाद-नृपाळ-दर्प्प-विच्छेदनन- ।
त्यायत-दोर्-द्दर्प्पं जय- ।
जायापति दळिन-वैरि-वीरं वीर ॥
अवन मनोरमे गङ्गा- ।
न्ववाय-पीयूष-वार्द्धि-सम्भवे लाव- ।
ण्यवति मनोभव-राज्यो- ।
द्भव-विळसज्जन्म-भूमि वीरल-देवी ॥

अवरिर्व्वर्गम् ॥

भुजबल-शान्तरनत्यु-
दग्र-जय-श्री-ललित-घन-भुजा-दण्डं भू- ।
भुज-बन्धनवर्ग्गं ताना- ।
त्मजनादं रिपु-बळाटवी-दवदहन ॥

आतनिं किरिय ॥

वृ ॥ शरणायात-शरण्यनर्त्थि-जन-कल्पक्ष्माजनन्यावनी- ।
श्वर-सैन्यार्ण्णव-वाडवानळनशेपाशावधि-न्यस्त-भा- ।
सुर-कल्हार-सुरापगा-निभ-यशश्श्रीवल्लभं नन्नि-शान्-
तर-देवं जगदेक-दानि नेगळ्दं विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥

तदनुजन्मनोड्डुगनात ॥

क ॥ विक्रम-चक्रिय पुण्यदे ।
चक्रं पुरुष-स्वरूपदिं पुट्टितेनल् ।
विक्रमदिन्देसेदातं ।
विक्रम-शान्तरनेनिप्प पेसरं पडेद ॥

व ॥ आतन मनोरमे पाण्ड्य-कुल-वियत्-तळ-चन्द्र-लेखेयु शफर-पताक-जय-पताकेयुमेनिसिद चन्दल-देविग ॥

क ॥ उदयाचलदोळहिमकरन् ।
उदधियोळमृतकरनुदयिपन्तिरलवर्गन्द् ।
उदयिसिदं सकळ-कळा- ।
सदनं महिमा-निळिम्प-शैलं तैल ॥

अन्तु जगज्जनद पुण्यदिं कल्पवृक्षमे क्षत्रिय-स्वरूपदिं पुट्टितेनि ॥ पुट्टि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छायेयिं सुखं राज्यं गेय्युत्तिरेसि

क ॥ अरुमुळि-देवन गाव- ।
ब्वरसिय सुते वीर-भूपनत्तिगे वीर- ।
ब्वरसियरग्रजे तैलप- ।
धरणीश्वरनज्जि नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥
भुजबळन गोग्गियोड्डुग- ।
न जय-श्री-कान्तनेनिप बर्म्मन तायि वि- ।
श्व-जगद्-वन्द्ये तानव- ।
निजेगमरुन्धतिगमधिके चट्टल-देवि ॥
काञ्ची-नाथ-मनः-प्रिये ।
चञ्चज्जिन-समय-कामधेनु दिगन्त- ।
प्राञ्चित-कीर्ति-पताके वि- ।
रञ्चि-रमा-सदृशे नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥

व ॥ आ-जिन-समय-निदान-दीप-वर्त्ति भुजबळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रम-शा [न्] तरं बर्म्मदेवं मोदलागि निज-नन्दन-समेत सुखं राज्यं गेय्युत्तिर्हु राजधानि-पोम्बुर्च्चदोलु पञ्च-वसदियं माडिसि या-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कमछिर्प्प ऋषि-समुदायक्काहार-दानार्त्थमागि भुजबळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रमशान्तरनुं मूवरुमिर्हु बिट्ट ग्रामङ्गलु रावनाडोळगण अग्रहारमानंदूरुं (दूसरे स्थानों के भी नाम दिये हैं) बिट्टरा-पञ्च-वसदिय प्रतिबद्ध मागियानन्दूरल्लु चट्टल-देवियुं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-शान्तर-देवनुं वीरब्वरसियर्गे परोक्ष-विनयमागि यी-वसदियं श्रीमद्-द्रविल-सङ्घ दरुङ्गलान्वयद वादि-घरट्टनेनिसिद श्रीमद् अजितसेन-पण्डित-देवर नामोचारणदिं केसरु-कल्लिक्किसिद-वराचार्य्यावलियेन्तेन्दडे श्री-वर्द्धमानस्वामिगळ तीर्त्थं प्रवर्त्तिसे

गौतमर् गणधररागे तत्-सनातनदोळनेकरतिक्रान्तरागे कलियुग-गण-धरर् दयापाळ-देवरादरवरिं वळिक्क षट्-तर्क-षण्मुखापर-नामधेय जगदेकमल्ल-वादिराज-देवरवरिं ओडेय-देवरवरिं श्रेयान्स-पण्डित-रवरिं बळिक्क ॥

क ॥ दूरीकृत-दुरघं निर्- ।
द्दारित-मदनं स्व-तर्क-विद्या-बळ-सम्- ।
द्दारित-पर-समयं वाक्- ।
श्री-रमणी-रमणनजितसेन-मुनीन्द्र ॥
प्रद्युम्न-मद-विदारणन्- ।
उद्यद्गुण रत्न-वार्द्धिनेगळ्द पेर्देन् ।
अद्यतन-गणधरं निर- ।
वद्यं श्रीमत्-कुमारसेन-व्रतिप ॥

तार्किक-चक्रवर्त्तियुं वादीभ-पञ्चाननमेनिसिद श्रीमदजितसेन-पण्डितदेवर गुड्ड ॥

क ॥ नृप-विद्याम्बुधि-पारगन् ।
अपरिमित-त्याग-गुणनराति-मुखेन्दु- ।
ग्लपन-रुहा-राहु रिपु- ।
द्विप-सिंहं शान्तरान्वयाम्बर-चन्द्र ॥
चागददगुन्ति याचकर्- ।
आगिसिदुदु पलवरसेरं वीरददोन्दु ।
ओगडिसदेळ्गे वनचरर् ।
आगिसिदुदु पलवरहितरं तैलुगन ॥
अवननुजं निज-निर्सि- ।

शा-विदारित-वैरि-नृप-मदेभ-शिरः-पी- ।
ठ-विमुक्त-मौक्तिक-द्युति- ।
धवळित-भू-भुवनननुपम गोविन्द ॥
अवनिं किरियं चोप्पुगन् ।
अवनहित-क्षत्र-पुत्र-वित्रसन भू- ।
भुवन-प्रस्तुत्य रिपु- ।
युवती-वैधव्य-शीळ-शिक्षा-दक्ष ॥

व ॥ यिन्तीयरसुगळुमिर्दु सक-वर्ष १०२५ यूदेनेय सुभानु-संवत्सरद चैत्रद पुण्णमे बुधवार-सोम-ग्रहणद तात्कालदोळु प्रतिष्टेय माडि आ-बसदिय खण्ड-स्फुटित-नव-कर्म्मकाहार-दानक्कं देवरष्टविधार्च्चने कारणमागि आ-बूरोळाद सेसे विर्द्दु वीर्य देविदेरें अडिगर्च्चु काणिके कय्गाणिके हालावु हव्वद वीय्य कुमारगद्या-णम्मोदलागि धारा-पूर्व्वकं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि विट्टर्

(ये ही अन्तिम वाक्यावयव)

इदना-चन्द्रार्क्क-तर- ।
मुदितोदितमागि कादव परम-सुखा- ।
स्पदनक्कु पापदिनळि- ।
द दुरात्म नरक-गतिगे गळगळनिळिगु ॥

(ये ही अन्तिम श्लोक) ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित) त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था तब तत्पाद-पद्मोपजीवी महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल शान्तर देव था । इसका साधारण नाम तैल था, इससे किसीकी तुलना नहीं हो सकती थी ।

जो उग्रान्वय कलिकालके कल्याणका जन्मस्थान था और जिसमें उग्रवंशी क्षत्रिय कुटुम्बोंने जन्म लिया था, उसका अवतार (उत्पत्ति)। पार्श्वनाथके वंशमें एक राहु था, जो उत्तर मथुरा शहरके भुजङ्ग (वीर) के रूपमें प्रसिद्ध था। उसके बाद सहकार हुआ और उसका पुत्र जिनदत्त हुआ। उसने राजकीय नगर पोम्बुर्च्चमें शान्तर-मुकुट पहना और इस शान्तलिगे-हजारपर एकच्छत्र राज्य करने लगा तथा दूसरा नाम 'शान्तर' धारण किया। इसके बाद उग्रान्वय नाम 'शान्तरान्वय'में परिणत हो गया।

उसके बाद कई राजा क्रमशः व्यतीत हो गये। इस परम्पराके अन्तमें,—शान्तर ओड्डुग हुआ। उसका भाई तैल हुआ। उसका पुत्र वीर हुआ। उसकी पत्नी वीरल-देवी थी। उन दोनोंके भुजबल-शान्तर पुत्र हुआ। उसका छोटा भाई श्रीवल्लभ नन्निशान्तर-देव था। उसका छोटा भाई ओड्डुग, जिसने बादमें विक्रमशान्तर नाम धारण किया। उसकी पत्नी चन्दलदेवी थी। उनसे तैलका जन्म हुआ।

जब वह शान्तलिगे हजारमें राज्य कर रहा था:—अरुमुलि-देवकी (पत्नी), गावब्बरसिकी पुत्री, राजा वीरके बड़े भाईकी पत्नी, वीरब्बरसिकी ज्येष्ठ बहिन, राजा तैलपकी नानी, चट्टल-देवी प्रसिद्ध थी। यह भुजबल, गोग्गि, ओड्डुग और बर्म्मकी माता थी।

जिन-समुदायके उस दीपकने राजधानी पोम्बुर्च्चमें पञ्च-बसदि बनवायी और उसके लिये भुजबल-शान्तर, नन्नि-शान्तर, तथा विक्रम-शान्तर, इन तीनोंने (उक्त) गाँव प्रदान किये। और आनन्दूरमें, पञ्च-बसदिके सामने, चट्टल-देवी और त्रिभुवनमल्लशान्तर-देवने, वीरब्बरसिकी स्वर्गयात्राकी स्मृतिमें, एक बसदिकी नींवका पत्थर जमाया। यह काम उन्होंने अजितसेन-पण्डित-देवका नाम लेकर किया। ये 'वादि-घरट्ट'के नामसे प्रसिद्ध थे और द्रविळसंघ तथा अरुङ्गलान्वयके थे।

उनके आचार्य्योंकी परम्परा इस प्रकार थी:—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम-गणधर हुए। इस परम्परामें बहुत-से आचार्योंके होनेके बाद, एक कलियुग-गणधर दयापाल-देव हुए। उनके बाद, जिनका अपर नाम 'षट्-तर्क-

पण्डुल' था ऐसे जगदेकमल्ल वादिराज देव हुए। उनके बाद ओडेय-देव, उनके बाद श्रेयांस-पण्डित, और उनके बाद परचक्रविजेता अजितसेन-मुनीन्द्र हुए। अद्वितीय कुमारसेन प्रतिप निर्विवाद रूपसे आधुनिक गणधर रूपमें प्रसिद्ध थे।

तार्किक-चक्रवर्त्ती अजितसेन-पण्डित-देवके एक गृहस्थशिष्य राजा तैलुग थे। उनकी प्रशंसा। उनका लघु भ्राता गोविन्द था। उनसे छोटा भाई वोप्पुग था।

इन राजाओंने (तैलुग, गोविन्द, वोप्पुगने) मिलकर, (उक्त मिति को) चन्द्रग्रहणके समय, वसदिकी स्थापना की, और उसकी मरम्मत, ऋषिवर्गके आहार, तथा देवकी अष्टविध पूजाके लिये (उक्त) दान दिये। ये ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 192]

२४९

दावनगेरे—(मैसूर) कन्नड

[वि० चा० का ३३ वाँ वर्ष=११०८ ई०]

निम्नलिखित श्लोक मूल लेखकी २१ वीं पंक्ति है:—

कोगळि-नाडोळगद कदम्ब-दिसायरदागरङ्गळोळ्

देगुलकं जिना(य)लयकवारवेग केरे वावि सत्रकम् ।

रागदे तन्न पन्नयद सुङ्कदोळ दशवन्नवित्तनि-

न्तागरमुळ्ळिन नेगर्ल्दे (ल्द) बम्मरसं गुण-रत्नदागरम् ॥

अनुवाद:—"कदम्बोंके सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि स्थानोंमें अग्रगण्य कोगळि-देशमें, प्रसिद्ध बम्मरसने,—एक जैनमन्दिर, एक जिनकी वेदी, एक बगीचे, एक तालाब, एक कुआँ (वापी) तथा एक दानशाला (सत्रक) के लिए,—'पन्नय'की,—तबतकके लिये जबतक कि वह कर जारी रहे,—अपनी तमाम चुङ्गीपर 'दशवन्न'[1] खुशीसे दिये।"

[IA, XXX, p. 107, t. & tr.].

---

१ 'दशवन्न'से मतलब आधुनिक 'दसवन्द' या 'दशवन्द'से है, जिसका अर्थ मि० राइसने यह किया है कि "जो व्यक्ति किसी तालावकी मरम्मत या उसका

२५०

होन्नूर—कन्नड़

[लगभग शक १०३०=११०८ ई० (फ्लीट)।]

[कोल्हापुरके पास कागलसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर दो मील दूरपर होन्नूरमें जैनमन्दिरके भीतर एक प्रतिमाके अभिषेक-स्थल (पाण्डुक शिला) के सामने यह प्राचीन कन्नड़का लेख है। प्रतिमा खड्गासनस्थ सिरपर सर्पके सप्तफणाधारी छत्रसे मण्डित पार्श्वनाथस्वामीकी है। इसके दोनों कोनोंमें एक-एक झुकता हुआ या बैठा हुआ आकार (मूर्ति) है। लेख १½ इञ्च ऊँची तथा २ फुट ७ इञ्च चौड़ी जगहको घेरे हुए है। यह कोल्हापुरके शिलाहारोंमेंसे बल्लाळ और गण्डरादित्यके समयका है, अर्थात् लगभग शक १०३० (११०८-९ ई०) के समीपवर्ती है।]

लेख

स्वस्ति श्रीमूलसंघद पो(पु)न्नागवृक्षमूलगणद रात्रिमतिकन्तियर गुड्डं बम्मगावुण्डं माडिसिद वसदिगे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं बल्लाळदेवनुं गण्डरादित्यदेवन्म(नुम्) आहारदानके बिट्ट कम्मविन्नूरकं अरुगयि मने...

[स्वस्ति। श्रीमन्महामण्डलेश्वर बल्लाळदेव और गण्डरादित्यदेवने श्रीमूल संघके (भेद) पुन्नागवृक्षमूलगणके रात्रिमतिकन्तिके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) बम्मगावुण्डके द्वारा निर्मापित वसदिके लिये, (तपस्वियोंको) आहारदान के लाभार्थ २०० 'कम्म' एवं छः हाथ या ३ गजका एक भवन दानमें दिया।]

[IA, XII, p. 102, n° 6, t. & tr.]

निर्माण करता था उसको कुछ भूमि भेंटमें दी जाती थी; इसके सिवाय उस तालावसे फायदा उठानेवालोंसे तालावके निर्माण करनेवालेको उत्पन्न (फसल) का १० वाँ हिस्सा या और कोई छोटा हिस्सा मिलता था। इसीका नाम 'दशवन्ध' था।

२५१

हेव्वण्डे—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३५ चालुक्य-विक्रम=१११० ई०]

[हेव्वण्डेमें, तालावके दक्षिण नष्ट हुए बाँधके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्-परम····॥

·········चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानम्माचन्द्रार्क्क-तारं सलुत्तमिरे ॥ आतन मगं एरेयङ्ग (४ पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) विष्णुवर्द्धन-म·····················एनिसि केतवेर्गडे (६ पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) श्री-शुभचन्द्र-देव············ ·········तुण्डरुं वादि-कोळाहळ···············स्व-समय-रक्षण-पक्षपाति ·····················एनिसिद कनक····त्रैविद्यसिद्धान्तदेवर शिष्यरप्प मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि केतव्वे··············त्रिट्टि-देवनुं भुजबळ-गंग-पेर्म्माडियुं बम्म-गावुण्डनु नाळ्-प्रभु चालुक्य-विक्रम-कालद ३५ नेय विकृत-संवत्सरद फाल्गुन- मासद शुद्ध-पञ्चमी बृहवारदन्दु···मुख्य-स्थानवागि···चन्द्रशेखर-वेर्गडे कट्टिसिद केरेय केळगे गळ्दे कम्म मूवत्तु आ-केरेय तेङ्कण-कोडियल्लु बेद्दले मत्तरोन्दु मने आरु गाण वोन्दु (हमेशाका अन्तिम श्लोक) श्रीमत् कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवर गुड्डं सेनबोव-त्रोग-देवन बरह ॥ श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा। जब (अपनी उपाधियों सहित) चालुक्य त्रिभुवनमल्लका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था। (इस स्थानपर होय्सलोंके विवरण हैं, जो कि बहुत घिस गये हैं।) शुभचन्द्र-देव (से परम्परागत आये हुए) कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके शिष्य, मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य केतव्वेकी प्रशंसा।

बिट्टिदेव, भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि, बम्म-गावुण्ड (? तथा) नाळ्-प्रभुने, चालुक्य-विक्रम-कालके ३५ वें वर्षमें, जो कि विकृत वर्ष था, ६ मकान और

१ तेलकी चक्कीके साथ, (उक्त) भूमिका दान किया। हमेशाके अन्तिम श्लोक। यह लेख कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ-शिष्य, सेनबोव बोग-देवके द्वारा रचा गया।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 89]

२५२

महोवा*—संस्कृत

[संवत् ११६९, फाल्गुन सुदि ८ (१११२ ई०)]

यह लेख संभवतः जयवर्म्मदेवके कालका होना चहिये, जो, जैसा कि इतिहास कहता है, सिर्फ ४ साल बाद, सं० ११७३ में शासन कर रहा था।

[A. Cunningham, Reports, XXI, p 73, a]

२५३

आलहळ्ळि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३७ चालुक्य विक्रम=१११२ ई०]

[आलहळ्ळि (होळलूर परगना) में, तळवारके खेतमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ॥

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वरं परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-तारम्बरं सलुत्त-मिरे कल्याणपुरद-नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोदर्दि राज्य गेय्युत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि।

---

* महोबाके ये (नं० २५२, ३२५, ३३७, ३४१, ३६०, ३६१, ३६५) अतिसक्षिप्त शिलालेख ए. कनिंघमको भग्न जैन मूर्त्तियोंके चरण-पाषाणपर मिले थे। इनमेके कुछ शिलालेख बहुत कामके हैं, क्योंकि उनमें जिस समय मूर्त्तिका निर्माण या प्रतिष्ठा हुई थी उसका काल तथा उस समय शासन करनेवाले राजाका नाम, ये दोनों चीजें दी हुई हैं। कुछमें शासक राजा का नाम नहीं मिलता, पर कालका उल्लेख मिलता है, कुछमें वह भी नहीं मिलता।

स्वस्ति समस्त-वस्तु-गुण-भूषणनब्धि-परीत-भूतळ- ।
प्रस्तुत-कीर्त्ति भावभव-मूर्त्ति जया-वनिता-प्रपूर्ण्ण-वृ- ।
त्त-स्तन-हार•••वाञ्छित-कल्प-कुजानुसारन- ।
भ्यस्त-कळागम-ज्ञनेने गङ्गरसं सरसं धरित्रियोळ् ॥
विनयाधारमुदारमुन्नति कुलङ्••••श्वर्यमेम्ब् ।
इनितु शोभिसे शोभे-वेत्तनेनुतु धात्री-तळं कूर्तु-की- ।
र्त्तने-गेय्गु जयदुत्तरंगननशेष-श्री••••वर्द्ध-प्रसं- ।
गन्••••••••वितरण-व्यासङ्गनं गङ्गनम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द **नीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं कुवळाळपुरवराधीश्वरं **नन्दगिरि**-नाथं सकळ-गुण-सनाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छन परिपूर्ण्णीकृत-विबुध-जन-मनोवाञ्छनं पद्मावती-लब्ध-वरप्रसादम् मृगमदामोदम् गङ्गकुळ-कुवळय-शरच्चन्द्रं मण्डळिक•••द्दं दर्प्पोद्धताराति-मण्डळिक-वनज-वन-वेदण्ड दुर्द्धर-गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमन्महामण्डळेश्वरं त्रिभुवनमल्ल **भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि-देवर** पट्टमहादेवी ॥

पुट्टिद•••अनुज । **पट्टिग-देवङ्गे गङ्गवाडिगे** तळ्देदळ् ।
पट्टमनेसेदिरे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
परिवार-सुरभिगन्तर्- । पुर-मुख्य-मण्डनेगे **गङ्ग-मादेविगे** नायकि ।
यरनद्••••ओड सति । दोरे••••••••नृप••••••••पडेये ॥
अन्तवर्गे ॥

गङ्ग-कुळ-तिळकरेनिसिद । **गङ्ग-नृपं मारसिंग-नृप गोग्गि-नृपं** ।
तुङ्ग-यशनेनिसिदं कलिय् । **अङ्ग-नृपं** नेगर्देरेळ्गे कुमाराग्रणिगळ् ॥
कोळालपुर-वरेश-नृ-पाळ-स्तुतम्मद-गजेन्द्र-लाञ्छनररि-भू-
पाळ-कुळ-वनज-वन-शुण्डाळर्न्नेगर्दर् स्समस्त-सु-भटाग्रणिगळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्ईग ङ्ग-पेर्म्माडि-देवरुं गङ्ग-महादेवियरुं कुमार-वर्ग्गमुं मण्डळि-सासिरदोळगणेडेहळ्ळिय वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्त मिरला-महा-मण्डलेश्वरनर्द्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

श्री-वधु जय-वधु कीर्त्ति- । श्री-वधु वाग्वधुवेनिप्प वधु गङ्ग-नृपङ्ग् ।
ई-वधुवेनिसिद बाचल-देवियोळेणेयेन् बेनुळिद नृप-वनितेयरम् ॥
ई-चतुरम्बुधि-वेष्टित-।भू-चक्रद सतियरेन्नलाददवेनो ।
बाचल-देविगे समन् ···।-च-मणि-प्रतति दोरेये चिन्तामणियोळ् ॥
काम-मदेभ-गामिनिगे····नमे पूज्यमेनिप्प पेम्पिनिन्द् ।
ईव····मं तणुपि कल्प-कुजक्केणे···· ························।
दु········र-दान-गुण-भूषणे दान-विनोदे दान-चिन्-।
तामणि दान-कल्प-लतेयेम्बिदु बाचल-देविगोप्पदे ॥
एरगदराति-भूभुजरनाजियोळञ्जिसि ···निजाङ्कगळग् ।
एरगिसुतिर्प्प दर्प्पद पोड········गण्डनप्प त-।
न्नेरेयन········तनगे गङ्ग-महीभुजनं विलासदिन्द् ।
एरगिसि···भाग्य-भरदुन्नति बाचल-देविगोप्पुगुम् ॥

अन्तुमल्लदे ॥

अरि-बिरुद-पात्र-जगदळ । धरेगेल्ल नीने राय जगदळे नानी-।
धरेगेल्लमेन्दु पिरिदा-। दरदिन्द····· सि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
कुडे राय जगदळे-पेसर- । वडेद······डेय कडेय वडवुगळीयल् ।
पडेदळ् रायरोळप्पं कुडे बाचल-देवि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥

मत्तम् ॥

·············मेवुदे-नडे-तन्न महत्त्व-वृत्तियं ।
बेडदे नोडिरे नेगळद बाचल-देविय कीर्त्ति········।

आडि दिगङ्गना-नटियरोळ् तणिविल्लदे मत्तविन्नु····।
··········वीर···पात्र··········मेले पात्रमुम् ॥

मत्तं स्वस्त्यनवरत-परम-कल्याणाभ्युदय-सहस्र-फळ-भोग-भागिनि ललित-करण-गृहीत-भाव-प्रयोगिनि भुजबळ-गंग-भूपाळ-विशाळ-वक्ष-स्थळ-निवासिनि । नृत्य-विद्या-प्रभाव-प्रभूत निर्म्मळ-यशो-विभासिनि···स्थान-पात्र-मुख-मण्डने । प्रतिपक्ष-गायिका-गान-मान-परिखण्डने । अनवरत-दान-जनित-विबुध-जन-हर्षे । देवा····न····स····तर्षे····। चतुर-विद्या-विनोदे । कस्तूरिकामोदे । अरि-विरुद-पात्र-जगदळे । जिन-गन्धो-दक-पवित्रीकृतविनीळ-नीळ-कुन्तळे । निखिळ-कुळ-पाळिका-गीयमान-वि-शद-यशो-गीति····स्थान····जिन-शासन-साम्राज्य-यशार्-पताके । परोप-कार-कमळाकरचक्रवाके । सौभाग्य-सची-देवि श्रीमद्-बाचल-देवियर् वण्णिकेरेय त्रिभोगाभ्यन्तर-सिद्धियिन्द सुखदिनिरप्प ।

जन-नुते बाचल-देविय···।
जननिंगे सरि दोरे समानमेनल्के केळ-।
वनियोळ् पडवळति···।
जननिय······जननियरेणेये ॥

पडेदोडमे दान-धर्म्म-। कोडलु विशेप-व्रतक्किवेने नेगळ्द् जसं ।
वडेदद्दव्····मतिगे ।········वसुधा-तळदोळ् ॥

आ-महानुभावेयोडपुट्टिदम् ॥

जिन-पदाम्बुज-भृङ्ग । जिन-समय-सरोजिनी-मार्ता··· ।
··········प्रभ- । वेने नेगर्द बाहुबलि धरा-मण्डलदोळ् ।
एळेयं मूरडियं कोट्ट् । अळिपदनव्जो················ ।
············दिन्द् । इळिसिदपं नम्म बाहु-बलिया-बलियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमद्-वाचल-देवि····हुचलियण्गनु धर्म्म-कार्य्या-ळोचनमनाळोचिसि ॥

ई-भवनदोळेन्दु परि- । शोभितं················ ।
······एन्देन्दाहा- । राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानमनेसेयल् ॥

माड्डव वगेयिं मण्डलि- । नाडोळगण वन्नि······अनुनयदिन्दम् ।
माडिसिदळ् जिन-गृहमं । नाडाडिगळुम्बमेन्दु धरे पोगळ्विनेग ॥

सङ्गगळोळगिदुत्तम- । सङ्गं····मूल-सगमा-संग-··· ।
तुङ्गं देसिग-गणमा- । सङ्गदोळा·······गुड्डि वाचल-देवि ॥

देसदोळुत्तममेनिसुव । देसिग-गणद···माडिसिदळिदम् ।
देसिग-गणक्के मण्डलि- । सासिरकं तिळकमेनिप चैत्यालयमम् ॥

अल्लिगे देसिग-गणदव- । गेल्लदे मत्ताव-गणदलार्गन्देडकूळ् ।
अल्लदे तेज वोन्दिप- । गेल्लददेन्तु बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

सुर-मनुज-भुजग-भुवना- । न्तरदोळ् मुन्दादविल्लुदिप्पुवाविन्तिम् ।
दोरेये जिन-भवनमल्लेम्- । वर मातु दिटं बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

जळधि-परीत-भू-वळयदोळ् नेगर्दोप्पुव गङ्गवाडि-ना- ।
डोळगे नेगर्त्तेवेत्तेसेव मण्डलि-नाल्के मुखक्के मूगेनिप्प् ।
अळवियनान्त वन्निकेरेयोळ् नेरेदोप्पुव पार्श्वनाथनीग् ।
अळि-कुळ-नीळ-कुन्तळेगे वाचल-देविगमीष्ट-सिद्धियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्री-पार्श्वनाथ-देवर्गे चालुक्य-विक्रम-वर्षद ३७ नेय नन्दन-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध ५ बृहवारदुत्तरायण-सङ्क्रान्ति-यन्दु मण्डलिसासिरद वळिय वाड वूडङ्गेरेयल् वन्निकेरेयल् तळ-वृत्ति गर्द्दे मत्तर्मूरु तोण्ट मत्तरोन्दु गाणवेरडु पुरद कोळियो····आ-येरडूर तळ-भण्डद सुङ्कवोळगागि यिन्तिनितुम भुजवळ-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवरु

गङ्ग-महादेवियरुं वर्ग्गडे-बाचल-देवियरुं कुमार-गङ्ग-रसनुं मार-सिंग-देवनु गोग्गै-देवनु कलियङ्ग-देवनुं समस्त-प्रधानर नाड-प्रभुगळ सन्निधानदल्लु सर्व्व-बाधा-परिहार सर्व्व-नमस्यमागि देवर श्री-पाद-पद्मङ्ळ्दोळ् धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टरु ॥

धरे पुसिवोगदे बेळगी- । धरेयं भुज-बळदिनाळ्द भुजबळ-गङ्गम् ।
परेदिर्कै जैन-धर्म्मं । धरेयोळ् चन्द्रार्क-तारमुळ्ळन्नेवरम् ॥
सकलोर्व्वी-स्तुतमप्प धर्म्ममनिद् काद चिरैश्वर्य-भुम्- ।
मुकनक्कुं विपरीतदिं नडेदवंगा-गङ्गेया-वारणा-
सि-कुरुक्षेत्रदोळेय्दे गो-द्विज-मुनि-स्त्रीयर्कळं कोन्द पा-
तकनक्कु बिडदिर्क्कुमा-पुरुपनेन्तुं रौरव-स्थानमम् ॥

(**हमेशाके अंतिम श्लोकके बाद**)

शासनमिदावुदेल्लिय । शासनमारित्तरेके सल्लिसुवे नानी- ।
शासनमनेम्व पातक-।ना-सकळं रौरवकें गळगळनिळ्ळिगुम् ॥

देवर श्री-पाददोळु धारा-पूर्व्वकदिं पुर-वर्गद सुङ्कवं देवर्गे बिट्टर् बन्निकेरेयल्लु कल्लुकुटिग काळोज देव-दासिगळिगे बिट्ट बेद्दले गळेयल्लु मत्तरोन्दु ॥

श्री-देशी-गण-वार्धि-वर्द्धन- करश्चन्द्रोऽकलंकाङ्कितस् ।
स्थेयान् श्री-मलधारि-देव-यमिनः पुत्रः पवित्रो भुवि ॥
सद्-धर्मैक-शिखामणिर् जिनप···चिन्तामणिस् ।
स-श्रीमान् शुभचन्द्र-देव-मुनिपस्सिद्धान्त-रत्नाकरः ॥

श्री-लोक्किगुण्डिय प्रभु एरकण्णं श्री-पार्श्व-देवरंग-भोगके वड्डि-यिन्द-क्षयमागि कोट्ट लोक्किय गद्याणं १ ॥ मत्तं बिट्ट गर्दे मत्तरोन्दु बेद्दले मत्तरु मूरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा। त्रिभुवनमल्ल-देवके विजय-राज्यमें तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गरस था; इसको 'जयदुत्तरंग' नाम भी दे रक्खा था। नीतिवाक्य कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल भुजबळ-गंग-पेर्म्माडिदेवकी पट्टरानीने अपने छोटे भाई पट्टिग-देवके लिये गङ्गवाडिका मुकुट धारण किया। तमाम रानियों और राजाओंसे वह ज्यादा प्रतिष्ठित थी।

उन दोनोंके चार पुत्र उत्पन्न हुए—गङ्ग, मारसिंग, गोग्गि, और कलियङ्ग। ये सब महान योद्धा थे।

जिस समय गङ्ग-पेर्म्माडि-देव, गंग महादेवी, और उनके लड़के मण्डलि हज़ारमें अपने निवास-स्थान एडेहळ्ळिमें थे, उस महामण्डलेश्वरकी एक अन्य अर्द्धाङ्गिनी बाचल-देवी (उसकी प्रशंसा) थी। उसने अपने पतिको 'पान्न-जग-दळे'की उपाधि दी थी।

जिस समय (अनेक उपाधियोंवाली) बाचल-देवी बन्निकेरेमें, अपनी तीसरी पीढीकी खुशीसे विश्रब्ध होती हुई, सुखपूर्वक रहती थी, उसने अपने बड़े भाई बाहुबलीसे परामर्श करके बन्निकेरेमें एक सुन्दर जिना-लय बनवाया।

बाचल-देवी मूलसंघ, देशीगणकी गृहस्थ-शिष्या थी। उस देशीगणके लिये उसने चैत्यालय बनवाया। समुद्र-परिवेष्टित लोकमें गङ्गवाडि-नाड् प्रसिद्ध है और उसमें मण्डलि-नाड् प्रसिद्ध है। उसमे चेहरेपर जैसे नाक है उसी तरह बन्निकेरे था। पार्श्वनाथ भगवानके लिये चालुक्य विक्रमके ३७ वें वर्षमें भुजबळ-गङ्ग पेर्म्माडिदेव, गंग-महादेवी, पेर्ग्गडे-बाचल-देवी, और कुमार गङ्गरस, मारसिंग देव, गोग्गि-देव, कलियङ्ग-देव, और तमाम मन्त्रि-योंने, नाड्-प्रमुखोंकी उपस्थितिमें सब करों एवं चुङ्गियोंसे मुक्त, मण्डलि-हज़ारके वूदङ्गेरे, बन्निकेरेकी कुछ ज़मीन, एक बगीचा, दो कोल्हू, और उन दोनों शहरोंकी कुछ चुङ्गीकी आमदनीका दान किया। आशीर्वचन और शाप। पाषाण-शिल्पी कालोज (शासनके उत्कीर्ण करनेवाले) का नर्त्तकियोंके लिये दान। शुभचन्द्र-देव-मुनिपकी प्रशंसा। लोक्किगुण्डि प्रभु एरेकणने भगवानके भोगके लिये १½ लोक्कि गद्याण, तथा कुछ भूमि दान की।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 97]

२५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१

श्रवणबल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

(देखो जैनशिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग ।)

२६२

मत्तावार—कन्नड-भग्न

[शक १०३८=१११६ ई०]

[मत्तावार पार्श्वनाथ बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री सक-वरुष १०३८ नेय दुर्मुकि-संवत्सरद चैत्र-मासद कृष्ण······यादिवार·········चेदळ्ळियु मायन····मग मावण्णन शिष्यरुं सन्यसन गेय्दु मुडिहिद निसिदि ।

[(उक्त तितिको), मायनका पुत्र और मावण्णका शिष्य सन्यसन (संन्यास=समाधि) धारण करके मर गया । उसका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl, n° 51]

२६३

तिप्पूर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक सं० १०३९=१११७ ई०]

[तिप्पूर (कुलगेरी-प्रदेश)में, गाँवके उत्तर-पूर्व, पहाड़ीपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥
स्वस्ति होय्सल-वंशाय यदु-मूलाय यद्भवः ।
क्षत्र-मौक्तिक-सन्तानः पृथ्वी-नायक-मण्डनम् ॥
स्वस्ति श्रीजन्मगेहं निभृत-निरुपमौर्वानळोद्दाम-तेजं ।
विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ॥

वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं ।
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधिनिभमेसेगु होय्सळोर्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणम देवेभदुद्दाम-स-
त्त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताळ्दि तानल्ते पु-
ट्टिदन् उद्वेजितवीर-वैरि विनयादित्यावनी-पालकम् ॥
विनयादित्यनृप सज्जनर्गे दुर्ज्जनर्गेमात्मविनयं तेजं ।
जनियिसे नयमं भयमं । विनूत नाळ्दो विशालभूमण्डलमं ॥
आ-विनयादित्य-वधु । भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्-
भाव-गुण-भवनमखिलकलाविलसिते क्यॆळेयब्बरसि येम्बळु पेसरिं
आ-दम्पतिगे तनूभवन् । आद शचिगं सुराधिपतिग मुन्नेन्त् ।
आदं जयन्तन् अन्ते वि-। पाद-विदूरान्तरङ्गन् एरॆयङ्ग-नृपं ॥
एरॆयन् अखिलोर्विग् एनिसिर्द् । एरॆयङ्ग-नृपाल-तिलकन् अङ्गने चलिंग्-।
एरॆवड्डु शील-गुणदिं । नेरॆद् एचल-देविय् अन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
एने नेगळ्द् अवरिर्व्वर्गे । तनूभवर् नेगळ्दर् अल्ते बल्लाळं विष्णु-
नृपाळकन् उदयादि- । त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिळ-वसुधातळदोळ् ॥
अवरोळ् मध्यमनागियुं धरणिय पूर्वापराम्भोधिय् ए-
ल्दुविनं कुडे निमिर्च्चुवोन्दु निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तमगुणव्रातैक-धामं धरा-
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनप श्री-विष्णु-भूपालकम् ॥
॥ कं ॥ एळेगेसेव कोयतूरु ततू-। तळवनपुरमन्ते रायरायपुरम्बक्-
पळ बळेद् विष्णु-तेजो-। ज्वळनदे वेन्दवु बळिष्ठ-रिपुदुर्ग्गङ्गळ् ॥
स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्दं महामण्डलेश्वरं द्वारावती-पुरवरा-

धीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोळ्-गण्डाद्यनेक-नामावली-समलङ्कृतर् अप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-गोण्ड भुज-बळ वीरगङ्गविष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर-विजयराज्यप्रवर्द्धमानमाच-न्द्रार्कतारं सल्लुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवी ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-
घन-वृत्त-स्तन-हारनुग्र-रण-धीरम्मारनेनेन्दपै ।
जनकं तानेने माकणब्बे विबुध-प्रख्यात-धर्म्म-प्रयु-
क्ते निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेचं महा-धन्यनो ॥

उत्तमगुणततिवनिता। वृत्तियनोळकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं कै-
य्येत्तुविनममळ-गुण-सं। पत्तिगे जगदोळगे पोचिकब्बेये
नोन्तळ् ॥

अन्ते निसिदेचि-राजन पोचिकब्बेय पुत्रं श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्ट गङ्गराजं चोळन-सामन्तर् इडियमं मोदलागि तळकाड-बीडिनोळ् पडियिप्पन्तिर्द्दु चोळं कोट्ट नाडं कुडदे कादि कोल्लिमेने विजिगीषु- वृत्तियिन्देत्ति बलमेरडुं सार्चिदल्लि ॥

इत्तण भूमि-भागदोळ् अदन्यरदेके भवत्प्रताप-सं-
पत्तिय वर्ण्णना-विधिगे गङ्ग-चमूप-जिगीषु-वृत्तियिन्द् ।
एत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तेमोने वेन्न-वारनेत्-
तुत्तिरे पोगि कञ्चि-गुर्रि-यण्णिनमोडिद दामनेयूदने ॥

आन् ओन्दे-मेय्योळ् एय्दि नरसिंग-वर्म्म-मोदलाद चोळन-साम-न्तर् एल्लरं वेङ्कोण्डु नाद् आद्दुद् एल्लमनेक-च्छत्रमाडि कुडे कृतज्ञ विष्णु-नृपति मेच्चिदेम् वेडिकोल्लिमेने ॥

अवनिपनेतगित्तपनेन्-। दवरिवर-वोल्लळिद वस्तुवं वेडदे भू-
भुवनम्बणिणसे तिप्पूर । वृत्तियं वेडिदं जिनार्चन-लुब्धम् ॥
अन्तु वेडि कुडे पडेदु गाजल्रु-कुडुगेरेंय् ओळगाद तिप्पूर

वृत्तियं शकवर्ष १०३९ नेय हेमण(ल?)म्बि-संवत्सरद उत्तरायणसंक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्रीमूलसङ्घद काणूरगणद तिन्त्रिणिक गच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति ॥

प्रियदिन्दितिदनेय्दे काव पुरुषर्ग्गायुं महाश्रीयुं अक्-
के इदं कायदे काव्य पापिगे कुरु-क्षेत्रोर्व्वियोळ् वाणरा-
सियोळ् एकोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्ददोन्द्-
अयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुव् ई-शैलाक्षरं सन्ततं ॥

[EC, III, Malavalli tl, n° 31]

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पोय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा। इसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ उसकी प्रशंसा । उससे और उसकी पत्नीसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ । उसकी पत्नी एचलदेवी । उनसे बल्लाळ, विष्णु, और उदयादित्य उत्पन्न हुए। उनमेंसे बीचके विष्णुने पूर्व समुद्रसे पश्चिमतक सारी पृथ्वीपर कब्जा किया। उसके पराक्रमकी ज्वालाओंसे मज़बूत छोटे शाही किले कोयतूर, तलवनपुर (जो कि रायरायपुरका ही दूसरा नाम है) नष्ट हो गये।

उस समय वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन होय्सलदेव अपनी चरमोन्नतिपर पहुँच कर राज्य कर रहे थे। एचि-राजाके पिता मार, माता माकणब्बे और पत्नी पोचिकब्बेकी प्रशंसा। उनके पुत्र महाप्रधान एवं दण्डनायक गङ्गराज हुए।

चोलके अधीनस्थ शासक इडियम और दूसरे लोगोंने जब चोल राजाके दिये हुए प्रदेशको देनेसे इन्कार कर दिया तब गङ्ग-चमूप (गङ्गराज) ने उनसे वह प्रदेश लडाई लड़कर ले लिया। अकेले ही गङ्गराजने नरसिंग-वर्म्म और

चोलके अधीनस्थ अन्य -तमाम विपक्षी शासकोंको भगा दिया और नाड देशको एक छत्रके नीचे लाकर विष्णुवर्धनको सौंप दिया, जिसपर उसने गङ्गराजसे अपनी इच्छाके माफिक कोई वर माँगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने तिप्पूर माँगा।

इस प्रकार इच्छानुसार माँगे हुए और दिये हुए तिप्पूरका, जो कि गाजलूरु और गोह्नुसेरीके बीचमें है, मूलसंघ, काणूर गण और तिन्त्रिणिक-गच्छके मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवको दान कर दिया।]

२६४

चामराजनगर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०३९=१११७ ई०]

[चामराजनगरमें, पार्श्वनाथस्वामीकी बस्तीके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डळेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेपरोळ्गण्डाद्यनेकनामा-वलीसमलंकृतरप्प श्रीमद्भुजबल वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्टिग-होय्सल-देवरु गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिर कोङ्गाळगागि एकच्छत्रछयेयिं तलेकाडलु कोळाल-पुरदलु सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे ।

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रमुनिपो देवाकलङ्कस्तुतः
श्रीपूज्याङ्घ्रिरुदात्तवृत्तनिलयो श्री-वादिराजाम्बुधौ ।
आचार्यो द्रविडान्वयो जिनमुनिश्श्रीमल्लिषेण-व्रती
श्रीपालः परिपालिताखिलमुनिस्सोऽनन्तवीर्यक्रमः ॥

जिननिष्ट-दैवमजितं । मुनिपति गुरु पोय्सळेशनाळ्द्नेनल् सद्-
विनुतं माडिसिदं श्री- । जिनगृहमं पुणस-राज-दण्डाधीशं ॥

मित्र-कुलाब्धि-वर्द्धन-सुधांशु विरोधि-बलान्तकं महा-
मात्य-कुलोद्भवं सकळशासनवाचकचक्रवर्त्ति लो-
कत्रयवर्त्तिकीर्त्ति **पुणिसम्म**-चमूपनवङ्गे शुद्ध-चा-
रित्रे पवित्रे पोचले मनः-प्रिय-वल्लभे तत्तनूभवर् ॥
चावणनाश्रितामर-महीरुहनुद्धतमन्त्रिमन्त्रविद्-
रावणनातनिं किरिय कोरपनन्वितसत्कळा-कळा- ।
पावृत-बोधनातननुजं सुजनाग्रणि नागदेवना-
ज्ञावनतान्य-मन्त्रि-निचयं कवितागुण-पङ्कजासनम् ॥
पुणिस-चमूपनेम्बेसेव शासन-वाचक-चक्रवर्त्तिगेन्-
तेणिसलोर्ड पोगर्च्चे तनगागिरे पुट्टिद **चामराज** ना-
कण कुमरय्यनेम्ब रतुन-त्रय-मूर्त्तिय पुत्रनोप्पिदं ।
पुणिसम-दण्डनाथनुदितोदित-चाम-चमूप सम्भवम् ॥
अवरोळगे पिरिय चावन । युवतियरप्परसिकब्बेगं चौण्डलेगं ।
भुवन-प्रसिद्धरात्मोद्- । भव [रादर् पु] **पुणिस**मय्यनुं बिट्टिगनु
कोळनेन्तम्भोजमुणमल् नलिदु महिमे-वेत्तिप्पुवन्तागळु श्री- ।
निळयं विख्यातवृत्तं **पुणि**सेगनवनिं बिट्टिगं पुट्टे मित्रर्-
गळिगेल्लं सप्प्....उद्भविसितखिळ-भव्य-व्रजं नाडेयुं निश्-
चळ-चेतोजातरादर्द्धरेयोळेसेदुदन्ता-महामात्य-गोत्रम् ॥
चावङ्गं सत्प्रियर्दि । भावकियेनिपरसिकब्बेगं सुतनोगेद ।
केवळमे नेगर्द पोय्सळ- । भू-वनितेश्वरन सन्धिविग्रहि **पुणिसं** ॥
तोदवनदिर्प्पि कोङ्गरनडङ्गिसि पोलुवरं पोरळिच मा- ।
णदे **मलेयाळर**म्मडिपि **काळ**-नृपाळन तोळ विक्रमम् ।
वेदरिसि पोक्कु नील-सिळेयं जयलक्ष्मिगे कीर्त्ति[...] मा-

डिद विभु विट्टि-देवन महा-सचिवं पुणिसं वळाधिकम् ॥
अदटिं पोय्सळ-भूपनोर्म्मे वेस⋯नीळाद्रियं कोण्डु तन्- ।
ओदविन्दं मलेयाळरं कदनदोळ् वेङ्कोण्डु तत्साहसा- ।
भ्युदयं कैकोळे केरळाधिपतियागिर्देम् बयल्-नाडनं ।
पदर्पिं काणिसि कोण्डनिन्तु पुणिस-श्री-दण्डनाथाधिप ॥
केट्ट नियोगि विट्टु मोदलिल्लदे वन्द कृपीवल मोदल् ।
गेट्ट किरातनोलगिसलारदे सेवकनागे गेट्टुदम् ।
कोट्टु निरन्तरं जगमनिन्तभिरक्षिसुतिर्प्प पेम्पोडम्-
बट्टिरे दण्डनाथ-पुणिसं नेगळ्दं भुवनान्तराळदोळ् ॥

दरमिर⋯लीयदे ग- । गर परियिं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सा-
सिरद वसदिगळनाळङ्करिसिदपं पुणिस-राज-दण्डाधीशम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु सक-वरुष १०३९ नेय दुर्म्मुखी-संवत्सरद जेष्ठबहुळ १ व मूलार्कवारदन्दु तुलारासिय बृहस्पति-लग्नदल्लु एण्णे-नाड अरकोत्तारदल्लु श्री-सन्धि-विग्रहि दण्डनायकपुणिसमय्य माडिसिद त्रिकूटद-बसदियोळगागि बसदिगळ्गे बिट्ट गद्दे आ-ऊर हडुवलु अण्ण-मारेय-गेरेय केळगे⋯⋯खण्डुग हट्टके गुळि १००० आ-ऊर तेङ्कण हेग्गेरेय कीळेरियल्लु गद्दे खण्डुग ऐदके गुळि ५०० बेद्दले⋯⋯ हरदरि खण्डुग एरडक्के ९ गुळि ४००० आ-ऊर हळ्ळि सहित जक्कि-कोळग धर्म्म-गोळ दान-गोळग कळदु⋯⋯गुळि ओन्दु होरें गाण-दलोम्मान एण्णे तोण्टद गुळि १०० आ-ऊर बडगण कोडेयनहळ्ळि सहित⋯⋯पुणिस-जिनालयक्के धारा-पूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति (रीतिके अनुसार अन्तिम श्लोक)

वसदिगे बिट्टी-धर्म्मम- । न् ओसेदु करं सलिसदिर्द्दं·····।
····· ·················।·····ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुं ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा या स्तुति। इस समय अनेक पदोंसे अलङ्कृत वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्टिग-होय्सळदेव कोङ्गु तककी गङ्गवाडि ९६००० की जमीनके ऊपर तलकाड और कोलाल-पुरमें सुखसङ्कथा-विनोदसे राज्य कर रहे थे।

समन्तभद्र, देवाकलङ्क, पूज्यपाद, वादिराज, द्रविड़ान्वयके मल्लिषेण, श्रीपाल, और अनन्तवीर्य (इनका वर्णन किया गया है)। पुणस राज-दण्डाधीशके देव जिन थे, गुरु अजित मुनिपति थे, और पोय्सल राजा उनका शासक था। उन्होंने एक जिनमन्दिर बनवाया। पुणिसम्मकी पत्नी पोचले थी। उनके पुत्र चावण, कोरप, और नागदेव थे। उनको क्रमसे चामराज, नाकण, और कुमरय्य भी कहते थे। वे रत्नत्रयमूर्त्तिके समान थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र चावण तथा उनकी पत्नियों अरसिकव्वे और चौण्डलेसे पुणिसमय्य और बिट्टिग उत्पन्न हुए। चावन और अरसिकव्वेका पुत्र पोय्सल राजाका सान्धि-विग्रहिक मन्त्री पुणिस हुआ। बिट्टिदेवका महा-सचिव पुणिस था। बिट्टिदेवने तोद लोगोंको डरा रक्खा, कोङ्ग लोगोंको भूगर्भमें भगा दिया, पोलुव लोगोंको कत्ल कर डाला, मलेपाळ लोगोंको मार डाला, काल नृपतिको भयभीत कर दिया और नील-पर्वतपर जाकर उसकी चोटीको जयलक्ष्मीके स्वायत्त कर दिया। पुणिस-दण्डनाथाधिपने एकवार पोय्सल राजाकी आज्ञा मिलनेपर नीलाद्रिपर कब्जा कर लिया और मलेयाल लोगोंका पीछाकर उनकी सेनाको कैदी बना लिया और इस तरह वह केरलाधिपति बन गया और इसके बाद फिर खुले मैदानमें आ गया। जो व्यापारी बिगड़ गये थे, जिन किसानोंके पास बोनेके लिए बीज नहीं था, जिन हारे गये किरात-सरदारोंके पास कुछ भी अधिकार नहीं रह गया था और जो उसके नौकर हो गये थे, तथा सबको जिसका जो जो नष्ट हो गया था वह सब उसने दिया और उनके पालन-पोषणमें मदद की। बिना किसी भय-सञ्चारके, गङ्गोंकी ही तरह, उसने गङ्गवाडि ९६००० की वसदियोंको शोभासे सज्जित किया।

पुण्णे-नाड्के भरकोट्टारमें अपने द्वारा बनवाई गई त्रिकूट बसदिकी बसदियोंके लिये उसने भू-दान किया।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl, n° 83.]

२६५

मुगुलूर—कन्नड़

[वर्ष हेमलम्बी [१११७ ई० ? (लू० राइस)]

(इस लेखकी पहली १४ पंक्तियाँ इसी नामके तालुकेके ३८० वें लेखकी पंक्तियोंसे मिलती हैं)

............पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरु अवर शिष्यरु वासुपूज्य-देवरु हेमलम्बि-संवत्सरद वैशाख-बहुल त्रयोदशी-बुधवारदन्दु सल्लेखन-समाधि-मरणदिं मुडिपि स्वर्ग्गके सन्दरु मगलमहा श्री श्री श्री

[द्रमिल संघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुङ्गलान्वयकी प्रशंसा। पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य वासुपूज्य-देवने (उक्त मितिको), सल्लेखना धारण करके, देहत्याग किया और स्वर्गको पहुँचे।]

[EC, V, Hasan tl, n° 131.]

२६६

हळेबीड—संस्कृत कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, लगभग १११७ ई०]

[इसका लेख नहीं है, मात्र 'Mysore ins Translated' में नं० ११७ के शिलाशासनमें लुई राइसके द्वारा अनुवाद[1] दिया हुआ है]

[लेखमें सर्वप्रथम जिनेश्वर पार्श्वनाथको लक्ष्य करके मङ्गलाचरण है। पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन और उसके मन्त्री गङ्गराजकी प्रशंसा है।]

[Mysore ins. translated, n° 117, tr.]

---

१ अनुवाद लम्बा होनेसे मूल लेख भी लम्बा मालूम पड़ता है।

२६७

निदिगि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ४२ वि. चा०=१११७ ई०]

[निदिगि (विदरे परगना)में, दोड्डमने नविकल्प-गौडके खेतमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्लदेवर विजय-राज्यमु····त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

उत्तममप्प·······················तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विषयमासननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रन् ।
गात्त-जयं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे म····मूड तोण्डे-ना- ।
डत्तपराशेगम्बुनिधि चेर्वोळेयिप्प····कोङ्गु म- ।
त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम् ।
बत्तरु-सासिरं-दले माडिदरिन्तुटु गङ्गरुज्जुगम् ॥

····गंगर्नि भय- । मिळ्ळद हरिवर्म्म विष्णु-नृपर्नि निजदिं ।
बळे तडङ्गाल्-माधव- । नळि बळि चुर्च्चुवाय्द-गङ्ग-नृपाळं ॥
श्रीपुरुषं शिवमारं । भूपाळ कृतान्त भूपना-सयिगोट्टम् ।
द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानल-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥

म-येरिद मारसिङ्गना- । कुरुळ-राजिगं पेसर्वेत्ता- ।
मरुळं तन्नृप-तिळकन । पिरियमगं सत्यवाक्यनचळितसौर्य्यम् ॥
गर्व्वद-गं""वसुधेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तियगङ्गम
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल-भू-नृप-तिलकम् ॥
तेज्जं मु""हसिय कौ- । वुज्जं पिडिदडसि कीळ्वना-मद-करिय
पिङ्गद निलिसुव साहस- । तुंगं केवळमे नेगळ्द रकस-गङ्गम् ॥
इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरोळा-दडिगन मगं चुच्चुवाय्द-गङ्ग
नातन सुतं दुर्व्विनीतनातन तनेयं श्रीविक्रमनातन पुत्र भूविक्रमं ।
तत्सूनु श्रीपुरुष-महाराजम् । तत्-तनेयं सिवमार-देवम् । तत्-तनू-
भवनेरेय""तत्पुत्रं वूतुगवेम्मोडि । तदात्मजं मरुळ-देवं । तदनुज
गुत्तिय-गङ्गनातन मम्मं मारसिंग-देवनातन···गं क""ग-
देवनातनमगं वम्मं-देवनिन्तु गंग-वशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।
दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुल-संधरणः ।
श्री-मूलसंघ-नाथो नाम्ना श्री सिंहनन्दि-मुनिः ॥
श्री-मूलसंघ-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-कोण्डकुन्दान्वय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल- । लाम क्राणूर्ग्गणं जनानन्द-करम् ॥

आ-गणदन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ मालिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृताशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी-निकायः
समजनि जिनधर्म्मो निर्म्मलो वाळचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैनधर्म्माम्बर-हिमकरनुद्यत्-तपो-राज्य-लक्ष्मी- ।

रमणं भूमण्डलाधीशनुमुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खरकिरणं श्री-**प्रभाचन्द्र-सिद्धा-** ।
न्त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागम् ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमत-रक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा- ।
अणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने **गुणनन्दि-देव**रेसेदर्द्धरेयोळ् ॥

तत्-सधर्म्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के···विरुदं माण् माणेले **सांख्य** वा- ।
ग्वळम नच्चदे नीनडङ्गेडरदिऱ् **चार्वाकनैय्यायिका** ।
मलेयल् बेडिरु मट्टमेके चलदिन्दी-अन्दपं केम्मनण्- ।
डलेयल् श्री-**गुणचन्द्र-देव**नमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

गङ्गा-वारि-सु-शैवळ सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थळः ।
शम्भुः कण्ठ-विलग्न-घोर-गरळश्चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
कैलासो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्यं कथं वच्म्यहम् ।
कीर्त्या. सह **माघनन्दि**-यमिनश्चन्द्रातपोधच्छ्रिया ॥

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-कल्याणाष्ट-महा-पातिहार्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-विराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गत-सदसदादि-वस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवण-सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धौत-विशुद्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुं सकळ-भुवन-प्रसिद्धरुं शम-दम-यम-नियम-नियमितान्तःकरणरुं वाक्सुन्दरी-स्तन-मण्डन-रत्नाभरणरुमप्प श्रीमत्**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव**रेन्तेन्दडे ।

आशीदाशान्तराळ-प्रथित-पृथु-यशो-व्योम-गंगा-तरंगः ।
चञ्चच्चारित्र-धात्री-भवदति-ललितोदार-गम्भीर-मूर्त्तिः ।
वाक्-कान्तोत्तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवालः ॥
सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणश्श्री-प्रभाचन्द्रदेवः ॥

अभिनव-गणधर-रूपं । त्रिभुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुह-भृङ्ग ।
शुभ-मति-त्रैविद्यास्पद-। नुभय कवीन्द्रोत्तम प्रभाचन्द्र-बुधम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

शशि-विशद-कीर्त्ति निर्म्मद-।नसदृश-गुण-रत्न-वार्धि क्षाणूर्ग्गणसद्-।
विसरुह-वनार्क्कनेम्बुदु । वसुमतियोळनन्तवीर्य्यसिद्धान्तिगरम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तिय-। ननुनयदिं तळेदु पञ्च-समितिय वशदिन्-।
दनुवशनाद तपोनिधि । मुनिचन्द्र-व्रतिपनखिळ-राद्धान्तेशम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्त्तेय तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डं भुज-बळ-गंग-पेर्म्माडि-वर्म्म-देव ।

बळवद्-वैरिगळं पडल्पडिसि गेल्दुग्राजियोळ् भाण्ड्ने ।
चलदिन्दं परियिट्ठु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही-।
तळमं कोण्डु धरित्रि वण्णिसुविन श्री वर्म्म-देवं मही-।
तळमं तोळ्-वलदिं निमिर्च्चिदनिदेम् पेर्म्माडि शौर्य्यात्मनो ॥

भरदिन्दान्तदटङ्गं । शरणेन्द नृपङ्गनेरदु वन्द नरङ्गम् ।
सुरगिरि वज्रागारं सुर-भूजं वर्म्म-देवनदटरदेवम् ॥

इन्तेनिसिद वर्म्म-देवन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी गुणावली-भूषण-भूषिताङ्गी ।
नितम्बिनीनां कळशायमाना विराजते गङ्गमहाधिदेवी ॥

निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महागतिगुत्सवमं निमिर्च्चुवा-।
त्मजरेनिसिर्द्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव मार·········।
स-जयदे सत्य-गङ्गनृपनुं कलि-रकस-गङ्ग-देवनुं।
भुजबळ-गङ्ग-भूभुजनुमार्ज्जिसिदर्ज्जसमं निरन्तरम् ॥
स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रनोळ् सेणसुवं गम्भीरने वार्धियोळ्।
पुरुडिप्पं कलिये सुरेन्द्र-सुतनं मेच्चं महा-चागिये।
धुर-भूजक्कोरे-गट्टुवं चदुरने पाञ्चाळनं गेल्दनन्-।
दिरदी-धारणि बण्णिकुं रण-जय-प्रोत्तुंगनं गङ्गनम् ॥
नुडिदुदे नन्नि माडिदुदे शासनमित्तुदे राम-रेखु मार्-।
प्पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिर्द्दुदे मृत्यु परोपकारदोळ्।
नडेदुदे बट्टे सद्गुणमे मेय्येने निन्नवोलिन्तु नीतियोळ्।
नडेव नृपेन्द्रनावनिळेयोळ् कलि-गंग-भूपती ॥

आतन तम्मम्।

गज-रिपु-विष्टरादि-विभवोदय पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पं-।
कज-मद-भृङ्ग-गङ्ग-कुळ-मण्डन-दण्डित-वैरि-वर्ग मा-।
वजनिभ-मूर्त्ति दिग्वलय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ्।
भुजबळ-गङ्ग-भूप निनगार् दोरे मण्डळिकैक-भैरव ॥

आतन-पट्ट-महादेवि ॥

पट्टद····रननुजं। पट्ट····भूपङ्ग गङ्गनाडिगे तळेदळ्।
पट्टमनेन्दडे गङ्गन। पट्ट-महादेवियन्तु··············॥
गङ्ग-महादेवियगं भुजबळ-गङ्ग-देवनग्र-तनूजनेन्तेन्दडे।
कलियनदिर्द्द····एन्दु निमृदेत्तिद बाहुवे·········।
····ळळद्··········मरे·······सले·······।

....नासे- गेयन्....अळवि..........नन्नियगङ्गनिन्तु मण्डळिक ।
....प्रद्....वेसरं देसेयन्तु वरं निमिर्चिद ॥
....दाड्डा-लते पर्व्वि-देण्-देसेयोळ् विद्युज्जय-स्तम्भविन्त् ।
इवेनल् दिग्गजवर्त्ति............कट्टल् केट्टिदुत्तुंग-हस्- ॥
तवनान्तन्य-बळक्के दोर्प्प-नेवर्दि कोदण्डदत्तङ्गे नी- ।
ळुव नीन. ये गङ्गनात्मकर....संग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥
जस......................अखिळाशा-देवतापाङ्ग-रश्- ।
मि-सहस्रं चमरं करीन्द्र-रिपु....विक्रमं.........आ- ।
गे सु-साम्राज्य....ताभिवृद्धि विभवं मेच्चुत्तिरल्.... ।
.........इरे सत्य-गङ्गनेसेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

स्वस्ति सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं कुवळाळपुरवराधीश्वरं नन्दगिरि-नाथ.........मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-त्रिरिश्वनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादं विचकिळामोदं नन्निय.... त्तरंगं गंग-कुळ-कुवळय....वेन्द्र दर्प्पोद्धतारातिवनज-वन-वेदण्डं कुसुम-कोदण्ड गण्डरगण्ड दुट्टरगण्डं नामादि-समस्त ....श्रीमन्नन्निय-गङ्गं नेलेवीडिनलु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे श्रीमतु कळंबूरु-नगराधिपति पट्टणस्थ....... ......माडिसिद वसदियेन्तेन्दडे ।

इद्दु भू-देवते होत्त होङ्गळशमो श्रेयस्सुधा-भार-पू- ।
रदिना..................त्रय-मण्डना- ।
स्पदमो तानेन्दु..................लोक मनो- ।
मुदर्दि वण्णिसे बर्म्मि-सेट्टि जिन-चैत्यावासमं माडिदम् ॥

भुवन.......................महत्त्वर्दि.........चातुर्व्वर्ण-संवक्क-मीष्टम-नित्तेत्तिसि जैन-गेहमनुत्साह-सन्दोह.........

....|

....दनुजनिष्ठ-शिष्ट-जन-कल्प-कुजं सदनोपशोभिता-|

भ्युदय-विभूतिगास्पदनुदात्त-कळाधिपनीतनेम्ब....|

........उदितोदितं नेगळ्द्नी-वसुधा-तळदोळ् निरन्तरम् ||

वर्म्मि-सेट्टिय वनिते |

तनगनुवशेयेनिसि जग-| ज्जन-संस्तुत-शील-गुण-गणाळ....|

....|.................राजिसुतिर्द्दळ् ||

अवरिर्व्वर्गमगण्य-पुण्य-जनित-श्रीरायुरारोग्य-वै-|

भव-सम्पन्-महिमौघ.................................|

....माडुतिर्-|

प्प विळासं वेरसोळ्पुवेत्तनवनी-चक्रं मनं-गोळिवनम् ||

अन्तवर् म्माडिसिद वसदिय पूजा-विधान...........................

र्षियर्गाहार-दानकं **श्रीमच्चालुक्य-विक्रम-कालद ४२ नाल्वत्तेरड-नेय मनुमथ-संवत्सरदुत्तरायण-संक्र** ....पुण्यतिथियन्दु श्रीमन्-**नन्निय-गङ्ग-पेम्र्माडि-देव**निन्दं कुडल्लु पडेदु **वर्म्मिसेट्टियर् म्मेषपाषाण-गच्छाम्बर-शरच्चन्द्र**'''**शुभकीर्त्ति-देव-भट्टारकर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं सर्व्व-नमस्यं सर्व्व-बाधापरिहारवागि वसदिगे कोट्ट वृत्ति

(आगेकी ५ पंक्तियोंमें दान और सीमाकी चर्चा है तथा अन्तिम वाक्य-पद्धति)

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः |

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ||

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें नं० २७७ शि० ले० के अनुसार ही गङ्ग राजाओंकी वंशावली तथा क्राणूर-गच्छके सिंहनन्दी आदि आचार्योंकी परम्परा दी हुई है। अन्तमें जिस बातके लिये यह लेख लिखवाया गया है वह यह है—

गङ्ग महादेवी और भुजबल गङ्ग-देवका (प्रशंसासहित) ज्येष्ठ पुत्र नन्नियगङ्ग था, (जिसका छोटा भाई) सत्य गंग था।

जिस समय सत्यवाक्य कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर नन्निय गङ्ग सुख-शान्तिसे राज्य कर रहे थे कलम्बूरु-नगराधिपति बर्म्मि-सेट्टिने एक जिनमन्दिर खड़ा किया (इसकी प्रशंसा)। अपनी बनवाई हुई बसदिकी पूजा तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये (उक्त मितिको) नन्निय-गंग-पेर्म्माडि-देवने (उक्त) भूमि दी और बर्म्मि-सेट्टिने उसे लेकर मेष-पाषाण-गच्छके शुभकीर्त्ति-देव-भट्टारकको पाद-प्रक्षालनपूर्वक अर्पित कर दिया]

[EC, VII Shimoga tl. n° 57.]

२६८

श्रवणबेल्गोल—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०३९=१११७ ई०]

[जै. शि. सं., प्र० भा०]

२६९

कम्बदहल्लि—संस्कृत और कन्नड

[शक १०४६, वर्ष विलम्बि (१०४० शक=१११८ ई० [लु. राइस])

[कम्बदहल्लि (बिण्डिगनवले प्रदेश)के, कम्बदराय स्तम्भपर]

(दक्षिणमुख) भद्रमस्तु जिन-शासनस्य ॥

श्री-सूरस्थ-गणे जातश्चारु-चारित्र-भूधरः ।
भूपालानत-पादाब्जो राद्धान्तार्णव-पारगः ॥
आदावनन्तवीर्यस्तच्छिष्यो बालचन्द्र-मुनि-मुख्यस्
तत्सूनुर्जितमदनस्सिद्धान्ताम्भोनिधिर्प्रभाचन्द्रः ॥
शिष्यं कल्नेले(?)देवस्तस्याभूत्तन्मनीषिणस्सूनु-
र्विध्वस्तमदनदर्प्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिर्मुख्यः ॥

तन्मौखो(?)विबुधाधीशो **हेमनन्दि**मुनीश्वरः ।
राद्धान्त-पारगो जात**स्सूरस्थ-गण**-भास्करः ॥

तदन्तेवासिनामाद्यो माद्यतामिन्द्रिय-द्विषाम् ।
यतिर्**व्विनयनन्दी**ति विनेताभूत्तपोनिधिः ॥

नाडोळगिदेसेद गोसने । बाडङ्गव्वोरॆगिदन्देमुनिवनितेयरोळ्
कुडिदनेम्बी-नुडियद- । नेडिपुदेले **विनयनन्दि**-देवरचरितं ॥

ओन्दने केळिं बुध-जन- । मेन्दिदक्कं साक्षि नीमे वसुधा-तळदोळ्
सन्दिव्द वधू-निवहं । तन्देय वधुवेन्दपोम् प्रियम्वद-दानि ॥

व्रत-समिति-गुप्ति-गुप्तो । जितमोह-परीषहो बुध-स्तुत्यो ।
हतमदमायाद्वेषो यतिपति तत्सूनु**रेकवीरो**ऽभूत् ॥

(पूर्वमुख) दानद पेम्पु दीन-जनकोटिगे कल्प-कुजाळि नोडे सन्-
मानद पेम्पु भव्य-जन-सङ्कुळमन्तणिपित्तु दान-सन्-
मान-तपोपवास-गुण-सन्ततियं सले ताळ्दिदर्ज्जगन्-
मानिगळे**कवीर**-मुनि-नाथरे जङ्गम-तीर्थवल्लरे ॥

तस्यानुजस्सकळ-शास्त्र-महार्ण्णवोऽभूद्
भव्याब्ज-षण्ड-दिनकृन्मुनि-पुण्डरीको ।
विध्वस्त-मन्मथ-मदोऽमळ-गीत-कीर्त्तिश्-
श्री-**पल्ल-पण्डित**-यतिर्ज्जितपापशत्रुः ॥

पल्लकीर्त्तिर्य्यथा रूढः पुरा व्याकरणे कृती ।
तथाभिमान-दानेषु प्रसिद्धः **पल्ल-पण्डितः** ॥

पल्ल-पण्डित-नागेन ददता दानमद्भुतम् ।
भूषितं कलि-कालेऽस्मिन् गङ्ग-मण्डल-काननं ॥

सूरस्थ-गण-गीर्व्वाण-मार्ग्गमालम्बतेऽधुना ।
दान-प्रभा-प्रकाशोऽयं पल्ल-पण्डित-चन्द्रमाः ॥
दान-वारि-परिपूरित-सिन्धुर्न्नष्टमोहतिमिरो गुण-बन्धुः ।
भव्यलोककुमुदाकरचन्द्रः पल्लपण्डितमुनिर्हततन्द्रः ॥
नानादेशसमागतेन गुणिना लोकेन संसेवितो
जीर्ण्णेनाभिनवेन नूतन-तनु-श्री-लक्षणैर्ल्लक्षितः ।
शुम्भद्भूरिगुणालयो मतिमतां अग्रेसरो राजते
देशेऽस्मिन्नभिमानदानिकमुनिस्सर्व्वार्थ-चिन्तामणिः ॥
विद्वज्जनानन्दनकारणेन दानेन भक्त्या मुनि-पुङ्गवेषु ।
दिगन्तविश्रान्तयशोनिधानं विराजते पण्डित-पुण्डरीकः ॥

(उत्तरमुख) नानाभिमानिजन-दान-विधान-वीतो
धीमानशेषजनता-मनसोऽभिरामः ।
जातोऽभिमानि-पद-पूर्व्वक-दानि-नाम्ना
ख्यातः खलीकृत-महा-कलि-काळ-दोषः ॥
साभिमाने जनेऽभीष्टमभिमानमखण्डयन्
जातोऽभिमानदानीह यथार्थः पल्लपण्डितः ॥

अतिसयमागे दानदोळे वेर्व्वेरिदोळ्पुनयोक्तियेम्ब सन्-
मतियोळे पुष्टि शास्त्रदोळे दाक्षुडिनोगि विशेषमप्प सन्-
नुत-गुणदोळियिन्दे मडलागि दिगन्तमनेय्दे पल्ल-पण्-
डितर विलास-कीर्त्ति-लते पर्व्विदुदुर्व्विगे चोद्यमप्पिनम् ॥
सुर-करिय काम-धेनुव । सरदभ्रद कान्तियं पुदुङ्गोळिसुत्तुं ।
शरदमळचन्द्रविम्बद । दोरेगे मिगिल् पाल्यकीर्त्ति देवरकीर्त्ति ॥
दानमपरिमितमोळपभि- । मानं सत्कविते शास्त्रनिपुणते कीर्त्ति-

स्थानमेने सन्दरीगळ् । दानिगळभिमानदानिगळ् वसुमतियोळ् ॥
वननिधि-वेष्टित-धात्रियो-। ळनवरतं नेरेद दीन-जनरिङ्गेल्लम् ।
घन-कनकं माळ्परस्सन्-। मनदिन्दं पाल्यकीर्त्ति-पण्डित-देवर् ॥
ए-वोगळ्वुदण्ण विभुध-ज-। नावळिगं वेडिदर्त्थि-जनकन्निच्चन् ।
देवतरु कुडुव तेरॅदन्-। तीवर्स्सले पल्ल-पण्डितर् व्वसुमतियोळ् ॥
(पश्चिममुख) पुडवियोळग्गळ्नेगळ्द दानिगळिन्निवरन्नरारो पेळ् ।
नुडियदिरारुमं मरुळे कल्प-महीजद कोडिनन्ते कोड् ।
उडुगदे नग्न-भग्न-नट-गायक-दीन-जनक्के सन्तोसं-
वडे कुडुतिर्प्पे पेम्पिनळवच्चरिपाप्तभिमानदानियोळ् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु-गोण्ड भुजबळ **वीर-गङ्ग होय्सळ-देवरु** सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि महासमन्ताधिपति श्रीन्महाप्रधानि द्रोह-घरट्ट पिरिय-दण्ड-नायक **गङ्ग-राज तलेकाडं** कोलुवल्लि मुङ्गोळ बेडि-कोण्डु गेल्दडे मेच्चिदेम् बेडिकोळ्केने **श्री-बिण्डिगनविलेयतीर्त्थद्के** तळ-वित्तियम्बेडे श्री**विष्णुवर्धन-होय्सळ-देवरु** कारुण्यं गेय्दु कोडे कोण्डु **शक-वरिस *१०४६ विलम्बि सम्वत्**-सरद श्रीमूलसंघद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद **कोण्डकुन्दान्वयद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकम्माडि बिट्ट दत्ति पिरिय-केरॆयं तूबिन बडगण हळदिं तेङ्कक् कौङ्गिन तोण्ट ओळगागि बिट्ट गद्दे सलिगे मूवत्तु हळ्ळियमुन्दण लक्क-समु.............म्म गट्टमुं अन्दूर-कि [रि] यकेरॆयुं पक्षोपवासि........ बसदिय हडवण-देसे-वर । ई-धर्म्ममनळिदव गङ्गेय तडिय हदिनेण्टु-सासिर कविले कोन्द दोसदल्लु होद ॥

१ लेकिन शक १०४६=क्रोधि; विलम्बि=१०४० ।

[जिनशासनकी समृद्धि-कामना । अनन्तवीर्य सूरस्थगणमें उत्पन्न हुए । उनके शिष्य बालचन्द्र मुनि उनके पुत्र प्रभाचन्द्र, उनके शिष्य कल्नेलेदेव, उनके पुत्र अष्टोपवासी मुनि उनके शिष्य हेमनन्दि मुनि । इनके शिष्योंमें एक विनयनन्दि नामक यति थे जिनके विषयमें नाड्-देशमें यह प्रवाद फैला कि वे शहरोंमें श्राविकाओंके पास जाते हैं; लेकिन यह प्रवाद सही नहीं था । विद्वानो, इस बातको सुनो कि इस विषयमें स्वयं तुम्हीं लोग साक्षी हो कि वे अपने पिताकी पत्नी (अर्थात् अपनी माँ) से जैसा बर्त्तन करते थे वैसा ही बर्त्ताव स्त्री-समुदायसे करते थे । उन अनन्तवीर्यका पुत्र एकवीर था जो अपने गुणोंसे 'जङ्गम तीर्थ' कहलाता था । उसका छोटा भाई पल्ल-पण्डित था । जैसे पूर्वकालमें पाल्यकीर्ति व्याकरणमें प्रसिद्ध था वैसे ही दान देनेमें यह प्रसिद्ध था । आगे उसके दानोंकी प्रशंसा की गई है, उसको नाम भी 'अभिमानदानी' और 'पाल्यकीर्त्तिदेव' दिये गये हैं ।

जिस समय वीर-गङ्ग-होय्सल-देव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपना राज्य चला रहे थे; तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गराज महाप्रधानको, तलेकाडुपर कब्जा करनेसे पहिले, उन्होंने कोई एक वर माँगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने गोविन्दवाडि जिलेके लिये भूमि-दान माँगा और विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवने उसको वह दिया । गङ्गराजने भी उक्त भूमि पाकर शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवके पादप्रक्षालन कर उन्हें सौंप दी । शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देसिग-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कोन्द-कुन्दान्वयके थे । शाप ।

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 19]

२७०, २७१

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[क्रमशः शक १०४१=१११९ ई० और

शक १०४२=११२० ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२७२

बङ्कापुर—कन्नड़

[वि० चा० का ४५ वाँ वर्ष (=शक १०४२=११२० ई० [फ्लीट] ।

[बायें हाथकी ओरके शिलालेखमें करीब १७-१७ अक्षरोंवाली १७ पंक्तियाँ हैं। इसमें एक दानका उल्लेख है जो माविगवुण्ड और दूसरे गाँव-प्रमुखोंके द्वारा शुभकृत् संवत्सरमें, चालुक्य विक्रमके ४५ वें वर्षमें, किरिय बङ्कापुरके जिनमन्दिरको किया गया था।]

[IA, IV, 205, n° 7, a.]

२७३

मत्तावार—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका पर संभवतः लगभग ११२० ई०]

[मत्तावारमें, पार्श्वनाथ-बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

मरुळहळ्ळि-जकवे हट्टिदेडे गे····गन्ति मत्तवूरद् वसंदि तपस्सु माडि सिद्धियादळु अब्बेय माजकन मग मारे[य] कल्ल निल्लिसिद

[मरुळहळ्ळिके जकव्वेके द्वारा प्रेषित गै······गन्तिने मत्तवूरकी बसदिमें तपश्चरण करके सिद्धि प्राप्त की। अब्बेय माजकके पुत्र मारेयने यह पाषाण स्थापित किया।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl. n° 52]

२७४

सुकदरे—संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ११२० ई०]

[सुकदरे (होणकेरी परगना), लक्कम्म मन्दिरके सामने पड़े हुए पाषाणपर]

··

·· ।

·········कल्पवृक्ष-सदृशं कीर्त्यङ्गनावल्लभम्

श्री··································पुण्याकरम् ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोळु गण्ड श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल तलकाडु गोण्ड भुजबल·········वर्द्धन पोय्सळ-देवरु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे·············व ।

जिननिष्टदेय्वमजितं । मुनिपति गुरु पोय्सळेश·············

एन्चले तायेनेल्केनेसे- । दनो तां जक्कि-सेट्टि यात्रेय-गोत्रपवित्र ।

·········नेगळ्द जक्कि-सेट्टिय गुरु-कुलमदेन्तेन्दडे ।

श्रीमद्द्राविडसंघ·················वळि-लीलेयिम् ।

श्रीमत्स्वामि-समन्तभद्रवरिं भट्टाकलङ्काख्य···· ।

·················हेमसेनरवरिं श्रीवादिराजाङ्करन्त्

आमाहात्म्यविशिष्टरिन्द्जितसेन············· ॥

····परम-मुनिय शिष्यर् । प्पापहरर्म्मल्लिषेण-मलधारि···।

····················र् । म्भूपालस्तुत्यरेसेदरवनीतळदोळ् ।

धनदोळ् धनदं वि···· ।

साहसदिं चारुदत्तं चागदोळे जीमूतं जक्कि-सेट्टि········ ।

·······दानि विद्वज्- । जनविनुतं धर्म्मजलधिवर्द्धितचन्द्रम् ।

मनु-नीति-मार्ग···· । ·············जक्कि-सेट्टि गोत्र-पवित्रम् ॥

अन्तप्प जक्कि-सेट्टि तम्मूर सुकु············माडिसियदक्के विट्ट दत्ति आवूर् पीसान्यद केरेयं कट्टिसि······केरेयु वसदियिं बडगलु बेद्दले बेदे खण्डुग एरडु मत्त·········वायाव्यद किरुकेरे सहितवागियुं आ-ऊर देव-गोळग धर्म्म होरे-तिप्पे-सुङ्क गाणदलरवानेण्णे इन्तिवुम शक-वर्ष···········संवत्सरद ज्येष्ठ शु० १२ बड्डवार स्वातिनक्षत्रदन्दु

बसदि·········करणकवाहारदानकं दयापाल-देवगें धारापूर्व्वकं·········
(सदाका अन्तिम श्लोक) मङ्गलमहा श्री श्री नमोऽर्हत्पा············ ।

··तन्नार्प्पिनि ।
मनमं तन्न वसके तन्दु बळियं सत्-क्षान्तियं·····न् ।
अनेक-पुण्य-वरिष-प्रभावदिं भावदिं················ ।
·· ॥
·····सुर-दुन्दुभिगळेसेये सूर-गणिकेय·············पोगळ्विनेगं ॥
जक्कि-सेट्टिय तम्मं·········

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय (अपनी हमेशाकी उपाधियों सहित), विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे:—

आत्रेय-गोत्रको पवित्र करनेवाले जक्कि-सेट्टिके 'जिन' इष्टदेव थे, अजित-मुनिपति गुरु थे, पोय्सल राजा थे और एचल माता थी ।

उस प्रसिद्ध जक्कि-सेट्टिकी गुर्वावली निम्न भाँति है:—द्राविळ (ड) में············स्वामी समन्तभद्र हुए,–उनके बाद भट्टाकलङ्क;···हेमसेन; उनके बाद वादिराज;······अजितसेन; परममुनिके शिष्य, पापहर मल्लिषेण मलधारी ।

जक्कि-सेट्टिकी और भी प्रशंसा । इस जक्कि-सेट्टिने अपने गाँव सुकदरेमें एक 'बसदि' और उसके दक्षिण-पूर्वमें एक तालाब बनवाया । 'बसदि' और सरोवरके खर्चके लिये (लेखमें वर्णित) भूमिका दान दिया । साथमें दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटासा तालाब, देवका 'कोलग'. बोझोंका खर्च और खादके गड्ढे, और तेलके कोल्हुओंसे आधा मन तेल, ये सब चीजें उत्सवों और आहारदानके लिये दीं । ये सब चीजें दयापाल-देवको सौंप दीं ।

जक्कि-सेट्टि और उसके छोटे भाईकी प्रशंसा ।]

[EC, IV, Nagamangal tl., n° 103]

२७५

मुत्तत्ति—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका; अनुत करके लगभग ११२० ई०]

[माधवराय मन्दिरके नवरंग मण्डपके चार खम्भोंपर]

(दक्षिण-पश्चिमी खम्भा) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युम (उत्तर-पश्चिमी) णि सम्यक्त्वचूडामणि तळकाडु-गोण्ड भुजबळ वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवरु विनयादित्य-दण्ड-(दक्षिण-पूर्व खम्भा)नायक माडिसिद होय्सळ-जिनालयक्के बिट्ट दत्ति श्री-मूलसंघ देशिय-गणद पो(पु)स्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमन्मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवर शिष्यरु (उत्तर-पूर्वी खम्भा) श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे संक्रान्तिव्यतीपात-दन्दु कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति हिरिय-केरेय केळगे मोदलेरिय गद्दे इत्तु-सलिगेयदु ओन्दु सलगे तोण्टेयदुं बसदिय मुन्तन इम्मडल्लु बेदलेयुमं बळ्ळिगद्देयुमं बसदिय बडगण..............
(दक्षिण-पूर्वी खम्भा) विनयादित्यालय

[(अपने उन्हीं पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवने (उक्त) भूमिका दान श्री-मूलसंघ, देशीय-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कुन्दकुन्दान्वयके मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवके शिष्य प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवको विनयादित्य-दण्ड-नायकके द्वारा बनवाये गये होय्सळ-जिनालयके लिये किया।]

[EC, V, Hassan tl., n° 112]

२७६

कोनूर (जि० बेलगाँव)—कन्नड़-भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका ४६ वाँ वर्ष=११२१ ई०]

परिचय

[इस लेखमें रायणव्य नायक, मारय्य नायक, तथा कोण्डनूरुके दूसरे नायकोंके द्वारा किये गये दानका उल्लेख है। ये दान महातीर्थ तटेश्वरदेवके मन्दिरकी तरफसे किये गये थे[1]। उस समय कुण्डी ३००० में महासामन्त राजा कार्त्तवीर्य राज्य कर रहे थे। इनकी उपाधियोंमें रट्ट-वंश बतलाया गया है। पूर्ववर्ती रट्ट शिलालेखोंकी अपेक्षा इनकी उपाधियाँ कलहोळी शिलालेखकी उपाधियोंसे ज्यादा मिलती है। इस लेखकी ४३ वीं पंक्तिमें उनका नाम 'कत्तमदेव' दिया हुआ है, और ये संभवतः कार्त्तवीर्य तृतीय हैं, जैसा कि आगेकी वंशावलीसे प्रकट होगा। कालकी पंक्ति घिस गई है।]

[JB, X. p. 181-182, p. *p.* 287-292, t.; p. 293-298, tr.; ins. n° 8, *II part.*]

२७७

कल्लूरगुड्डु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

[कल्लूरगुड्ड (शिमोगा परगना)में, सिद्धेश्वर मन्दिरकी पूर्वदिशामें पड़े हुए पाषाणपर]

---

१ इस शिलालेखका लेख वही है जो शिलालेख नं. २२७ का अन्तिम भाग है। केवल अश-भेद है। २२७ नं. का अश पहिला है और इस लेखका अश दूसरा है। पर यह अश-भेद सूक्ष्मरीतिसे अवलोकन करने पर भी, सिवाय तिथि (काल)-भेदके, ठीक-ठीक नहीं मालूम पड़ता। अत. लेख (जो २२७ वे शिलालेखका द्वितीयाश है) यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पाठक अपनी बुद्धिसे ही उसे निश्चित करें, क्योंकि हमको उक्त (२२७) लेखमें 'रायणय्य नायक' तथा 'मारय्य नायक' ये दो नाम (जिनके दानका उल्लेख इस लेखमें है) कहीं नहीं मिले हैं। 'कोण्डनूरु' का नाम अवश्य पाया जाता है, पर उसके अन्य 'नायकों'का कुछ भी पता नहीं। अत. हमें सन्देह है कि २२७ वें नं० के शिलालेखसे भिन्न कोई दूसरा लेख इस २७६ वें नं० का होना चाहिये। संभव है वह गल्तीसे लिखे जानेसे रह गया हो, या मूल 'JBX' पत्रिकामें ही छूट गया हो। सम्पादक

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्त-मिरे । गङ्गान्वयावतारमेन्तेन्दोडे ।

सले वृषभ-तीर्थ-काल । सुललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दम् ।
कलि-काल-निर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धनं क्रमदिन्दम् ॥
सोगयिसुव-कालदोळ् की- । र्तिगे मूल-स्तंभमेनिपयोध्या-पुरदोळ् ।
जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्यनिक्ष्वाकु-वंश-चूडारत्नम् ॥
धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वरनोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वलदिन्दम् ।
विरुदरनदिर्प्पि विधा- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पलकालम् ॥

वृ० ॥ आतन पुत्रनिन्दु-हर-हास-निभोज्वल-कीर्तिं सद्गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुल-भेदनकारि कला-प्रवीणनुद- ।
धूत-मलं सुरेन्द्र-सदृशं भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्यपुण्यनिलयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥

ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवी तनगे सतियेने विबुध-
व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं ताने सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥

आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहळं नेगळे ।

तरळ-तरंग-भंगुर-समन्वितेयं झप-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळहंस-पूरितेयनुदग्र-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैल-मान्य-शुभ-गन्ध-समीर-निवासेयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिवञ्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥

कळहंस-याने पलरुं । केळदियरोड वोगि पूर्ण्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोकु निरा कुलदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
अन्तु मनदलम्पु पोगे गङ्गा-नदियोळ् ओलाडि निज-गृहक्के बन्दु नवमासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गे ।

गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं पडेदलप्प कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नामवोन्दुदि- । लाङ्गनेगधिपतिगे गङ्गदत्ताख्यानम् ॥
आ-गङ्गदत्तङ्गे भरतनेम्ब मगं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्बं पुट्टि ।
गुण निधिगे गङ्गदत्तं- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया- ।
प्रणियागि हरिश्चन्द्रं । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥
मत्तमा-नृपोत्तमङ्गे भरतनेम्ब सुतं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्ब मगनागि-यिन्तु गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे ।

हरि-वंश-केतु नेमी- । श्वर-तीर्थं वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुल- ।
वर-भानु पुट्टिदं भा- । सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्ब नृपाळम् ॥
आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कैकोण्डहिच्छत्र-पुरदोळु सुख-मिर्दु नेमितीर्थंकर परम-देव- निर्व्वाण-काळदोळ् ऐन्द्रध्वजवेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

अनुपमदैरावतमं । मनोनुरागदोळे विष्णुगुप्तङ्गित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिदे ॥
आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं पृथ्वीमति-महादेविगं भगदत्तनुं श्रीदत्तनुमेम्ब तनयरागे भगदत्तङ्गे -कलिङ्ग-देशमं कुडलातनु -कलिङ्ग-देशम-नाळ्दु कलिंग-गङ्गनागि सुखदिन्दिरे । -

इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं श्री- ।
दत्त-नृपङ्गित्तं भू- । पोत्तमने निसिर्द विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-चर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकल-धात्रियं पालिसिदं
भय-लोभ-दुर्ल्लभं ल- । क्ष्मी युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

व ॥ अन्ता-प्रियबन्धु सुख-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्समयदोलु **पार्श्व-भट्टारकर्गे केवळ-ज्ञानोत्पत्तियागे** सौधर्म्मेन्द्र बन्दु केवळि-पूजेयं माडे प्रियबन्धु तानु भक्तियिं बन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्रं मेच्चि दिव्यवप्पय्दु-तोडगेगळं कोट्टु · निम्मन्वयदोलु मिथ्यादृष्टिगळागलोड अदृश्यङ्गळक्कुमेन्दु पेल्दु **विजयपुरकहिच्छत्रमेम्ब** पेसरनिट्टु दिविजेन्द्र पोपुदुमित्तलु गङ्गान्वयं सम्पूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोलु **कम्प**-महीपतिगे **पद्मनाभनेम्ब** मगं पुट्टि ।

तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोलु चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभनाद्-।
प्पिन-कणि शासन-देवते-। यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं ॥

अन्तु साधिसि साधित-विद्यनागि पुत्ररिर्वरं पडेदु **राम-लक्ष्मणरेम्ब** पेसर-निट्टु ।

परमस्नेहदोळिर्व्वरं नडपे लीला-मात्रदिं चन्द्रनन्त् ।
इरे संपूर्ण्ण-कळागरागि बेळेयल् विद्या-बलोद्योगमुद्-।
व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
परेदाशा-गजम पळक्कलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

अन्तु सुखदिन्दिर्प्पुदुमत्तलुज्जयिनी-पुराधिपति-महीपाल-तोडवुगळं

वेडियट्टि दोडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।
एमगदनट्टल्कागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्ल सन्तमिरल् वेळ् ।
समरके बन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

अन्तु सुडिदडे मन्त्रि-वर्गेदोळालोचिसि तन्न तङ्गेयं कन्नेयुं नाल्वत्ते-ण्बरातरप्प विप्र-सन्तानमुं बेरसु कळपिदोडवर्दक्षिणाभिमुखरागि बरुत्तुं राम-लक्ष्मणर्गे **दडिग-माधवरेन्दु** पेसरनिट्टु निच्च-पयणदिम् ।

बन्दवर्गेळुचित-पदमन-। गुन्दलेयिं कण्डरमल-लक्ष्मी-चित्ता-।
नन्दनमं **पेरूरं** । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु **गङ्ग-पेरूरं** कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु बीडं बिट्टु चैत्या-लयमं कण्डु निर्भ्भर-भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-पारावार-पारगरम् । जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण्ण-चन्द्ररम् । उत्तम-क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म्म-रतरम् । चारित्र-भद्र-धनरम् । विनेय-जनान-न्दरम् । चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशःप्रकाशरम् । सकळ-सावद्य-दूररम् । **क्राणूर्ग्गणा**म्बर-सहस्रकिरणरम् । द्वादश-विधतपोनुष्ठान-निष्ठितरम् । गङ्ग-राज्य-समुद्धरणरम् । **श्री-सिंहनन्द्याचार्य्यरं** कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्व्वकं वन्दिसि तम्म बन्दभिप्रायमेल्लमं तिळिय-पेळे कैकोण्डवर्गे समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवानुं देवसदिं **पद्मावती**-देवियं भक्ति-पूर्व्व-कमाह्वानं गेय्दु वरं बडेदु खड्गमुं समस्त-राज्यमनवर्गे माडि ।

मुनि-पति नोडल् विद्वज्-। जन-पूज्यं-**माधवं** शिला-स्तम्भमनाद्-
ईनुगेय्दु पोय्यलद्दु पुण्-। मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर् ॥
आ-साहसमं कण्डु ।

मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि सज्-।
जन-जन-वन्द्यरं परिसि सेसेयनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्जमन्गुर्व्विन केतनमागि माडि बद्-।
र्पिनितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमागे माडिदर् ॥

अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनवर्गिन्तेन्दु पेळ्दरु ।
नुडिदुदनारोळं नुडिद्दु तप्पिदोडं जिन-शासनक्कोडम्-।
वडद्डमन्य-नारिगेरेदहिदडं मधु-मांस-सेवे गेय्-।
दडमकुलीनरप्पवर कोळ्कोडेयादोडमर्त्थिगत्र्थमम् ।
कुडदोडमाहवाङ्गणदोळोडिदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥

एन्दु पेळ्दु ।

उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळल् कुवळालमागे तोम्-।
वत्तरु-सासिरं विषयमासननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रं-।
गात्त-राज्यं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो-।
दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥

मत्तमा-नाडिङ्गे सीमे ।

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मदर्क्कले मूड तोण्ड-ना-।
डत्तपरासेगम्बुनिधि चेरसेनिप्पेडे तेङ्क कोङ्गु मत्-।
तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम्-।
बत्तरु-सासिरं दलेने माडिदरिन्तुटु गङ्गरुज्जुगम् ॥

अन्तु धरित्रिगधिपतियागि दडिग-माधवरिर्व्वरुं कोङ्कण-विषय-साधन-निमित्तं बरुत्तं मण्डलियं कण्डरदर प्रभाव मेन्तेने ।

नुत-महेन्द्र-पुरं धरा-तळदोळोप्पुत्तिर्दविख्यातियिम् ।
कृत-कालं मदना-पुरं नेगळ्दे मिका-त्रेतेयोळ् सज्जन-।
स्तुत मण्डाल-पुरं तृतीय-पेसरिं द्वापारदोळ् सन्ततोन्-।
नतियिं मण्डलियेम्बरिन्तु कलि-कालं सन्दुदिन्ती-पुरम् ॥

अन्ता-नाल्कु-युगकं नाल्कु-पेसरिन्दोप्पुत्त मण्डलिय बहि-र्भागदोळु सौगन्धमं कूडे पसरिसुव सहस्र-पत्रवप्पलर्द तावरेगळिं नाना-जलचरि-

युलिपदिन्दोप्पुव हेग्गेरेयं कण्डु बीडं बिट्टु तद्-गिरिय रम्यम कण्डुमिल्लि चैत्यालयम माडिमेन्दु क्राणूर्ग्गण-तिळकर् सिंहनन्द्याचार्य्यर् प्पेळे महा-प्रसादमेन्दु चैत्यालयमं माडिसि केलवानुं दिवसदिं कोळालक्के पोगि सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे गङ्गान्वयं पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तिरे दडिगंगे माधव-नेम्ब सुतनागि राज्यं गेय्यलातन मगं हरि-चर्म्मनातन पुत्रं विष्णु-गोपनेम्बनागि मिथ्यात्वक्के सल्वुदुवन्ता-तोडवदश्यङ्ळागि पोगे आतन मगं पृथ्वी-गंगं सम्यग्दृष्टियातन मगं बिरुदरं तडङ्गालु वोय्दडि-गिडि-सुव तडङ्गाल-माधवनातनमगम्

अविनीत-गङ्गनेम्बं । भुवनक्कधिनाथनागि पुट्टि बुधर्ग्गुत-।
सवमं पुट्टिसिदं माध-।व-रायन मर्म्मनब्धियन्ते गमीरम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बादेशमं केळ्दु ।

भरदिन्दं चुर्न्चु-वाय्दं पोगळे बुध-जन बन्द कावेरियोळ् मी-।
करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रभे बळसे दिशा-भागमं चोद्यमागल् ।
परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

अन्तु चुर्न्चु-वाय्दु बर्द्दुङ्किदनातनन्वयदोळु दुर्व्विनीत-गङ्गनातङ्गे मु-ष्कर-नेम्बनादनातङ्गे श्रीविक्रमनातन मगं भूविक्रमनातन मगन्दिर् नवकाम-श्रीएरगरवरोळु एरेयन मगनेरेयङ्गनातनिन्दुदयिसिदं श्रीव-ल्लभनातङ्गे श्री-पुरुषनादनातङ्गे शिवमारनेम्बनातङ्गे मारसिंहनुदयं गेय्दम् ।

अवयवदिन्दे साधिसिद माळववेळुवनेय्दे गङ्ग-मा-।
ळववेन्नलक्कर बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्चि चित्रकू-।
टवनुरे कम्मुजेय-नृपानुजनं जयकेसियं महा-।
हवदोळे मारसिंह-नृपनिक्कि निमिर्च्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥

तनयं श्री-मारसिंहंगनुपमित-जगत्तुंगनादं जगत्-पा-।
वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदियिसि नेगळ्दं राचमल्लावनीशम् ।
मनु-मार्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लभेशम् ।
जिनधर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्याधरेन्द्रम् ॥

अन्तातन मर्म्मन्दिर् मरुळय्यं बूतुग-पेर्म्मडि तदपत्यनेरेयपं तत्सुत-वीरवेडङ्गनेम्बङ्ग ।

उदयं गेय्दं विद्या-। सुदतीशं मार-रूपनुचित-विळासम् ।
विदित-सकलार्त्थ-शास्त्रं । मृदु-वाक्यं राचमल्लनहितर-मल्लम् ॥

अन्ता-राचमल्लनिन्देरेयङ्गनातन मग बूतुगनातन मगं मरुळ-देव-नातनात्मजं गुत्तिय-गङ्गनातनिन्दं मरेयेरिद मारसिंगनातन सुतं गोविन्दरनातन पुत्रं सैगोट्ट-विजयादित्यनातनिन्दं राचमल्लनातनिं मारसिंगनातन सुतं कुरुळ-राजिगनातनिन्दं गर्व्वद-गङ्गं गोविन्दरन तम्मन मगनप्प मम्म-गोविन्दरम् ।

तेङ्गनुडिदडर्दु किळ्त । कौङ्ग मिडुकदिरलेडद-कय्योळ् मद-मा-।
तङ्गमने पिडिदु निळिसिद । गङ्गं सामान्य-नृपने रकस-गङ्ग ॥

तदनुजं कलियङ्गनातनिन्दुत्तरोत्तरं गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे क्राणूर्-गणदाचार्य्यावतारवेन्तेन्दोडे ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-समुद्धरणः ।
श्री-मूल-संघ-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

अवर तदनन्तरं अर्हद्बल्याचार्यरुं बेट्टद-दामनन्दि-भट्टारकरुं बाळचन्द्र-भट्टारकरुं मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवरु। गुणचन्द्र-पण्डित-देवरवरिन्द ।

एळेगे गुण-रुचियिनोळपर्गु-। गळिसिरे गुण-रुचि-विकाश-वाग्-रश्मि-
यिनुच्-।

चळिसे वदनेन्दु पेम्पम्। तळेदं गुणनन्दि-देव-शब्द-ब्रह्म ॥

अवरिं बळिकमकलंक-सिंहासनमनलंकरिसि नेगर्द तार्किक-चक्रेश्वररुं। वादीभ-सिंहरुं। पर-वादि-कुल-कमल-वन-मद-मातंगरुम्। बौद्ध-वादि-तिमिर-पतङ्गरुम्। सांख्य-वादि-कुळाद्रि-वज्रधररुम्। नैयायिकाचार्य्य-भूजात-कुठाररुम्। मीमांसक-मत-घनाघन-प्रचण्ड-पवनरुम्। सिद्धान्त-वार्धि-वर्द्धन-सुधाकररुम्। सकळ-साहित्य-प्रवीणरुम्। मनोमत्रभय-रहितरुं। जिन-समयाम्बर-दिवाकररुम्। अप्प श्री-मूल-संघद कोण्डकुन्दान्वयद काणूर्-गण मेषपाषाण-गच्छद श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यरु।

अनवद्याचारद् म्मा-। घनन्दि-सिद्धान्त-देवरधिकृत-जिन-शा-।
सन-संरक्षकरेसेदर्। जिनमतसद्धर्म-सम्पदं नेगळ्-विनेगम् ॥

अवर शिष्यरु।

चतुरास्यं चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीशं गुण-व्यापक-।
स्थितियिं विष्णु सु-बुद्धि-विस्तरणेयिं बौद्धं दली-जैन-पद-।
घतियिन्दिर्द्दुमिदेम् विचित्रतरमो चातुर्य्यमादी-समुन्-।
नत-सिद्धान्त-विभूषणङ्गेनिसिदं श्रीमत्प्रभाचन्द्रमम् ॥

अवर सधर्मरु।

नुत-सिद्धान्तमनन्तवीर्य्य-मुनिग शुद्धाक्षराकारदिम्।
सततं श्री-मुनिचन्द्र-दिव्य-मुनिगं संवर्त्तिसुत्तिर्कुम-।
प्रतिमं तानेने पेम्पु-वेत्तरु दितोदान्तर् जगद्-वन्द्यरुद्-।
जितरुद्योतित-विश्वरप्रतिहत-प्रज्ञर् म्महो-भागदोळ् ॥

अवर शिष्यरु ।

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-विशाळ-हर-निटिलाक्षं
वादि-मद-रदनि-विदुवं । भेदिप मृगराज जयतु श्रुतकीर्त्ति-बुधम् ॥
कवि गमकि-वादि-वाग्मिगळ् अवन्दिरं गेल्दु कनकनन्दि त्रैवि-
द्य-विलासं त्रि-भुवन-मल्ल-वादिराजं दळेनिसिदं नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

चारित्र-चक्रि संयम-। धारि क्राणूरगणाग्रगण्यं सदयम् ।
श्री-रमण सिद्धान्त-वि-। शारदनति-विशद-कीर्त्ति माधवचन्द्रम् ॥

अवर शिष्यरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन-। हरिणाङ्कं विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेदं । धरेयोळ् त्रैविद्य-बालचन्द्र-यतीन्द्रम् ॥

श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वसुमतिगोल्पु-वेत्त धवलातपवारणवागि कीर्त्तिं नट्-।
टिसुवुदु पेम्पु-वेत्त महिमोन्नति मेरुगे मण्डपन् दला-।
गेसेवुदु सद्-गुण-प्रतति मौक्तिक-मालेय लीलेयं समट्-।
टियिसुवुदु सज्जनके सहजातमेनल् बुधचन्द्र देवर ॥

करवं वारुणिगेन्दु नीडि पिरिदु निस्तेजमेन्दिर्द्द तन्-।
निरव नोडदे सत्पद-प्रसुतेयं ताळ्दिर्प्प दोषाकरम् ।
दोरेये पेळेनुतं कळङ्क-रहितं सद्-वृत्तदिन्दं तिरस्-।
करिपं चन्द्रननोल्पु-वेत्त बुधचन्द्रं सन्ततोत्साहदिम् ॥

नुडिगळ् सत्य-सुवर्ण्ण-भूषण-गणं चित्तं सु-रत्नाङ्गळम् ।
मडगिट्टिर्प्प करण्डकं तनु तपश्श्री-भामिनी-मासियेन्-।

दडे दुष्कीर्त्तियनान्त मत्तिन शठर् दुर्ब्बोधरस्पृश्यरेम् ।
पडियें सद्-बुध-सेव्यनप्प बुधचन्द्र-ख्यात-योगीन्द्रनोळ् ॥
सुर-धेनु प्रति-रूपमं तळेदुदो गीर्व्वाण-भूजातवी-।
धरेयोळ् तापस-रूपदिं नेलसितो पेळेम्बिनम् बर्प्पुदम् ।
करेदर्त्थि-प्रकरक्के कोट्टु विपुळ-श्री-कीर्त्तियं ताळ्दिदम् ।
निरुतं श्री-बुधचन्द्र-देव-मुनिपं वात्सल्य-रत्नाकरम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्दाचार्य्य-परमेष्ठिगळन्वय-तिळकरुं जिनसद्म-निर्म्मापणरुमप्प **बुधचन्द्र-पण्डित-देवरु** प्रवर्त्तिसुत्तिरे । **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड** ।

जय-जया-वल्लभनन्-। वय-वार्धि सीतरोचि भुवन-स्तुत्यम् ।
प्रिय-मूर्त्ति जिन-पदाब्ज-। द्वय-भृङ्ग **बर्म्मदेव भुज-बळ-गङ्गम्** ॥

अन्तेनिसि नेगर्द बर्म्मदेव भुज-बळ-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवं मण्डलिय बेट्टद मेले मुन्नं **दडिग-माधवर्** म्माडिसिद बसदियं तम्म गंगान्वयदवर् प्पाडिसल्सिसुत्तुं बरल्लु तदनन्तरं मर-वेसनागि माडिसि **मण्डलि-सासिरवेड-दोरे-एप्पत्तर** बसदिगळिन्नप्पुव मुन्नादुवक्कुं **पट्टद-बसदिय** प्रतिबद्धवागि समादेयर् म्मुख्यवागि बिट्ट दत्ति तट्टकारे सर्व्व-बाधापरिहार मत्तं बसदियिं तेङ्कण केरेय केळगे तळ-वृत्ति गद्दे गळेय मत्तल्लु मूरु बेद्दले गळेय मत्तलारुमिन्तु पट्टद-तीर्त्थद बसदिगे सल्लुत्तमिरे आतन तनूभवरु ।

जय-लक्ष्मी-पति **मारसिंगननुजं** सत्य-प्रियं सन्द **नन्**-।
निय-गङ्ग-क्षितिपाळकं तदनुजं तेजस्वि विक्रान्त-च-।
क्र-युतं **रक्कस-गंग**नातननुजं वीराग्रगण्यं तद-।
न्वय-लक्ष्मी-गृह-दीपकं **भुजबळ-श्री-गङ्ग**-भूपाळकम् ॥

आ-मारसिंग-देवं आद्रेवल्लियेम्बूरुमं वसदियाग्नेय-कोणरेयिम्मूडल्लु गद्दे गळेय मत्तलोन्दु वेद्दले मत्तलेरडुमं बिट्टम्। माघनन्दिसिद्धान्त-देवर गुड्डं मारसिंग-देवं मत्तवातन तम्म प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर गुड्डं नन्नियगङ्ग-देवम् सिरियुरगे येम्बूरुममागदेयिं तेङ्कण कोळद केळगे गळेय मत्तलोन्दु वेद्दले मत्तलेरडुमं बिट्टम्। वर्म्म-देव सक मारसिंग नन्निय-गङ्ग ९७६ विज [य] ९८७ [विश्वाव] सु ९९२ सौम्य। अनन्तवीर्य्य-सिद्धान्त-देवर गुड्डं रकस-गंगं नन्निय-गङ्गं विट्ट गद्देयिं तेङ्कलु हरकेरिय सीमे-वरं विट्ट गद्दे गळेय मत्तलोन्दु वेद्दले गळेय मत्त-लेरडुं इन्ती-वृत्ति मण्डलिय होलद् मूमियिन्ती-हन्नेरडु मत्तलु वेद्दलेय सीमे मूडण देसे तळवृत्तिय गद्दे। तेङ्क हरकेरिय सीमेय नट्ट कल्लुगल्लु हडु-वल्लु पिरिवल्लु वडग मोरसर-कोळ मरं कटकद् गोवं रकस-गङ्ग हूलि-यकेरेय गद्देयुमदर सुत्तण वेद्दलेयुमं विट्टनदर सीमे मूडल्लु चिक्कवण-जिगनकेरे तेङ्कलु तट्टकेरेय गुड्डेय वडगद····नीर्व्वरि हडुवल्लु नट्ट कल्लिं वरल्लु गुड्डेय मूडण नीर्व्वरि वडगल्लु वडगण दिम्बिन नीर्व्वरि चिक्क-वणिगनकेरेय वडगण कोडि॥

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डम्।

भुज-बळर्दि शत्रु-मही-। भुज-कुजमं कित्तु मुत्ति कोण्डेगळं कोण्-।
डजित-बळनेनिसि नेगर्द। भुजबळ-गङ्ग-क्षितीशनवनिप-तिलकं॥

- इन्तेनिसि नेगर्द भुजवळ-गंग-पेर्म्माडि-देवं सक-वर्ष १०२७ नेय सर्व्वजितु-फाल्गुण-मासद १ शुक्रवारदन्दु मण्डलिय पट्टद-तीर्त्थद वसदिय नित्य-निवेद्य-पूजेग ऋषियर्ग्गाहार-दानक विट्ट दत्ति हेग्गण-गिले येम्बूरं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि विट्टन् (आगेकी ३ पंक्तियोंमें

सीमाकी चर्चा है) प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड नन्नियगंग-पेर्म्माडि-देव।

आ-भुजबळगङ्ग-···· । ··········वन-भ्राजित मग-बुट्टिद···· ।
········दिक्-तटं रा- । ज्याभिषवाधिपतियेनिप नन्निय-गङ्गम् ॥

देसेगळनेय्दे पर्व्विद नेलक्किदे तां नेलगट्टेनिप्प बल्- ।
पेसेवुदु तोळोळेण्-देसेय गण्डर मीसेय मेले-मेले वर्- ।
च्चिसुवुदु गण्ड-गर्वद जसं बडवाग्निय बायनेय्दे वत्- ।
तिसुवुदु तेजमेनधिकनादनो नन्निय-गङ्ग-भूभुजम् ॥

पद-नखदोळ् दशाननते नम्र-नृपालि-मुखाङ्कदिं जया- ।
स्पद-भुजदल्लि षण्मुखते दुर्ज्जय-शक्ति-धरत्वदिं चतुर्- ।
व्वदनते वक्त्रदोळ् चतुर-वाणियिनोप्पिरलेन्तु नोर्प्पडा- ।
भ्युदयमनेय्दिदत्तु पलवुं मुखदिं तवे कीर्त्ति गङ्गनोळ् ॥

दिगिभमनोत्ति कीलिडिपनग्गद केसरिवोले वाय्दडम् ।
घुगिये तळ-प्रहारदोळे मग्गिपनुङ्कुटदिन्दे मीण्टुवम् ।
नगमनिवं कवुङ्कुडिव तेङ्कुडिवन्नने सम्बुशैलमम् ।
नेगपिद पन्ति-दोळवननेळिपनेम्बुदु मारसिङ्गन[1] ॥

स्वस्ति सत्यवाक्य-कोङ्गुणि-वर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराजम् परमेश्वरम् । कोळालपुर-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-विरिञ्चनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् विचकिळामोदं नन्नियगङ्गं । जयदुत्तरङ्गम् । गङ्ग-कुल-कुवळय-शरच्चन्द्रम् । मण्डलिक-देवेन्द्रम् । दर्प्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डम् । कुसुमकोदण्डम् । गण्डर-गण्डम् । दुद्धरगण्डम् । नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । श्रीमन्न-

१ यहा 'मारसिंग' नन्निय-गंगका ही दूसरा नाम मालूम पड़ता है ।

न्निय-गङ्ग-पेर्म्मांडि-देवम् तम्मज्जं बर्म्म-देवं माडिसिद मण्डलिय पट्टद-तीर्थद वसदियं कल्लु-वेसनागि माडिसिद पट्टद-वसदिगे सक-वर्ष १०४३ नेय शुभकृत्-संवत्सरद भाद्रपद-मासद शुद्ध ५ बृहस्पति-वारदन्दु कुरुलिय-वसदियादियागि पञ्चविंशति-चैत्यालयमं धर्म्मप्रभावनेयिन्द माडिसिद प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु मुख्य-वागि बिट्ट वृत्ति बसदिय मुन्दे गद्देगळेय मत्तरोन्दु बेद्दलेगळेय मत्तरेरडु बसदियहळ्ळिय सुङ्कसुमं बिट्टरु मत्तं नन्निय-गङ्ग-देवनु पट्ट-महा-देवि कञ्चल-देवियरुं पद्मावती-देविगे हरसि हेम्मांडि-देवनं हडेदु काणि-केयं तन्नाळ्व नाड्गळोळु शर-मित-पणव कोट्टरा-चन्द्रार्क्क-तारं-बरं। बुधचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डम्।

मुनिसिं दिग्दन्ति-दन्तङ्गळनवयवदिन्दोत्ति वेग छळ्ळेम्- ।
विनेग कित्तेत्तने तारगेगळनदटिन्दालिकल्लन्दर्दिं सू- ।
सने वार्द्धि-व्रातमं सुर्रेने तवुविनेगं पीरने कोपर्दिं पोय्- ।
यने वेट्टं पिट्टु-पिट्टागिरे समरदोळी-वीर-पेर्म्मांडि-देवम् ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[इस समय त्रैलोक्यमल्ल-देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान है। गङ्गान्वय (वंश) का अवतार इस प्रकार हुआ:—

वृषभ-तीर्थ-कालमें जब कि अयोध्यामें इक्ष्वाकु-वंशमें राजा हरिश्चन्द्रको राज्य करते हुए बहुत समय हो गया था, उसका पुत्र भरत हुआ। उसकी पत्नी विजय-महादेवी थी। जब उसको गर्भ-दोहद हुआ तो उसे जोरसे नृत्य करनेवाली लहरोंसे ओतप्रोत, मत्स्य, चक्रवाक पक्षी तथा चमकीले हंसोंसे पूरित गङ्गामें नहानेकी इच्छा हुई। अपनी इस इच्छाको पूरा करनेके बाद, नौ महीने पूरे होनेपर उसे एक लड़का हुआ। उस लड़केका नाम, चूँकि गङ्गामें नहानेके बाद वह उत्पन्न हुआ था अतः गङ्गदत्त रक्खा गया। गङ्गदत्तका पुत्र भरत हुआ और उसका पुत्र गङ्गदत्त हुआ। इस गङ्गवृत्तकी

लड़कीका लड़का हरिश्चन्द्र हुआ, उसका लड़का भरत हुआ और उसका फिर गङ्गदत्त।

गंग वंशकी परम्परा इस प्रकार जारी थी,—जब कि नेमीश्वरका तीर्थ चल रहा था,—उस समय, राजा विष्णुगुप्तका जन्म हुआ। यह राजा अहिच्छत्र-पुरमें शान्तिसे निवास कर रहा था, उसी समय नेमि तीर्थंकरका निर्वाण हुआ और उसने ऐन्द्रध्वज पूजा की, जिससे प्रसन्न होकर देवेन्द्रने उसे ऐरावत हाथी दिया।

विष्णुगुप्त-महाराज और पृथ्वीमति-महादेवीसे भगदत्त और श्रीदत्त नामके दो पुत्र हुए। पिताने भगदत्तको राज्य करनेके लिये कलिंग-देश दे दिया और वह उसपर 'कलिंग गंग' नामसे राज्य करने लगा। दूसरी तरफ, उसने वह मत्त हाथी तथा शेष संपूर्ण राज्य राजा श्रीदत्तको दे दिया। इस प्रकार जब श्रीदत्तके समयसे हाथीको मुकुटमें धारण किया गया था,—प्रियबन्धुवर्म्मने उत्पन्न होकर अपनी नीतिसे सारी पृथ्वीकी रक्षा की।

जिस समय वह प्रियबन्धु शान्तिसे राज्य कर रहा था, उस समय पार्श्व-भट्टारक (तीर्थंकर)को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, जिसकी पूजाके लिये सौधर्म्मेन्द्रने आकर केवली-पूजा की। इसी अवसरपर स्वय प्रियबन्धुने भी आकर केवलज्ञानकी पूजा की। उसकी श्रद्धासे प्रसन्न होकर इन्द्रने पाँच आभरण (अलङ्कार) उसे दिये और कहा,—"अगर तुम्हारे वंशमें आगे कोई मिथ्यामतका माननेवाला उत्पन्न होगा, तो ये (आभरण) लुप्त हो जायेंगे।" ऐसा कहकर, और अहिच्छत्रका 'विजयपुर' नाम रखकर इन्द्र चला गया।

दूसरी ओर, पूर्ण चन्द्रमाके समान, गंग-वंश बढ़ता ही चला गया और इस वंशमें राजा कम्पके पद्मनाभ नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पद्मनाभके, शासन-देवताकी कृपासे, दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम उसने राम और लक्ष्मण रखा।

जब ये दोनों कुमार शान्तिसे रह रहे थे, उज्जयिनी-शासक महीपालने उनको आ घेरा और उनसे इन आभूषणोंको माँगा। पद्मनाभने देनेसे इन्कार कर दिया।

इसके बाद अपने मन्त्रियोंकी सम्मतिसे, उसने अपने पुत्रोंको, अपनी कुमारी छोटी बहिन तथा ४० चुने हुए ब्राह्मणोंके साथ बाहर भेज दिया, और चूँकि वे दक्षिणको जा रहे थे, उनका नाम बदलकर क्रमसे दड़िग और माधव रख दिया।

चलते-चलते वे एक अत्यन्त मनोरम स्थानपर आये, जहाँ उन्हें विशाल पेरूर् (शायद कोई तालाव-विशेष) और एक पहाड़ी मिली जो पुष्पाच्छादित मन्दार, नमेरु तथा चन्दनके वृक्षोंसे आवृत थी। उस गङ्ग-पेरूरको देखकर वहीं उन्होंने एक तालाबके किनारे अपने तम्बू तान दिये, वहाँ एक चैत्यालय भी उन्हें दिखाई दिया, जिसकी तीन प्रदक्षिणा करनेके बाद, स्तुति करते समय, क्राणूर-गण-आकाशके सूर्य, गङ्ग राज्यके प्रवर्धक श्री-सिंहनन्द्याचार्य दिखाई दिये। गुरुमें श्रद्धा होनेके कारण उन्होंने उनकी विनय की और अपने आनेका उद्देश्य कहा। इसपर वे उनको हाथ पकड़कर ले गये और उन्हें विद्याकी कलामें प्रवीण किया, और कुछ दिनोंके बाद अपने श्रद्धा-बलसे पद्मावती देवीको प्रकट कर वर प्राप्त किया, और उन्हें एक तलवार तथा संपूर्ण राज्य दिया।

जिस समय मुनिपति ऊपरकी ओर देख रहे थे, माधवने अपनी तमाम शक्तिसे एक पाषाण-स्तम्भपर[1] प्रहार किया, और वह स्तम्भ कड़कड़ करते हुए नीचे गिर पड़ा। मुनिपतिने इस शक्तिको देखकर उनको कर्णिकारके परागोंसे तैयार किया गया एक मुकुट पहिनाया, उनके ऊपर अनाजकी वृष्टि की और बहुत खुशीसे तमाम पृथ्वीका राज्य देते हुए, झण्डेके लिये अपनी पीछीको चिह्न बनाया, तथा बहुतसे सेवक, हाथी और घोड़े दिये।

तमाम राज्यका अधिकार देते हुए उन्होंने उन्हें इस उपदेशसे सावधान किया:—अपनी प्रतिज्ञात बातको यदि वे नहीं करेंगे, अगर वे जिनशासनको स्वीकार नहीं करेंगे; अगर वे दूसरोंकी स्त्रियोंको ग्रहण करेंगे; अगर वे मांस और मधुका सेवन करेंगे; अगर वे नीचोंसे सम्बन्ध जोड़ेंगे; अगर वे आवश्यकतावालोंको अपना धन नहीं देंगे; अगर युद्धभूमिसे भाग आयेंगे:—तो उनका वंश नष्ट हो जायगा।

---

१ शिलालेख इस बातमें एक राय हैं कि यह प्रहार तलवारसे किया गया था।

ऐसा कहनेके बाद,—उच्च नन्दगिरि उनका किला हो गया, कुवलाल उनका नगर बन गया, ९६००० उनका देश हो गया, निर्दोष जिन उनके देव हो गये, विजय उनकी युद्धभूमिकी साथिन हो गई, जिनमत उनका धर्म हो गया।

आगे गङ्गवाडि ९६००० की चतुर्दिक्-सीमा दी है।

राज्य प्राप्त करनेके बाद, दडिग और माधव दोनों, जब कोंकण देशको अधीन करनेके लिये आ रहे थे, उन्होंने मण्डलि देखी, जिसके बाहरी प्रदेशमें एक विशाल तालाबको सफेद जल-कमलिनी और हजारपत्तेवाले विकसित कमल तथा बहुत-सी मछलियोंके शब्दोंसे आकर्षक जानकर वहीं उन्होंने अपने तम्बू गाड दिये। पहाडीकी सुन्दरता देखकर सिंहनन्द्याचार्यने उन्हें वहाँ एक चैत्यालय निर्माण करनेकी प्रेरणा की, जिसे उन्होंने मान्य किया।

और कुछ दिनोंके बाद वे कोलाल चले गये और शान्तिसे राज्य करने लगे। जैसे जैसे गङ्ग-वंश बढता गया, दडिगके माधव नामका एक पुत्र हुआ, जिसने राज्य किया। उसका पुत्र हरिवर्मा, उसका पुत्र विष्णुगोप, जिसके मिथ्यामतके माननेके कारण, वे आभूषण विलीन हो गये थे। उसका पुत्र पृथ्वी गङ्ग हुआ, जिसने सत्यमत अङ्गीकार किया। उसका पुत्र तडङ्गाल माधव था।

इसका पुत्र अविनीत गङ्ग था। यह अपनी शत-जीवी बातको सुनकर, परीक्षाके लिये, अत्यन्त भयानक बाढवाली कावेरीमें कूद गया और फिर तैर कर निकल आया। यह पक्का जिनभक्त था।

उसके बाद दुर्विनीत गङ्ग हुआ, जिसका पुत्र मुष्कर था। मुष्करके बाद क्रमसे एकके बाद एक श्रीविक्रम और भूविक्रम हुए। भूविक्रमके नव-काम और एरग पुत्र हुए। इनमेंसे एरगके एरेयङ्ग पुत्र हुआ; उससे श्रीवल्लभ, उससे श्रीपुरुष, उससे शिवमार और उससे मारसिंह।

मालव सबको स्वाधीनकर और एक पाषाणपर 'गङ्ग-मालव' खुदवाकर मारसिंहने कक्षमुज्जेके राजाके छोटे भाई जयकेसीको युद्धमें मारा।

मारसिंहका पुत्र जगत्तुंग हुआ; उसके राचमल्ल हुआ जो जिनधर्म-समुद्रके लिये चन्द्रमा था।

उसके नाती मरुळय्य और बूतुगपेर्म्मोडि हुए; बूतुगकी सन्तान एरेयप, उसका पुत्र वीरवेडंग, और उसके राचमल्ल उत्पन्न हुआ।

राचमल्लसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ; जिसका बूतुग, जिसका मरुळ-देव, जिसका गुत्तिय-गंग, जिससे मारसिंग, उसका पुत्र गोविन्दर, उसका सैगोट्ट विजयादित्य; उससे राचमल्ल उत्पन्न हुआ; उससे मारसिंग, उससे कुरुळ-राजिग, उससे गर्व्वदगङ्ग; गोविन्दरके छोटे भाईका पुत्र मम्म-गोविन्दर था। (उसकी प्रशंसा) उसका छोटा भाई कलियङ्ग था। उसके बाद जिस समय गंगवंश चल रहा था:—

काणूरगणके आचार्योंकी वंशावली निम्न भाँति थी:—

दक्षिण-देशवासी, गङ्ग राजाओंके कुलके समुद्धारक, श्रीमूलसंघके नाथ सिंहनन्दि नामके मुनि थे। तदनन्तर अर्हद्बल्याचार्य, बेट्टद दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव, गुणचन्द्र पण्डितदेव। इनके बाद शब्द-ब्रह्म गुणनन्दिदेव हुए। इनके बाद महान तार्किक एवं वादी प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव हुए। वे मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, क्रानूर-गण तथा मेषपाषाण-गच्छके थे। उनके शिष्य माघनन्दिसिद्धान्तदेव हुए। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र हुए।

इनके सधर्मा अनन्तवीर्य मुनि थे; मुनिचन्द्र मुनि भी। उनके शिष्य श्रुतकीर्ति। उनके बाद कनकनन्दि त्रैविद्य हुए, जिन्हें राजाओंके दरबारमें 'त्रिभुवन-मल्ल वादिराज' कहा जाता था। इनके सधर्मा माधवचन्द्र थे। उनके शिष्य त्रैविद्य बालचन्द्र यतीन्द्र थे।

प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बुधचन्द्रदेव थे (उनकी प्रशंसा)। जिस समय आचार्य्य-परमेष्ठि-अन्वयके तिलकस्वरूप बुधचन्द्र-पण्डितदेव विराजमान थे:—

प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य भुजबल-गंग बर्म्मदेव थे।

इन प्रसिद्ध बर्म्मदेव, भुजबल-गंग पेर्म्मांडि-देवने 'बसदि' बनवाई। यह वही बसदि है जिसे पूर्वमें दडिग और माधवने मण्डलिकी पहाड़ीपर बनवाई थी, और जिसके लिये उसके गंगवंशके राजाओंने पूजाका प्रबन्ध जारी रखा था, और जिसे बादमें उन्होंने लकड़ीकी बनवा दी थी,—यह

आजतककी बनी हुई तथा भविष्यमें जो मण्डलि-हजारकी एडदोरे-सत्तरमें बनेंगी उन सभी बसदियोंमें मुख्य थी। इसका नाम पट्टद्-बसदि (शाही बसदि) रक्खा था, और इसे (उक्त) भूमिदान दिया।

बर्म्मदेवके ४ लड़के थे—मारसिंग; उसका छोटा भाई नन्निय-गंग; उसका छोटा भाई रक्कस-गंग; उसका छोटा भाई भुजबल-गंग।

उक्त मारसिंग-देवने आर्द्रवल्लिमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। इसके अतिरिक्त, माघनन्दि सिद्धान्तदेवका गृहस्थ शिष्य मारसिंह-देव (शक ९८७ विश्वावसु) और उसका छोटा भाई, प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-का शिष्य, नन्नियगङ्गदेव था। इन दोनोंने सिरियूरमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। (शक ९९२ सौम्य)

बर्म्मदेवका दानका समय—शक ९७६ विजय।

अनन्तवीर्य-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य रक्कस-गङ्गने (उक्त सीमा-सहित) भूमिका दान दिया। मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य भुजबल-गंगने शक १०२७ में, सर्वजित् वर्षमें, (उक्त) भूमिका दान किया। नन्निय-गंग-पेर्म्माडि देवका 'नन्निय-गंग' नामका लड़का हुआ। (इसकी प्रशंसा), इसने शक वर्ष १०४३ शुभकृत् वर्षमें मण्डलिकी पट्टद्-तीर्थ बसदिके लिये, २५ चैत्यालय और बनवानेके साथ-साथ, कुछ जमीनका दान दिया। इसकी पट्टमहादेवी कञ्चल-देवी थी।]

२७८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२७९

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४४=११२२ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८०

तेर्दाळ—कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

[तेर्दाळ दक्षिण महाराष्ट्रके सांगली जिलेका एक बड़ा गाँव है। इस स्थानकी जैन 'बस्ति' में एक पाषाण पीठ (stone tablet) है जिसपर ३ विभिन्न भागोंमें विभक्त एक अभिलेख है। यह लेख उसका प्रथम भाग है, यह इस समूचे लेखकी ५६ वीं पंक्तिपर जाकर समाप्त होता है।]

[IA, XIV, P. 14-26 (Lines 1-56)]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीमन्नम्रसुरासुरोरगलसन्माणिक्यमौळिप्रभा-
स्तोमालंकृतपादपद्मयुगलं कैवल्यकान्तामनः-
प्रेमं सन्मति-नेमिनाथ-जिननाथ तेरिदाळातिशय-
श्रीमत् (द्) भव्यजनक्के माळ्कनुदिनं दीर्ग्घायुमं श्रीयुमम् ॥
क्षितिभृत्त्राणप्रभावोत्करकरिमकरोद्यत्प्रयुक्ताब्धिवेला-
वृतजम्बूद्वीपमध्योद्भवकनकनगक्कीक्षिसल् दक्षिणाशा-
क्षिति कण्गोप्पिप्पुदेत्तं भरतविषयमा देशदोळ् कुन्तळोद्यत्-
क्षिति तोर्कुं चेल्विनिं तद्धरणियोळेसेगुं कूण्डिनामोद्भवदेशम् ॥
तद्विषयमध्योदेशदोळ् ॥

निरुपमगन्धशाळिवनदिं वनदिं कोळदिं तटाकदिं गिरिवन-तोय-दुर्ग्ग-कुळ दिन्दगळिं बुध-माधवार्क-शंकर-जिन-सद्मदिं विपणि-मार्ग्गदिनोप्पुव तेरिदाळ पन्नेरडर चेल्वनेय ॥

---

१ यहाँपर यह लेख सुस्पष्ट और सरलतासे पढ़नेके लिये पंक्तिवार न देकर नियमानुसार पठनीय साधारण शैलीसे दिया जाता है।

पोगळल्कजनुं नेरय धरित्रियोळ् ॥ तज्जनपदविलासवनितावदन-कमळक्के विशाळनयनकमळमेने सोगयिसि ॥ उपमातीतमेनल्कगळद्-गळ कोटाचक्रदिं कूडे-कूप- पयोजाकर-कीर-भृङ्ग-वन-नाना-देव-भूदेव-वैश्-यपवित्रास्पद- कोटियिं सुजनरिं श्री-तेरिदाळाभिधानपुरं तीवि करं स्थिरं प्रतिदिनं तोर्कुं जगच्चक्रदोळ् ॥ दुर्व्वारातीभ-पञ्चानन-निभ-सुभटानीकदिं विश्वविद्यागर्व्वोन्मत्त प्रसिद्धागमकुशळबुधव्रातदिन्दाश्रितर्गिन्द्रोर्व्वीजातो-पमानोन्नतचतुरजनश्रेणियिं तीवि तत्पन्निर्व्वर्गावुण्डरिं कण्गेसेवुदसदळं माविसल् **तेरिदाळम्** ॥ (श्लोक) भूविनुतचतुस्समयमनावग मेसेवारु दर्शनङ्गळुमं कैगावग्गद पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळिर्द्दु रक्षिपर्-त्तत्-पुरमं ॥ धन-दन नेवनेन्दु कोरचाडुव काडुव तम्म काञ्चन-निचयङ्गळिं मणिगणंगळ राशिगळिं नवीन-मण्डन-वहुवस्त्रदिं पयगळिं बहुधान्यदिनोप्पि तोर्प्प-नञ्चिन परदर्कळिं भरितवागि करं सोगयिकु तत्पुरम् ॥ अन्तु सन्तमुं बसन्तमुमेने तीवि सन्ततं सकळधरित्रिगळंकारमागे सोगयिसुव **तेरि-दाळ** पन्नेरडर मनेय वल्लभर्गे वल्लभराद कुन्तळ-महीतळ-चक्रवर्त्तिगळन्व-यावतारमेन्तेन्दडे ॥ वृ ॥

वनज-क्ष्माधर-पद्म-सद्मजनजं प्रोद्भूत-हारीत-नं-
दन-माण्डव्यनिनाद पञ्चशिखनिं बन्दा चळुक्यान्वया-
वनिपर्म्मुं पलरागे मत्तहितरं गेल्दुर्व्वियं ताळ्द तै-
ळनदोन्दन्वय मेरुवान्त निळ्यं श्रीरायकोळाहळम् ॥

वृ ॥ मत्तमा वंशदोळ् जयसिंहवल्लभनेम्ब सिंहपराक्रमनादम् ॥
आतन तनयं दुष्टमहीतळ पतिगळननेकरं गेल्दखिळोर्व्वी-
तळमं तळेदं विख्यातं त्रैलोक्यमल्लनाहवमल्लम् ॥

व ॥ अन्तु समस्तधात्रीवल्लभेगे वल्लभनादाहवमल्लदेवन
प्रियतनूजन् ॥ घन-दोर्-व्विक्रान्तदिं गूर्ज्जरनृपबळमं
गेल्दु मारान्त चोळावनिपङ्गामीळ्कालानळमनोसेदु
सङ्ग्रामदोळ् तोरि भीतावनि पर्गांतक्कमं पुट्टिसदनुनय-
दिं विश्वभूचक्रमं सज्जनवागल्तु रायकोळाहळनेने
तळेदं राय पेर्म्माडिरायम् ॥

व ॥ अन्तु कुन्तळमहीतळकान्ताकान्तनेनिसिद वीर-पेर्म्माडि-
रायन कट्टिदलगेनिसिद तेरिदाळद वीर-गोङ्क-क्षितीश्वर-
नन्वयदोळेनेबरानुं सले निज-जननिगं जनकर्गे पूर्व्वपुण्य-
वेम्ब कळपावनिजके फलवुदयिसुवंते पुट्टि ॥ कलिगं
वेत्तिद वीरवान्तहितरं गेल्दुर्क्कु विद्विष्टमण्डलमं चक्रिगे
साधिसित्तळवदेक च्छत्रवागल्तुके निर्म्मळकीर्त्यङ्गनेगार्च्चु
कूर्त्तु कुडुतुं श्रीतेरिदाळावनीतळनायं नेगळदं नृपाळतिळकं
लोकं महीलोकदोळ् ॥

वृ ॥ आतन नन्दनं च(व)ळदोळा रघुनन्दननेक-वाक्य-विद्या-
तियोळर्कनन्दननिन्दितशौर्य्यदोळिन्द्रनन्दनं नीतियोळब्ज-
नन्दननेनिप्प महत्त्वमनप्पुकेय्दनुर्व्वीतळदोळ् बुधप्पोगळ-
लिन्तेरगुर्व्विवरम् निरन्तरम् ॥

व ॥ तन्नृपोत्तमप्रियपुत्रन् ॥

वृ ॥ वल्लिदरागि पोगदिदिरान्तरिमन्नेयरन्नेयर्कळं वल्लहनो-
ल्दु नोडे रणरङ्गदोळोडिसि तेरिदाळदोळ् वल्लभनागि निन्द
जयवल्लभनं सितकीर्तिकामिनीवल्लभनेन्दु वण्णिसदनावनो
मन्नेय मल्लिदेवनन्तु ॥ क ॥

आ वीर-मल्लिदेव-महीवल्लभनर्धनारि गुणमणिगणदिं भू-वधुगेणेयेने बाचलदेवि महीन्द्रजेगे सीतेगोरे दोरेयल्ते ॥ त्रि (वृ) ॥

अवरिवर्ग्गेनुरागदिं सिरिगवा कञ्जोदरंगं मनोभवनद्रिप्रियपुत्रिगं शशिधरंगं षण्मुखं बन्दु पुट्टववोल्·पुट्टि विरोधि-मन्नेयघरट्टं तेरिदाळ-क्षितीश-विळासं परिरञ्जिपं भुवनदोळ् निश्शंकेयिं गोङ्कमंन् ॥

त्रि (वृ) ॥ कन्तु-विळास-लक्ष्मियेनिपग्गद बाचळदेवि माते विक्रान्त-विभासि-मल्ल-महीपं जनकं मुनि माघणन्दिसैद्धान्तिकचक्रवर्त्ति गुरु नेमिजिनं मनदिष्ट-देय्ववोरंतेने तेरिदाळ्द नृपाग्रणि गोङ्कनिर्दे कृता-र्थनो ॥ अडसुव कुत्तवोत्तरिप मृत्यु कडंगुव मारि कोय्विनिं तोडर्वे विरोधि पाय्व पुलि पोय्व सिडिल् पिडिवुग्र पन्नगं सुडुव दवाग्निबाचे कडेगंचुवुदेन्ददे तेरिदाळ्दी कडुगलि गोङ्क-भूपतिय भव्यते केवळवे निरीक्षिसल् ॥ पसिद सिताहि सोङ्किदोडे संकिसि मन्त्रद तंत्रदासेयिन्द-सुवरेयागि विट्टिरदे पञ्च-पदङ्गळनोदि तद्विषप्रसरमनेय्दे पिङ्किसि जिन-व्रतदोळु दृढनाद तन्न पेम्पेसेदिरे तेरिदाळदरसं नेगळ्दं कलि गोङ्क-भूभुजन् ॥ येत्तिसि तेरिदाळदोळगोप्पे जिनेश्वरसद्मम समन्तेत्तिसिद जयध्वजमनुर्व्विगे दिग्-मुख-दन्ति-दन्तदोळ् तेत्तिसिदं निजाङ्क-महिमा-क्षरमाळिकेयं गडुन्दडेनुत्तमभव्यनो जिनमताग्रणि सद्गुणि गोङ्क-भूभुजन् ॥ सततं कीर्त्तिसदिर्प्पपेरार्ब्भुवनदोळ् भव्यजेगत्सेव्यनं

जित-काळेय-कळङ्क-पङ्क-पटह-ध्वान्ताङ्कनं गोङ्कनम्
प्रतिपक्ष-क्षितिनाथ-हृत्-सरसिजोद्यातङ्कनं गोङ्कनम्
क्षितियोळ् रञ्जिप तेरिदाळदेसवी निश्शंकनं गोङ्कनम् ॥

---

१ 'म' अक्षर छन्दपूर्तिके लिये है, वैसे इसकी कोई जरूरत नहीं है।
२ यह दूसरा 'प' गलत है।

अन्तेनिसिद गोङ्कमहीकान्त श्री-माघणन्दि-सिद्धान्तिकरं
भ्रान्तेन्तो कोल्लगिरदिं [दं] तरिसि समस्त-भव्यरभिवर्ण्णिपिनम् ॥
तदाचार्य्यप्रभाववेन्तेन्दडे ॥ घरे दुग्धाब्धियिनब्धि चन्द्रनिनिनं
तेजोग्नियिन्देन्त [म]न्तिरली पोस्तक-गच्छ-देसिग-गणं
श्री-कोण्डकुन्दान्वयम्

निरुतं श्री-कुळचन्द्रदेव-यतिपोवच्छिष्यरिं सद्गुणा-
कर-राद्धान्तिक-माघणन्दि-मुनियिं कण्गोपुगु धात्रियोळ् ॥

क ॥ अगणित-गुण-जळधिगळेने नगधैर्य्यमाघणन्दि-सैद्धान्तिकराव-
गमेसेवर्स्सेन्-मतियिं जगदोळ् सामन्त-निम्बदेवन गुरुगळ् ॥

वृ ॥ सन्ततवन्य-चिन्तेगळनोक्कु जिनास्यविनिर्गतागमार्त्थान्तरचिन्ते-
योळ् नेरेदु निल्लदे सिद्धर सद्गुणंगळं चिन्तिसुतिर्प्प कोल्लगिरदग्गद सन्मुनि
माघणन्दि सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जित-मन्मथ-चक्रियेनिप्पनुर्व्वियोळ् ॥

वृ ॥ अन्तरिसिर्द्द जैन-समयक्कोगेदं जिननीगळोर्व्वनेम्बन्ते जिनव्रतङ्ग-
ळनशेषजनक्कुपदेशमित्तु सामन्तनेनिप्प निम्बनेरगल् नेगळ्दोप्पुव माघ-
णन्दि सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-धर्म-सुधाब्धि-सुधांशुवागने ॥ अवर-
प्रशिष्यरु ॥

क ॥ वादि-विषोरग-तार्क्ष्य-कर्व्वादि-महा-गहन-दावदहनर्व्वे (र्व्वे)
लवद्-वादीभसिंहरेसेदर्म्मेदिनीयोळ् कनकणंदिपण्डित-देवर् ॥ तत्पर-
वादीभ-पञ्चाननर स-धर्म्मर् ॥ श्रुतकीर्त्ति-त्रैविद्य-त्र (व्र)तिपर्षट्-तर्क-
कर्कशर्

पर-वादि-प्रतिभा-प्रदीप-श्रवन र्जितदोषर् नगळ्दरखिळभुवनान्तर-
दोळ् ॥ तत्परवादि-शिखरि-शिखर-निर्भेदनोच्चण्डपवि-दण्डर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ जित-कुसुमायुधाखरननिन्दितजैनमतप्रसिद्धसाधितहितशाखरं विदळितोन्मद-मान-विमोह-लोभ-भूभृत्-कुळिशाखरं पदपिनिं -पोगळ्गुं धरे चंद्रकीर्त्ति-पण्डितरनतर्क्य-तार्किक-चतुर्म्मुखरं परवादिशूळरन् ॥ तत्परवादिमस्तकशूळर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ धृति भूभृत्पतिय गभीरवमृताम्भोराशियं साले सन्मति वाचस्पतिय पळचलेविनम्मेय्वेत्त सन्मार्ग-सन्ततियिन्दं नेगळ्दिर्द्द देशिग-गणाधीश-प्रभाचन्द्रपण्डितदेवोज्वळकीर्त्तिमूर्त्ति वडेदादं वर्त्तिकुं धात्रियोळ् ॥ तन्मुनीश्वरर सधर्म्मर् ॥

परवादिप्रकर-प्रताप-महिभृत्-प्राग्रोग्र-वज्रर्गुणा-
भरणर् श्रीवसुधैकबान्धवजिनेन्द्राधीश्वरोत्तुङ्गमं-
दिरदाचार्य्य नगेन्द्र-रुंद्र-निभ-धैर्य्यवर्द्धमान-व्रती-
श्वररिन्ती धरेयोळ् नेगळ्ते-वडेदं त्रैविद्य-विद्याधरर् ॥

यिन्तु नेगळ्तेगं पोगळ्तेगमधीश्वरराद वर्धमान-त्रैविद्यदेवरज-
गुरुगळप्प श्री-माघणन्दि-सैद्धान्तिक-देवरदिव्यश्रीपादपद्मगळम् ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराजं परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-विक्रम-चक्रवर्ति-त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारम्बरम् कल्याणपुरद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं लत्तनूरपुरवराधीश्वरं त्रिवलि-परेघोषणं रट्टकुलभूषणं सुवर्ण्ण-गरुड-ध्वजं सिन्धूर-लाञ्छनं विवेक-विरिञ्चनं गण्डमण्डलिक-गण्डस्थळ-प्रहारि देसकारर-देव मूरु-रायरा-स्थान कलि-विरुदर-गण्ड नुडिदन्ते-गण्ड साहसोत्तुंग सेननसिंह नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं

कार्त्तवीर्य्य-देवरसरु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरल् तदाज्ञे-यिम् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्मण्डलिकं परबलसाधकं जीमू-तवाहनान्वयप्रसूतं शौर्य्य-रघुजातं समर-जयोत्तु(त्तु)ङ्ग रणरङ्गसिंगं मयूर-पिच्छ-चन्नद्-ध्वजं रूप-मकरध्वज पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसादं जिनधर्म्म-केलि-विनोदं मावनं-ककार मण्डलिक-कैदार नामादिसमस्तप्रश-स्तिसहित श्रीमद् गोङ्कि-देवरसर् निज-राजधानियप्पं तेरिदाळद मध्य-प्रदेशदोळ् गोङ्क-जिनालयमं निर्म्मिसि श्री-नेमि-जिननाथ-प्रतिष्ठेयं राष्टकूटा-न्वय-शिरः-शिखामणि कार्त्तवीर्य्य-महामण्डलेश्वरं मुख्यनागि सद्भक्तियिं शुभदिनमुहूर्त्तदोळ् माडि तज्जिनमुनि-प्रधानरप्प देसिग-गण-पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दाचार्यान्वयद कोल्लापुरद श्री-रूपनारायणन बसदि-याचार्य्यरु मण्डलाचार्य्यरु मेनिप्प श्रीमाघणन्दि-सैद्धान्तिक-देवरं बरिसि **शक-वर्ष १०४५ नेय** शुभकृत्-संवत्सरद वैशाखद पुण्णमि बृहस्पति-वारदल् गोङ्क-जिनालयके पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुम समस्तपरीवार-प्रजेगळुमं आ स्थळद सेट्टि-गुत्त-मुख्य-समस्त-नकरङ्गळुमं बरिसि नेमि-तीर्थेश्वरन बसदिय ऋषियराहारदानकं देवरष्टविधार्च्चनेगं खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारकं पेसर्-गोण्डु तन्मुनीश्वर दिव्य-श्री-पाद-पद्मं-गळं दिव्य-तीर्त्थ-जळङ्गळिं तोळेदु शातकुम्भ-कुम्भ-संभृत-जळङ्गळिं धारा-पूर्व्वकं माडि तेरिदाळद पश्चिम-भागदोळ् हारुनगेरिय बट्टेयिं बडगल्-यिप्पत्तनाल्गेण-कोलल् कोट्ट मत्तरेप्पत्तेरडु देवियण-बावियिं तेङ्कला कोलल् कोट्ट तोण्ट मत्तरोन्दु अन्तु मत्तर् ७२ तोण्ट मत्तर् १ अल्लिय पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुमरुवत्तोक्कलुं हन्नि-मान्यक्क रासिगोळगे वं विट्टर् अल्लिय सेट्टिगुत्त-मुख्य-नगरङ्गल् तावु मार-कोण्ड भण्ड माणिक-पट्ट-सूत्रवादडं होगे वीस लाभायद अडके होगे इन्नोन्दु तावु तेगेद

येलेय हेरिंगं अग(?)द (?)न्तरु वंत्तिगरु तेगेद हेरिङ्गं नूरेलेयिन्ति-
नितुवं विट्टर तेल्लिगरु मान्य-सान्यवेन्नदें देवर संजे-सोडरिंगं धूपारितेगं
गाणके सोल्लगे होरगणि वन्द एण्णेय कोडके सोल्लगे , यिन्तव विट्टरु
गणे-कुम्भाररु देवर अष्टविधार्च्चने आहारदान नडवन्तागि दानशालेगे
आवगेगळन विट्टरु हलसिगे-हन्निच्छासिरद हेव्वट्टेयल् नडेव गात्रिगरु
देवरिगे अष्टविधार्च्चने नडवन्तागि हेरिङ्गे नूरु वोल्लेयं विट्टरु ॥

[IA, XIV, p. 14-26 (lines 1-56), t & tr.]

२८१-८२-८३

श्रवणवेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२८४

होसहोळलु—संस्कृत और कन्नड़

[विना कालनिर्देशका, पर संभवतः लगभग ११२५ ई० का]

[होसहोळलु (कृष्णराजपेट परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्ड-
लेश्वर-द्वारावतीपुरवराधीश्वर-यादवकुलाम्बरद्युमणिसम्यक्त्वचूडामणि मले-
परोलु गण्डाद्यनेकनामालङ्कृत·········त्रिभुवनमल्ल तळकाडुगोण्ड
भुजवळ वीरगङ्ग होय्सळ-देव पृथिवि-यराज्यं उत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्ध-
मानमाचन्द्रार्क्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरमनेक-
च्छत्रच्छायदिं पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्त-

भुवनविख्यात पञ्चस(श)तवीरशासनलब्धानेकगुणगणालङ्कृत सत्य-सौं(शौ)चाचा[र] चारुचारित्र वीर-बळंजधर्म्म-प्रतिपालन विसु(शु)द्ध-गुड्ड-ध्वज-विराजिताम्बरं साहसोत्तुङ्ग चलदङ्कराम साहसभीमं दीनानाथ-बुधजन-कल्पवृक्षनुमप्प चवुण्डादि-द्वितीय-नामवेय-दोरसमुद्रपट्टण-स्वामि **पोय्सळ-सेट्टियराद नो[क]बि-सेट्टि श्री-शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डन्** आप्रभुविन मनो-नयन-वल्लभे जिन-गन्धोदक-पवित्री-कृतोत्तमाङ्गेयुं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान विनोदेयरुमप्प **देमिकब्बे-सेट्टियु** मेदिनीदेवरु ।

वृत्त ॥ मरु निरतमेरॅगे वदन-तेजमनोत्ति·············।
स्तरमनु·····································।
·····································।
·····································नोळबि-सेट्टिय ॥

कन्द ॥·········देमाम्बिकेय । उत्तमनेने सकळ-जनम् ।
·····································।·····································न ॥

आत-चउण्डादि-नामधेय······देमिकब्बेयुं त्रिकूटजिनालयमं माडिसि श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्री-कुक्कुटासन-मलधारिदेवर शिष्यरप्प तम्म गुरुगळु श्री-शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवर्गे कोट्ट वसदिगे अर्हनहळ्ळियुमं वसदिय वडगलु तेङ्कलुं नट्ट कल्लु मेरेयागि मूड केरॆ-वरं परिदे केरियुमं मरे नडुवण-दान-सालॆय मनेयुमं एरडु-गाणमु एरडु तोण्टमुं···वेड्ड-नायक[न] मग गण्ड-नारायण-सेट्टि कत्तरि घट्टद भूमियोळगे कणिय-समीपद कडवद कोळद -केरे एरडुमं आ-केरॆय्-मूडण-कोडियिं परिद पळ्ळदिं तेङ्कलु-पडुवलाद गर्दे वेद्दलेयुमं विट्टनन्तिनितुम ···शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे धारा-

पूर्वकं माडि सर्व्वनमस्यवागि नोळवि-सेट्टियरु कोट्ट····श्री-मूलसंघद पुस्तक-गच्छदवरोल्लरु साम्यमिल्ल इन्त् ई-धर्म्मव (हमेशाकी तरह अन्तिम शब्दावली और श्लोक)

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय वीरगङ्ग-होय्सल-देव इस-पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे उस समय उनके पादपद्मोपजीवी, शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य नोळवि-सेट्टि नामके पोय्सल-सेट्टि थे। देमिकब्बे सेट्टिने त्रिकूट-जिनालय बनवाकर इसके खर्चके लिये दानमें अर्हनहल्लि गाँव दिया; इसीके साथ एक उत्तम तालाब, जिसके बीचमें दानशाला थी ऐसी एक गली या सड़क, दो तेलकी चक्कियाँ और दो बगीचे भी दिये। यह जिनालय उन्होंने मूलसंघ, देसिग-गण, पोस्तकगच्छ और कोण्ड-कुन्दान्वय कुक्कुटासन मलधारिदेवके शिष्य और अपने गुरु शुभचन्द्रसिद्धान्त देवको समर्पित कर दिया। बेट्ट नायकके पुत्र गण्ड-नारायण-सेट्टिने निर्दिष्ट दूसरी जमीन दी। यह सब दान नोळवि-सेट्टिने शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव के स्वाधीन कर दिया। और मूलसंघके पोस्तक-गच्छका जो कुछ था, उस सभीको चुंगी और करसे मुक्त कर दिया।]

[EC, IV, Krishnarajapet tl., n° 3]

२८५

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८६

हिरे-आवलि—कन्नड़

[विक्रमचालुक्यका ४९ वाँ वर्ष ?=११२४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, रामलिङ्ग मन्दिरके सामने पड़े हुए पत्थरपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-वर्षद ४ [ ] नेय साधा [रण]-संवत्सरद माघ-शुद्ध ५ बृ०-वारदन्दु श्रीमन्मूल-संघद सेन-गणद

पोगरि-गच्छद चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव-शिष्यरप्प माधवसेनभट्टा-रक-देवरु.

मनदिं जिनन पदङ्गळोळ् ।
अनुनयदिं निरिसि पञ्च-पदमं नेनेयुत्त ।
अनुपम-समाधि-विधियिम् ।
मुनि माघ............पडेदम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूल-संघ, सेन-गण और पोगरिगच्छके चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देवके शिष्य माधवसेन-भट्टारक-देव जिन-चरणोंका मनन करके, पञ्च-परमेष्ठिका स्मरण करके, समाधि-मरण धारण करके स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 127]

२८७

चल्ल(ल्य)—कन्नड़

[शक १०४७=११२५ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८८

सावनूर—कन्नड़

[वर्ष प्लवङ्ग ११२८ ई० (लू. राइस) ।]

[सावनूरमें, मारि-कट्टेके दक्षिणमें पड़े हुए एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥
श्रीमत्-परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्-त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-ता-रम्बरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ वनधि-व्याप्तावनी-चक्रदोळति-सुभटं विक्रमायत्त-चित्तम् ।
मुनिसिं माराम्पनावं त्रिपुर-विजयिगं शूद्रकङ्गं सुपर्ण्णी- ।
तनयङ्गं फल्गुणङ्गं दशरथ-तनुजङ्ग सहस्रार्जुनङ्गम् ।
दनुजप्रध्वंसिगं कौरव-नृप-रिपुगं पाण्ड्य-भूपाळकङ्गम् ॥
मरदिन्दङ्ग-कलिङ्ग-वङ्ग-मगधं नेपाळ-पाञ्चाळ-गुर्- ।
ज्जर-गौळ-द्रविळान्ध्र-माळव-तुरुष्का⋯सौराष्ट्र-बर्- ।
ब्बर-काश्मीर⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯मरोत्- ।
करमं बेङ्कोळुवं भयङ्क⋯⋯ण पाण्ड्य-भूपाळकम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं काञ्ची-पुर-वरा-धीश्वरं यदुवंशाम्बर-द्युमणि सु-भट-चूडामणि निज-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डं परिच्छेदि-गण्डं राजिग-चोळ-मनो-भङ्गं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देव-पादाब्ज-भृङ्गं नामादि-प्रशस्ति-सहितं⋯⋯भुवन⋯⋯दक्षिण-भुजा-दण्डने-निसि ॥

वृत्त ॥ सतत धर्म्मिये धर्म्मजं⋯⋯⋯⋯⋯⋯ळा- ।
न्वितने हुं कमळोद्भवं पर-हित-व्यापारे⋯⋯भू-तळ- ।
स्तुत-विद्याधर⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯सत्य-सङ्- ।
गतने भास्कर-सूनु विक्र⋯नं श्री-सूर्य्य-दण्डाधिपम् ॥
प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-भरितं मान-सन्मान-दान- ।
⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯नाराधकं नित्य-लक्ष्मी- ।

प्रभु-शौचाचार-सारं·······वळ-विळसत्-पाण्ड्य······· ।
························सूर्य्य-दण्डाधिनाथम् ॥

····अनवरत-विनुत-सुर-नर····घटित-पद-कमल-युगल श्रीमदीश्वर-····पादाराधक विरोधि-निकुरुम्ब·········गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिकसमा-मण्डन प्रचण्ड-दण्डनाथ·········विराजमान सतत-सं····नाभिमान········मंत्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गण····त नियोगयौगन्धर निखिल-धर्म-धारण······पाळ-मस्तक-खण्डन-प्रचण्ड-दोर्-दण्ड पाण्ड्य-मण्डळिक-दक्षिण·········गर्व्वपर्व्वतारूढनि ऊढ-प्रौढ-नितम्बिनी-निकुरुम्ब-दिव्य····श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल परिच्छेदि-गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिक········शरणागतवज्र-पञ्जर । मृदु-मधुर·············दार-हित····सतत········दण्डनाथ-कुळ-कमळिनी-विकासन-सहस्रकिरण । वन्दि-जन-भरण········तम्रि सूर्य-दण्डाधिनाथम् ॥

कं ॥ आळापदिन्दे पाण्ड्य-नृ- ।
पाळङ्गेरगद विरोधि-नृप········ ।
····सि पद-नतरं प्रति- ।
पाळिसिद सु-भट·······-दण्डाधीशम् ॥

············जिन-स्तवन····सम्पू···पवित्रोत्तमाङ्ग····दरर्दि मुक्त····यिनुरुतर-वज्र····करतळ-रुचियिन्दोप्पुत···नर्त्थिदि भास्वर-कान्ता-रत्नमे········ ॥

कं ॥ मण्डळिय····दडे········केय्येळु········डगलेनरे
················ ॥

वृ ॥ दोरे मरु देवी··················ताम् ।
सरि नुत-लक्ष्मि तत्-सदृशमा-प्रियकारिणि देवियेन्दोडी-

धरेय...कालियकनोळ् ।
वर-गुण-वार्द्धियोळ् मुनि-जन-प्रिय दान-विनोद-चित्तेयोळ् ॥
पडेदर्त्थं कळ्ळरिं दायिगरिमळिपरिं भूपरिं किच्चिनिन्दम् ।
किडुगं तानन्तदेम् शाश्वतमेनि....शाश्वतं मर्प्पेनेन्दा- ।
गडे पूर्णिड पूर्ण्ण-चन्द्रानने जिनपति-सद्-गेहमं सेम्बनूरोळ् ।
कडु-रय्यं तानेनल् माडिसिदळधिक-सद्-भक्तियिं कालियकम् ॥

स्वस्ति समस्तवस्तुविस्तार-गोचर........जगान-जिनेश्वर-चरण-सरसिरुहमधुकरोपमान-कुटिल-कुन्तळ-कळापे मृदु-मिधुर-सतत-सत्य-वचनालापे । शृङ्गार विरचित.........जन्मभूत.........मान-सूर्य्य-दण्डाधिनाय-विशाल-वक्षस्-स्थळस्थित-लक्ष्मी....ने सम्मान-दाने तार-हार-हर-हासा....शशि-विशद-कीर्त्तिविराजित-प्रवर्द्धमान-गुणवति पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादे जिन-पूजा-विनोदे धवळ-विशाळ-कुमुद-नेत्रे गोत्र-पवित्रे निश्शंकादि-गुण-मणि-गण-विराजिते सम्यक्त्व-रत्नाकरे पञ्चाणुव्रत-गुणाकरे सकळ-विनेय-जन-चिन्तामणि वनिता-निकर-चूडामणि नामादि-प्रशस्ति-सहितेयप्प श्री-सूर्य्य-दण्डनायकन पिरिय-दण्डनायकित्ति कालियकम् ॥

वृ ॥ जिन-धर्म्मं प्राणि....र्म्मं तनगदु कुल-धर्म्मं जिन-स्वामि देव्वम् ।
जनकं मिक्कायतवर्म्मं जननि तनगे जक्कव्वे भव्यर्क्कळेन्दुम् ।
तनगासर् तन्न त....गुणि कलि-देव लसत्- शौर्य्य-धैर्य्यं ।
तनगीशं सूर्य्य-दण्डाधिपनेने तळेदळ् कीर्त्तियं कालियकम् ॥

सूर्य्य-चमूपन तम्मम् ।
......धैर्य्य-महा-मेरु वैरि-जन-लय ...वत्- ।
चौर्य्यं स्वामि-प्रिय-कर- ।
कार्य्यं दण्डाधिनाथनादित्याख्यम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्ड-दण्डनायक चालुक्य-विक्रमादित्य-देव-समानर्घ्य-वस्तुनायक प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-गुण-मणि-गणालङ्कृत-शरीर। भय-लोभ·········त्रिभुवन-मल्ल-पेर्म्माडि-देवदक्षिण-भुजा-दण्ड रिपु-काळ-दण्ड। प्रसिद्ध-सेनवर-दण्डनाथ-प्रिय-पुत्र चारु-चरित्र। सतत-धार्म्मिक-धर्म्मनन्दन। स्वामि-प्रिय-मरुनन्दन। हर-चरण-कमल····सळ-सततानत-मधुकर। सकळ-गुणाकर। समग्र-वैरि-कुळ-कुधर-कुळिश-दण्ड। समर-प्रचण्ड। दुर्द्धर-दुर्विनीत-दण्डनाथ-वंश-वन-कुठार। सङ्ग्राम-धीर····आयदा-चार्य्य मन्दर-धैर्य्य आन्ध्री-नीरन्ध्र-कुच-कळश-दर्प्पण वन्दि-सन्तर्प्पण कुन्तळी-कुन्तळ-सुवर्ण्ण-कुसुमाभरण अनिन्दिताचरण पुरुषार्थ-स्वार्थीकृत-जीमूत-वाहन मान-विळसद्धन सतत-दान-सन्तर्प्पित-दीनानाथ-यूथ नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीमदादित्य-दण्डाधिनाथम् ॥

प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गणदोळ् सन्ततैश्वर्य्यदोळ् सू-।
क्त-भवोद्यद्-भक्तियोळ् सद्-विनय-नय-सदाचारदोळ् चित्तमूसन्-।
निभ-भद्राकारदोळ् तद्-वितरण-गुणदोळ् धार्म्मिक-स्वान्तदोळ् सत्-
प्रभवर्प्पेळ्नरारेम्बिनमेसेदपनादित्य-दण्डाधिनाथम् ॥

श्रीमद्-द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दि-संघेऽस्त्यरुङ्गळः।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वारासि-पारगैः ॥
अवटु-तटमटति झटिति स्फुट-पटु-वाचाट-धूर्जटेरपि जिह्वा।
वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तव सदसि भूप कास्थान्येषाम् ॥

इन्तेनिसिद समन्तभद्रस्वामिगळ सन्तानदोळु ॥

एकत्र गुणिनस्सर्व्वे वादिराज त्वमेकतः।
तस्यैव गौरवं तस्य तुळायामुन्नतिः कथम् ॥

अवर शिष्यरु ॥

इन्दोश्च कान्तमति-विस्तृतमम्बराच्च
भूमेश्च भूरि जळधेश्च गभीरमास्ते ।
मेरोश्च तुङ्गमजितेश यशस्तवोर्व्याम्
मत्तेभ-बिम्बमिव मानव-तारकेऽद्य ॥

इन्तेनिसिदजितसेन-भट्टारकरग्र-शिष्यरु ॥

घन-वद्ध-क्रोध-धात्रीधर-कुळ-कुळिशं मान-माधद्-गजास्फा-
ळन-भद्रेभारि माया-गहन-दहन-दावानळं संस्फुरल्लो- ।
भ-नितान्त-ध्वान्त-विध्वंसन-खर-किरणं श्राव्य-काव्य-प्रियं भ-
व्य-निकायाम्भोधि-संवर्द्धन-हिमकरणं मल्लिषेण-व्रतीन्द्रम् ॥

एने नेगळ्द मल्लिषेण-मलधारि-देवर शिष्यरु ॥

आळापं बेड नैय्यायिक निज-मतम नच्चदिर् स्साख्य माण् वा- ।
चाळत्वं सल्ल मीमांसक तोडरदेले बौद्ध पो पोगु वादि- ।
व्याळेभोत्तुंग-कुम्भ-स्थळ विदळन-कण्ठीरवं वन्दपं श्री- ।
पाळ-त्रैविद्य-देवं जिन-समय-सुधाम्भोधि-सम्पूर्णचन्द्रम् ॥

स्वस्ति श्रीमच्चाळुक्य-विक्रम-कालद ५३ य कीलक-संवत्सर-दुत्तरायण-संक्रमणदन्दु श्रीमत्-सेम्बनूर स्तानाचार्य्य शान्तिशयन-पण्डितर कय्यल्लु श्रीमत्-पिरिय-दण्डनायकिति काळिकब्बेगळु धारा-पूर्व्वकं माडिसि कोण्डु पार्श्व-देवर कूटक्क देवर वि····पूजारिय बियक्क हलकट्टद केळगे त्रिट्ट गद्दे कम्म ४५० आ-केरेय हडुवण-कोडियोळगे बेळ्दले मत्त १ इन्ती-धर्म्ममना रोव्वेरल्लिय स्थानाचार्य्यरुं देवगुत्तरुं···· न्निर्व्वरुं बेस-वक्कलुं तप्पदे प्रतिपालिसुवरु मत्तं स्थानि···केरेय केळगण

गद्देयुं अदर बळसि वेद्दलेयुम्‌··········मं प्रतिपा (शेष पढ़े जानेके योग्य नहीं है)।

[EC, XI, Davangere tl., n° 90]

[जिनशासनकी प्रशंसा। स्वस्ति। जब, (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था तब तत्पादपद्मोपजीवी राजा पाण्ड्य था। पृथ्वीपर उसका सामना करनेवाला कोई भी न था। उसने शिव (त्रिपुर), शूद्रक, गरुड, अर्जुन (फाल्गुन), राम, सहस्रार्जुन, कृष्ण, भीम, इन सबको जीता था।

उसका दण्डाधिप सूर्य्य यादव-वंशका सूर्य और राजिग-चोळके प्रयत्नोंका विफल करनेवाला था। उसकी पत्नी कालियक्के थी। जो धन चोरों, सगे-सम्बन्धियों, लोभियों, राजाओं, या अग्निसे नष्ट किया जा सकता है, उसकी प्राप्तिमें क्या स्थिरता है, इसलिए उसने उसकी स्थिरताके लिये सेम्बनूरमें जिनपतिका एक उत्तम मन्दिर बनवाया। उसकी प्रशंसा। कालियक्केके पिता आहवर्म्मा, माँ जक्कब्बे,······कलि-देव थे।

सूर्य्य-चमूपका छोटा भाई आदित्य-दण्डाधिनाथ था। उसकी प्रशंसा।

द्रविण-संघके नन्दि-संघमें अरुङ्गलान्वय चमकता है। उसमें समन्तभद्र, वादिराज, उनके शिष्य अजितेश (अजितसेन-भट्टारक) उनके ज्येष्ठ शिष्य मल्लिषेण-मलधारी, उनके शिष्य श्रीपाल-त्रैविद्य-देव हुए। प्रत्येकका एक-एक श्लोकमें गुणवर्णन।

(उक्त मितिको), सेम्बनूरके मन्दिर-पुरोहित शान्तीशयन-पण्डितके हाथोंमें, ज्येष्ठ दण्डनायकिति कालियक्कब्बेने जलधारापूर्वक पार्श्वदेव और उनकी पूजा तथा पुजारीकी आजीविकाके लिये (उक्त) भूमिदान किया। कल्याणकामना और शाप]

२८९-९०

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५०=११२९ ई० (कीलहॉर्न)]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९१

ऊद्रि—कन्नड़

[विक्रम वर्ष कीलक ११२९ ई० (लु. राइस) ।]

[ऊद्रिमें चौथे पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-विक्रम वर्षद कीलक-संवत्सरद माग (घ)-शुद्ध १३ श्रीमन्महामण्डलेश्वरं एक्कलरस-देवरुद्धरेयोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

परम-जिनेश्वरं तनगधीश्वरनुद्घलसच्चरित्र····।
गुरु हरिण[न्दि]देव-मुनिपोत्तमनग्गद दण्डनायकम् ।
वर-गुणि-बोप्पणं जनकनुन्नत-शीलद नागियक्क मा-।
तरेयेनलेम् कृतार्थनो धरित्रिगे सिंगण-दण्डनायकम् ॥
गुणद कणि जैन-चूडा-।
मणि वैरि-बलक्के समर-मुखदोळ् सुभटा-।
ग्रणि जिन-पदङ्गळं सिङ्-।-
गण-दण्डाधिपति नेनेदु सद्-गति-वेत्तम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), जिस समय महा-मण्डलेश्वर एक्कलरस-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य करते हुए उद्धरेमें विराजमान थे उस समय सिंगण दण्डनायक था । वह बड़ा भाग्यशाली था, क्योंकि उसके परम-जिनेश्वर अधीश्वर (इष्ट देव) थे, हरिनन्दि-देव-मुनि उसके गुरु, महान् दण्डनायक बोप्पण उसके पिता, और नागियक्क उसकी माता थी । यह दण्डनायक अपने समयका जैन-चूडामणि था, समरमें सामना करनेवाले सुभटोंमें अग्रणी था,—जिनपदोंका ध्यान करते हुए उसको सद्गति मिली थी ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 149]

२९२

हूनशीकट्टि (जिला बेलगाँव)—कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई० (फ्लीट)]

[१] स्वस्ति श्रीमद्-भूलोकमल्लदेवर[1] वर्ष ६ नेय साधा (धा)रण संव-

[२] त्सरद फाल्गुन शु ५ आदिवारदन्दु श्रीमन्महामं-

[३] डलेश्वरं मारसिंहदेवरसरु अग्रहारं कोडन-पूर्व्वे-

[४] दवल्लिय माणिक्यदेवर वसदिय सम्बन्धियेकसा-

[५] लेय-पार्श्वनाथदेवर विविधपूजाविधानके विट्ट

[६] गद्देय सीमेय गुड्डे [॥] मङ्गलश्री [॥]

[मंगल हो । रविवार, साधारण 'संवत्सर' जो कि श्रीमान् भूलोकमल्ल-देवका छठा साल था, फाल्गुन शुक्ला पञ्चमीको,—महामण्डलेश्वर मारसिंहदेवरसने कोडनपूर्वेदवल्लि (गाँव) के माणिक्यदेव (देवता) की वसदि (मन्दिर) के एकसालेय-पार्श्वनाथदेव (भगवन्त) की अनेकविध रीतियोंकी पूर्तिके लिये धान्य (चावल) के बहुतसे क्षेत्र दिये ।]

[इ० ए०, १०, पृ० १३१–१३२, नं० ९८]

२९३

हन्तूरु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई०]

[हन्तूरु (गोणी बीडु परगना) में, ध्वस्त जैन-बस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ भूलोकमल्लका दूसरा नाम सोमेश्वर तृतीय भी है । यह राजा पश्चिमी चालुक्य वंशका है ।

जयति सकलविद्यादेवतारत्नपीठम्
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्व्व-मिथ्या-।
समय-तिमिर-घाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुर-वराधीश्वरं यदु-कुळ-कळश-कळित-नृप-धर्म्म-हर्म्यमूळ-स्तम्भन्। अप्रतिहत-प्रताप-विदित-विजयारम्भ। शशकपुर-निवास-वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद। श्रीमन्मुकुन्द-पादारविन्द-वन्दन-विनोद नित्यादि-नामावळीसमन्वितरप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड भुजवळ वीर-गङ्ग-विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवरु मूडलु नंगलियघट्ट तेङ्कलु कोङ्गु चेरसनमले हडुवलु वारकनूर घट्ट बडगलु साविमलेयिनोळगाद भूमियं भुज-बळाव-ष्टम्भदिं परिपाळिसुत्तुं दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे।

वृत्तं ॥ प्रकटाटोपद चक्रगोट्टदोडेयं सोमेश्वरं बल्के त-।
न्न कराळासिय कूर्प्पनेम्मेरदनो गौडान्धकार-प्रचरण्-।
डकरं माळव-मेघ-जाळ-पवनं चोळोग्रकाळानळम्।
त्रि-कळिङ्ग-त्रिपुर-त्रिणेत्रनदटं श्री-विष्णु-भूपालकम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्द श्री-विष्णुवर्द्धन-अग्र-तनूज निज-वंशाम्बर-द्युमणि। वन्दि-जन-चिन्तामणि। सत्य-शौचाचार-सम्पन्न। बुध-जन-मनःप्रसन्नन्। आळिम्मुन्निरिव सौर्यमं मेरेव। श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल कुमार-बल्लाळ-देवननवरत-मनोरथावाप्तियिं राज्यं गेय्युत्तमिरे।

क ॥ कळ्के बयलुगेक तुळ्क्। एळ्येयोळ् मारान्परिल्लदा-दिगधि-परम्।
शेळ्दु नेलक्किक्कलु कौ-। वळिपुदु रिपु-नृप-कुमार-भैरवन मन ॥

आवङ्गमाव-धनमुम- । नीव महा-दानि युद्ध-विजयमना-मा- ।
देवङ्गमीयददटर । देवं बल्लाळ-देवनप्रतिम-बल ॥

अन्तेनिसि नेगर्दे श्रीमत्कुमार-बल्लाळ-देवनग्रानुजे हरियब्बरसियेन्तप्पळेन्दडे सरस्वतियेन्ते सत्-कळान्विते । सीतेयन्ते विनीते । सुसीमादेवियन्ते सुशीले रुग्मिणियन्ते गुणाग्रणि । अनल्प-कल्प-शाखानीकदन्तनून-दान-जनित-जन-मनःपुळकेयु । भगवदर्हत्-परमेश्वर-चरण-नख-मयूख-लेखा-विळसित-ललाट-पळकेयुम् । चातुर्व्वर्ण्ण--वर्णितागण्य-पुण्य-जन-शिखा-मणियुम् । सम्यक्त्व-चूडामणियुमेनिसि ।

वृत्त ॥ धरेयोळनन्त-दिव्य-यति-सन्ततिगन्नमनाद-मीतिथिम् ।
वरे पलरङ्गलेम्ब्रभय-त्राक्यमनातुररागि वेर्प्पवर्ग्ग् ।
इरदे शरीर-रक्षणमनोदल्लु शास्त्रमनीव पेम्पिनिम् ।
हरियवे ताळ्दिदळ् पर-हितोक्त-चतुर्व्विध-दान-शक्तियम् ॥
पर-बळ-दानव-संहा- । रारुण जळ-लिप्त-खर्ग्गतुन्नततेजम् ।
वर-विबुध-विभव-विभवं । हरि- कान्ता- कान्तनेसदपं विशुसिंग ॥
हरि-कान्तेयुमी-कान्तेय । दोरेगे वरल् कोरळेम्ब निम्मदद गुणोत्-
करमनोळकोण्डु हरियवे । पर-हितर्दि धरेयोळैदे जसमं तळेदळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमतु-हरियल-देवियर गुरुगळेन्तप्परेन्दडे श्रीमूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद श्री माघणन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वृ ॥ मोहान्धकार-रिपु-शाक्य-नवोत्पळारिश् ।
चार्वाक-चन्द्र-किरण-प्रतिनाश-हेतुस् ।
सद्-भव्य-वारिज-महोत्सव तेज-राजिङ् ।
उज्जृम्भितो जगति गण्डविमुक्त-भानुः ॥

अन्तु जगद्विख्यातरप्प श्रीमत्-गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर गुड्डि हरियब्बरसियरु कोडङ्गि-नाड मलेवडिय हन्तियूरलनेक-रत्न-खचित-रुचिर-मणि-कळश-कळित-कूट-कोटि-घटितमप्प उत्तुंग चैत्यालयमं माडिसि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धरणक्क नित्य-पूजेगं ऋषियरजियर्कळाहार-दानकं सित-परिहारकं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-होय्सळ-देवर कय्यल्लु सर्व्व-बाधा-परिहारवागि गुत्तिय चिण्णन दीवर बम्मनन्तिर्व्वरुद्दु हणविन मण्णुमं बिडिसिकोण्डु शक-वर्षद १०५२ नेय सौम्य-संवत्सर दुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु तम्म गुरुगळप्प गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

श्रीमन्-मल्लिनाथं विरुद-लेखक-मदन-महेश्वरं बरेदम् । नागरादि-नागरिक-द्रविळ-समुद्धरणनप्प माणिभोजन मगं बिरुदरूवारि-वेश्या-भुजङ्ग बलकोजं कण्डरिसिदं मङ्गलम् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (अपने पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देव अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें विराजमान थे । राजा विष्णुने चक्रगोट्टके स्वामी सोमेश्वरको अपनी तलवारकी धारसे डराया । वह गौड, मालव, चोळ, त्रिपुट, त्रि-कलिंग सबके लिये भयावह था । जब विष्णुवर्द्धनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल कुमार बल्लालदेव राज्य कर रहा था:— (उसकी शूरवीरता और औदार्यकी प्रशंसा करते हुए उसकी स्तुति) । कुमार-बल्लाल-देवकी बहिनोंमें सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी । उसका वर्णन:—(जैन रूपमें उसकी भक्तिका प्रदर्शन, उसकी प्रशंसा) । उसका पति सिंग था; (उसकी प्रशंसा) ।

उस हरियब्ब-देवीके गुरु श्री-मूलसंघ, कुन्दकुन्दान्वय, देसिग-गण तथा पुस्तक-गच्छके माघनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे; (उनकी प्रशंसा)

जगद्विख्यात गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवकी गृहस्थ-शिष्या हरियब्बरसिने, कोडङ्गि-नाड्के मलेवडिके हन्तियूरमें, गोपुरों या शिखरोंसे—जिनमें रत्नोंसे

जड़ित चोटियाँ थीं—समन्वित एक विशाल चैत्यालय, तथा मन्दिरकी मरम्मत करने, पूजाका प्रबन्ध करने, ऋषि और वृद्ध स्त्रियोंको आहारदान देने, तथा शीतसे रक्षा करनेके लिये—त्रिभुवनमल्ल होय्सल-देवके हाथोंसे तमाम चुङ्गियों व करोंसे मुक्त भूमि गुत्तिके चिक्क और बम्म मल्लुएसे ५ हणके किरायेसे लेकर (उक्त मितिको), अपने गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके उन्हें दी। (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

मल्लिनाथने इसे लिखा और माणिभोजके पुत्र बलकोजने उत्कीर्ण किया।]

[EC, VI, Mudgere tl, n° 22]

२९४

कम्बदहल्लि—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११३० ई०]

[कम्बदहल्लिमें, जैन बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्री-मूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्रसैद्धान्तिकर शिष्यितियरप्प.... ....कय रुकमव्वे जकवे कन्तियर्गो तव....निसिधियं माडिसि ....स्वर्गस्थर्................................

[(सर्वसाधुगुणसम्पन्न) प्रभाचन्द्र-सैद्धान्तिककी शिष्याएँ रुकमव्वे और जकव्वे-कान्तियरकी स्मृतिमें ....स्मारक बनवाया।]

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 21]

२९५

तगदुरा—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९६

श्रवणबेलगोला—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९७

आवलवाडी—कन्नड़-भग्न

[शक सं० १०५३ (?)=११३१ ई०]

[आवलवाडी (कोप्प तालुका)में, सीमाकी दीवालके पास]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुर-वराधीश्वरं दसकाष्ठनिवास वासन्तिका-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद दशदिश.... तिलक कि........कुन्दपादा....तमन्द म....करन्द नन्द........रपालमाथि....क्यं अरि-भीमज रिपु...ङ्कर............ळु गण्डं विश्व-विद्या-विचार....दला.................मदि समस्त.......................गवाडि नोणम्बवाडि गोण्ड....वीरगङ्ग...वित्र........यिसळ विष्णुवर्द्धन ....दुष्टनिग्रहशिष्ट-प्र....सु..........दोळे....के.ज़वर.... ....विष्णु....तारम्बरदोळु...रण....ळु मल्लिनाथ ॥ आतन समस्तभुवनख्याति.......................गोत्र....ळर सूत्र............. मारसमन्वित....निरु....गोत्र..................चूडा.... ॥ तत्पा........ ....परम-ज.......धर्म...मीमं ॥ ...रङ्ग............माचिकेय धर्म...............य वं...................... पाद............ ...न्द्व-जन....नरुळ........गरगं ॥ ....यना....जात ....गेने पुण्य....ळिगळु श्री तरव........प्रासरु सि....सावरागि तद्

स॰॰॰॰न॰॰॰॰श्री मूलसंघ देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद सि॰॰॰॰द्धान्त-चक्रवर्ति- दर्म्मण॰॰॰॰तार-देवर सधर्म्मरप्प श्री॰॰॰॰द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ॥ रामं॰॰॰जदि-पुर-गत धूत-कषायर् अतुल-रत्नत्रय-स॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰ तदोळु श्रीमन्नयकीर्त्ति-भानुकीर्त्ति-मुनीन्द्रर् ॥ सतिय॰॰॰॰कचोक्ष-बा॰॰॰॰हृतिय् अदनोन्दु हृदयदळिप् सिगळ॰॰॰॰लेम्बुदे नयकीर्ति-व्रतिनायनोळ् अतनु॰॰॰॰दावानळनोळु ॥ विनुत॰॰॰॰रुडकादान्वित विमल-वियत्-तिग्म-रुग्-मण्डलं व्रज॰॰॰॰॰॰॰॰मेनित् अनित् आतलरु॰॰॰॰नकरं प्रस्फुरद्दर्प्प॰॰॰॰डप्पन कोट्यज् ज॰॰॰॰प्रहरणन् उपमानित-पुण्य॰॰॰॰चा॰॰॰॰णिक॰॰॰॰ति पतिने विश्वविद्यानिदानम् ॥ अरित-व्रातमुमतिशान्ततेयुं॰॰॰॰॰॰॰॰र-करनुव व्रात-किरणनुमूर्ज्जि॰॰॰दोळ्सेव्रन्तिरेसग्गु श्रुत-सरसिज-भानु-भा॰॰॰॰कीर्त्ति-व्रतियोळु ॥ आ-मुनि-मुख्यस्य यम॰॰॰॰ड तन सगरुगळे॰॰॰॰रेया॰॰॰॰हियाद॰॰॰॰ळ गुण-शीळ-व्रत-निधि मल्लिनाथनोळु मनुज॰॰॰॰सि पोगर्त्ते नेगर्त्ते॰॰॰॰पेर्ग्गडे मल्लिनाथ॰॰॰॰सदियं माडिसि शक-वर्ष १॰॰॰॰२ नेय साधारण-संवत्सरद फाल्गुण बहुळ २ सोमवारदन्दु॰॰ ॰कीर्त्तिभट्टार काल कर्च्चि॰॰॰॰पूजेगं खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकं देवर केरेय केळगण॰॰॰॰॰॰॰॰यल्लु हन्नेरडु सल्गे गद्देयुं वसदि॰॰॰॰मह॰॰॰॰रणज॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰ल्लघट्टमुं बिडिसिद् नामहरन प॰॰॰॰क्षदोळु तदनुजम् ॥ वसं॰॰॰॰नागू-वि॰॰ष्णु-भूपनें वधु-ममनिरुतमाकेयन् अहरयनं॰॰॰॰॰॰॰॰लिया॰॰॰॰॰॰॰॰श सिम॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰दिन पेम्पु॰॰॰॰सि श्री-पुल्लिन वसदि॰॰॰॰गनिद व्रहि॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰गन् उदूव॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰सत्-सर॰॰॰॰तरसु॰॰॰॰॰॰ समस्त-गुण॰॰श्री चलुन विमळ॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰सवाहिर-

व……………………………………चक्रवर्त्तिगळ् एनिसि……………………

……………हा……सर्व्व……हेगड……………………………पूजेयगळु

……………………………………………तिरे यदा रा……………………

……सादी……देन्दु……………………………………द माचण

[जब कि (अपनी विशाल पदवियोंके साथ) विष्णुवर्द्धन इस जगत् पर राज्य कर रहे थेः—मूलसंघ, देशियगण और पुस्तकगच्छके……त्र-सिद्धान्तदेवके शिष्य मुनि नयकीर्त्ति और भानुकीर्त्तिके भक्त पेर्गडे मल्लिनाथने जैन-बसदिका निर्माण किया और इसे धनसे पुष्ट किया।]

[EC, III, Mandya tl, n° 50.]

२९८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५३=११३१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९९

पुरले—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५४, वर्ष नन्दन=११३२ (ठीक ११११) ई०]

[पुरले (बिदरे परगना) में, गाँवके दक्षिण-पश्चिम वीर-सोमेश्वर मन्दिरके सामने पड़े हुए एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चाळुक्याभरणं श्री-त्रिभुवन-मल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलुत्तमिरे।

-एनगेन्दा-विक्रमांकं गड निगळमनिक्किट्टनो वोगे-कीना- ।
शनवोळेय्तन्दु काय्दिं किळदे तलेयना-वीरनेम्-माणूवने-गेय्- ।
वेनेनुत्तं भीतियं-पट्टदने कनसु-गण्डुम्मळं-गोण्डु चोद्यम् ।
ननसेन्देचट्टिरत्•••तन्नेय तलेयनति-भ्रान्तनन्दिन्दु नोळ्कुम् ॥

तत्पादपद्मोपजीवि ॥ श्रीमदेरेयङ्ग-होय्सळनळिय हेम्माडियरसन कीर्त्ति-विशारदमेन्तेन्दडे ।

इवनिन्दं कण्डेनेळुं-कडल कडेयनेळुं-कुमृत्-कूटम दिग्- ।
भव-दन्ति-व्रातमं लोकद पवणनेनुत्तुं यशो-लक्ष्मि••• ।
•••••••तं तन्नोन्दरिविनळवु तन्नोप्पु तन्नेळ्गे तन्न••• ।
•••विळासं तन्न पेम्पट्टळगमेनिसिदं हेम्मं मान्धात-भूपम् ॥
स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानळोद्दाम-तेजम् ।
विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममळ-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामम् ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरम् ।
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सळोर्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ-गुणमं देवेभदुद्दाम-स- ।
त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वळ कळा-सम्पत्तियं पारिजा- ।
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त ताळ्दि तानल्ते पुट्- ।
टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि विनयादित्यावनीपालकम् ॥
मदवद्भूप-बळान्धकार-हरणं तेजोधिकं सन्तता- ।
भ्युदयं संहृत-विद्विपत्-कुवळय-(यं) श्रीक सुहृच्चक्र-सं- ।
मद-सम्पादन-हेतु सत्पथगतं पद्मोद्भवोद्भावकम् ।
विदितार्त्थानुग-नामनल्ते विनयादित्यावनीपालकम् ॥
विनयादित्य-नृपं सज्जनगें दुर्ज्जनागेमात्म-विनयं तेजम् ।

जनियिसे नयमं भयमं । विनूतनाळ्दोम् विशाल-भूमण्डलमम् ।
आ-विनयादित्यन वधु । भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्- ।
भाव-गुण-भवनमखिल-क- । ला-विळसिते केळयबरसियेम्बळ् पेसरिं ।
आ-दम्पतिगे तनूभव- । नादोम् सचिगं सुराधिपतिगं मुनेन्तु ।
आदं जयन्तनन्ते वि- । षाद-विदूरान्तरंगनेरेयङ्ग-नृपम् ॥

वृ ॥ आतं चालुक्य-भूपालकन बलद-भुज-दण्डमुद्दण्ड-भूप- ।
व्रात-प्रोत्तुंग-भूभृद्-विदळन-कुळिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघम् ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात- ।
द्योत-प्रोद्यद्यशश्श्री-धवळित-भुवनं धीरनेकाङ्ग-वीरम् ॥

मालव-सेनेयं तुळिदु धारेयनोवदे सुट्टु तूळ्दि तच्- ।
चोळननीळ्दु तत्-कटकमं कडुपिन्तेरे सूरे-गोण्ड दोश्- ।
शाळि कलिङ्गनं मुरिदु भङ्गिसिदात्म-भुज-प्रतापमम् ।
केळे दिशाधिपं नेगळ्दनी-तेरदिन् [द्] एरेयङ्ग भूभुजम् ॥

एरेयनखिळोर्व्विगेनिसिर्दे- । रेयङ्ग-नृपाळकनङ्गने चेल्विग् ।
एरेवट्टु शील-गुणदिं । नेरेदेच्चल-देवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥

एने नेगळ्दवरिर्व्वर्गं तनूभवर्नेगळ्दरल्ते बल्लाळं वि- ।
ष्णु-नृपाळकनुदयादि- । त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिळ-वसुधा-तळदोळ् ॥

वृ ॥ अवरोळ् मध्यमनागियुं धरणियं पूर्व्वापराम्भोधियेय्- ।
दुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयुद्- ।
भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-व्रातैक-धामं धरा- ।
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपाळकम् ॥

एळेगेसेव कोयतूरु तत्- । अळवनपुरमन्तें रायरायपुरं बल्- ।
पळ बलद विष्णु-तेजो- । ज्वळनदे बेन्दवु बलिष्ठ-रिपु-दुर्ग्गङ्गळ् ॥

कमलाक्षं पुरुषोत्तमं' 'काह्लादनं द्विष्ट-दै- ।
त्य-मद-व्यसननन्त-भोग-युतनुर्व्वी-भार-धौरेयनुत्- ।
तम-सत्वान्वितनुद्ध-यादव-कुळाळंकारनेन्दिन्तु वि- ।
ष्णु-महीशं सले ताने विष्णुवेनिय लक्ष्मी-वधू-वल्लभम् ॥

क ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप- । लक्ष्माङ्कसेदिर्द्द विष्णुग् यन्तन्ते वलम् ।
लक्ष्मा-देवि लसन्मृग- । लक्ष्मानने विष्णुगग्र-सतियेने नेगर्दळ् ॥
अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनिळ्कोळ्ळके सात्व- ।
अवयव-शोमेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना- ।
निवहमन्.........वीररनेचि युद्धदोळ् ।
तविभुवनादनात्मभवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजम् ॥
रिपु-सर्प्पद्-दर्प्प-दावानळ-बहळ-शिखा-जाळ-काळाम्बुवाहम् ।
रिपु-भूपोद्दीप्र-दीप-प्रकर-पटु [तर]-स्फार-ज(झ)ञ्झा-समीरम् ।
रिपु-नागानीक-तार्क्ष्यं रिपु-नृप-नळिनी-षण्ड-वेतण्ड-रूपम् ।
रिपु-भूभृद्-भूरि-वज्रं रिपु-नृप-मद-मातंग-सिंहं नृसिंहम् ॥
स्वस्ति श्री-यदु-वंश-मण्डन-मणिः क्षोणीश-चूडामणिस् ।
तेजःपुञ्ज-विनिर्ज्जिताम्बर-मणिस्सद्बन्ध-चूडामणिः ।
यस्योद्यत्-सु-यशस्सुपर्व्व-सरिता लोकत्रयं शोभते ।
जीयात् पाद-युगानमन्-नृप-कुळश्री-नारसिंहो नृपः ॥
श्री-मूलसंघ-विख्याते मेषपाषाण-गच्छके ।
क्राणूर्-गण-जिनावासो निर्म्मितं हेम्मभूभृतः ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं......दावानळ पाण्ड्य-कुळ-कमळ-वन-वेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-बेण्टेकार परमण्डल-सूरेकार संग्राम-भीम कलि-काल-काम

सकल-वन्दि-वृन्द सन्तर्प्पण-समर्त्थ-वितरण-विनोद वासन्तिका-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद मृगमदामोद यादव-कुलाम्बर-द्युमणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलेपरोळ् गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत् त्रिभुवन-मल्ल तळेकाडु कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल्लु-हुलिगेरे-बेळुवलं-गोण्ड भुज-बळ वीर-गङ्ग प्रताप-होय्सळ-नारसिंहदेवरु सकळ-मही-मण्डळमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळनदिं सुख-संकथा-विनोददिं दोरसमुद्रद नेळेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्तमिरे। तत्पादपद्मोपजीवि।

तद्राज्ये बुध-कोटि-सम्प्रदवन-प्राज्ये प्रधानाग्रणीर् ॥
उन्मीळत्-सुकृताम्बुराशि····सम्पत्ति-चन्द्रोदयः।
श्रीमत्-तिप्पण-भूपतिस्समुदगादुद्दान-धारा-जलैर्।
द्धात्री सम्प्रतिपद्यते प्रतिदिनं···मा···सस्याश्रया ॥
तस्य श्लाघ्य-गुणोदयस्य धरणी-वन्द्योनुजातस्स्वयम्।
श्रीमन्नाग-चमूपति·················यत्तं यः।
यत्तेजः—प्रकरैरजायत परं पद्मानुराग-प्रदैर्।
दृप्यद्-वैरि-तमो-घटा-विघटनैर्देवोऽग्र····ग्रामणीः ॥
श्रीमच्चामल-देवि भाति भवतीत्येवं बुधैर्य्या स्तुता।
तद्वंशे गुण-संगमे नर-मणि·················णिः।
सा जाता भुवनाभिराम-विभवैर्ल्लावण्य-पुण्योदयैर्।
देवि (सम्प्रति) यन्मुखपङ्कजे विजयते वाणी जगत्पावनी ॥
गङ्गरधात्रियोळवनी-। मंगळमेनिसिर्द···आ-स्त्री-रत्नम्।
तुङ्ग-जन················।·················आगिरे कोट्टळ् ॥
वचन ॥ (य्) इक्षुवाक-(क्ष्वाकु)वंशावतारमदेन्तेन्दडे।
सले वृषभ-तीर्त्थ-कालं सु-ललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दं।

कलिकालनिर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धन-क्रमदिन्दम् ॥
सोगेयिसुव-काळदोळ् की- । र्त्तिगे मूल-स्तम्भयेनिपयोध्या-पुर-दोळ् ।
जगदधिनाथ पुट्टिद- । नगण्यनिक्ष्वाकु-वश-चूडारत्नम् ॥
धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वर नोर्व्वने कान्तनागि दोर्ब्बळदिन्दम् ।
विरुदरनदिर्प्पि विधा- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पल-कालम् ॥
वृ ॥ आतन पुत्रनिन्दु-दर-हास-निभोज्ज्वळ-कीर्त्ति सद्-गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुळ-भेदन-कारि कला-प्रवीणनुद्- ।
धूत-माळं सुरेन्द्र-सदृश भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्य-पुण्य-निळयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥
ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवि तनगे सतियेने विबुध-
व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं नेगळे सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
वचन ॥ आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहळं नेगळे ।
वृ ॥ तरळ-तरंग-भङ्गुर-समन्वितेयं क(झ)ष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळ-हंस-पूरितेयनुद्घ-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैल-मान्द्य-शुभ-गन्ध-समीर-निभास्येयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिवाञ्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥
कल-हंस-याने पलरुं । केळदियरोड वागि पूर्ण्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोक्कु निरा- । कुळदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
अन्तु मनदलम्पु पोम्पुळि-वोगे गङ्गा-नदियोळोलाडि निज-गृहक्के
वन्दु नव-मासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गें ।
गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं वडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नाममादुदि- । ळाङ्गनेगधिपतिगे गङ्गदत्ताख्यानम् ॥
व ॥ आ-गङ्गदत्ताङ्गे भरतेनम्ब मगं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्बं
मगं पुट्टिदम् ।

कं ॥ गुण-निधिगे गङ्गदत्तं-। गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया-।
प्रणियागि हरिश्चन्द्र- । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमाङ्ग भरतनेम्ब सुतं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्ब मगनागिन्तु गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे ।

कं ॥ हरि-वंश-केतु नेमी- । श्वर-तीर्त्थं वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुळं- ।
वर-भानु पुट्टिदं भा-। सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्ब नरेन्द्रम् ॥

व ॥ आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कय्कोण्डु अहिच्छत्र-पुरदोळु सुखमिर्दु ।

व ॥ नेमि-तीर्त्थकर परम-देवर निर्व्वाण-कालदोळैन्द्र-ध्वजमेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

कं ॥ अनुपमदैरावतमं । मानोनुरागदोळे विष्णुगुप्ताङ्गित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिडे ॥

व ॥ आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं पृथ्वीमति-महादेविगं भगदत्तं श्रीदत्तनेम्ब तनयरागे ।

व ॥ भगदत्ताङ्गे कलिङ्ग-देशमं कुडलातनुं कलिङ्ग-देशमनाळ्दु कलिङ्ग-गङ्गनागि सुखदिनिरे ।

(य्) इत्तळुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं ।
श्रीदत्त-नृपाङ्गित्तं भू- । पोत्तमनेनिसिर्दे विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-वर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकळ-धात्रियं पालिसिदम् ।
भय-लोभ-दुर्ल्लभं ल- । क्ष्मी-युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

अन्ता-प्रियबन्धु सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्-समयदोळु पार्श्व-भट्टारकर्गे केवळज्ञानोत्पत्तियागे सौधर्म्मेन्द्रं बन्दु केवळि-पूजेय माडे प्रिय-

वेन्दुवुं तानुं भक्तियिं वन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्दं मेच्चि दिव्यम-प्पेन्दुं तुडुगे-गळं कोट्टु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोडं अदृश्यक्कळ-क्कुमेन्दु पेळ्दु विजयपुरक्कहिच्छत्रमेन्दु पेसरनिट्टु दिविजेन्द्रं पोपुदित्तळु गङ्गान्वयं संपूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्च्चिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु कम्प-मही-पतिगे पद्मनाभनेम्ब मग पुट्टि ।

कं ॥ तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळ् चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभना- । प्पिन कणि सासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं

व ॥ अन्तु साधिसि (दि) शाधित-विधनागि पुत्रर्इर्व्वरं पडेदु राम-लक्ष्मणरेन्दु पेसरनिट्टु ।

वृ ॥ परम-स्नेहदोळिर्व्वरं नडपि लीला-मन्त्रदिं चन्द्रनन्- ।
तिरे संपूर्ण्ण-कळाङ्गरागि वेळेयल् विद्या-बलोद्योगमुर्- ।
व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
पेरेदाशा-गजमं पळञ्चलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिमिर्प्पुद्दु मत्तलुज्जेनिय-पुराधिपति-महीपाळना-तुडुगेगळं बेडियट्टिपडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-न्वेशमं कैकोण्डु ।

क ॥ येमगदनद्लिकागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्तु सन्तमिरल् वेळ् । समर्क्के वन्दनप्पडे । निमिपदोळान्तिरिदु वीर-रसम मेरेवेम् ॥

व ॥ अन्तु नुडिदट्टि मन्त्रि-वर्ग्ग डोळाळोचिसि तन्न तङ्गेयाळब्वेयुं नाल्वतेणबरासरप्प विप्र-सन्तानमं बेरसि कळिपिदडवर्द्दक्षिणाभिमुखरागि बरुत्तं राम-लक्ष्मणर्गें ददिग-माधवरेन्दु पेसरनिट्टु निजवयणदिं वरुत्तमिरे ।

क ॥ वन्दवर्गेळुचित-पदमन- । गुण्डेलेयिं कण्डरमळ-लक्ष्मी-चित्ता- । नन्दनमं पेरूरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु गङ्ग-हेरूरं कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु बीडं बिट्टु चैत्या-लयमं कण्डु निर्भर-भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-पारावार-पारगरुं जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण-चन्द्ररुमुत्तम-क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म्म-निरतरुं चारित्र-चक्र-धररं विनेय-जनानन्दरं चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरं सकळ-सावद्य-दूररं क्राणूर-गणाम्बर-सहस्र-किरणरं द्वादश-विधतपोनुष्ठा[न]-निष्ठितरं गङ्गराज्य-समुद्धरणरं श्री-सिंहनन्द्याचार्यरं कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्व्वकम् बन्दिसि तम्म बन्दभिप्राय-मेल्लमं तिळिय पेळे कय्कोण्डवर्गे समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवातु दिवसदिं पद्मावती-देवियं विधि-पूर्व्वकमाह्वानं गेय्दु वरं बडेदु खड्गमुमं समस्त-राज्यमनवर्गे माडे ।

क ॥ मुनि-पति नोडलु विद्द- । जन-पूज्यं माधवं शिलास्तम्भमना-।
ईनुगेय्दु पोय्यलदु पु- । य्मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर् ॥

च ॥ आ-साहसमं कण्डु ।

वृ ॥ मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि स- ।
ज्जन-जन-वन्द्यरं परसि सेसेपनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि बे- ।
ऱ्पेनितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमागे माडिदर् ॥

व ॥ अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनिन्तर्गेन्तेन्दु बेससिदरु ।

वृ ॥ नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदडं जिन-शासनकोडम्- ।
बडदडमन्य-नारिगेरेदट्टिदडम्मधु-मांस-सेवे गे- ।
य्दडमकुळीनर्प्पवर कोळ्कोडेयादडमर्त्थिगर्त्थमम् । -
कुडदडमाहवङ्गणदोळोड़िदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥

वृ ॥ उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळल् कुवळालमाळ्के तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विषयमासननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रं- ।
गात्त-जयं जयं जिन-मतं-मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक्-तटात्रधिगे तागे मोद [कि] ले मूड तोण्डे-ना- ।
डत्तपराशेगम्बुनिधि चेरोडेयिर्प्प तेङ्क कोङ्गु मं- ।
त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं दळेले माडिदनिन्तुटु गङ्गनुज्जुगम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं केळ्दु ।

मरदिन्दं चुर्च्चुवाण्दं होगळे बुध-जन वन्दु कावेरियोळ् मी- ।
करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रम निन्दु नोडल् ।
परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रभे वळसे दिशा-आगमं चोद्यमागल् ।
परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

क ॥ कर्‌···अरिद गङ्गनिं भय- । मिल्लद हरिवर्म्म विष्णु-
भूपनिं निजर्दिं ।

वह्ले तडङ्गाल्-माधव- । नह्लि वळि चुर्च्चुवाण्द-गङ्ग-नृपाळम् ।
श्रीपुरुषं शिवमारं ।···ळं कृतान्त-भूपना-सयिगोट्टम् ।
द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानळ-शिखेयेनिप्प विजयादित्यस् ॥
····रे येरिद मारसिंगना- । कुरुळ-राजिग पेसर्-व्वेत्ता- ॥
मरुळं तन्नृप-तिळकन । पिरिय मग सत्य-वाक्यनचळित-शौर्य्यं
गर्व्वद-गङ्ग वसुधेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तिय-गंग ।
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल्ल-भूभृ········ ॥
तेङ्गं मुरिवं हसिय क- । अङ्गं पिडिदडसि कीळ्वना-मंद-करियम् ।

पिङ्गदे निलिसुव साहस- । तुङ्गं केवळमे नेगळ्द एकस-गङ्गम् ॥
अन्वयवदिन्दे साधिसिद माळवमेळुमनेव्दे गङ्ग-मा- ।
ळवमेनलक्करं बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्चि चित्रकूट- ।
मनुरे कन्नमजेय-नृपानुजनं जयकेसिय महा- ।
हवदोळे मारसिंग-नृपनिक्कि निमिर्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥
तनयं श्री-मारसिंहङ्गनुपम-जगदुत्तुंगनादं जगत्-पा- ।
वन लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदयिसि नेगळ्दं राचमल्लावनीशम् ।
मनु-मार्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लभेशम् ।
जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्या-धरेन्द्रम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरा-दडिगन मगं चुर्वुवाय्द-गङ्गनातन सुतं दुर्विनीतनातन तनयं श्री····नु श्रीपुरुषमहाराजं तत्-तनयं देव तत्-तनूभवनेरेयङ्ग-हेम्माडि तत्पुत्रं बूतुग-हेम्माडि तदात्मजरु···· देव तदनुज गुत्तिय-गंगनातन मोम्म मारसिंग-देवनातन मगं कलियङ्गदेवनातन मगं बर्म्म-देवनिना-गङ्ग-वशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिणदेशनिवासी । गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-संधरणः ।
श्री-मूल-संघ-नाथो । नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥
श्री-मूल-संघ-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर····जय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल- । लामं काणूर्-गण-जना····करम् ॥

आ-गणद अन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ माळिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी निकामम्
समजनि जिनधर्म्मा निर्म्मळो बालचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमळ-श्री-जैन-धर्म्माम्बर-हिमकरनुद्यत्-त····लक्ष्मी- ।
रमणं भूमण्डलाधीश-नुतनुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खर-किरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्-
त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर-विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागं ॥
मनमं नियमिसलरिय- । नेनुवं····तोर्प्प मुनियुं मुनिये ।
मनमं तनुवं नियमिस- । ळनुदिनमी-नेमि-देवनोर्व्वने बल्लं ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमतरक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा-
ग्रणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने गुणनन्दि-देवरेसेदर् धरेयोळ् ॥

तत्सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के निन्न विरुदं माणु माणेले सांख्य वा- ।
ग्-वळमं नच्चदे नीनडङ्गडरदिर्च्चार्व्वाके नैय्यायिका ।
मलेयल् वेडिरु मन्तमेके चलदिन्दी-भण्डपं केम्मनण्- ।
डलेयल् श्री-गुणचन्द्र-देवनमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

गङ्गा-वारि सु-शैवलं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थलः ।
शम्भुःकण्ठ-विलग्न-घोर-गरलः चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
कैलाशो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्यं कथं वच्म्यहम्
कीर्त्या तैस्सह माघनन्दि-यमिनश्चन्द्रातपोचञ्छ्र्या (म्) ।

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु स्वस्ति समधिगत-पञ्च-
महा-शब्द महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य्य चतुस्त्रिंशदतिशय-विराजमान-
भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सदसदादि-वस्तु-

स्वरूप-निरूपण-प्रवण-राद्धान्तामृत-वार्द्धिवर्द्धन-रात्र्याभरणरुमप्प श्रीमत्-
प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवरेन्तेन्दडे ।

आसीदाशान्तराळ-प्रबळ-पृथु-यशो-व्योम-गङ्गा-तरङ्गः
चञ्चच्चारित्र-धात्रीभवदतिललितोदार-गंभीर-मूर्त्तिः ।
'वाक्-कान्ता-तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवाळः
सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणः श्री-प्रभाचन्द्र-देवः ॥

अभिनव-गणधर''' । त्रि-भुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुहयुगं ।
शुभमति'''रुह-वनार्कनेम्बुदु । वसुमतियोळनन्तवीर्य्य-सिद्धान्तकरम् ॥
वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-(वादि)-विशाळ हर-निटलाक्षम् ।
वादि-मद-रदनि-विहुवं । मेदिप मृगराज जयतु श्रि(श्रु)तकीर्त्ति-बुधं ॥
तत्-सधर्म्मरु ।

कवि-गमक-वादि-वाग्मिग- । ळेनेम्बरं गेल्दु कनकनन्दि-त्रैविद्य-
विळासं त्रिभुवन-म- । ल्ल-वादिराजं दलेनिसिदं नृप-समेयोळ् ॥
अवर सधर्म्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तियो- । ळनुनयदिं तळदु पञ्च-समितिय वशदिन्-
दनुवशनाद तपोनिधि । मुनिचन्द्र-व्रतिपनखिळ-राद्धान्तेशम् ॥
अवर शिष्यरु ।

पिरिदं पोगळ्वडेङ्कळ । पुरुळुण्टे-माडलेन्दु-मुनि-पतियेम्बी- ।
वर-चिन्तामणि'''' । कुरुळि सु-सन्मान-ध्यानदुरुळियेनिकुम् ॥
तपोनुष्ठा [न] निष्ठितरारेन्दडे ।

कनकचन्द्र-मुनीन्द्रन पादमं । मेनेव भव्य-समूहद पाप-सम्- ।
हननमप्पुदु तप्पदु निश्चयम् । मन''''''निश्चलम् ॥
अवर सधर्म्मरु ।

मुनिय··············अनवद्याचा(च)रणे जैन-शा- ।
सन-रक्षामणि शान्तने सकळ-राग-द्वेष-दोष-प्रभञ्- ।
जनतुर्व्वी-नुतने गुण-प्रणयितं तानेम्बिनं वीर मे- ।
दिनियो···धवचन्द्र-देवनेसेदं चारित्र-चक्रेश्वरम् ॥

तत्-सधर्म्मरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन- । हरिणाङ्कं-विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनल्सेदं । धरेयोळ् त्रैविद्य-बाळचन्द्र-मुनीन्द्रम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

वृ ॥········आळ्दु धर्म्मममनुपेक्षिसि तकेडेगीयदागळुम् ।
पीन-नितम्बमं घन-कुच-द्वयम मरेगोण्डु म-यो- ।
धानमनोल्दु पोक्कु नेरे नील-पटाश्रितरप्प योगिगळ् ।
दान-विनोदनोळ् दोरेगे-वप्परे माधवचन्द्र-देवनो···॥
·········सत्य-गङ्गं कुडे कुरुळियोळादन्न-दान-प्रभा-वि- ।
स्तरदिं श्री-बालचन्द्र-व्रति-पति पडेद दानदिं जीयनल्कुर्-
व्वरेयं सम्पूर्णमागळ् तणिसिदमिदु बल्-चोद्यमक्षीण-रिद्धि- ।
स्फुरितं कय्गणिम पोण्मुत्तिरे················ज्यनादम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

चतुरास्य-कोटि-कूटदो- । ळतिशयमेनिसिर्द्द कोपण-तीर्त्थदोळीगळ्- ।
नुतियिप वङ्काचार्य्य- । व्रतिपतिये नेमि-देवरिन्दमे पुज्य ॥
स्थावर-जंगममनितुं । पावनमाद············ ।
···जीयेनिसि बाळ्वडिगळ । जीय श्री-नेमि-देवरुदयिसे शुभदं ॥

अवर सधर्म्मरु ।

अघनंगाश्रितगिष्ट-सन्ततिगे चातुर्व्वर्ण्ण-संघके तान् ।

अधिकोत्साहदिन्···बयकेयम्बेर्प्पत्थँमं वाञ्छेयम् ।
क्षुध-चिन्तामणि···················कूर्त्तिंत्तु मा- ।
धवचन्द्रं पडेदं समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यमं स्तुत्यमम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

साधिसि गुरूपदेशदो- । ळाधिक्यतेयाग्तु सकळ-षट्-कर्म्मगळु ।
वेदान्तद् म···दरिव- । ग्गोंधूम-घरट्टनोडने तोडर्व्वम··· ॥

शाकिनि-डाकि······।-किनि-चोरारि-मारि-देव्येयरनितु ।
लोकमरियल्के··· । सकळमनरियें विरुदं देवेन्द्रनुमम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्तेयं तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड
भुजबळ-गङ्ग-हेम्माडि-बर्म्म-देव ।

बलवद्वैरिगळं पडल्-वडिसि गेल्दुग्राजियोळ् माणदने ।
चलदिन्द परियिट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही- ।
तळमं कोण्डु धरित्रि बण्णिसुविनं श्री-बर्म्म-देवं मही- ।
तळमं तोळ्-वळर्दि निमिर्च्चिदनिदम् हेम्माडि सौर्य्यात्मनो ॥

आतन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी······भूषण-भूषिताङ्गी ।
नितम्बिनीनां तिळकायमाना विराजते गङ्ग-महाधिदेवी ॥

वृ ॥ निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महासतिगुत्सव [म] म् निमिर्न्चुवा- ।
त्मजरेनिसिर्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव मारसिंगनुम् ।
स-जयदे सत्य-गङ्ग-नृपनुं कलि-रकस-गङ्ग-देवनुम् ।
भुजबळ-गङ्ग-भुजनुमार्जिसि पेर्जसमं निरन्तरम् ॥
गजरिपु-विष्टराजि-विभवोदय-पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पङ्क- ।
कज-मद-भृङ्ग गङ्ग-कुळ-मण्डन दण्डित-वैरि-वर्ग्ग भा- ।

वज-निभ-मूर्त्ति दिग्-वळय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
भुजवळ-गङ्ग-भूप निनगार्दोरे मण्डलिनैक्क-भीरव ॥

आतन पट्ट-महादेवि ।

[·········]आलु-वरननुज । दिट्टभूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्टमहादेवि यन्तु नोन्तरुमोळरे ॥

वृ ॥ मारिट्टाशान्तमं वळ्ळदलळेदुदधि-व्रातमं वृगे सन्दा- ।
मेरु-क्षोणीन्द्रमं त्राशिनोळेणिसि तरङ्गोण्डु नक्षत्रमं पेळ् ।
आरातुं बल्लरे बल्लडे पोगळ्गो···विश्वम्भरा-भार-वीर- ।
श्री-रामालीढ-वज्र-द्रढिम-घन-भुज-स्तम्भनं गङ्ग निन्नम् ॥

अन्नेयवागिदूटिसुव····मोले····प्रकास येल्लवो ।
रन्नवे हेण्डिरोळ् मनेगोर्व्वरुदारेयरण्ण हुट्टरे ।
हुन्नियवुळ्ळडेम् जगदोळोर्व्वळे मागिये ताने लेसे हुट्- ।
नन्नियोळिन्तु गर्व्वितेयरार्ग्गळ चन्दल-देवियन्ददिम् ॥

श्रीमद्-भुजवल-गं[ग]-देवङ्ग गङ्ग-महादेविगं पुट्टिद सत्य-गङ्गन प्रतापमेन्तेने ।

जसमुद्यद्धवलातपत्रमखिळाशा-देवतापाङ्ग-र- ।
श्मि-सह·········गजेन्द्र-रिपु-पीठं विक्रमं तानदा- ।
गे सु-साम्राज्य-लताभिवृद्धि-विभवं मव्वेत्तिरल् वल्लिदर् ।
व्वेसकेय्युत्तिरे सत्यगङ्गनेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

आतन-अरसि ।

पति सत्य-गङ्ग-देवं । गति····दार-लक्ष्मि तानेनिसि···· ।
·········तळेदळेम्···।····आरो राणि कञ्चल-देवि ॥

मावभवङ्गे रूपु मद-सामज-वैरिगे विक्रम-क्रमं हुरेन्- ।

द्रावनिजक्के दान-गुणमब्धिगे गुण्पमराचळक्के सं- ।
भावित-धैर्यमग्गलिपुदेन्दडे गङ्ग-कुमृत्-कुमार···· ।
········पाळक्कगे दोरेयप्परे मिक्क कुमृत्-कुमारकर् ॥
········यिन्दं क्षीराब्धियु- । मसत्रसर्दि पेर्च्चुवन्ते गङ्गान्वयमु ।
पसरिसे पेर्च्चुगे निन्निन्दसदळमौदार्य-शौर्य्य गङ्ग-कुमारा ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरनेरेयङ्ग-होय्सण-देवनळियं गण्डर दावणि हुसित्र शूल मावन गन्ध-वारणं हेम्माडि-देवनेडेदोरे····सायिरसुमं हरिगेय नेलेवीडिनोळु सुखदिनाळुत्तिर्द्दु कुन्तलापुरदोळु चैत्यालयमं माडि देवर पूजा-विधानकं चातुर्व्वर्ण्ग-संघ-समुदाय-चतुस्-समयदाहार-दानक खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारकं समुदाय-मुख्य-स्थानं माडि येडदोरे-मण्डलिनाडप्रभु-गावुण्डुगळंकरेयलट्टि धर्म्म आरय्कें येन्दु शक-वर्ष ९८९ नेय प्लवंग-संवत्सरद पुष्य-सु १२ दशि-गुरुवार-वुत्तरा-यण-संक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काळं कर्चि धारा-पूर्व्वक(कं)माडि विट्ट दत्तिया-ग्राम-दुभय···सर्व्व-नमस्य-वर्ह्ळि हुट्टुवायदाय-सुङ्क-निधि-निक्षेप सर्व्व-बाधा-परिहार ॥

मत्ता-राज-सर्व्वन्य सत्य-गङ्ग-देव नेडेहळ्ळिय नेलेवीडिनोळु सुखर्दि राज्यं गेय्युत्तिर्देह्ळि कुरुळिय-तीर्त्थदल्लु गङ्ग-जिनालयमं माडि सक-वर्ष १०५४[1] नेय नन्दन-संवत्सरद चैत्र-सुपुण्णमियादिवार-सोम-ग्रहणदन्दु तन्न गुरुगळु श्री माघवचन्द्र-देवर काल कर्चि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति····वण्ण········

स्वस्ति श्रीमन्-महामण्डलेश्वर गङ्ग-हेम्माडि-देवर सन्निधियल्लि सर्व्वाधिकारि बागिय-हेग्गडे लोकिमय्यन मग हेग्गडे-चन्दिमय्यं

1 लेकिन १०५४=परिधावि; नन्दन=१०३४

कुरुळिय तम्म गौडिकेयं कलियर-मल्लि-शेट्टि मारं कोण्डु अरसर सन्निधियल्लु बाळचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टरु ॥

मत्त सिरियम-सेट्टियुमातन मक्कळु····आतन गौडिकेय नन्नि-यरस-देव हळ्ळुवुरदल्लु बाळचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्व्वक माडि कोट्टरु ॥ अन्तुभय-ग्रामद··········साम्य सुङ्क सहित सर्व्व-बाधा-परिहार············

(आगेकी ५ पक्तियोंमें सीमाओंकी चर्चा तथा हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं)

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय त्रिभुवन-मल्ल-देवका राज्य प्रवर्धमान था;—

आगेके श्लोकका प्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है, सिवाय इसके कि विक्रमांकने, जो कि त्रिभुवन-मल्ल है, बहुत भय उत्पन्न किया ।

तत्पादपद्मोपजीवी एरेयङ्ग होय्सळका दामाद हेम्माडि-अरस था । उसकी प्रशंसा ।

होय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा । विनयादित्यसे लेकर नरसिंह तकके राजाओंकी परम्परा ।

मूलसंघके मेष-पाषाण-गच्छके क्राणूर्-गणका एक जैनमन्दिर राजा हेम्मने बनवाया ।

जिस समय प्रताप-होय्सल-नारसिंह-देव दोरसमुद्रमें राज्य कर रहा था —उसका प्रधान मंत्री (प्रशंसासहित) तिप्पण भूपति और उसका छोटा भाई नाग-चमूपति था, जिसकी पत्नी चामल-देवी थी । उसने··· ·· का दान किया ।

पश्चात् इक्ष्वाकुवंशका अवतार दिया है । इस भागकी १७० पक्तियोंमें पूर्वके शिलालेख नं० २७७ और २६७ के भाग ज्यों-के-त्यों मिलते हैं । नं० २७७ "सले वृषभतीर्त्थ-कालं" से लेकर "परावृत-गङ्गवाडितोम्मचरु-सासिरं" तक १०१ पंक्तियाँ; और "अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं केळ्दु" से लेकर "मेरु-शैलोपमानम्" तक ५ पंक्तियाँ । नं० २६७ "कर···अरिद गङ्गर्निं भय-" से लेकर "रक्षल गङ्गम्" तक ११ पंक्तियाँ । नं० २७७ "अवयवदिन्दे" से लेकर राज विद्याधरेन्द्रम्" तक ८ पंक्तियाँ । नं० २६७ "इन्तेनिसि नेगल्द" से लेकर "अनन्तवीर्यसिद्धान्तकरम्" तक ४५ पक्तियाँ ।

श्रुतकीर्तिकी प्रशंसा। पश्चात् क्रमसे सधर्मा कनकनन्दि, मुनिचन्द्र व्रती-की प्रशंसा। मुनिचन्द्रके शिष्य कनकचन्द्र-मुनीन्द्र; उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव; उनके सधर्मा त्रैविद्य बालचन्द्र-मुनीन्द्र और उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव। सत्य गंगने कुप्पलिमें बालचन्द्र व्रतिपतिको दान दिया। उनके सधर्मा वज्राचार्य व्रतिपति थे। उनके सधर्मा माधवचन्द्र थे।

इसके बाद भुजबल-गङ्ग हेम्मोडि-धर्म्म-देवकी प्रशंसा। उनकी पट्टमहिषी गंगमहादेवी तथा इन दोनोंके चार लड़के मारसिंग, सत्य-गंग, कलि-रक्कस-गंग और भुजबल-गंगका उल्लेख।

भुजबल-गंगदेव और गंग-महादेवीसे सत्य-गङ्गकी उत्पत्ति। उसकी प्रशंसा। उसकी रानी कञ्चल-देवी। (उनके पुत्र गंग-कुमारकी प्रशंसा)।

जिस समय एरेयङ्ग-होय्सल-देवका दामाद हेम्मोडि-देव इरिगेके निवास-स्थानमें था और एडेदोरे-(मण्डलि) हजारका शासन कर रहा था, कुन्तलापुरमें उसने एक चैत्यालय बनवाया और, उसके लिये तमाम करों इत्यादिसे मुक्त, एक गाँवका दान दिया।

इसके अतिरिक्त, जब सत्य-गङ्ग-देव, अपने एडेहल्लिके निवासस्थानमें सुख और शान्तिसे राज्य कर रहा था, उसने कुप्पली-तीर्थमें गङ्ग-जिनालय बन-वाया, और शक-वर्ष १०५४[1] में अपने गुरु माधवचन्द्र-देवके पैरोंका प्रक्षा-लनपूर्वक,.........का दान किया।

और गंग-हेम्मोडि-देवकी उपस्थितिमें सर्वाधिकारी, बागिके हेग्गडे, हेग्गडे चन्दिमय्यने कुप्पलीकी अपनी 'गौडिके' भूमि कलियर-मल्लि-सेट्टिको बेची और उसने वह भूमि बालचन्द्र-देवको दान कर दी। और सिरियम-सेट्टि तथा उसके पुत्रोंने हल्लुवूरकी अपनी 'गौडिके' भूमि, नन्नियरसदेवके सामने, बालचन्द्र-देवको भेंट कर दी। (यहाँ सीमाएँ और हमेशाके श्लोक आते हैं।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 64.]

१ ये अङ्क १०३४ होने चाहिये, क्योंकि शक वर्ष १०५४=विरोधिकृत्, नन्दन=१०३४।

३००

चन्नदहल्लि—कन्नड़

[विक्रम वर्ष ५८=११३३ ई०]

[चन्नदहल्लिमें, अमृतेश्वर मन्दिरके सामनेके वीरकलके ऊपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-संवत्सरद ५८ परिधावि-संवत्सरदाश्व-यिज-ब ५·········श्रीमतु मूलसंघद देसिग-गणद श्री-माघणन्दि-भट्टारक-देवर गुड्डं गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डन मग बोप्पयं समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गस्थनादनु ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूलसंघ और देसिग-गणके माघनन्दि-भट्टारक-देवके एक गृहस्थ-शिष्य,-गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डके पुत्र बोप्पय, समाधि-विधिसे मरण कर, स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 97.]

३०१

हळेबीड—संस्कृत और कन्नड़

[वर्ष प्रमादिन्, ११३३ ई० (लू० राइस)]

[हळेबीडसे लगी हुई बस्तिहल्लिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
जयतु जगति नित्य जैनसंघोदयार्क्कः
प्रभवतु जिनयोगीव्रातपद्माकरश्रीः ।
समुदयतु च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त-
प्रकटित-गुण-भास्वद्-भव्य-चक्रानुरागः ॥
जगत्त्रितयवल्लभः श्रियमपथ्यवाग्दुर्ल्लभः ।

सितातपनिवारणत्रितयचामरोद्भासनः ।
ददातु यदघान्तकः पदविनम्रजम्भान्तकः
स नस्सकल-धीश्वरो विजय--पार्श्वतीर्त्थेश्वरः ॥

सिद्धं नमः ॥

श्रीमन्नतेन्द्रमणिमौलिमरीचिमाळा-
माळार्च्चिताय भुवनत्रयधर्म्मनेत्रे ।
कामान्तकाय जितजन्मजरान्तकाय
भक्त्या नमो विजय-पार्श्व-जिनेश्वराय ॥
होय्सळोर्व्वाश-वंशाय स्वस्ति वैरि-महीभृताम् ॥
खण्डने मण्डलाग्राय शतधाराग्रजन्मने ॥

तदन्वयावतारम् ॥

नेगळ्दा-ब्रह्मनिनत्रि सोमनेसेवा-श्री-सोमज भूतलं
पोगळुत्तिर्प्प-पुरूरवोर्व्वीपति सन्दायुर्म्महीवल्लभं ।
सोगयिप्पा-नहुषं ययाति यदुवेम्बुर्व्वीश-सन्तानदोळ् ।
नेगळ्दं श्री-सळनानतान्य-निकरं सम्यक्त्व-रत्नाकरम् ॥
आ-सळ-नृपतिय राज्यश्री-संवर्द्धनमनेय्दे माडुव बगेयिं ।
वासव-वन्दित-जिन-पूजा-सहितं सकल-मंत्र-विद्या-कुशलम् ॥
मुददिं जैन-व्रतीशं शशकपुरद पद्मावती-देवियं म- ।
त्रदिनादं साधिसल् विक्रियेयोळे पुलि मेल् पाये योगीश्वरं कुं-
चद-काविन्दान्तदं पोयूसळ एनलभयं पोय्दुदुं पोय्सळाङ्कम् ।
यदु-भूपर्गादुदन्दिन्देसेदुदु सेळेयिं लोल-शार्दूल-चिह्नम् ॥
आ-सन्द-यक्षी-वरदोळ् वसन्तं । लेसागे तात्कालिक-नामदिन्दं ।
वासन्तिका-देवतेयेन्दु पूजा- । व्यासङ्ग वं माडिदना-नृपाळम् ॥

कयू-सार्द्दिरे पुलि युण्डिगे ।
कयू-सार्द्दिरे वीर-लक्ष्मी रिपु-नृप-राज्यम् ।
कयू-सार्द्दिरे पलरादर् ।
प्पोय्सळ-नामदोळे यादवोर्व्वीपतिगळ् ॥
सत्कुलदोळगिन्दु माही- ।
भृत्-कुळदोळगचळ-नाथनेसेवन्तेसेदं ।
तत्कुलदोळ् विजितारि-कु- ।
भृत्कुळनादित्य-मूर्त्ति विनयादित्यम् ॥
तदपत्यं रिपु-नृप-भुज- ।
मद-मर्द्दननखिळ-विबुध-जनता-सौख्य- ।
प्रदननुदितोदित-महिमा- ।
स्पदनेनिपेरेयङ्ग-भूपनङ्गज-रूपम् ॥
एरेयङ्गन कूरसि तले- ।
गेरगदे मुन्नरिदु बन्दु पदकेरगदवर् ।
प्परिये तले मुरिये निट्टेल्व् ।
ओरदुगे बिसु-नेत्तरेरगदिर्प्परे धुरदोळ् ॥
ई-वसुधे पोगळ्लेचल- ।
देविगवेरेयङ्ग-नृपतिगं त्रै-पुरुषर् ।
तावेनलादर्ब्बल्ला- ।
ळावनिपति विष्णु-नृपतियुदयादित्य ॥
अन्तवरोळ् विष्णु-मही- ।
कान्त निमिर्देसेये कूर्प्पुमाप्पुं जसमा- ।

दन्तोळगि बेळगे पेर्म्मेय- ।
नान्तं नळ-नहुष-भरत-चरित-प्रतिमम् ॥
स्थिरमागि विष्णुवर्द्धन- ।
धरणीपाळंगे पट्टमागलोडं सा- ।

गरदन्तनहित-धरणी- ।
श्वररोडनेय्दित्तु विशदकीर्तिप्रसरम् ॥
पोडरदे साध्यमायूतु मलेयेल्लमुना-तुळु-देशवेल्लमुं ।
नडेये कुमार-नाडु-तळकाडुगळेम्बिवु कय्गे सार्दुव- ।
त्तडियिडे मुन्नि कन्नि बेसकेय्दुदु विष्णु-नृपं कृपाणम ।
जडियदे मुन्ने कोङ्ग-नृपरित्तरिभङ्गळनेम् प्रतापियो ॥
चोळ-नृपाळ-पाण्ड्य-नृप-केरळ-भूप-भुजावलेप-वि- ।
स्फाळननन्ध्र-गन्ध-गज-केसरी लाट-वराट-धारिणी- ।
पाळ-घनानिळं कदन-सूर-कदम्ब-वनाग्नि विष्णु-भू- ।
पाळनवार्य्य-शौर्य्य-निधियातन शौर्य्यमनारो कीर्तिपर् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरं । द्वारावतीपुरवराधीश्वरं । यादवकुलाम्बरद्युमणि मण्डलिक-चूडामणि शशकपुर-वसन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसादम् । दर-दळन्-मल्लिकामोदम् । परिहसित-शरदुदित-तुहिनकर-कर-निकर-हर-हसन-सु-रुचिर-विशद-यशश्चन्द्रिका-श्री-विलासम् । निरतिशय-निखिल-विद्या-विलासम् । विनमदहित-महिप-चूडालीढ-नूत्न-रत्न-रस्मि-जाल-जटिलित-चरण-नख-किरणम् । चतुस्समय-समुद्धरणम् । कर-कराळ-करवाल-प्रभा-प्रचलित-दिशा-मण्डलम् । वीर-लक्ष्मी-रत्नकुण्डलम् । हिर-ण्यगर्भ-तुळापुरुषाश्व-रथ-विश्वचक्र-कल्पवृक्ष-प्रमुख-मख-शतमखम् । राज-विद्या-विलासिनीसखं । स्थिरीकृत-यादव-समुद्र-विष्णुसमुद्रोत्तुंग-रुन्द्र-

बहंळतर-तरङ्गौघाच्छादित-दिशा-कुञ्जरम् । शरणागतवज्र-पञ्जरम् । आम-ळक-फळ-तुळित-मुक्ता-लता-लक्ष्मी-लक्षित-वक्षम् । विबुध-जन-कल्प-वृक्षम् । विजयगज-घटोच्चरळ-कदलिका-कदम्ब-चुम्बिताम्बुदम् । प्रति-दिन-प्रवर्द्धमान-सम्पदम् । रिपु-नृप-लय-समय-क्षुभित-वार्द्धि-वीचि-चयोच्च-ळित-जात्यश्व-हेषा-रवपूरित-दिशा-कुञ्जम् । शस्तोदात्त-पुण्य-पुञ्जम् । इन्दु-मन्दाकिनी-निश्चळोदात्त-गुण-यूथम् । गण्डगिरि-नाथम् । चण्ड-पाण्ड्यवे-दण्ड-कूट-पाकलम् । जगदेव-बळ-कळकळं । चक्रकूटाधीश्वर-सोमेश्वर-मदमर्द्दनम् । तुळु-नृपासुर-जनार्द्दनम् । कळपाळ-तारक-मयूर-वाहनम् । नरसिंह-ब्रह्मसम्मोहनम् । इरुङ्गोळ-बळ-जळधि-कुम्भ-सम्भवम् । हत-महाराज-वैभवम् । दळितादियम-राज्य-प्रभावम् । कदम्बवन-दावम् । चेङ्गिरि-बळ-काळानळम् । जयकेशी-मेघानिळनेन्दिवु मोदलागे समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-मासवाडि-हुलिगेरे-हलसिगे-बनवसे-हानुङ्गल्लु-नाडु-गोण्ड त्रिभुवनमल्ल भुजबळ वीर-गङ्ग-होय्सळदेवम् ॥

निरुपमिताङ्गियं रुचिर-कुन्तळेय नुत-मध्येयं मनो- ।
हरतर-काञ्चियं धृतसरस्वतिय विलसद्विनीतेयम् ।
स्फुरदुरु-कीर्त्तिमन्मधुरेयं स्थिरवागिरे तन्न तोळ्ओळेल्द् ।
इरिसिदनुर्व्वराङ्गनेयनप्रतिमं विभु-विष्णु-भूभुजम् ॥

तदीय-पाद-पद्मोपजीवि । निरन्तर-भोगानुभावि । जिनराज-राजत्-पूजा-पुरन्दरम् । स्थैर्य्य-मन्दिरम् । कौण्डिन्यगोत्र-पवित्रम् । एचि-राजप्रिय-पुत्रम् । पोचाम्बिकोदारोदन्वत्-पारिजातम् । शुद्धोभयान्वय-सञ्जातम् । कर्ण्णाटधरामरोत्तंसं । दानश्रेयांसम् । कुन्देन्दु-मन्दाकिनी-विशद-यशःप्रकाशं । मन्त्र-विद्या-विकाशम् । जिन-मुख-चन्द्र-वाक्-

चन्द्रिका-चकोरम् । चारित्र-लक्ष्मी-कर्ण्णपूरम् । धृतसत्य-वाक्यम् । मन्त्रि-माणिक्यम् । जिन-शासन-रक्षामणि । सम्यक्त्व-चूडामणि । विष्णुवर्द्धन-नृप-राज्य-वार्द्धि-संवर्द्धन-सुधाकरम् । विशुद्ध-रत्नत्रयाकरम् । चतुर्विधानूनदानविनोदम् । पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् । भय-लोभदुर्ल्लभम् । जयाङ्गना-वल्लभम् । वीर-भट-ललाट-पट्टम् । द्रोह-घरट्टम् । विबुध-जन-फळ-प्रदायकम् । हिरिय-दण्डनायकं । अप्रतिम-तेजम् । गङ्ग-राजम् ।

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण्ण-जिनालय-कोटियं क्रमं- ।
बेत्तिरे मुन्निनन्ते पल-मार्ग्गदोळं नेरे माडिसुत्तवत्यू- ।
उत्तम-पात्र-दानदोदवं मेरखुत्तिरे गङ्गवाडि-तोम्- ।
बत्तरु-सासिरं कोपणवादुदु गङ्गण-दण्डनाथनिम् ॥

नुडि तोदळादोडोन्दु पोणर्दळिदोडन्तेरडन्य-नारियोळ् ।
नुडिगेडेयागे मूरु मरे-वोकरनोप्पिसे नाल्कु बेडिदम् ।
पडेयदोडय्दु कूडिदेडेगोगदोडारघिपङ्ग तप्पि ब- ।
ईडे गडिवेळुवेळु-नरकङ्गळिवेन्दपनल्ते गङ्गणम् ॥

आ-गङ्ग-चमूपतिगं ।
नागल-देवीगमधीत-शास्त्रं पुत्रम् ।
चागद बीरद निधियुम् ।
भोग-पुरन्दरनुमप्प बोप्प-चमूपम् ॥

परमार्त्थं विद्वदर्त्थं तविसदनधनं व्यर्थविन्दर्त्थिसार्त्थम् ।
निरवद्य ज्ञातविद्यं दळित रिपु-मनोवं तिरस्कारिताद्यं ।
धरे तन्नं कीर्त्तिपन्नं त्रिबुध-ततिगे पोन्नं विपश्चित्प्रसन्नं
करेदीव बोप्प-देवं समर-मुख दशग्रीवनुद्यत्प्रभावम् ॥

समरायाताहित-क्षोणिभृदतुळबळोद्यानदोळ् पावकानु- ।
क्रमदिन्द क्रीडिसुत्तु रिपु-नृपति-शिरः-कन्दुक-क्रीडितं तत्-
समयोद्भूतारुणाम्भो-भरित-समर-धात्री-सरो-मध्यदोळ् त्रि- ।
क्रम-लक्ष्मी-लोलनोलाडुवनेरेद-बुधर्ग्गेप्प दण्डेश-बोप्पम् ॥
लोभिगळं पोलिपुदे य- ।
शो-भाजननप्प बोप्प-दण्डेशनोळिन्‌ ।
ई-भू-भुवनदोळाह्वा- ।
रामय-भैषज्य-शास्त्र-दानोन्नतियिम् ॥

तदीय-गुरु-कुलम् ॥

गौतम-गणधररिन्दा-यात-परम्परेय कोण्डकुन्दान्वय-वि-ख्यात-मलधारि-देवर् । पूत-तपोनिधिगळा-मुनीश्वर-शिष्यर् ॥ श्री-राद्धान्त-सुधाम्बुधि-पारग-शुभचन्द्र-देव-मुनिपर्व्विमळा-चार-निधि-गङ्ग-राजन । धीरोदात्ततेयनाळ्द बोप्पन गुरुगळ् ॥ जिन-धर्म्म-वनधि-परिवर्द्धन-चन्द्रं गङ्ग-मण्डलाचार्य्यर्-प्पावन-चरितरेन्दु पोगळ्वु [दु] जनं प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिकरम् ॥

इवर्बोप्प-देवन देवतार्च्चन-गुरुगळ् ॥

जळजभवङ्गविन्तु वरेयल् कडेयल् करुविट्टु गेय्यल- ।
त्तळगवेनिप्पुद तोळप वेळ्ळिय-बेट्टने पोल्वुद जगत्- ।
तिलकमनी-जिनालयमनेत्तिसिद विभु-बोप्प-देवन- ।
गळ्ळेय राजधानिगळोळोप्पुव दोरसमुद्र-मध्यदोळ् ॥

गङ्ग-राजङ्गे परोक्षविनयवागि देवर्गे ।

सासिर दैवत्तैदेन-ला-शकनद्ध प्रमादि-माधव-बहुळ- ।
श्री-सोमज-पञ्चमियोळ्-सेने बोप्पं प्रतिष्ठेयं माडिसिदम् ॥

प्रतिष्ठाचार्य्यर् श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ् ॥
भ्रान्तिनोळेनो मुन्नेगळ्द चारण-शोभित-कोण्डकुन्देयोळ् ।
शान्त-रस-प्रवाहवेसेदिर्प्पिनमिर्द्द मुनीन्द्र-कीर्त्तिया- ।
शान्तवनेय्दितन्तवर सन्ततियोळ् नयकीर्त्ति-देव-सै- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-शासनमं बेळगल्के पुट्टिदं ॥

श्री-मूलसंघद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोंडकुन्दान्वयद हन-सोगेय बळिय द्रोहघरट्ट-जिनालय[मु]-प्रतिष्ठानन्तर
देवर शेषेयनिन्द्रर् कोण्डु-पोगि विष्णुवर्द्धन-देवर्गे बङ्कापुरदोळ् कुडु-ववसरदोळ् ।

कवियेरिंगेन्दु वन्दा-मसणनसम-सैन्यङ्गळं विष्णु-भूपं ।
तवे कोन्दा-प्राज्य-साम्राज्यमनतुळ-भुजं कोळ्वुदुं पुट्टिदं भू-
भुवनकुत्साहमागुत्तिरे बुध-निधि लक्ष्मी-महा-देविगागळ् ।
रवि-तेजं पुण्य-पुञ्जं दशरथ-नहुषाचार-सारं कुमारम् ॥
भूभृत्-पति-मद-करि-हरि-शोभास्पद नचळता-समुत्तुङ्ग श्री- ।
प्राभवनुदिताखण्डळ-वैभवनेम् गोत्र-तिळकनादनो पुत्रम् ॥

अन्तु विजयोत्सवमु कुमार-जन्मोत्सवमुमागे संतुष्ट-चित्तनागिर्द्द विष्णु-देवं पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेय गन्धोदक-शेषगळं कोण्डु बन्दिर्द्दिन्द्ररं कण्डु बर-वेळ्दिदिरेद्दु पोडेवट्टु गन्धोदकमुं शेषेयुमं कोण्डेनगी-देवर प्रतिष्ठेय-फलदिं विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमादुवेन्दु सन्तोष-परम्परेयनेय्दि देवर्गे श्री-विजय-पार्श्व-देवरेम्ब पेसरुम कुमारंगे श्री-विजय-नारसिंह-देवनेम्ब पेसरुमनिट्टु कुमारंगम्युदय निमित्तमु सकळ-शान्त्यर्थमुमागि विजयपार्श्व-देवरचतुर्व्विंशति-तीर्थङ्कर त्रि-काल-पूजार्च्चनाभिषेककर्मी-बसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणकं जितेन्द्रियरप्प तपोधनराहार-दानकं आसन्दि-

नाड जावगल्लुमं बसदियिं बडगण बेनकन-मण्ठेयदिं मूडल्लु राज-हस्त-दल् नूरेण्भत्तु-हस्त-प्रमाण-भूमियोळिर्देरडु केरियुमनळ्िन्दाग्नेयद गोण्टिनळ्ि नट्ट कल्लिन्दिर्व्बडगलागिर्देरडुं केरियुं तेल्लिगरिप्पत्तोकलुननळ्िं पडुवल् माधवचन्द्र-देवर बसदिवरविद्द-केरियुमनळ्िं पडुवण हिरिय-दण्ड-नायकर मनेयिं पडुवल् तेङ्क-देशेय राज-वीथिय मूडण बेलुहूर केरिय हित्तिल् मेरेयागिर्द भूमियुमनळ्िं बडगल् शिरियङ्गडिये गडि आसिरि-यङ्गडिय मूडण-कडे यरडङ्गडियु । जावगल्लु-सीमे (आगेकी ५ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है) इन्ती-स्थळविनितुमं श्री-विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवं श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे धारा-पूर्व्वक माडि कोट्टम् (वे ही अन्तिम श्लोक)

विदिताशेष-पदार्त्थ-नूत-विजय-श्री-पार्श्व-देवोल्लसत्- ।
पद-पूजा-निचयक्के दान-महितं केय् गद्देयं पुण्य-बी- ।
जद पेर्चिङ्गे निरासम सकळभव्याम्भोजिनीभास्करम् ।
मुददिं तेल्लिग-दास-गौण्ड-विभु कोट्टं सन्ततं सल्विनम् ॥
इदनूर्जितमेने नीम्मा- ।
क्पुदेन्दु तेल्लिगर-दास-गावुण्डं पु- ।
ण्य-देव-पूजाकर-शान्- ।
ति-देव-विमुगमळ-वारि-धारेयनित्तम् ॥

दासगौण्डनहळ्ळिय कुम्बार-गट्टद केळगण-मट्टुविन मोहमेडिवेयल्लु मूवत्तु-कोळग-गद्दे आ-यरडु-को……नडुवण एरेय-केय्युळ्ळनितुं मूडल्लु ताव-रेयकेरे हडुवल्लु होल सीमे गडियागिद्द भूमियुळ्ळनितुमं तेल्लिगर-दास-गावुण्डनुं राम-गावुण्डनु उत्तरायण-संक्रमणदल्लु श्री-विजय-पार्श्वदे-वरष्ट-विधार्चनेगे सर्व्व-बाधा-परिहारवागि पूजकर शान्तय्यङ्गे धारा-पूर्व्वकं कोट्टरु ॥

आरुं पोय्सरे युद्ध-दैत्य-विजय-श्री-पार्श्व-भट्टारको-
दार-श्री-पद-पङ्कज-भ्रमरनं सौजन्य-वाक्-सारनम् ।
सारोदार-जिनेश्वरार्च्चन-नियोगोद्योग-विश्रान्त···· ।
····श्री-नधु-कान्तनं पृथुल-कीर्त्याशान्तन शान्तनं ॥

श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे बिट्ट जावगल्लु गङ्गऊरदलि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्के जावगल्लु । रङ्ग-भोगद विद्यावन्तरिगे गङ्गऊरु । श्रीमभ्यकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ शिष्यरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवर श्री-मूलसंघद समुदायङ्गळु अवर शिष्य-सन्तानगळे ई-धर्म्मवना-चन्द्रार्क-तारंबरं सलेसुवरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पार्श्व-जिनेश्वरका माहात्म्य । होय्सल राजाओंके वंशकी परम्परा.—

ब्रह्म-अत्रि-सोम-पुरूरव-आयु-नहुष-ययाति-यदु, जिसके वंशमें सल उत्पन्न हुआ । जिस समय, सलके राज्यकी समृद्धिके लिये, कोई जैन-व्रतीश मन्त्रों-द्वारा शशकपुरकी पद्मावती देवीको वशमें कर रहा था, एक चीतेने उछल कर आक्रमण किया, चीता इससे उसकी सिद्धि भंग करना चाहता था । उसी समय योगीश्वरने अपने चामर (या पंखे) की मूठको पकडकर कहा 'पोय् सल' (सल, मारो): इतना उनके कहते ही उसने निडर होकर उसे मार दिया; उस समयसे यदु राजाओंका नाम 'पोय्सळ' पड गया और उनके झण्डेपर चीतेका चिह्न फहराने लगा । उस 'यक्षी' के प्रसादसे ऋतु वसन्त हो गई और उसी ऋतुके नामसे राजाने उसका 'वासन्तिका' देवीके नामसे पूजन किया ।

उसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र एरेयंग था । उससे एचल-देवीके द्वारा, ब्रह्मा, विष्णु और शिवकी तरह, बल्लाल, विष्णु और उदयादित्य उत्पन्न हुए । इन सबमें विष्णुका नाम सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हुआ । (उसकी दिग्विजयका वर्णन, उसकी प्रशंसा)

(उसके पदों और उपाधियोंका वर्णन) उसने तलकाडु, कोङ्ग, नङ्गलि, गङ्गवाडि, नोळम्बवाडि, मासवाडि, हुलिगेरे, हलसिगे, बनवसे और हानुङ्गल्पर अधिकार कर लिया था । इतना ही नहीं, अङ्ग, कुन्तल, मध्यदेश, काञ्ची, विनीत और मथुरा (वर्तमानका मदुरा) ये सब उसीके अधीन थे ।

तत्पादपद्मोपजीवी पुराना दण्डनायक गङ्गराज था । (उसकी बहुत-सी उपाधियोंका उल्लेख) उसने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरोंका पुनर्निर्माण कराया । अपने अनवधि दानोंसे उसने गङ्गवाडि ९६००० को कोपणके समान चमकाया । गंगकी रायमें सात नरक ये थेः—झूठ बोलना, युद्धमें भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियोंको शरण न देना, अधीनस्थोंको अपरितृप्त रखना, जिनको पासमें रखना चाहिये उन्हें छोड़ देना, और स्वामीसे द्रोह करना ।

गंग-चमूपति और नागल-देवीसे बप्प-चमूप उत्पन्न हुआ । (उसकी प्रशंसा) ।

उसका गुरु-कुल—गौतम गणधरकी परम्परामें विख्यात मलधारिदेव हुए, जो कुन्दकुन्दान्वयी थे । उनके शिष्य शुभचन्द्रदेव बोप्पके गुरु थे । गंगमण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिक उसके पूजनीय गुरु थे ।

यह जिनमन्दिर—जिसकी शोभा रजतमय कैलाशके समान थी—बोप्पदेवने दोरसमुद्रके बीचमें बनवाया । गङ्गराज (अपने पिता) की मृत्युके स्मारकमें (उक्त तिथिको) बोप्पने मूर्तिकी स्थापना की; प्रतिष्ठापक नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती थे । (उनकी प्रशंसा) ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ, कोण्डकुण्डान्वय तथा हनसोगे-बलिके इस द्रोह-घरट्ट (पाप-नाशक) जिनालयकी स्थापनाके बाद, जिस समय पुरोहित (इन्द्रलोग) चढ़ाये हुए भोजन (शेष) को विष्णुवर्द्धनके पास बङ्कापुर ले गये,—उस समय राजा विष्णुने मसणको, जो अपार सेनाके साथ उसपर टूट पड़ा था, हराकर मार डाला, तथा उसका सारा साम्राज्य जब्त कर लिया, और उसी समय (रानी) लक्ष्मी-महादेवीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो गुणोंमें दशरथ और नहुषके समान था, (अन्य प्रशंसाएँ), तब

राजाने उनका स्वागत कर प्रणाम किया तथा यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भगवानकी स्थापनासे उसकी युद्धमें विजय तथा पुत्रोत्पत्ति तथा सुख-समृद्धि हुई है, उसने देवताका नाम विजयपार्श्व तथा पुत्रका नाम विजय-नारसिंह-देव रक्खा।

अपने पुत्रकी समृद्धि तथा विश्व-शान्तिको बढ़ानेके लिये उसने आसन्दि-नाड्के आवगल्का इस मन्दिरके लिये दान किया। और भी (उक्त) बहुत-से दान दिये।

तेली दास-गौण्डने भगवानके लिये पुरोहित शान्ति-देवको भूमि-दान किया। पार्श्व-जिनकी अष्टविध पूजाके लिये दास-गौण्ड और राम-गौण्डने 'उत्तरायण संक्रमण' के समय (उक्त) दान दिये। शान्तिकी प्रशंसा। नेमिचन्द्र-पण्डित-देव इस कामकी व्यवस्थापर रक्खे गये। ये नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य थे।]

[EC, V, Belur tl., n° 124.]

३०२

कोल्हापूर—संस्कृत

[११३५ ई० (फ्लीट)।]

मूल लेख अक्टूबर १९०० ई० तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ था, ऐसा मि० जे. एफ. फ्लीटका कहना है। उन्होंने जो इस लेखका उल्लेख या संकेत किया है वह एक पाण्डुलिपि परसे किया है।

[यह लेख ११३५ ई० का है और कोल्हापुरमें पाया गया है। इसमें बताया गया है कि कवडेगोल्लके सन्तेय-मुदुगोडेमें 'महासामन्त' निम्ब-देवरसके द्वारा निर्मापित एक जैनमन्दिरके मूलनायक पार्श्वनाथ भगवानको कुछ स्थानीय महसूलोंका दान किया गया। लेखमें ७ व्यक्ति तथा उनके स्थानोंके नाम दिये हैं जिन्होंने दान किया था। यह दान कोल्हापुरकी रूपनारायण 'बसदि' के 'आचार्य' श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्यदेवके लिये किया गया था। इस लेखमें 'कुण्डिपट्टन' नामके नगरका उल्लेख है। इस नगरके नामसे देशका नाम भी वही पड़ गया था।]

[IA, XXIX, p. 280, a]

अनुक्रमणिका ।

[विशेष नाम-सूची]

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि, संघ, गण, गच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सब प्रकारके स्थानोंके नाम समाविष्ट किये गये हैं। नामके पश्चात्‌के अंक लेख नम्बर समझने चाहिये।

क

का

ध

प